कन्नडप्रान्तीय

ताडपत्रीय-ग्रन्थसूची

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला [संस्कृतग्रन्थाङ्क २]

कन्नडप्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची

[जैनमठ-जैनसिद्धान्तभवन-सिद्धान्तबसदि आदि मूडबिद्री, जैनमठ कारकल, आदिनाथ ग्रन्थ-भण्डार अलियूर आदिके भण्डारोंकी सविवरण सूची]

सम्पादक—

विद्याभूषण पं० के० भुजबली शास्त्री मूडबिद्री

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

प्रथम आवृत्ति
५०० प्रति

माघ, वीरनिर्वाण सं० २४७४
वि० सं० २००४
जनवरी १९४८

मूल्य १३)
तेरह रुपया

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

स्व० पुण्यश्लोका माता मूर्तिदेवी की पवित्र स्मृति में
तत्सुपुत्र सेठ शान्तिप्रसाद जैन द्वारा

संस्थापित

ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में प्राकृत संस्कृत अपभ्रंश हिन्दी कन्नड तामिल आदि प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध आगमिक दार्शनिक पौराणिक साहित्यिक और ऐतिहासिक आदि विविध विषयक जैन साहित्य का अनुसन्धान, उसका मूल और यथासंभव अनुवाद आदि के साथ प्रकाशन होगा। जैन भंडारों की सूचियाँ, शिलालेख-संग्रह, विशिष्ट विद्वानों के अध्ययन ग्रन्थ और लोकहितकारी जैन साहित्य भी इसी ग्रन्थमाला में प्रकाशित होंगे।

ग्रन्थमाला सम्पादक और नियामक (संस्कृत विभाग)

पं० महेन्द्रकुमार जैन, न्यायाचार्य, जैन-प्राचीन न्यायतीर्थ
बौद्धदर्शनाध्यापक, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

संस्कृत ग्रन्थांक १

प्रकाशक—अयोध्याप्रसाद गोयलीय,
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड, काशी
मुद्रक—रामकृष्ण दास
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रेस, बनारस।

स्थापनाब्द
फाल्गुन कृष्ण ९
वीरनि० २४७०

विक्रम सं० २०००
१८ फरवरी १९४४



स्व० मूर्तिदेवी, मातेश्वरी सेठ शान्तिप्रसाद जैन

JNANA-PITHA MOORTIDEVI JAIN GRANTHAMALA

SANSKRIT GRANTHA No. 2

Kannad Prantiya Tadapatriya Grantha Soochi

[A descriptive Catalogue of Bhandaras of Jain Matha
Jain Siddhant Bhavan, Siddhant Basadi etc. of
Moodbidri, Jain Matha of Karakal, and
Adinatha Grantha-Bhandar of
Aliyoor etc.]

EDITOR

VIDYABHOOSHAN PANDIT K. BHUJABALI SHASTRI

MOODBIDRI

BHARTIYA JNANA PITHA KASHI

First Edition
500 Copies.

MAGHA VIR SAMVAT 2474
VIKRAMA SAMVAT 2004
JANUARY, 1948

Price Rs. 13/-

BHARATIYA JNANA-PITHA KASHI

FOUNDED BY

SETH SHANTI PRASAD JAIN

IN MEMORY OF HIS LATE BENEVOLENT MOTHER

MOORTI DEVI.

JNANA-PITHA MOORTI DEVI JAIN GRANTHAMALA

IN THIS GRANTHAMALA CRITICALLY EDITED JAIN AGAMIC, PHILOSOPHICAL, PAURANIC, LITERARY, HISTORICAL AND OTHER ORIGINAL TEXTS IN PRAKRIT, SANSKRIT, APABHRANSHA, HINDI, KANNADA AND TAMIL ETC. AVAILABLE IN ANCIENT LANGUAGES, WILL BE PUBLISHED IN THEIR RESPECTIVE LANGUAGES WITH THE TRANSLATION IN MODERN LANGUAGES AND ALSO CATALOGUES OF BHANDARAS, INSCRIPTIONS STUDIES, OF COMPETENT SCHOLARS & POPULAR JAIN LITERATURE WILL BE PUBLISHED.

GENERAL EDITOR OF THE SANSKRIT SECTION

PANDIT MAHENDRA KUMAR JAIN

NYAYACHARYA, JAIN-PRACHIN NYAYA TIRTHA

PROFESSOR OF BAUDDHA DARSHAN

BANARAS HINDU UNIVERSITY,

BANARAS.

SANSKRIT GRANTHA No. 2

PUBLISHER

AYODHYA PRASAD GOYALIYA

Secretary—BHARATIYA JNANA PITHA

DURGAKUND, BANARAS CITY.

Founded in
Falgun Krishna 9
Vir Samvat 2470

Vikram Samvat 2000
18th February, 1944

विषय-सूची

प्रास्ताविक किञ्चित्

धर्म-तीर्थङ्करोंकी पवित्रवाणी गणधरोंने सुनी और उसे ग्रन्थरूपमें गूँथकर अपने शिष्योंको सुनाई। इस तरह श्रुतानुश्रुत परम्परासे उनके दिव्य उपदेश भव्यजनोंको समताका पाठ पढ़ाते रहे। श्रुत-सुनेगए उपदेश स्मृतिद्वारा नूतन पीढ़ीको अलिखित ही प्राप्त होते गए। कालने करवट ली, लोगोंकी स्मरणशक्ति दिनोंदिन क्षीण होने लगी तब युगप्रधान आचार्योंने उन छिन्न विच्छिन्न उपदेशोंको लिपिबद्ध किया। उन सूत्रात्मक उपदेशोंको मूल आधार बनाकर संख्याबद्ध विविधविषयक शास्त्रोंका निर्माण हुआ। किसी भी संस्कृतिका मूर्त आधार उसका साहित्य होता है। साहित्य सुरक्षित रहा संस्कृति जीवित रही, साहित्यके नष्ट होते ही संस्कृति अपने आप विनाशके गर्भमें समा जाती है। अतः पुरातन आचार्योंने इन शास्त्रोंकी सैकड़ों प्रतिलिपियाँ कराके समस्त भारतके कोने कोनेमें पहुँचा दीं।

जैनसंस्कृतिको विदेशियोंसे उतना मोर्चा नहीं लेना पड़ा जितना समान-तन्त्रीय बौद्धसंस्कृति और प्रतितन्त्रीय वैदिक संस्कृतिसे। नास्तिक शब्द तो जैनोंके लिए रूढ़सा कर दिया गया था। मगध देशमें भूलसे भी जानेवाले वैदिकोंको प्रायश्चित्त करना होता था। मागधी अर्धमागधी या प्राकृत भाषाका जिसमें इन तीर्थंकरोंके लोकोदयकारी उपदेश होते थे–उच्चारण करना भी पापका कारण माना जाता था। उस जीवन-मरणके कठिन युगमें इन धर्मप्राण आचार्योंने अपनी संस्कृतिकी निधिको अतिशय मनोयोग पूर्वक रखाया और बढ़ाया।

दक्षिणके भण्डारोंमें दिगम्बर परम्पराके ग्रन्थरत्न बिखरे पड़े हैं। जैनग्रन्थोंको जलाकर पानी गरम करनेवाले प्रतितन्त्रियोंकी कमी नहीं थी। इन्हें राजाश्रय भी प्राप्त था। अतः भण्डाराध्यक्षोंने ताडपत्रीय ग्रन्थोंको बाँध बाँध कर कुएमें डाला। भूमिगृहमें उन्हें अतिसुरक्षित किया। फलस्वरूप सैकड़ों ग्रन्थरत्न कुओंमें पड़े रह गए और सहस्रों कीटकोंका भोजन बन गए। कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, उमास्वामि जैसे युगनिर्माता आचार्योंका पूरा साहित्य हमें उपलब्ध नहीं है। भट्टारक युगमें इन भण्डारोंका बाह्यरक्षण तो रहा पर भीतर ही भीतर वे पुद्गल जीर्ण-शीर्ण और दीमकभक्ष्य बनते गए, जिनपर जीवनकी साधनाका एक एक क्षण मूर्त रूप लिए हुए था। इन लोगोंने तालियाँ तो सम्हालीं पर भण्डारोंको खोलकर उनके जीर्णोद्धारके प्रयत्न नहीं ही किए। कुछके लिए तो ये पूजा प्रतिष्ठा और आर्थिक लाभके साधन बन जानेके कारण अपने सहधर्मी विद्वज्जनोंको भी दुष्प्राप्य बन गए थे। ऋषिकल्प पं० टोडरमलजी जैसे विद्वद्प्रणीको भी इनके स्वाध्यायका अवसर न मिला और वह ग्रन्थराशि धीरे धीरे अस्त-व्यस्त जीर्ण-शीर्ण नष्टप्राय होती गई। यद्यपि बीच बीचमें ऐसे भी प्रयत्न हुए जिनसे इन ग्रन्थोंने प्रकाश और धूप देखी। अस्तु।

आज भी सैकड़ों ग्रन्थ दक्षिणके व्यक्तिगत तथा मठोंके भण्डारोंमें पड़े हुए होंगे जिनमें संस्कृतिके विविध अङ्गोंपर प्रकाश डालनेवाली ज्ञाननिधि उत्कीर्ण होगी। दिगम्बर ग्रन्थोंकी शुद्ध प्रतिलिपियाँ दक्षिणके भण्डारोंमें ही मिलती हैं। क्योंकि इनके प्रमुख आचार्योंने दक्षिण भारतकी ही पुण्यभूमिको गौरवान्वित किया था। वहीं इन ग्रन्थोंकी आद्य प्रतिलिपियाँ हुईं। कन्नड लिपिमें छोटी इ और बड़ी ई अल्पप्राण द और महाप्राण ध, द्ध जैसे संयुक्ताक्षर और पूर्व अनुस्वारमें यथा बंध और बद्धमें कोई अन्तर नहीं होता अतः लिपिकारोंको वर्णविपर्यास होना स्वाभाविक है। अनेकों प्रतियोंमें प्रकरणके प्रकरण नकल करनेसे रह जाते हैं। इसके अनुभूत उदाहरण न्यायकुमुदचन्द्र, राजवार्तिक और न्यायविनिश्चय विवरणकी प्रतियाँ हैं। न्यायकुमुदचन्द्रकी उत्तर प्रान्तीय प्रतियोंमें एक स्थलपर २२ पत्रका पाठ छूट गया और यह छूट प्रायः उत्तरकी प्रतियोंमें चालू रही, पर पूनाकी ताडपत्रीय-प्रतिसे उसकी पूर्ति हुई। राजवार्तिकका जिन ताडपत्रीय प्रतियोंसे सम्पादन किया जा रहा है वे अत्यन्त शुद्ध तथा सटिप्पण हैं। मुद्रित राजवार्तिकमें कई स्थलोंमें पंक्तियाँ छूटी हैं। न्यायविनिश्चयविवरणकी यदि दक्षिण प्रान्तकी

ताडपत्रीय प्रति न मिली होती तो इसके सम्पादनकी हिम्मत मेरी भी नहीं हो रही थी। अतः जिन ग्रन्थोंकी प्रतियाँ उत्तरमें सुलभ भी हैं उनकी शुद्धतर प्रतियोंके लिए दक्षिणकी प्रतियोंकी खोज अत्यावश्यक है।

शोध, खोज और प्राचीन ग्रन्थभण्डारोंकी सूचीका निर्माण आदि ऐसे कार्य हैं जिन्हें तन्त्रसञ्चालककी अपनी संस्कृतिके उद्धारकी अटूट श्रद्धा ही सतत चालू रख सकती है। दाता अपनी श्रद्धाके द्रव्यफूल जिनवाणी-माताके चरणोंमें बखेरकर एक प्रकारसे कृतकृत्य हैं। पर उसकी श्रद्धाके कणोंका यथेष्ट विनियोग तो अन्ततः सञ्चालककी दृढ़ता और उद्धारकबुद्धिपर ही निर्भर है। भगवान् जिनेन्द्रकी सद्‌भक्तिके प्रसादसे हम सबको वह बल और सूझ मिले जिससे इस कार्यको उद्धारकबुद्धिसे आगे बढ़ा सकें।

भद्रजीवी साहु शान्तिप्रसादजीकी अटूट श्रद्धा और उन्मुक्तहस्तता तथा उनकी तद्रूपा धर्मपत्नी सौ० रमाजीकी समन्वयशीलता और स्थिरता अभिनन्दनीय और अनुकरणीय है। आशा है कि वे अपने सुदीर्घ जीवनमें इस ज्ञानाङ्कुरको विवेकवारि और सतत लगनसे पल्लवित, पुष्पित और फलित करेंगे। इस ग्रन्थके विद्वान् सम्पादक पं० के० भुजबली शास्त्रीकी अपनी व्यवस्था, कार्यतत्परता और संस्कृतिनिष्ठासे समाज सुपरिचित है। उनकी ही कार्यतत्परताका परिणाम है जो ज्ञानपीठकी मूडबिद्री शाखाने दो वर्षमें ही पर्याप्त कार्य किए जिनमें यह सूची मुख्य है। इस सूचीनिर्माणके फलस्वरूप विभिन्न विषयके करीब १२५ अप्रकाशित ग्रन्थोंकी प्रतिलिपियोंका पता लगा। जिनमें अनेक तो अन्यत्र अलभ्य और एकमात्र प्रतियाँ हैं। अनेकों शुद्धतम प्रतियोंकी खोज हुई जिनसे इतिहास और संशोधनप्रेमियोंकी सामग्रीमें पर्याप्त वृद्धि हुई। हमें आशा है कि शास्त्रीजीकी शक्तिका इस दिशामें आगे भी उपयोग होगा और हमें अपनी खोई हुई ज्ञाननिधिके दर्शन हो सकेंगे। शास्त्रीजी तथा शास्त्रीजीके सहयोगी हमारे विशेष धन्यवादके पात्र हैं।

सूचीकी छपाई काशीमें हुई है। यह सम्भव नहीं हुआ कि इसके प्रत्येक प्रूफ मूडबिद्री भेजे जाते अतः कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं। उन त्रुटियोंके उत्तरदायी हम हैं। इस कठिन कालमें जो हो सका वह आप सबके सामने है। इस सूचीके सम्पादक शास्त्रीजीने अपनी प्रस्तावनाके अन्तमें आशा की है कि ज्ञानपीठ इस सूचीनिर्माण के कार्यको अवश्य आगे चलावे। ज्ञानपीठके संस्थापककी श्रद्धामें कमी नहीं है वे जल्दीसे जल्दी इस सांस्कृतिक यज्ञको सम्पन्न देखना चाहते हैं। सञ्चालक भी यथारुचि प्रयत्नशील हैं कि परिस्थितियाँ अनुकूल होते ही कार्यको क्रमशः आगे बढ़ाया जाय। इस भीषण संक्रमणकालमें हमें संस्कृतिके प्राणोंकी सुरक्षाके लिए अति सतर्कतासे सतत जागरूक रहकर कर्मक्षेत्रमें डट जाना है। वस्तुतः ऐसे ही कार्य ज्ञानपीठकी देन कहे जा सकते हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ
विजयादशमी
२४।१०।४७

—महेन्द्रकुमार जैन
ग्रन्थमाला सम्पादक

प्रकाशन व्यय

३०००)	सूचीनिर्माण तथा सम्पादन	३००)	प्रूफशोधन
५६०)	कागज	२८५)	व्यवस्था
११२५)	छपाई	५००)	भेंट
३००)	बाइंडिग	१५००)	कमीशन
१५०)	रेपर चित्र		
		७७२०)	

५००) प्रति   लागत प्रति १५।≡)   मूल्य १३) रु०

प्रकाशकीय

दक्षिण प्रान्तीय अनुपलब्ध और अप्रकाशित ग्रन्थोंकी शोध-खोजकी भावनासे प्रेरित होकर काशीमें ज्ञानपीठ स्थापित होनेके दो माह बाद ही अप्रैल १९४४ में ज्ञानपीठकी एक शाखा मूडबिद्रीमें भी खोल दी गई। सौभाग्यसे उसी प्रान्तके प्रसिद्ध और योग्य विद्वान् विद्याभूषण पं० के० भुजबली शास्त्रीकी सेवाएँ प्राप्त हो गईं। अतः उनकी देख रेखमें पं० बी० लोकनाथ शास्त्री, पं० पद्मनाभ शास्त्री, पं० एस० चन्द्रराजेन्द्र साहित्य शास्त्री और पं० एम० पी० भोजराज पोणीने दो वर्ष निरन्तर परिश्रम करके पाँच ग्रन्थभण्डारोंकी जाँच पड़ताल की, जिसके फलस्वरूप १२५ अप्रकाशित ग्रन्थोंकी प्रतिलिपियोंका पता चला और ३५३८ ताडपत्रीय और हस्तलिखित शास्त्रोंकी सविवरण प्रस्तुत ग्रन्थ सूची तैयार हुई।

इन दो वर्षोंमें मूडबिद्री शाखामें ४४५२॥) व्यय हुए। ५ ग्रन्थ भण्डारोंकी जाँच पड़तालके अतिरिक्त दशभक्त्यादि संग्रह (पृ० १००) का सम्पादन हुआ। ८ ग्रन्थों का मूल प्रतिसे मिलान किया गया, पोन्न और रन्न कविका परिचय लिखा गया।

शाखा स्थापित करते समय भावना थी कि दक्षिण प्रान्तके समस्त ग्रन्थ भण्डारों का परिश्रमी और योग्य विद्वानों द्वारा निरीक्षण कराके एक वृहत् तालिका बनवाई जाय। और उनमेंसे उपलब्ध अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अधिकारी विद्वानोंसे सम्पादित कराके प्रकाशित किए जाएँ। किन्तु हृदयस्थित भावनाएँ पूर्ण न हो सकीं; निम्न बाधाएँ मार्ग रोककर खड़ी हो गईं जिसके कारण दो वर्ष बाद कुछ समयके लिये शाखा बन्द कर देनी पड़ी।

(१) दक्षिणप्रान्तीय ज्ञानपीठ शाखा द्वारा सम्पादित ग्रन्थ कन्नड भाषामें होनेके कारण उनके मुद्रण और विक्रयका प्रबन्ध उसी प्रान्तमें करना पड़ता। काग़ज़का अभाव, प्रेसकी असुविधा और उस प्रान्तका विक्रय आदिका अनुभव न होनेसे प्रकाशनका साहस नहीं हुआ। मुद्रण, प्रचार, विज्ञापन, भेंट, बिक्री आदिका कार्य इतना बढ़ता कि हमारे सम्हाले न सम्हलता।

(२) ग्रन्थसूची आदिका कार्य भी इतना व्यय-साध्य मालूम हुआ कि कई पुरातत्त्वप्रेमी और सहयोगी विद्वानोंकी सम्मतियों और अपनी समाजकी रुचिको देखते हुए उत्साह नहीं हुआ कि सूची-निर्माणमें इतना अधिक व्यय किया जाय। क्योंकि हमारे समाजकी प्रथम तो ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रकाशनकी ओर रुचि नहीं है और कदाचित् कुछ महानुभावोंको है भी तो उनमें से अधिकांश मुफ्त साहित्य भेजनेकी निरन्तर प्रेरणा करके पारमार्थिक प्रकाशन संस्थाओंका उत्साह बढ़ाते रहते हैं (?) जिस समाजमें महाधवल जैसे दुष्प्राप्य सिद्धान्तग्रन्थ मुफ्त पढ़नेकी अभिलाषा बलवती हो, उसके लिये इतना अधिक व्यय करके सूचीपत्रके कार्यको जारी रखनेका साहस हमें नहीं हुआ और इन दो वर्षोंमें जिन ग्रन्थ भण्डारोंकी तालिका तैयार हुई, वही प्रेसमें दे दी गई।

ज्ञानपीठ महत्त्वपूर्ण भव्य प्रकाशनके लिये निरन्तर प्रयत्नशील है, परन्तु जब कभी अनुभवी और वयोवृद्ध गुरुजनोंसे सुननेमें आता है कि अधिकसे अधिक उपयोगी ग्रन्थोंकी भी ५०० प्रतियाँ १५–२० वर्षोंमें कठिनतासे निकल पाती हैं और उसमें भी अधिकांश भेंटस्वरूप प्राप्त करके ही जिनवाणी माताका उद्धार देखना चाहते हैं तो उत्साह पर पाला-सा पड़ जाता है।

ज्ञानपीठके संस्थापकोंकी ओरसे पुरातत्त्व साहित्योद्धार और नवीन उपयुक्त सुरुचिपूर्ण साहित्यके निर्माण और प्रकाशनमें लाखों रुपये व्यय किये जा सकते हैं किन्तु वह लाखोंकी लागतका साहित्य पानीकी तरह मुफ्त बहा दिया जाय, इससे बढ़कर साहित्यका और रचयिताका अपमान और क्या हो सकता है? आज हमारी समाजमें इसीलिये गौरवयुक्त सुरुचिपूर्ण साहित्यका अभाव-सा है क्योंकि हमारे यहाँ ग्राहक उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। जिस साहित्यके जितने अधिक ग्राहक होंगे, वह उतना ही विकसित और सुलभ होगा।

ज्ञानपीठ-प्रकाशनके सम्बन्धमें कई विद्वानोंने सम्मति दी है कि पुस्तकोंका मूल्य लागतसे तिगुना रखा जाय, ताकि लेखकों, सम्पादकों, अनुवादकों और प्रूफ़ संशोधकोंको यथेष्ट पारिश्रमिक और पारितोषिक दिया जा

सके। और प्रकाशनके धरातलको ऊँचा किया जा सके। किन्तु अधिक महानुभावोंका संकेत ग्रन्थोंका मूल्य लागतसे भी कम रखनेकी ओर है। परन्तु ज्ञानपीठके संचालक न इसे व्यापारिक संस्था बनाना चाहते हैं, न इसे खैराती संस्थाका ही रूप देना चाहते हैं। वे इसे एक आदर्श और स्वावलम्बी संस्था बनानेकी अभिलाषा रखते हैं। ताकि ज्ञानपीठ अपने पाँवों पर खड़ी होकर उत्तमोत्तम साहित्यका सृजन और प्रकाशन कर सके। न वे लेखकों, सम्पादकोंके श्रमके शोषणके पक्षमें हैं, न वे इतना अधिक ही देना चाहते हैं कि वह ग्राहकोंका बोझा बन जाय।

अनुसन्धानात्मक साहित्यके मूल्यकी बाजारू सस्ते साहित्यसे तुलना करना मोतियों का गुंजाके साथ कीमत आँकना है। संस्कृत, प्राकृतके ग्रन्थोंका क प्रतियोंसे पाठान्तर फिर अनेक ग्रन्थोंसे टिप्पण सहित सम्पादन ५-६ वार प्रत्येक फार्मका प्रूफ संशोधन आदि सब ऐसे व्ययसाध्य कार्य हैं जिन्हें अनुसन्धानप्रेमी ही जान सकते हैं। इस तरहके खोज पूर्ण ग्रन्थ कई सहयोगी संस्थाओं द्वारा पृ० २४ मूल्य ६), पृ० १५० मू० २०), पृ० ६०० मूल्य ५) में बिक रहें हैं। उनका यह मूल्य कुछ अधिक नहीं है क्योंकि इनके प्रकाशनमें काफी श्रम और व्यय हुआ है।

ज्ञानपीठका प्रकाशन भी हम उत्तरोत्तर गौरवयुक्त बनानेके अभिलाषी हैं। जिस तरहका कलापूर्ण प्रकाशन हम करना चाहते हैं, वह हमारी अभिलाषा कई कारणोंसे पूरी नहीं हो पा रही है। परन्तु समय अनुकूल होते देर नहीं लगेगी और हम अवश्य अपनी आकांक्षाओंको पूर्ण होते देखेंगे।

सम्पादन और प्रकाशनमें यथेष्ट व्यय होने पर भी ग्रन्थोंका मूल्य सुलभ हो सकता है यदि पाठक मुफ्त न पढ़नेकी प्रतिज्ञा कर लें। यह मुफ्त पढ़नेकी मनोवृत्ति उत्कृष्ट साहित्यके लिए दीमक है। जिस साहित्यके ग्राहक जितने अल्प होंगे, वह उतना ही अधिक मँहगा होगा। गीता प्रेसका साहित्य इसीलिए इतना सस्ता है कि उसके ग्राहकोंकी संख्या बहुत अधिक है। प्रस्तुत पुस्तकका मूल्य १३ रुपयेकी बजाय लगभग चार रुपये हो सकता था, यदि यह ५०० न छपकर २००० छपी होती। परन्तु अपने समाजमें वह वर्ग जो ग्रन्थ खरीद कर पढ़ सकता है, उसके पास अवकाश नहीं और न उसे इस तरहके कार्योंकी ओर आकर्षण ही है। अधिकांश संस्थाएँ और महानुभाव भेंट स्वरूप चाहते हैं और साधारण पाठक इस तरहके साहित्यको समझ नहीं सकनेके कारण नहीं खरीद पाते, ऐसी स्थितिमें जिस ग्रन्थकी ५०० प्रतियाँ छपवा ली जाती है, तो वह भी १५ २० वर्षोंमें निकल पाती हैं, ऐसा पुराने साहित्य सेवियों का अनुभव है।

महत्त्वपूर्णउपयोगी ग्रन्थोंके उद्धार और सुलभ-प्रसारके लिये हमारी सम्मतिमें निम्न बातें आवश्यक हैं:—

(१) जैन मन्दिरों, सरस्वतीभण्डारों, पुस्तकालयोंमें आवश्यकीय उपयोगी ग्रन्थोंका अधिक से अधिक संग्रह खरीद कर किया जाय। प्रकाशन संस्थाओंसे मुफ्त लेकर भण्डार न भरे जाएँ।

(२) वे दानी महानुभाव जो चोर-लुटेरोंको प्रोत्साहन देनेके लिये मन्दिरोंमें सोने चांदीके बर्तन और धन देते हैं, व्रत, उद्यापन, विवाह आदिके अवसरों पर जैनेतर विद्वानों, जैनमन्दिरों एवं संस्थाओंको ग्रन्थ भेट करें।

(३) पाठक प्रतिज्ञा कर लें कि ग्रन्थ मुफ्त न माँगकर मोल लेकर ही पढ़ेंगे और यदि मोल लेनेकी सामर्थ्य न हुई तो स्थानीय मन्दिरों, पुस्तकालयोंके प्रबन्धकोंको प्रेरणा करके ग्रन्थ खरीदवाएँगे और वहाँसे लेकर पढ़ेंगे।

आश्चर्य है कि हम वीतराग भगवानके चारों ओर सोना-चांदी पुतवाते है, और चँवर-छतर लगाते हैं और दर्शन करते समय कुछ न कुछ अवश्य चढ़ाते हैं। किन्तु जिनवाणी माताको खाली हाथ माथा टेकनेमें ही कर्तव्यकी इतिश्री समझते हैं। काश, हम वीतरागको तो वीतराग ही रहने देते और वीतरागकी वाणीको इतना अलंकृत कर देते कि उसकी ज्योति से संसार जगमगा उठता। हम जैन वीतराग भगवान् के सामने लौंग, बादाम न चढ़ाकर सरस्वती भण्डार में एक-एक पैसा भी रोज चढ़ायें तो कमसे कम २००० रु० दैनिक जमा हो सकते हैं, जो ग्रन्थागारोंके स्थापन के लिये बहुत बड़ी निधि है।

डालमिया नगर (विहार)
१० अक्तूबर १९४७

अयोध्याप्रसाद गोयलीय
मंत्री

प्रस्तावना

जैनवाङ्मय पर एक दृष्टि—

यद्यपि जैन वाङ्मय बहुत विशाल है और यह प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, कन्नड एवं तमिल आदि कई भागों में विभक्त है। पर प्रस्तुत ग्रन्थ-तालिकामें प्रधानतः प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड इन तीन वाङ्मय के ग्रन्थ ही सम्मिलित हैं, इसलिये यहाँ पर सिर्फ इन्हीं वाङ्मयों पर दृष्टि डालना मेरा अभीष्ट है। अवकाशाभाव भी इसका अत्यन्त कारण है। विज्ञ पाठकोंको इतना अवश्य जान लेना होगा कि दक्षिण भारतकी भाषाओंमें तमिल तथा कन्नड प्रधान हैं और इन दोनों भाषाओं को साहित्यिक रूप देने वाले जैन (दिगम्बर) ही हैं। अस्तु, अब पाठकोंका ध्यान प्रस्तुत विषय पर आकर्षित करता हूँ।

प्राकृत वाङ्मय—यह भाषा सुप्राचीन कालमें यहाँके आर्योंकी बोल-चालकी भाषा थी। इसी भाषामें भगवान् महावीर एवं गौतमबुद्धने अपने पुनीत सिद्धान्तोंका उपदेश और प्रचार किया था। इसी भाषाको जैन और बौद्ध विद्वानोंने अपना कर विविध विषयक विपुल साहित्यको जन्म दिया। इसी भाषाके मौलिक साहित्यकी भित्ति पर संस्कृत भाषामें अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थोंका निर्माण हुआ। विद्वानोंकी राय है कि संस्कृतके नाटक-साहित्यमें संस्कृत-भिन्न जिस भाषाका प्रयोग हमें दृष्टिगोचर होता है, जिस भाषासे हमारे भारतवर्षकी वर्तमान अन्यान्य आर्य-भाषाओंकी उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारतवर्षके कई प्रदेशोंमें भिन्न-भिन्न रूपमें बोली जाती हैं—इन सभी भाषाओंका सामान्य नाम प्राकृत है। क्योंकि ये सभी भारतीय भाषाएँ एकमात्र प्राकृतके भिन्न-भिन्न रूपांतर हैं, जो कि काल, देश आदि अन्यान्य कारणोंसे भिन्न-भिन्न रूपोंमें परिवर्तित हुए हैं। जैसे अर्धमागधी प्राकृत, पालि प्राकृत, पैशाची प्राकृत, सौरसेनी प्राकृत, महाराष्ट्री प्राकृत और अपभ्रंश प्राकृत आदि।

सर ग्रियर्सनने वैदिक काल एवं उसके पूर्वकी सभी बोल-चालकी भाषाओंको प्राथमिक प्राकृत माना है। प्राकृत भाषा-समूहकी यही पहली श्रेणी है। इसका समय ई० पूर्व २००० से ई० पूर्व ६०० तक निर्दिष्ट है। प्रथम श्रेणीकी ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर एवं व्यंजनादिके उच्चारणमें तथा विभक्तियोंके प्रयोगमें वैदिक भाषाके ही समान थीं। इसीसे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल कहलाती हैं। वैदिक युगमें जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ बोल-चालके रूपमें प्रचलित थीं उनमें परवर्ति-कालमें अनेक परिवर्तन हुए। जैसे (१) ऋ, ॠ आदि स्वरोंका लोप होना (२) शब्दोंके अंतिम एवं संयुक्त व्यंजनों का रूपांतर होना, (३) विभक्ति और वचन समूहका लुप्त होना आदि। जब इन परिवर्तनोंसे उक्त कथ्य भाषाएँ अधिक मात्रामें रूपान्तरित हुईं तब द्वितीय श्रेणीकी प्राकृत भाषाओंका जन्म हुआ। इस श्रेणीकी ये प्राकृत भाषाएँ भगवान् महावीर और गौतम बुद्धके समय-से अर्थात् ई० पूर्व छठी शताब्दीसे लेकर ई० सन् ९ मी अथवा १० मी शताब्दी तक प्रचलित रहीं। श्री महावीर एव बुद्धके समयमें उपर्युक्त सभी प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ द्वितीय श्रेणीके आकारमें भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें कथ्य भाषाके तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्त तथा उपदेशका प्रचार इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओंमेंसे एकमें किया था। बल्कि बुद्धने अपने शिष्योंको यही आदेश दिया था कि मेरा उपदेश संस्कृत-बद्ध न कर इस प्रचलित प्राकृत भाषामें ही करना। इसका मुख्य कारण यही मालूम होता है कि साधारणसे साधारण जनता भी उनके सिद्धान्तोंसे लाभ उठावें। वास्तवमें यह मार्ग है भी अधिक लाभकारी। इसका रहस्य जैन भी खूब जानते थे। इसीका परिणाम है कि वे भारतके भिन्न-प्रदेशोंमें जैसे-जैसे फैलते गये वैसे वैसे वहाँकी प्रान्तीय भाषाओंमें नये-नये साहित्योंका निर्माण करते गये। आर्य-भाषाओंको कौन कहे! तमिल, कन्नड जैसी द्राविड साहित्योंके भी जन्मदाता ये ही कहे जा सकते हैं। इन भाषाओंमें प्राचीन से प्राचीन व्याकरण, अलंकार, छन्द, काव्य एवं नीति

आदि साहित्यके मौलिक अंगोपांगकी रचना इन्हींकी उपलब्ध होती है। इसीसे इन प्रान्तोंमें जैन सिद्धान्तका प्रचार भी अधिक है। इन प्रान्तोंके जैनेतर विद्वान् भी जैन सिद्धान्तोंसे अच्छे परिचित हैं। वास्तवमें निष्पक्षपात विचारसे काम लिया जाय तो भाषा-सेवाकी दृष्टिसे जैनोंको प्रथम स्थान मिलना समुचित है।

अस्तु, इस तरह कथ्य प्राकृत भाषाओंका साहित्यिक भाषाओंमें परिणत होनेका सूत्रपात यहीं हुआ। इसके फलस्वरूप पश्चिम मगध और सूरसेन देशके मध्यवर्ती प्रदेश में प्रचलित कथ्य भाषासे जैनोंकी अर्ध मागधी भाषा तथा पूर्व मगधमें प्रचलित लोकभाषासे बौद्ध धर्म ग्रन्थोंकी पालि भाषा उत्पन्न हुई। साथ ही साथ इसी द्वितीय श्रेणीकी प्राकृत भाषासे प्रायः पांचवीं शताब्दीके पूर्व, भिन्न-भिन्न प्रदेशोंकी अपभ्रंश भाषाओंका भी जन्म हुआ। द्वितीय श्रेणीकी भाषामें चतुर्थी विभक्तिका, सब विभक्तियोंके द्विवचनों और आख्यातकी अधिकांश विभक्तियोंका लोप होने पर भी विभक्तियोंका प्रयोग अधिक मात्रामें वर्तमान था। इसीसे प्रथम श्रेणीकी प्राकृत भाषाके समान इस श्रेणीकी प्राकृत भाषा भी विभक्ति-बहुल कहलाती है।

सर ग्रियर्सनका सिद्धान्त है कि आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओंकी उत्पत्ति द्वितीय श्रेणीकी प्राकृत भाषासे–खास कर उसके शेष भागमें प्रचलित अन्यान्य अपभ्रंश भाषाओंसे हुई है और ये ही आधुनिक भाषाएँ तृतीय श्रेणीकी प्राकृत भाषा हैं। इन भाषाओंकी उत्पत्तिका समय ई० सन् १० वीं शताब्दी माना गया है। इनम अधिकांश विभक्तियोंका लोप हुआ है और भाषाओंकी प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियोंके बोधक स्वतंत्र शब्दोंका व्यवहार हुआ है। इसीसे ये विश्लेषणशील भाषाएँ कही जाती हैं।

साधारणतया लोगोंकी यही धारणा है कि संस्कृत भाषासे ही द्वितीय श्रेणीकी सभी प्राकृत भाषाएं एवं आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं। बल्कि कई प्राकृत वैयाकरणोंने भी इस मतको पुष्ट किया है। पर वास्तवमें ऐसा नहीं है। क्योंकि आठवीं शताब्दीके विद्वान् वाक्पतिराजने 'गउडवहो' नामक महाकाव्यमें एवं नवमी शताब्दीके विद्वान् कविवर राजशेखरने अपनी 'बालरामायण' में प्राकृत भाषा ही सर्व भाषाओंकी जननी है इस सिद्धान्तको डंकेकी चोटसे प्रमाणित कर दिया है।* बल्कि प्राचीन अन्यान्य जैन अंग ग्रन्थोंसे भी प्राकृत भाषाकी सर्वप्राचीनता सिद्ध हो जाती है। प्राकृत वैयाकरणोंके सिद्धान्तसे प्राकृत भाषाके शब्द तीन प्रकारके माने गये हैं–(१) तत्सम (२) तद्भव (३) देशज। जो शब्द संस्कृत एवं प्राकृतमें एकरूप हैं वे तत्सम या संस्कृत-सम कहलाते हैं। जैसे आगम, उत्तम, एरण्ड, किंकर, छल, तिमिर, दल, धवल आदि। जो शब्द संस्कृतसे वर्ण-लोप, वर्णागम या वर्णपरिवर्तनके द्वारा उत्पन्न हुए हैं, उन्हें तद्भव अथवा संस्कृतभव कहते हैं। जैसे–आर्य = आरिअ, इष्ट = इट्ठ, उद्गम = उग्गम, गज = गअ, धर्म = धम्म, ध्यान = ज्झाण, नाथ = णाह, मेघ = मेह आदि। जिन शब्दोंका संस्कृतके साथ कोई सादृश्य या संपर्क नहीं हैं उनको देशज कहते हैं। जैसे–जच्च (पुरुष) डाल (शाखा) तोमरी (लता) दाणि (शुल्क) भुण्ड (शूकर) लंच (कुक्कुट) रत्ति (आज्ञा) धयण (गृह) आदि। अपने साहित्यदर्पणके अलंकारप्रकरणमें विश्वनाथ कविने भाषासम अलंकारका यह–

"मंजुलमणिमंजीरे कलगम्भीरे विहारसरसीतीरे। विरसासि केलिकीरे किमालि धीरे च गंधसारसमीरे।।"

जो उदाहरण दिया है, वह तत्समके लिये एक सुन्दर निदर्शन है। प्राकृत वैयाकरणोंका अभिप्राय है कि उपर्युक्त तत्सम शब्द संस्कृतसे ही सर्वदेशीय प्राकृतमें आ मिले है। दूसरे प्रकारके तद्भव शब्द संस्कृतसे उत्पन्न होने पर भी क्रमशः भिन्न-भिन्न देशमें भिन्न-भिन्न रूपको प्राप्त हुए हैं। अब रहा तीसरा देशज शब्द। ये वैदिक या लौकिक संस्कृतसे उत्पन्न न होकर भिन्न-भिन्न देशोंमें प्रचलित देशी भाषाओंसे लिये गये हैं।

द्वितीय श्रेणीकी जिन प्राकृत भाषाओंने साहित्य एवं शिलालेखोंमें स्थान पाया है, उन प्राकृत भाषाओंके प्रधान भेद निम्नलिखित तीन मुख्य कालविभागोंमें बाँटे जा सकते हैं—

(१) प्रथम युग–ई० पूर्व ४०० से ई० सन् १०० तक, (२) मध्य युग–१०० से ५०० तक, (३) शेष युग ई० सन् ५०० से १००० तक। श्वेताम्बर जैन अंग ग्रन्थोंकी अर्धमागधी एवं इनसे भिन्न प्राचीन सूत्र तथा

* देखें–'भास्कर' भाग ३ किरण ३ पृष्ठ ११४।

'पउम चरिउ' आदि ग्रन्थोंकी जैन महाराष्ट्री भाषा प्रथम युगमें, दिगम्बर जैन गन्थोंकी सौरसेनी और परवर्त्ती कालके श्वेताम्बर ग्रन्थोंकी जैन महाराष्ट्री भाषा मध्य युगमें, भिन्न-भिन्न प्रदेशोंकी परवर्तिकालीन अपभ्रंश भाषाएँ शेष युगमें ली गयी हैं। प्राकृतके निम्न-लिखित दस भेद माने गये हैं।

(१) पालि (२) पैशाची (३) चूलिका-पैशाची (४) अर्ध- मागधी (५) जैन महाराष्ट्री (६) अशोकलिपि (७) सौरसेनी (८) मागधी (९) महाराष्ट्री (१०) अपभ्रंश। इनमेंसे प्रत्येकका परिचय देनेसे इसका कलेवर बढ़ जायगा। इसलिये यहाँ पर जैन वाङ्मयसे सम्बन्ध रखनेवाली अर्धमागधी, जैन महाराष्ट्री, जैन सौरसेनी एवं अपभ्रंश भाषाओंका ही संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

(१) अर्धमागधी–दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनोंका सिद्धान्त है कि भगवान् महावीर अपना धर्मोपदेश अर्धमागधी भाषामें ही देते रहे और उनका यह उपदेश दीर्घकाल तक शिष्यपरम्परासे कण्ठपाठ-द्वारा ही संरक्षित रहा। भगवान् महावीरके निर्वाणसे लगभग दो सौ वर्षके बाद सम्राट् चन्द्रगुप्तके शासनकालमें मगध देशमें बारह वर्षोंका भीषण दुर्भिक्ष पड़ा था। उस समय भद्रबाहु स्वामीके नेतृत्वमें एक महान् जैन मुनिसंघको अपने चारित्रकी रक्षाके लिये ही बहु दूरवर्ती दक्षिण देशमें आना पड़ा। क्योंकि इस दुर्वह मुनिचारित्रकी रक्षाके लिये यह दक्षिण देश बहुत उपयुक्त रहा है। उधरका अवशिष्ट मुनिसंघ उस भीषण दुर्भिक्ष कालमें सूत्र-ग्रन्थोंका परिशीलन भलीभाँति न कर सकनेके कारण उन सूत्रोंको भूलसा गया था। इसके फलस्वरूप उक्त दुर्भिक्षके बाद पाटलीपुत्र (पटना) में मगध-प्रदेशस्थ इस अवशिष्ट मुनि-संघने एकत्रित होकर जिस जिस साधुको जिस जिस अंग ग्रन्थका जो जो अंश जिस जिस रूपमें याद रह गया था उस उस साधुसे उस उस अंग ग्रन्थके उस उस अंशको उस उस रूपमें प्राप्त कर ग्यारह अंगोंका संकलन किया। पर श्वेतांबर ग्रन्थोंके कथनानुसार ही ये अंग ग्रन्थ महावीर-निर्वाणके बाद ९८०, ई० सन् ४५४ में वल्लभी (वर्तमान काठियावाड) में श्री देवर्द्धिगणि क्षमा-श्रमण के द्वारा वर्तमान आकारमें लिपिबद्ध हुए थे। एक बात यह है कि उपर्युक्त पाटलीपुत्रके संघने जिन ग्यारह अंगोंका संकलन किया था उन अंगोंको अपूर्ण एवं विकृत मान कर दक्षिण-प्रवासी मुनिसंघने स्वीकार नहीं किया। पर साथ ही साथ उस संघने स्वयं भी उन पूर्व अंग ग्रन्थोंका संकलन करनेकी चेष्टा भी नहीं की। इसका परिणाम यह हुआ कि उस संघको इन अंग ग्रंथोंसे सदाके लिये हाथ धो बैठना पड़ा। कुछ विद्वानोंका अनुमान है कि उत्तरका मुनिसंघ जब अंगगत अचेलक आदि शब्दोंका अर्थ दुर्भिक्षके उपरांत 'ईषच्चेलक' (थोड़ा कपड़ा) आदि करने लगा तब अपने मूल सिद्धान्तमें धक्का पहुँचता देख कर दक्षिणका मुनिसंघ संकलित उन ग्रन्थोंको स्वीकार करनेको सहमत नहीं हुआ। अगर वास्तवमें यह बात सच्ची है तो मानना पड़ेगा कि उस दक्षिणके मुनिसंघने भारी भूल की। बल्कि बचे-खुचे अपने उन ग्रन्थोंको सर्वथा परित्याग न कर अपने मूल सिद्धान्तके अनुकूल ही वह उसकी व्याख्या करता। आप हिन्दुओंके सर्व प्राचीन एवं पवित्र ग्रन्थ वेद को ही लीजिये। सुप्राचीन कालसे आज तक इसकी अनेक टीकाएँ लिखी गयीं। साथही साथ इन टीकाओंमें मतभेदकी भी कमी नहीं है; फिर भी मौलिक अर्थ को मानने वाली हिंदू जातिने मतभेदसे घबड़ा कर वेदका परित्याग नहीं किया। अस्तु, यहाँ पर प्रायः यह स्पष्ट करनेकी जरूरत नहीं ह कि दक्षिणका वही संघ पीछे दिगम्बरके नामसे और उत्तरका संघ श्वेताम्बरके नामसे प्रसिद्ध हुए।

प्रो० जैकोबी आदि विद्वानोंके मतसे श्वेतांबर सूत्रग्रन्थोंमें महाराष्ट्री प्राकृतका गहरा प्रभाव पड़ा है। अर्धमागधी और आर्ष प्राकृत वास्तवमें एक ही चीज है। जैकोबी प्रभृति कुछ पंडितोंने इन्हें जो भिन्न-भिन्न मान लिया है, यह उनका भ्रममात्र है। साथ ही साथ यह भी जान लेना आवश्यक है कि अर्धमागधी, महाराष्ट्री प्राकृतसे पृथक् एवं प्राचीन है। प्रो० जैकोबीने प्राचीन जैन सूत्रोंकी भाषाको प्राचीन महाराष्ट्री कह कर जो इसका जन महाराष्ट्री नाम दिया है–इनके इस सिद्धान्तका डॉ० पिश्चेल (Pischel) ने अपने प्राकृत व्याकरणमें सयुक्तिक खण्डन किया है। नाटकीय अर्धमागधी और जैन सूत्रोंकी अर्धमागधी एक नहीं है। मार्कण्डेय आदि प्राकृत वैया-करणोंने अर्धमागधीका जो लक्षण दिया है वह नाटकीय अर्धमागधीका है न कि जैन सूत्रोंकी अर्धमागधीका। अर्ध-

---

१ देखें–'स्थविरावली–चरित,' सर्ग ६।

मागधीका मूल उत्पत्तिस्थान ऊपर पश्चिम मगध और सूरसेन देशका मध्यवर्ती प्रदेश बतलाया जा चुका है। परन्तु जैन अर्धमागधीमें मागधी एवं सौरसेनी भाषाके विशेष लक्षण नहीं पाये जाते हैं। प्रो० जैकोबी आदि विद्वानों के कथनानुसार महाराष्ट्रीके साथ ही इसका अधिक सादृश्य दृष्टिगोचर होता है। इसीसे कोई कोई इसके उत्पत्ति-स्थानके संबंधमें शंका उपस्थित करते हैं। प्रो० जैकोबी जैन सूत्रोंकी भाषा और मथुराके शिलालेखों (ई० सन् ८३ से १७६) की भाषासे यह अनुमान करते हैं। जैन अंग ग्रन्थोंकी अर्धमागधीका काल चतुर्थ शताब्दीका शेष भाग अथवा तृतीय शताब्दीका प्रथम भाग है।

(२) जैन महाराष्ट्री–जैन सूत्र ग्रंथोंके अतिरिक्त श्वेतांबर जैन विद्वानोंके द्वारा प्रणीत अन्य ग्रंथोंकी प्राकृत भाषाको जैन महाराष्ट्री नाम दिया गया है। इस भाषामें महापुरुषोंकी जीवनी (चरित्र), दर्शन, ज्योतिष, भूगोल, काव्य एवं स्तोत्र आदि विषयोंका विशाल साहित्य भरा पड़ा है। प्राचीन प्राकृत वैयाकरणोंने जैन महाराष्ट्रीके नामसे किसी भिन्न भाषाका निर्देश नहीं किया है। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानोंने काव्य, नाटकादि ग्रंथोंमें महाराष्ट्रीका जो रूप मिलता है, उससे श्वेताम्बर ग्रंथोंकी भाषामें पर्याप्त पार्थक्य देखकर इसे जैन महाराष्ट्री नाम दिया है। इसमें प्राकृत व्याकरणमें प्रतिपादित महाराष्ट्रीका लक्षण विशेष रूपसे समन्वित होते हुए भी जैन अर्धमागधीका बहुत कुछ प्रभाव देखा जाता है। पयन्ना ग्रंथ, निर्युक्तियाँ, पउमचरिउ, उपदेशमाला, कई भाष्यग्रंथ, निशीथचूर्णि, धर्मसंग्रहणी, प्रवचनसारोद्धार, उपदेशरहस्य और भाषारहस्य आदि इसी जैन महाराष्ट्रीके कुछ उदाहरणभत हैं

(३) जैन सौरसेनी–डॉ० पिश्चेलके मतसे दिगंबर जैनोंके प्रवचनसार, कार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि ग्रंथोंकी भाषा जैन सौरसेनी है। इस बातको कुछ जर्मन विद्वान् नहीं मानते। परन्तु साथ ही साथ इस विषयमें उन लोगोंने जो कुछ अनुसंधान किया है, उसका परिणाम आज तक कुछ भी नहीं निकला। अब तो इसका फलितांश भविष्यके गर्भमें ही समझना चाहिये। अतः जब तक इस डॉ० पिश्चेलके मतके विरुद्ध कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलते हैं, तब तक इन्हींके मतको मानना समुचित होगा। यह जैन सौरसेनी अर्धमागधी और प्राकृत व्याकरणोंमें निर्दिष्ट सौरसेनीके मिश्रणसे बनी हुई है। जैन सौरसेनी जैन महाराष्ट्रीकी अपेक्षा अर्धमागधीसे अत्यधिक निकटता रखती है। दोनोंकी प्रकृति (मूल) एक होना ही उसका प्रधान कारण है। राजाराम कॉलेज कोल्हापुरके अर्धमागधीके प्रोफेसर मित्रवर ए० एन० उपाध्येने 'रायचंद्र जैन शास्त्रमाला' बंबई द्वारा प्रकाशित 'प्रवचनसार' की गवेषणापूर्ण अपनी भूमिकामें सहेतुक प्रकट किया है कि प्रवचनसार-जैसे पुरातन और सौरसनी भाषाके ग्रंथ जो कि देशी शब्दोंसे रहित है उन प्रचलित श्वेताम्बरीय आगम ग्रंथोंसे प्राचीन है। क्योंकि आगम ग्रंथोंमें तो देशी शब्दोंका विपुल मिश्रण पाया जाता है। उपाध्येजीने अपनी भूमिकामें प्राकृत भाषाकी आलोचनाके साथ साथ एक भाषा पर दूसरी भाषाके प्रभाव आदि विषयको बड़ी ही पाण्डित्यपूर्ण युक्तियोंसे व्यक्त किया है। इस विषयके विशेष जिज्ञासु उपाध्येजी द्वारा लिखी 'प्रवचनसार'की भूमिका एक बार अवश्य पढ़ें।

श्वेताम्बरोंकी तरह दिगम्बरोंपर दीर्घकाल तक महाराष्ट्रीका प्रभाव नहीं पड़ा। इसका प्रधान कारण यह है कि दिगम्बर सौरसेनीके कट्टर पक्षपाती थे और उसी सौरसेनी व्याकरणसे ही वे सहायता लेते थे। दिगंबरोंमें पुष्पदंत, भूतबलि, वट्टकेर, कुंदकुंद और शिवार्य आदि इस भाषाके आदिम ग्रंथ-रचयिता थे। इन उद्भट दिगंबराचार्योंके द्वारा प्रणीत अष्टपाहुड, रयणसार, षट्पाहुड, बारस-अणुवेक्खा, नियमसार, पंचास्तिकाय, प्रवचनसार, समयसार, भगवती आराधना, मूलाचार और कार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि कृतियाँ इस भाषाके समुज्ज्वल रत्न हैं। कुछ जर्मन विद्वानोंकी राय है कि षट्पाहुड और कार्तिकेयानुप्रेक्षामें अपभ्रंश शब्द अधिक मात्रामें पाये जाते हैं। पर ए० एन० उपाध्येजीका कहना है कि यह कथन षट्पाहुडके लिये ही लागू हो सकता है। खैर, पीछे दिगम्बर जैन ग्रंथकर्त्ता जब संस्कृतका आश्रय लेने लगे तब सौरसेनीका संस्कृत पर अधिक प्रभाव पड़ने लगा। श्री समन्तभद्र, पूज्यपाद, अनन्तवीर्य एवं अकलंक आदि आचार्योंने संस्कृतमें ही ग्रंथप्रणयन किया है। इसीसे अर्धमागधीसे संबंध विच्छिन्नसा होकर सौरसेनी पर संस्कृतका प्रभाव पड़ा। श्वेताम्बरों पर संस्कृतका प्रभाव बहुत पीछे पड़ा। हाँ, उनके साहित्यमें इसके विपरीत संस्कृत भाषापर प्राकृतका ही प्रभाव दृष्टि-गोचर होता है।

(४) अपभ्रंश—पतञ्जलि प्रभृति संस्कृत वैयाकरणोंके मतमें संस्कृत भिन्न समस्त प्राकृत भाषाएँ अपभ्रंशके अन्तर्गत हैं। किन्तु प्राकृत वैयाकरणोंके मतमें अपभ्रंश प्राकृतका ही एक अवान्तर भेद है। इस भाषामें भी जैनोंका विपुल साहित्य भरा पड़ा है। भविष्यदत्तकथा, महापुराण, यशोधरचरित, नागकुमार चरित, कथाकोश, पार्श्वपुराण, सुदर्शनचरित, करकण्डुचरित, दर्शनसार, योगसार, श्रुतपञ्चमी कथा, सावयधम्म-दोहा, पाहुड दोहा, एवं षट्कर्मोपदेश आदि रचनाएँ इस अपभ्रंश भाषाके आदर्श-भूत निदर्शन हैं। इनमेंसे कई ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके हैं। यह बात निर्विवाद सिद्ध हो चुकी है कि इसी अपभ्रंश भाषासे हिन्दीका अवतरण हुआ है। इस दृष्टिसे इस भाषाका स्थान बहुत उच्च है। क्योंकि इसीसे प्रादुर्भूत यह हिन्दी भाषा आज राष्ट्रभाषा होने जा रही है।

डॉ० होर्नलिके मतमें आर्योंकी कथ्य भाषाएँ भारतवर्षके आदिम निवासी अनार्य लोगोंकी अन्यान्य भाषाओंके प्रभावसे जिन विकारोंको प्राप्त हुईं थीं वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्रीकी अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। पर उस मतको डॉ० ग्रियर्सन आदि आधुनिक भाषाशास्त्री स्वीकार नहीं करते। सर ग्रियर्सनके मतमें भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ साहित्य एवं व्याकरणमें नियन्त्रित होकर जनसाधारणमें अप्रचलित होनेके कारण जिन नूतन कथ्य भाषाओंकी उत्पत्ति हुई थी वे ही अपभ्रंश हैं। चण्डके प्राकृत व्याकरण तथा कालिदासके 'विक्रमोर्वशीय'के निदर्शनोंसे यह बात स्पष्ट सिद्ध हो जाती है कि ई० सन् पांचवीं शताब्दीके पहलेसे ही ये साहित्यमें स्थान पाने लग गयी थीं। अतः इससे बहुत पूर्वकालसे भारतमें कथ्य भाषाओंके रूपमें अपभ्रंश भाषाओंका व्यवहृत होना स्वाभाविक है। ये अपभ्रंश भाषाएँ लगभग दशवीं शताब्दी तक साहित्यिक भाषाएँ रहीं। फिर पीछे इन्हींसे हिन्दी, बङ्गला, गुजराती एवं मराठी आदि आधुनिक आर्यभाषाएँ उत्पन्न हुईं। प्राकृत वैयाकरणोंके मतमें अपभ्रंशके अनेक भेद माने गये हैं और वास्तवमें यह है भी ठीक। इस भाषाके उत्पत्ति-स्थान भी भिन्न भिन्न माने गये हैं। ई० सन् पांचवीं शताब्दीके पूर्वसे लेकर दशवीं शताब्दी तक भारतके भिन्न-भिन्न प्रदेशोंमें बोलचालके रूपमें प्रचलित जिस-जिस अपभ्रंश भाषासे भिन्न-भिन्न प्रदेशोंको जो जो आधुनिक आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं उनका विवरण निम्न प्रकार है—

महाराष्ट्री अपभ्रंशसे मराठी और कोंकणी भाषाएं, मागधी अपभ्रंशकी पूर्वशाखासे बङ्गला, उड़िया और आसामी भाषाएँ, अर्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वीय हिन्दी भाषाएं, सौरसेनी अपभ्रंश से बुन्देली, कन्नौजी, व्रजभाषा, हिन्दी या उर्दू ये पश्चिम हिन्दी भाषाएँ, नागर अपभ्रंश से राजस्थानी, मालवीय, मेवाड़ी, जयपुरी, मारवाड़ी एवं गुजराती भाषाएँ, पालिसे सिंहली और मालदीवन भाषाएँ; टाक्की अपभ्रंश से पश्चिमी एवं पूर्वी पञ्जाबी भाषाएँ; व्राचड अपभ्रंशसे सिन्धी भाषा और पैशाची अपभ्रंशसे काश्मीरी भाषा उत्पन्न हुई। ऊपर कहा जा चुका है कि जैन एवं बौद्धोंने संस्कृत भाषाको महत्त्व न देकर उस समयकी कथ्य भाषामें ही अपने पवित्र धर्मोपदेशको लिपिबद्ध करनेकी प्रथा प्रचलित की। इससे जैनसूत्रोंकी अर्धमागधी एवं बौद्धधर्म ग्रन्थोंकी पालि इन साहित्यिक भाषाओंका जन्म हुआ। किन्तु ये दोनों साहित्यिक भाषाएँ अन्यान्य प्राकृत भाषाओंके साथ संस्कृतके प्रभावको उल्लंघन नही कर सकीं। इसका यही एक प्रबल प्रमाण है कि इन समस्त प्राकृत भाषाओंमें संस्कृतके अनेक शब्द अविकल रूपमें गृहीत हुए हैं, जो कि तत्सम कहलाते हैं। यद्यपि पूर्व कथनानुसार ये तत्सम शब्द प्रथम श्रेणीकी प्राकृत भाषासे ही लिये गये हैं। फिर भी यह स्वीकार करना ही होगा कि परवर्तिकालकी प्राकृत भाषाओंमें संस्कृत भाषासे ही ये शब्द आ मिले हैं। बल्कि ललित-विस्तर, सद्धर्मपुण्डरीक एवं चन्द्रप्रदीप सूत्र आदि बौद्ध ग्रन्थोंमें तो संस्कृत शब्दोंकी भरमार है। इनमें अनेक प्राकृत शब्दोंके आगे भी संस्कृतकी विभक्ति लगाकर उन्हें भी संस्कृत बना डाला गया है। हाँ, यहाँ पर यह भी याद रखना होगा कि संस्कृत पर भी प्राकृतका प्रभाव कम नहीं पड़ा है। उसके लिये मैंने ऊपर कुछ श्वेताम्बर ग्रन्थोंका नाम-निर्देश किया है। यह बात है भी ठीक; क्योंकि संस्कृतकी जननी जब प्राकृत है—यह अपनी अङ्गपुष्टिके लिये अपनी माताकी उपेक्षा कर किस भाषाके दरवाजेको खट-खटाती फिरें? प्रत्येक कथ्य भाषा सदैव परिवर्तनशील होती है। साहित्यिक और व्याकरण नियमके बन्धनोंसे तो जकड़कर वे गतिहीन (पंगु) एवं कूटस्थ बन जाती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि क्रमशः यह कथ्य भाषासे

अलग होकर जन-साधारणमें अप्रचलित होती हुई मृतभाषामें परिणत हो जाती है। प्रत्यक साहित्यिक भाषा किसी कथ्य भाषासे ही उत्पन्न होती है और जब वह मृतभाषामें परिणत होती है तब उससे एक नई साहित्यिक भाषाकी सृष्टि होती है, इसी अविचल नियमानुसार एक समयकी कथ्य भाषासे ही वैदिक एवं संस्कृत भाषाका जन्म हुआ। जब वह सर्वसाधारणके लिये दुर्बोध हुई तब अर्धमागधी, पालि आदिने साहित्यमें स्थान पाया। ये समस्त प्राकृत भाषाएँ भी समय पाकर जब सर्वसाधारणके लिये दुर्बोध हुईं तब संस्कृतकी तरह मृतभाषामें परिणत होकर भिन्न-भिन्न प्रदेशोंकी अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक भाषाओंके रूपमें व्यवहृत होने लगी। अपभ्रंश भाषाएँ भी जब सर्वसाधारणके लिये कष्ट-बोध्य होकर मृतभाषाके रूपमें परिणत हुई तब हिन्दी, बङ्गला, गुजराती और मराठी आदि आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ साहित्यिक भाषाओंके रूपमें प्रचलित हुईं। प्रत्येक भाषाका प्रधान लक्ष्य होता है अर्थप्रकाश। इसलिये जिसके द्वारा स्पष्ट एवं अल्प प्रयत्नसे अर्थबोध होता है वही उत्कृष्ट मानी जाती है और ये ही भाषा-परिवर्तनके दो मुख्य कारण हैं।

संस्कृत वाङ्मय—संस्कृत शब्दके प्रयोगसे ही यह बात स्वयं विदित हो जाती है कि बहुत पहले हमारे भारतवर्षमें एक प्रकारकी भाषा प्रचलित थी और वही पीछे संस्कारको प्राप्त होकर संस्कृत भाषाके रूपमें प्रतिफलित हुई। सुप्राचीन युगमें म्लेच्छ भाषाओंके सम्मिश्रणसे अपनी भाषाओंको विशुद्ध रूपमें सुरक्षित रखनेके लिये आर्योंने सफल प्रयत्न किया था। फलस्वरूप वर्तमान संस्कृत भाषाका जन्म हुआ। ऋक् मन्त्रके पहले संस्कृत एवं प्राकृत भाषाएँ किस रूपमें थीं, इस बातको जाननेके लिये हम लोगोंके पास कोई साधन नहीं है। ऋक् मन्त्रके प्रकाशनकालसे वैदिक संस्कृतका निदर्शन हमें मिलता है सही। किन्तु उस समयकी प्राकृत भाषाको जाननेके लिये कुछ भी सामग्री उपलब्ध नहीं दीखती। वैदिक युगके नष्ट होनेके बाद लौकिक संस्कृत भाषा प्रचारमें आई। विद्वानोंकी राय है कि वैदिक युगको वह सुप्राचीन भाषा संस्कृतके नामसे प्रचलित नहीं थी। वाल्मीकिकालसे ही सर्वप्रथम संस्कृत भाषाका प्रयोग और वैदिक एवं संस्कृत लौकिक भाषाओंका पार्थक्य ज्ञात होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पाणिनिके पहले भी लौकिक सस्कृत भाषाके कई व्याकरण रचे गये थे। क्योंकि व्याकरणशास्त्रके अध्ययनके बिना संस्कृत भाषामें निष्णात होना असम्भव है।

पूर्वोक्त कथनसे यह बात सिद्ध हो जाती है कि दो प्रकारकी संस्कृत भाषाएँ देखनेमें आती हैं—एक वैदिक, दूसरी लौकिक। ऋक्, यजु, साम और अथर्व ये चार वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ एवं उपनिषद् वैदिक संस्कृत भाषामें हैं। परवर्तिकालके सूत्रग्रन्थ, संहिताग्रन्थ, इतिहास, पुराण, काव्य आदि लौकिक संस्कृतमें रचे गये हैं। लौकिक संस्कृत साहित्यमें व्याकरणका बन्धन अधिक सुदृढ़ है। परन्तु वैदिक भाषा व्याकरणके नियमोंसे उतनी आबद्ध नहीं है। विद्वानोंका कथन है कि लौकिक संस्कृत भाषाकी उन्नतिके साथ ही साथ वैदिक शब्दोंकी विभक्तियोंमें अधिक परिवर्तन हुए। लौकिक संस्कृतमें अनेक वैदिक शब्दोंके प्रयोगका सर्वथा अभाव है। विभक्तियाँ भी विशेष रूपान्तरको प्राप्त हुई हैं। शब्दोंमें से भी अनेक शब्द भिन्न-भिन्न अर्थोंमें प्रयुक्त हैं। इस परिवर्तनसे वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृतमें विशाल परिवर्तन हुआ। फलस्वरूप संस्कृतमें विशेष पाण्डित्य प्राप्त करने पर भी वैदिक संस्कृत एक प्रकारसे अबोध्य रह जाती है। अर्थात् लौकिक संस्कृतके मर्मज्ञ भी वैदिक संस्कृतके अर्थोंको नहीं लगा सकते हैं। पारदर्शिक शिक्षक एवं भाष्यकी सहायताके बिना वैदिक शब्दोंका अर्थ जानना सुलभ नहीं। साथ ही विद्वानोंका यह भी कहना है कि वैदिक संस्कृतमें अपशब्दोंका सम्मिश्रण बहुत रहा। संस्कृत शब्दोंकी संख्या भी अधिक थी। इसीलिये परवर्ति-वैयाकरणोंने व्याकरण सम्बन्धी अनेक नियमोंसे भाषाको सुन्दर एवं पूर्णांग बनानेके लिये बहुतसे शब्दोंको कम कर दिया। उस युगमें स्त्रियाँ, विदूषक और नौकर आदि प्राकृत भाषा ही बोलते थे। यह बात प्राक्कालीन कवियोंके नाटकोंसे स्पष्ट हो जाती है। इसका सारांश यह निकला कि अशिक्षितवर्ग संस्कृत नहीं बोलता था; या यों कहिए कि संस्कृत भाषा शिक्षितोंकी ही भाषा थी। उस जमानेमें साधारण जनता भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषा बोलती थी। इसीसे प्राकृतमें अनेक भेद दृष्टिगत होते हैं।

भारतवर्षके अनेक स्थानोंमें पालि भाषा भी प्रचलित थी, बल्कि बुद्ध और महावीरके बहुत पहले ही परिपुष्ट इस पालि भाषाने यहाँके कई स्थानोंमें मातृभाषाका रूप धारण कर लिया था। यह भाषा भी एक प्रकार

की प्राकृत ही है। गौतमके समयमें भी इस भाषाका प्रचार काफी रहा। उन्होंने तथा उनके शिष्योंने मातृभाषाके रूपमें प्रचलित इसी पालि भाषामें ही उपदेश दिया था। इस अपेक्षासे हम कह सकते हैं कि बौद्ध-कालमें संस्कृत भाषाका गौरव कुछ कम हो गया था। अशोकने भी संस्कृत भाषाको छोड़ मातृभाषामें ही अपने अनुशासनोंको लिपिबद्ध करनेकी आज्ञा दी थी, जो आज विभिन्न स्थानोंमें उपलब्ध हो रहे हैं। भारतके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें प्राप्त होनेवाले इन अनुशासनोंसे भी स्थान-भेदसे प्राकृत भाषाकी भिन्नता व्यक्त हो जाती है।

विद्वानोंकी ऐसी राय है कि शाक्यसिंहके पहले इस देशमें संस्कृत भाषाका यथेष्ट प्रचार था। जनता अधिक संख्यामें संस्कृत भाषा बोलती और लिखती थीं। पत्र-व्यवहार आदि सभी कार्य संस्कृत भाषामें ही होते थे। शाक्यसिंहके आविर्भावके बाद भी भारतमें संस्कृत भाषाका प्रचार सर्वथा कम नहीं हुआ। बल्कि बादके बौद्धाचार्योंने संस्कृत व्याकरण, कोश आदि ग्रंथोंको रच कर तन्मूलक संस्कृत भाषाके सम्मानकी रक्षा की। बौद्ध युगम भी राजकीय कागज, शिलालेख आदि संस्कृत भाषामें ही लिखे जाते थे। बौद्ध अपने दर्शनके प्रचारके लिये एवं अन्य दर्शनोंके खण्डनके लिये संस्कृत अवश्य सीखते थे। यहाँ तक संस्कृत साहित्यके इतिहासका परिचय हुआ।

अब मैं पाठकोंका ध्यान प्रकृत विषयको ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आज तकके उपलब्ध जैन ग्रंथोंमें श्री कुंदकुंदाचार्यके ग्रन्थ ही सर्व-प्राचीन हैं। ऐतिहासिक विद्वानोंका मत हैं कि उक्त आचार्य विक्रमीय प्रथम शताब्दीके हैं। इसके पूर्व अर्थात् ऋषभ तीर्थंकरसे लेकर भद्रबाहु आदि श्रुतज्ञानियोंके काल तक जैनागम गुरुपरंपरासे कण्ठस्थ ही रक्षित था और पीछे भूतबलि और पुष्पदंतने कालदोषसे नष्टावशेष उस आगमको लिपि-बद्ध करनेका मार्ग दिखलाया–यों दिगम्बरीय श्रुतावतार आदि ग्रन्थोंका कहना है। पूर्वोक्त कुंदकुंदाचार्यकी सभी कृतियाँ प्राकृत भाषामें हैं। इस लिये प्रथम शताब्दीके इन्हीं कुंदकुंदाचार्यके शिष्य श्री उमास्वातिको ही जैन संस्कृत साहित्यका आदि कवि मानना पड़ेगा। इनके बाद क्रमशः समंतभद्र और सिद्धसेन आदि सैकड़ों उद्भट जैन आचार्योंने जन्म लेकर अपने पवित्र ज्ञानके बलसे संस्कृत साहित्यकी यथेष्ट सेवा की। जैन साहित्य प्रारंभमें केवल धार्मिक रूपको ही धारण किए हुए था। किन्तु पीछे उसने अन्यान्य विभागोंमें भी काफी उन्नति की। न्याय और अध्यात्म विषयमें यह वाङमय अधिक उच्च विकास तथा क्रमको प्राप्त है। प्रथम शताब्दीके श्रीउमा-स्वाति, दशम शताब्दीके श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती, उसी शताब्दीके श्री अमृतचन्द्रसूरि, ग्यारहवीं शताब्दीके श्री शुभचन्द्राचार्य जैसे सिद्धांतविशारद; तृतीय–चतुर्थ शताब्दीके श्री समन्तभद्र, लगभग इसी समयके श्री सिद्ध-सेन, आठवीं शताब्दीके श्री भट्टाकलंक और हरिभद्र, नवमीं शताब्दीके श्री विद्यानन्द, ग्यारहवीं शताब्दीके अभयदेव तथा प्रभाचन्द्र, सत्रहवीं शताब्दीके यशोविजय, जैसे नैयायिक; आठवीं शताब्दीके श्री जिनसेन, नवमीं शताब्दीके श्री गुणभद्र जैसे पुराणलेखक इस भारतभमिमें बहुत कम होंगे। जैन नैयायिकोंमें से अनेकोंने न्याय ग्रंथोंकी टीका भी रची है। श्री सतीशचन्द्र विद्याभूषणके शब्दोंमें मध्य युगमें जैन साहित्यनें बहुमूल्य काम किया है। इस कालमें न्यायदर्शनके नामसे जितने ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं वे सभी जैन और बौद्धोंके परिश्रमके फलस्वरूप हैं। आधुनिक प्रणा-लीको लेकर चौदहवीं शताब्दीमें गङ्गेश उपाध्यायके द्वारा प्रकाशमें आए हुए नव्यन्याय नामक ब्राह्मणोंके न्याय ग्रंथ जैन और बौद्धोंको मध्यकालीन न्यायकी नींवसे ही निकले हुए हैं।

व्याकरण एवं कोशरचनाके विभागमें भी श्री शाकटायन, पूज्यपाद, वर्धमान, हेमचन्द्र, धनञ्जय और श्रीधर आदि आचार्य अधिक प्रसिद्ध हैं। गणितशास्त्रमें तो नवमीं शताब्दीके श्री महावीराचार्यका 'गणितसार' विशेष उल्लेखनीय है। कोलंबीय (Ceylon) विश्वविद्यालयके गणिताध्यापक डेविड यूजन स्मिथ (David Eugene Smith) ने लिखा है कि भारतवर्षके संपूर्ण गणित साहित्यमें यह ग्रंथ अधिक पांडित्य-पूर्ण है। इससे पाठक भली भाँति समझ सकते हैं कि जैन संस्कृत साहित्य कितना विपुल, विस्तीर्ण एवं समर्थ है। इसमें प्रत्येक विषयके यथेष्ट ग्रंथ रचे गये हैं। जैन ग्रंथोंकी विषय प्रतिपादनशैली आदर्शको लिए हुए हैं। इसीसे भिन्न-भिन्न विषयोंमें रचे गये ग्रंथोंको देखकर पाश्चात्य या पूर्वीय बहुतेरे मान्य विद्वान् इसकी भूरि भूरि प्रशंसा करते हैं। जैन वाङमयके सम्पूर्ण ग्रन्थ प्रथमानयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग और द्रव्यानुयोगके भेदसे चार विभागोंमें

विभक्त हैं। गणितशास्त्रमें पूर्वोक्त गणितसारके सिवा चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, आदि ग्रन्थ भी अपूर्व हैं। इसी-प्रकार धर्मशर्माभ्युदय, पार्श्वाभ्युदय, यशस्तिलकचम्पू, नेमिनिर्वाण, तिलकमंजरी, चन्द्रप्रभकाव्य, हीरसौभाग्य और हम्मीरमहाकाव्य आदि काव्यग्रंथ, अष्टसहस्री, प्रमेयकमलमार्तण्ड, श्लोकवार्तिक, सम्मतितर्क, न्यायविनिश्चय, न्यायकुमुदचन्द्र, स्याद्वादरत्नाकर, स्याद्वादमंजरी और जैनतर्कवार्तिक आदि न्याय ग्रन्थ; पंचाध्यायी, राजवार्तिक, अध्यात्मसार, आत्मानुशासन, इष्टोपदेश, समाधिशतक और अध्यात्मकल्पद्रुम आदि दर्शन एवं आध्यात्मिक ग्रंथ; महापुराण, पाण्डवपुराण, हरिवंशपुराण और पद्मपुराण आदि पुराण ग्रन्थ; शाकटायनन्यास, अमोघवृत्तिन्यास, सिद्धहेमचन्द्र, जैनेंद्रन्यास और गणरत्नमहोदधि आदि व्याकरण ग्रन्थ सुप्रसिद्ध हैं। इस प्रकार जैन न्याय, जैन तत्त्व-ज्ञान, आदि अन्यान्य विषयके गद्य-पद्य-मय अनेक उत्तमोत्तम ग्रंथ जैन संस्कृत वाङमयमें भरे पड़े हैं। डॉ० सतीश-चन्द्र विद्याभूषण, प्रो० हर्टल जैसे पूर्वीय तथा पाश्चात्य विद्वानोंने जैन न्याय, जैन व्याकरण आदिकी यथेष्ट प्रशंसा की है। जैन साहित्य कलामें भी पीछे नहीं है। मेघदूत पर पार्श्वाभ्युदय, शीलदूत, नेमिदूत, इंदुदुत, चेतोदूत आदि; माघपर देवानंदाभ्युदयः; नैषध पर शांतिनाथ चरित्र; इसी प्रकार भक्ताभर और कल्याणमंदिरस्तोत्र पर भी कई समस्यापूर्ति * कृतियाँ मौजूद है। दूतकाव्य साहित्यमें भी यह पीछे नहीं है। उक्त पार्श्वाभ्युदय, शील-दूत, इंदुदूत, नेमिदूत और चेतोदूतके अतिरिक्त पवनदूत, मनोदूत, जैन मेघदूत, रथांगदूत, चन्द्रदूत, सिद्धदूत, उद्धवदूत और देवदूत आदि रचनाएँ इसके लिये पर्याप्त उदाहरण हैं †। द्विसंधान काव्यके जोड़का ग्रंथ राघव-पाण्डवीय ब्राह्मण संस्कृत साहित्यमें है अवश्य; पर इसके सिवाय भी जैन वाङमयमें पंचसन्धान, सप्तसन्धान एवं चतुर्विंशतिसन्धान ये काव्य भी श्लेषालंकारकी अनुपम तथा आश्चर्यकारी कृतियाँ हैं। हेमचन्द्रका 'द्व्याश्रय' काव्य भट्टिसे न्यून नहीं हैं। सिद्धर्षिकी 'उपमितिभवप्रपञ्चकथा' अत्युच्च श्रेणीका एक रूपक काव्य है। इसकी जॉन बाइरन (John Byrone) के पिलिग्रिम्ज प्रोग्रेस (Pilgrimage Progress) ग्रन्थसे तुलना की जा सकती है। हिन्दी विश्वकोशके संपादक श्री नगेन्द्रनाथ वसु आदिकी ऐसी अभिमति है कि कवित्वशक्तिमें आचार्य जिनसेनका काव्य कविश्रेष्ठ कालिदासकी कृतियोंसे कुछ कम नहीं है। इसी प्रकार आचार्य सोमदेवका गद्य बाणकी कादंबरीसे कुछ न्यून नहीं है। जिन ग्रन्थोंमें अपना धार्मिक पक्षपात कुछ भी नहीं है ऐसे भी ग्रन्थ जैन वाङमयमें अनेक हैं। मृगपक्षिशास्त्र और प्रश्नोत्तररत्नमाला इसी श्रेणीके ग्रन्थ हैं। भारतीय कथासाहित्यकी उत्पत्ति एवं रक्षामें भी जैनोंने पर्याप्त परिश्रम किया है। संस्कृत वाङमयके अद्वितीय रत्न 'पंचतंत्र' की रक्षा जैन आचार्य पूर्णभद्रकी 'पंचाख्यायिका' नामक ग्रन्थके द्वारा ही हुई है। यथार्थतः कथाओंके द्वारा साधारण जनतामें धार्मिक सिद्धान्तको प्रचार करनेकी सुप्रणाली जैसी जैनोंमें थी, वैसी भारतीय अन्य सम्प्रदायोंमें नहीं थी—यों अनुभवी विद्वानोंका कहना है। इसीलिये जैन साहित्यका कथा भाग अधिक विशाल है। श्रीयुत् हर्टल साहबका कहना है कि इन कथाओं में से बहुतसी कथाएँ पूर्वमें भारतवर्षमें ही नहीं, बल्कि शनैः शनैः संसारके अन्यान्य भागोंमें भी फैल गई थीं।

प्राक्कलीन उदार जैन कवियोंने सांप्रदायिकताको त्याग कर जैनेतर साहित्यमें जो कृति उन्हें विशेष उपयोगी एवं प्रशंसार्ह मालूम हुई उसे प्रेमसे अपनाया। इस उदारताके फलस्वरूप पाणिनि, मुग्धबोध, काशिका-न्यास, कविकल्पद्रुम, सिद्धान्तचन्द्रिका और सारस्वत आदि व्याकरण ग्रन्थों; वृत्तरत्नाकर तथा श्रुतबोध आदि छंद ग्रन्थों; काव्यालंकार, काव्यप्रकाश और विदग्धमुखमण्डन आदि अलंकार ग्रन्थों; कादम्बरी, भट्टि, रघुवंश, कुमार-सम्भव, मेघदूत, नैषध, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, नलोदय और राघवपाण्डवीय आदि काव्य ग्रन्थों; अनर्घराघव, प्रबोधचन्द्रोदय, राघवाभ्युदय, दमयंतीचम्पू और नलचम्पू आदि नाटक और चम्पू ग्रन्थों; तर्कभाषा, तर्करहस्य-दीपिका, न्यायकन्दली, न्यायप्रवेश, न्यायालंकार, न्यायसार और न्यायबोधिनी आदि न्याय ग्रन्थों; योगरत्नमाला, रसचिन्तामणि, वैद्यकसारसंग्रह, वैद्यकसारोद्धार और वैद्यकवल्लभ आदि वैद्यक ग्रन्थों पर जैन आचार्यप्रणीत

* विशेष परिचयके लिये 'जैन सिद्धान्त-भास्कर' भाग ३, किरण २ में प्रकाशित श्री अगरचन्दजी नाहटाका 'जैन पादपूर्ति काव्यसाहित्य' शीर्षक लेख देखो।

† अधिक जानकारीके लिये 'जैन सिद्धान्त-भास्कर' भाग २, किरण २ और भाग ३, किरण १ में प्रकाशित श्री चिन्ता-मणि चक्रवर्ती तथा अगरचन्दजी नाहटाके लेख देखें।

टीकाएँ उपलब्ध होती हैं* । मेघदूतके पद्योंकी समस्या-पूर्ति कई जैन कवियोंने की है । बौद्धोंका 'धर्मबिंदु' नामक उच्च न्याय ग्रन्थ जैनाचार्य मल्लवादिकी टीकासे ही भारतमें रक्षित है । भासर्वज्ञके 'न्यायसार' नामक ग्रन्थ पर जयसिंह सूरिकृत टीका सर्वोत्तम है । ये कृतियाँ ब्राह्मण एवं बौद्ध ग्रन्थोंके प्रति जैन विद्वानोंके द्वारा की गई उदारताके कुछ उदाहरण हैं ।

वैद्यक विषयमें औषधकल्प, सिद्धान्तरसायनकल्प, भिषक्प्रकाश, जगत्सुन्दरी, कनकदीपक, कल्याणकारक, निघण्टु, रससार, रसतंत्र, वैद्यसार, रामविनोद, योगचिन्तामणि, विद्याविनोद, बालग्रहचिकित्सा, मेरुतंत्र, रसमंजरी, ज्वरपराजय, वैद्यवल्लभ, ज्वरनिदान, मेघविनोद, लंघनपथ्योपचार और प्रयोगसंग्रह आदि ग्रंथ उल्लेखनीय हैं † । ज्योतिष विषयमें त्रैलोक्यप्रकाश, मेघमहोदय, यंत्रराज, आयज्ञानतिलकटीका, जिनेन्द्रमाला, चन्द्रोन्मीलन, भद्रबाहु-निमित्त, ज्योतिषसार, लग्नशुद्धि, ज्योतिषसारोद्धार, जन्मपत्रीपद्धति, मानसागरीपद्धति, ज्योतिषमण्डलविचार, सामुद्रिकतिलक, शकुनशास्त्र, शकुनशास्त्रोद्धार, जगच्चन्द्रिकासारणी, दिनशुद्धिदीपिका, उदयदीपिका, हस्तसंजी-वन, रमलशास्त्र, विवाहपटल, ज्योतिषरत्नाकर, और भुवनतिलक आदि ग्रन्थ ‡ भी महत्त्वके हैं । अर्थशास्त्रमें नीति-वाक्यामृत एक अनूठा रत्न है । मन्त्रशास्त्रमें विद्यानवाद, ज्वालिनीमत, ज्वालिनीकल्प, भैरवपद्मावतीकल्प, काम-चाण्डालिनीकल्प, श्रीदेवताकल्प, सरस्वतीकल्प, गणधरवलयकल्प, प्रतिष्ठाकल्प, सूरिकल्प, श्रीविद्याकल्प और वर्ध-मानविद्याकल्प प्रभृति भी अच्छे ग्रन्थ हैं । संगीतमें 'Trivendrum Sanskrit Series' में प्रकाशित संगीत-समयसार; सुभाषितमें सुभाषितरत्नसंदोह और सुभाषितावली; अलंकारमें काव्यानुशासन, अलंकारचिन्तामणि और वाग्भटालंकार; छन्दमें छन्दोऽनुशासन और रत्नमंजूषा आदि कृतियाँ बहुमूल्य समझी जाती हैं । इसी प्रकार कानूनी साहित्यमें अर्हन्नीति, भद्रबाहुसंहिता, वर्धमाननीति और इन्द्रनन्दिसंहिता आदि एवं ऐतिहासिक ग्रन्थोंमें तीर्थकल्प, परिशिष्टपर्व, प्रबन्धचिन्तामणि, प्रबन्धकोश, प्रभावकचरित्र, कुमारपालप्रतिबोध, कर्मचन्द्रप्रबन्ध और तेजपालवस्तु-पालचरित्र आदि अपने अपने विषयके जागरूक निदर्शन हैं । यह जैन संस्कृत वाङ्मयका दिग्दर्शन मात्र है । बड़े खेदकी बात है कि अभी तक जैन संस्कृत वाङ्मय पर कोई उल्लेख-योग्य सर्वांगपूर्ण पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है । पाश्चात्य विद्वानोंने इस विषय पर कुछ प्रकाश डाला है अवश्य, फिर भी वह संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता । इन पश्चिमीय विद्वानोंके द्वारा लिखी हुई पुस्तकोंमें विंटरनिट्ज की "A history of Indian Literature" नामक पुस्तक विशेष महत्त्वपूर्ण है । इन्होंने भी अपनी इस पुस्तक (द्वितीय भाग) में विशेष-तया श्वेतांबर साहित्यपर ही प्रकाश डाला है । बहुत कुछ संभव है कि इनको दिगम्बर जैन ग्रन्थ अध्ययनार्थ नहीं मिले हों । क्योंकि दिगम्बर साहित्यकी अपेक्षा श्वेताम्बर साहित्य अधिक प्रचार एवं प्रकाशमें आया है । एतत्सम्बन्धी हिन्दी पुस्तकोंमें हिन्दू विश्वविद्यालय काशीके दो अध्यापकोंके द्वारा सम्पादित "संस्कृत साहित्यका संक्षिप्त इतिहास" नामक पुस्तक दर्शनीय है । इसमें भी इन लोगोंने कुछ ही जैन ग्रन्थोंका परिचय दिया है । साथ ही साथ इस परिचयमें कई त्रुटियाँ भी रह गयी हैं । गुजराती भाषामें श्वेताम्बर भाई मोहनलाल दलीचन्द देसाई द्वारा लिखित "जैन साहित्यनों संक्षिप्त इतिहास" पठनीय है । पुस्तक विद्वत्तापूर्ण है । परन्तु इसमें भी श्वेताम्बर साहित्य पर ही प्रकाश डाला गया है । दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि दिगम्बर विद्वानोंने इस ओर कुछ उल्लेखनीय कार्य नहीं किया है । हाँ, कुछ विद्वानोंकी कृपासे दस-बीस ग्रन्थकर्ता और उनकी कृतियोंका परिचय यत्र-तत्र प्रकट हुआ है अवश्य । किन्तु इससे क्या होनेवाला है । सावकाश विद्वानोंको इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये । एक श्रृंखलाबद्ध जैन वाङ्मयका इतिहास प्रकाशित होनेकी परमावश्यकता है ।

कन्नड वाङ्मय—दक्षिण भारतमें प्रचलित प्रख्यात पञ्च द्राविड भाषाओंमें कन्नड भी एक है । इस भाषावर्गकी अवशिष्ट चार भाषाएँ तमिल, तेलुगु, मलयालम एवं तुलु हैं । द्राविड भाषाएँ संस्कृत और प्राकृत

* अधिक जानकारी के लिये 'जैन सिद्धान्त-भास्कर' भाग २, किरण १ में प्रकाशित स्व० बाबू पूरणचन्द्रजी नाहर का 'धार्मिक उदारता' शीर्षक लेख देखें ।

† विशेष जानकारी के लिये 'जैन सिद्धान्त-भास्कर' भाग ४, किरण २ में प्रकाशित श्री अगरचन्दजी नाहटाका 'जैन ज्योतिष और वैद्यक ग्रन्थ' शीर्षक लेख देखें ।

आदि आर्य भाषाओंसे भिन्न इसलिये मानी जाती है कि एक तो इन भाषाओंमें व्यवहारोपयोगी स्वतंत्र शब्द प्रचुर मात्रामें पाये जाते हैं । तात्पर्य यह है कि इन भाषाओंको किसी भी आर्य भाषासे उधार लेनेकी जरूरत नहीं पड़ती। दूसरी बात यह है कि इस भाषावर्गका व्याकरण संस्कृत आदि आर्य भाषाओंके व्याकरणोंसे बहुत कुछ भिन्न है। इसके लिये कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

द्राविड भाषाओंमें लिंग अर्थपरक है; संधिक्रम भिन्न है; संज्ञाओंके एकवचन तथा बहुवचनमें एक ही प्रकारकी विभक्तियाँ हैं; गुणवाचक शब्दोंमें तरतम भाव नहीं है; संबंधार्थक सर्वनामका सर्वथा अभाव है; कर्मणि प्रयोग कम है; क्रियाओंमें निषेधरूप है और कृत्तद्धित प्रत्यय स्वतंत्र हैं। ऊपर कहा गया है कि द्राविड भाषावर्गमें व्यवहारपर्याप्त स्वतंत्र शब्द अधिक मात्रामें पाये जाते हैं। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इस भाषावर्गमें संस्कृत और प्राकृत आदि आर्य भाषाओंके शब्द हैं ही नहीं। पीछे समयके प्रभावसे संस्कृत और प्राकृत आदि आर्य भाषाओंके शब्दोंको कौन कहे, क्रमशः इनमें उर्दू, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओंके शब्द भी यथेष्ट आ मिले हैं। विदेशी शब्दोंकी यह रफ्तार केवल द्राविड भाषाओंमें ही नहीं, प्रत्युत सभी भारतीय भाषाओं में इसी प्रकार जारी रही। इस प्राकृतिक अटल नियमको कोई रोक नहीं सकता। एक दृष्टिसे यह है भी उपादेय। अन्यथा किसी भी भाषाके शब्दभाण्डारकी वृद्धि नहीं हो सकती। इतना ही नहीं, प्रत्येक भाषाकी सीमित शब्दावलीसे काम भी नहीं चल सकता। बल्कि भाषातत्त्वके धुरंधर विद्वान् डॉ० काल्डीवेलके मतानुसार कक्क, अत्त, कुटि, कोट, नीर, पल्लि, मीन, एड, मरुत्त, हेरम्ब, अट्ट, आम्, बल्लि, मुकुल, कुंतल, पालि, मंड, काक, माचल, मेक, सीर, ताल, वरुक, उल्क, तटित् या तडित्, मलय, आलि, कलि, गंड, सुंदि, खलीन, तल्प, कल्प, और खर्जु आदि शब्द द्राविड भाषाओंसे ही संस्कृत कोशोंमें लिये गये हैं *। इसी प्रकार दीनार, होरा आदि शब्द संस्कृतमें लैटिन, ग्रीक आदिसे लिये गये हैं । कई पाश्चात्य भाषा-शास्त्रियोंका मत है कि संस्कृत व्याकरणमें प्रचलित ध्वनिविषयक खास कर टवर्गाक्षर द्राविड भाषाओंसे ही लिये गये हैं।

यों तो मोहनजोदडो और हडप्पा आदि स्थानोंमें उपलब्ध चित्रलिपियोंसे द्राविड भाषाओंका मूल वेदपूर्वकाल सिद्ध होता है। ब्राह्मी लिपिकी तरह उस समय भी इन भाषाओंकी लिपि मौजूद थी। † फिर भी खेद है कि दूसरी शताब्दीके पूर्वका कन्नड साहित्य अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हाँ, द्वितीय शताब्दीके कुछ कन्नड शिलालेख अवश्य प्राप्त हुए हैं। साथ ही साथ ज्ञात हुआ है कि मिश्रमें इसी शताब्दीके लिखे गये एक नाटकमें भी कुछ कन्नड शब्द वर्तमान हैं।‡ सुदीर्घ कालसे ही कन्नड साहित्यकी ओर ध्यान देनेका प्रयत्न किया गया है। इसी लिये जिस समय हिंदी, बंगला, मराठी और गुजराती आदि भाषाओंका जन्म भी नहीं हुआ था उस समयभी कन्नड साहित्यका भाण्डार अनेक बहुमूल्य ग्रन्थरत्नोंसे भरा हुआ था।

प्राचीन कन्नड साहित्यको उच्च एवं प्रौढ़ बनानेका सारा श्रेय जैन आचार्यों एवं कवियोंको दिया जाता है। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि जैनोंके ही द्वारा कन्नड भाषाका उद्धार तथा प्रसार हुआ है और उन्होंने ही इस भाषाके साहित्यको एक उच्च श्रेणीकी भाषाके गौरवयोग्य बनाया है। कन्नड साहित्यको उन्नतिके चरम शिखर पर पहुँचानेमें असीम प्रयत्न करके इन्होंने उक्त साहित्यमें सदाके लिये अपना नाम अमर कर दिया है। इसीसे आज भी संपूर्ण कर्णाटक बड़े आदरके साथ इनके सुयशका गीत गा गा कर अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है। तेरहवीं शताब्दी तक कन्नड भाषाके जितने उद्भट ग्रन्थकर्ता हुए हैं वे प्रायः सबके सब जैन हैं। कर्णाटक कविचरितेके मान्य सम्पादक महामहोपाध्याय स्व० आर० नरसिंहाचार्य एम० ए० के शब्दोंमें जैन ही कन्नड भाषाके आदि कवि हैं। आज तककी उपलब्ध सभी प्राचीन एवं उत्तम कृतियाँ जैन कवियोंकी ही हैं। ग्रन्थरचनामें जैनोंके प्राबल्यका काल ही कन्नड साहित्यकी उच्च स्थितिका काल मानना होगा। प्राचीन जैन कवि ही कन्नड भाषाके

---

* 'कर्णाटक कविचरिते' भाग ३ की प्रस्तावना देखें।

† 'कन्नड संस्कृति' पृष्ठ ८० देखें।

‡ 'कर्णाटक कविचरिते' भाग १ एवं २ को प्रस्तावना देखें।

सौंदर्य एवं कांतिके विशेषतः कारणभूत हैं। उन्होंने शुद्ध और गम्भीर शलीमें ग्रन्थ रच कर ग्रन्थरचनाकौशलको उन्नत स्तरपर पहुंचाया है। प्रारम्भिक कन्नड साहित्य उन्हींकी लेखनी द्वारा लिखा गया है। कन्नड भाषाध्ययनके सहायभूत छन्द, अलंकार, व्याकरण और कोश आदि ग्रन्थ विशेषतः जैनोंके द्वारा ही रचे गये हैं।"

बोल-चालको भाषाको ग्रन्थरूप देनेका सारा श्रेय जैन कवियोंको प्राप्त है। उपलब्ध कन्नड साहित्यमें नृपतुंगका कविराजमार्ग ही आदिम ग्रन्थ एवं कवितागुणार्णव महाकवि आदि पंप ही आदिकवि है। कवि चक्रवर्ती महाकवि रन्न काव्यनिर्माणकलामें महाकवि भवभूतिसे कम नहीं था। जिनसमयदीपक यह रन्न वस्तुतः कन्नड साहित्यका एक समुज्ज्वल रत्न था। कन्नड काव्यमें कविचक्रवर्ती उपाधि प्राप्त पोन्न, रन्न तथा जन्न ये तीनों वास्तवमें जैन 'रत्नत्रय' है। विलक्षणकवितासामर्थ्यप्राप्त उपर्युक्त महाकवि पम्प अद्वितीय कीर्तिशाली कवि था। इसी प्रकार महाकवि नागचन्द्रके द्वारा प्रशंसित 'अभिनववाग्देवी' उपाधिधारिणी कन्ति आदि कवयित्री है।

कन्नड जैन पुराणोंमें आदिपम्प [ई० सन् ९४१] का आदिपुराण, पोन्न [ई० सन् लगभग ९५०] का शान्तिनाथपुराण, रन्न [ई० सन् ९९३] का अजितनाथपुराण, चावुंडराय [ई० सन् ९७८] का चावुंडरायपुराण, नागचन्द्र [ई० सन् लगभग ११००] का मल्लिनाथपुराण, कर्णपार्य [ई० सन् लगभग ११४०] का नेमिनाथपुराण, अग्गल [ई० सन् ११८९] का चन्द्रप्रभपुराण, आचण्ण [ई० सन् ११९५] का वर्धमानपुराण, नेमिचन्द्र [ई० सन् लगभग ११७०] का अर्धनेमिपुराण, बन्धुवर्मा [ई० सन् लगभग १२००] का हरिवंशपुराण, पार्श्वपण्डित [ई० सन् १२०५] का पार्श्वनाथपुराण, द्वितीय गुणवर्मा [ई० सन् लगभग १२२५] का पुष्पदन्तपुराण, कमलभव [ई० सन् लगभग १२३५] का शान्तीश्वरपुराण, मधुर [ई० सन् लगभग १३८५] का धर्मनाथपुराण, मङ्गरस [ई० सन् १५०८] का नेमिजिनेशसङ्गति, शान्तिकीर्ति [ई० सन् १५१९] का शान्तिनाथपुराण, दोड्डय्य [ई० सन् १५५०] का चन्द्रप्रभपुराण प्रमुख हैं। इनमें पदलालित्य, प्रसाद और सौष्ठव आदि काव्योचित सभी गुण मौजूद हैं।

इसी प्रकार षट्पाद ग्रन्थोंमें मंगरसका सम्यक्त्वकौमुदी, कुमुदेन्दु [ई० सन् लगभग १२७५] का कुमुदेन्दुरामायण, भास्कर [ई० सन् १४२४] का जीवंधरचरित, कल्याणकीर्ति [ई० सन् १४३९] का ज्ञानचन्द्राभ्युदय, बोम्मरस [ई० सन् १४८५] का सनत्कुमारचरित, कोटेश्वर [ई० सन् १५००] का जीवंधरषट्पदि और मङ्गरसका जयनृपकाव्य, साङ्गत्यम रत्नाकर वर्णी [ई० सन् १५५७] का भरतेशवैभव, पद्मनाभ [ई० सन् लगभग १६८०] का रामपुराण, चन्द्रम [ई० सन् १६०५] का गोम्मटेश्वरचरित और बाहुबलीका नागकुमारचरित; शतक ग्रन्थोंमें रत्नाकर वर्णीका शतकत्रयी, व्याकरण ग्रन्थोंमें नागवर्मा [ई० सन् लगभग ११४५] का भाषाभूषण और शब्दस्मृति, केशिराज [ई० सन् लगभग १२६०] का शब्दमणिदर्पण, भट्टाकलङ्क [ई० सन् १६०४] का शब्दानुशासन; छन्दःशास्त्रमें नागवर्माका छन्दोम्बुधि और अलङ्कार ग्रन्थोंमें नृपतुंग [ई० सन् ८१४–८७७] का कविराजमार्ग, नागवर्माका काव्यालोकन, उदयादित्य [ई० सन् लगभग ११५०] का उदयादित्यालङ्कार और साल्व [ई० सन् लगभग १५५०] का रसरत्नाकर आदि बहुत प्रसिद्ध है।

उल्लिखित ग्रन्थोंके अतिरिक्त जैन कवियोंने वैद्यक, ज्योतिष आदि लोकोपकारी विद्याओं पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। वैद्यक ग्रन्थोंमें सोमनाथ [ई० सन् ११५०] का कल्याणकारक, मङ्गराज [ई० सन् लगभग १३६०] का खगेन्द्रमणिदर्पण, श्रीधरदेव [ई० सन् लगभग १५००] का वैद्यामृत, साल्वका वैद्यसांगत्य, अभिनवचन्द्र [ई० सन् लगभग १४००] का अश्वशास्त्र, कीर्तिवर्मा [ई० सन् लगभग ११२५] का गोवैद्य; ज्योतिष ग्रन्थोंमें श्रीधराचार्य [ई० सन् १०४६] का जातकतिलक; गणित ग्रन्थोंमें राजादित्य [ई० सन् लगभग ११२०] के व्यवहारगणित, क्षेत्रगणित, व्यवहाररत्न, लीलावती, चित्रहसुग, जैनगणितटीकोदाहरण एवं सूप (पाक) शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थोंमें मङ्गरसका सूपशास्त्र आदि उल्लेखनीय है।

महाकवि नागचन्द्र अगर उपासना-प्रिय है तो कवि नेमिचन्द्र पक्के शृंगारोपासक है। कविचक्रवर्ती जन्न अगर अहिंसाप्रेमी हैं तो विरक्त कवि बन्धुवर्मा अध्यात्मप्रिय है। इसी प्रकार महाकवि अग्गल अगर संस्कृत पक्षपाती था तो कवि अंडय्य कन्नडपक्षपाती। सर्वप्रथम संस्कृत भाषाके बहुमूल्य भूषणोंको पहना कर कन्नड वाग्देवीको

सजानेका श्रेय एवं पीछे उस अलङ्कार भारसे दुःखी उसे उस भारसे मुक्त करनेका श्रेय दोनों जैन कवियोंको ही प्राप्त है। साथ ही साथ कन्नड भाषामें जब क्रमशः शिथिलता आने लगी, तब उसमें दृढ़ता लानेवाला वैयाकरण केशिराज भी जैन था। इस प्रकार प्रत्येक पहलुओंसे जैन कवियोंने कन्नड भाषाकी अटूट सेवा की है। यह अनुपम सेवा कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। जैन काव्योंमें हमे केवल काव्यधर्म ही नहीं, किन्तु आत्मवाद, साम्यवाद, अपेक्षावाद, अहिंसावाद और स्याद्वाद आदि सभी मिल रहे हैं। पुराणोंमें भी हमें अभी ट महापुरुषों की जीवनीके साथ साथ अनुकरणीय आदर्श चरित्रका संकेत भी मिलता है। अगर इनके पूर्वार्धमें शृंगाररसकी स्वच्छ यमुना बहती है तो उत्तरार्धमें नियमसे शांतरसकी विमल गंगा बहती मिलेगी। जैन पुराण एवं काव्योंमें उल्लेखनीय यह एक खास गुण है।

पंप, रन्न, नागचन्द्र और जन्न इन जैन कवियोंके नाम कन्नड साहित्यमें आचंद्रार्क अमर रहेंगे। अंडय्य और नेमिचन्द्र जैसे प्रौढ़ कवियोंने लौकिक कथाओंको भी लिखा है जो कि बीसवीं शताब्दीके उपन्यासोंसे किसी भी दृष्टिसे कम नहीं है। रसिक कवि रत्नाकरका भरतेशवैभव तो एक अद्भुत चीज है। इससे रत्नाकरके विशाल अध्ययन तथा व्यापक ज्ञानका यथेष्ट परिचय मिलता है। पंप और रन्नका महाभारत और नागचन्द्रकी रामायण दुर्योधन तथा रावण जैसे व्यक्तियोंमें भी आदर-बुद्धि उत्पन्न कराती है। सारांशतः जैन कवियोंने हमें काव्य, काव्यलक्षण, जीवनोपयुक्त ज्ञान आदि सब कुछ दिया है।

गंग, राष्ट्रकूट, चालुक्य, होय्सल, विजयनगर तथा मैसूर आदि शासक उपर्युक्त मान्य कवियोंके पोषक एवं प्रोत्साहक बने रहे। इन्हीं राजामहाराजाओंका आश्रय पाकर पंप, रन्न, पोन्न और जन्न जैसे महाकवियोंने अपनी अमर कृतियोंके द्वारा कन्नड वाग्देवी का मुख उज्ज्वल किया है।

जिस प्रकार अन्यान्य प्रान्तोंमें विद्वानोंके द्वारा अपने अपने साहित्यका काल निर्धारित है, उसी प्रकार कन्नड साहित्यका काल भी प्राचीन, माध्यमिक और वर्तमान यों अथवा क्षात्र, मतप्रचारक एवं वैज्ञानिक कालके भेदसे तीन श्रेणियोंमें विभक्त है। प्राचीन, काल नवमी शताब्दीसे बारहवीं शताब्दी तक, माध्यमिक काल बारहवीं शताब्दीसे सत्रहवीं शताब्दी तक, वर्तमान काल सत्रहवीं शताब्दीसे लेकर आज तक माना गया है। कन्नड साहित्य सेवाका भार तीन धर्मानुयायियोंके ही हाथों में रहा। जिस समय जिस जिस धर्मकी प्रधानता थी उस समय मुख्यतया उस धर्मके अनुयायियोंने पूर्ण रीतिसे साहित्यसेवा की है। प्रायः ई० सन् नवमी शताब्दीसे बारहवीं शताब्दी तक जैनोंका विशेष प्रभाव था। अत एव कन्नड भाषाका प्रारंभिक साहित्य उन्हींकी लेखनी द्वारा लिखा गया है। इस संबंधमें कन्नड साहित्यके मर्मज्ञ विद्वान् शेष भी० पारिधावाडेके शब्दोंमें "लगभग ई० सन् छठीं शताब्दीसे चौदहवीं शताब्दी तकके सात-आठ सौ बर्ष संबंधी जैनोंके अभ्युदय-प्राप्ति-निमित्त जो वाङमय है, उसका अवलोकन करना समुचित है। तत्कालीन करीब २८० कवियोंमें ६० कवियोंको स्मरणीय एवं सफल कवि मान लेने पर इनमें ५० जैन कवियोंके नाम ही हमारे सामने आ उपस्थित होते हैं। इन ५० जैन कवियोंमें से ४० कवियोंको निस्सन्देह हम प्रमुख मान सकते हैं। लौकिक चरित्र, तीर्थंकरोंके पारमार्थिक पुराण और दार्शनिक आदि अन्यान्य भी ग्रन्थ जैनोंके द्वारा ही जन्म पाकर वे कन्नड साहित्यके ऊपर अपना प्रभाव शाश्वत जमाए हुए हैं।"

जैनोंके बाद बारहवीं शताब्दीसे सत्रहवीं शताब्दी तक लिंगायतों (शैव) का प्राधान्य रहा। अतः इन शताब्दियोंमें मुख्यतया कन्नड साहित्य इन्हींके हस्तगत रहा। सत्रहवीं शताब्दीसे आज तक ब्राह्मणोंकी प्रधानतामें दो तीन शताब्दियोंसे इस धर्मके कवि साहित्य-सेवा कर रहे हैं। प्राचीन समयमें धर्मोन्नतिके साथ साथ साहित्योन्नतिका संबंध कितना सुन्दर था। साथ ही साथ वह कितने विशदरूपसे अपने ऐतिहासिक रहस्यको प्रकट करता है। यद्यपि कन्नड भाषाका प्रारंभिक काल "जैन काल" माध्यमिक काल "लिंगायत काल" और वर्तमान काल ब्राह्मणकाल कहलाता है अवश्य, फिर भी लिंगायत या वर्तमान कालमें जैन अपनी परंपरागत पवित्र साहित्य सेवाको भूले नहीं हैं। इन समयोंमें भी अनेक जैन ग्रन्थ रचे गये हैं।

अब मैं जैन समाजके समक्ष एक परमावश्यक प्रस्ताव उपस्थित कर देना अपना कर्तव्य समझता हूँ। वह यह है कि कन्नड जैन साहित्यके मौलिक ग्रन्थोंका अनुवाद या तात्पर्यांश हिंदीभाषाभाषी जनताके सामने आ जाना परमावश्यक है। खास कर जो कृतियाँ संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओंमें नहीं मिलती हैं, उनको तो प्रकाशमें आ जाना अनिवार्य ही कहा जा सकता हो। जो संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओंमें प्राप्त होते हैं, बल्कि उसीके आदर्श पर कन्नडमें रचे गये हैं, उनका प्रकटीकरण भी अनुपादेय नहीं कहा जा सकता। क्योंकि इससे तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्राचीन क्रमिक जैन-संस्कृतिका पता लगानेमें पर्याप्त सहायता मिलेगी। बल्कि इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिये 'भारतीय ज्ञानपीठ काशी'की ओरसे इसकी एक शाखा मूडबिद्रीमें सन् १९४४ में स्थापित हुई थी। दुर्भाग्यवश इसके संचालकोंने खर्चको कम करने एवं कार्यशक्तिको केंद्रित करनेके ख्यालसे इस शाखाको दो वर्षके बाद बंद कर दिया। फिर भी मैं 'ज्ञानपीठ'के संस्थापक दानवीर सेठ श्रीमान् शांतिप्रसादजीसे सादर एवं साग्रह निवेदन करना चाहता हूँ कि इस शाखाको फिरसे चालू करके पूर्वोक्त पवित्र उद्देश्यको अवश्य पूर्ण कर दें। क्योंकि काशीसे पत्र व्यवहारके द्वारा सुदूरवर्ती कर्णाटकमें कन्नड साहित्यका प्रकाशन एवं प्रचार होना बहुत कठिन है। मेरे ख्यालमें शायद ही सफलता मिलेगी।

जैन वाङ्मयकी रक्षाका श्रेय

यद्यपि हमारे जैन भाइयोंमें अनेक भाई भट्टारकोंके खिलाफ़ हैं और वे यदा-कदा उनकी कटु समालोचना भी किया करते हैं। पर खेदके साथ लिखना पड़ता है कि वे इन अवसरों पर जैन धर्मके प्रमुख सिद्धांत अनेकान्त या अपेक्षावादको सर्वथा भूल जाते हैं। किसी वस्तुके गुणोंकी उपेक्षा करके केवल उसके दोषोंकी समालोचना करना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता। यह नीति जैन धर्मके अपेक्षावादके सर्वथा प्रतिकूल है। म मानता हूँ कि परिमार्जन दृष्टिसे किसीके दोषोंको उद्घाटन करना बुरा नहीं है। परन्तु निष्पक्ष होकर दोषोंके साथ-साथ उनके गुणोंको व्यक्त करना भी विमर्शकका आवश्यक धर्म है। मेरे इस वक्तव्यका एक आशय यही है कि भट्टारकोंके दोषोंकी जैसी कटु समालोचना की जाती है, वैसे ही उनके गुणोंकी अर्थात् उनके द्वारा समाजको प्राप्त लाभकी प्रशंसा नहीं की जाती। अनुकरणप्रियता रूपी भयंकर सांक्रामिक रोगसे सर्वसाधारण जनता ही नहीं, कभी कभी हमारे माग्य लेखक भी ग्रस्त हो जाते हैं, यह आश्चर्यकी बात है!

वस्तुतः खास कर दिगंबर जैन वाङमयकी रक्षाका अधिकतर श्रेय भट्टारकोंको प्राप्त है। आज भी जैन वाङमयका विशाल संग्रह हमें जैन मठोंमें ही दृष्टिगोचर होते हैं। मूडबिद्री, कारकल, वारंग, श्रवणबेलगोल, हुंबुज, कोल्हापुर, नागौर, कारंजा और ग्वालियर आदि किसी भी स्थानके मठको आप लीजिये वहां पर इस स य भी सैकड़ों हजारों हस्तलिखित ग्रन्थ पाये जाते हैं। इतना ही नहीं, उत्तर भारतके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी अपेक्षा दक्षिण भारतके उसमें भी खास कर कन्नड या कर्णाटक लिपिमें लिखित ग्रन्थ अधिक शुद्ध सिद्ध हुए हैं। तीन साढ़े तीन सालमें मेरे द्वारा राजवार्तिक, तत्त्वार्थवृत्ति, द्विसंधान और धर्मशर्माभ्युदयका टीका, न्यायविनिश्चय, आदिपुराण और सर्वार्थसिद्धि आदि को जो भी प्रतियां यहांसे संशोधनमें सहायतार्थ उत्तर भारतमें भेजी गई हैं, वे प्रायः सबके सब शुद्ध प्रमाणित हुई हैं। बल्कि कोई कोई प्रति ऐसी निकली है कि संपादकोंने उसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। इससे मालूम होता है कि उत्तर भारतके लेखकोंकी अपेक्षा दक्षिण भारतके उसमें भी खास कर कर्णाटकके लेखक अधिक सुबुद्ध थे। इसका कारण भी है—

कुछ शताब्दियों तक कर्णाटक प्रांत दिगंबर विद्वानोंकी लीलाभूमि ही बना रहा। दिगंबर संप्रदायके स्तंभ समझे जानेवाले भूतबलि, पुष्पदंत, समंतभद्र, पूज्यपाद, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, अकलंक और विद्यानंदी आदि जितने प्रधान आचार्य इस समय प्रसिद्ध हैं, वे सब ही कर्णाटकके निवासी थे। कर्णाटकको संस्कृति पर इस संप्रदायकी अमिट छाप पड़ी हुई है। इस बातको निष्पक्ष प्रकृत जैनेतर विद्वान् भी सहर्ष स्वीकार करते हैं। बल्कि एक जमानेमें कारण-विशेषसे निराश्रित दिगंबर जैन संप्रदायको हस्तावलंबन देकर इसकी रक्षा एवं अभिवृद्धिका सफल तथा पवित्र श्रेय कर्णाटक प्रांतको ही प्राप्त है। यदि उल्लिखित ये दिगंबराचार्य कर्णाटकमें

जन्म लेकर दिगंबर वाङ्मयकी श्रीवृद्धि नहीं करते तो बहुत कुछ संभव था कि आज भारतीय अन्यान्य लुप्त संप्रदायोंकी तरह इसका भी केवल नाम ही नाम रह जाता। क्योंकि यह निर्विवाद सिद्ध बात है कि कोई संप्रदाय बिना अपने मौलिक साहित्यके दीर्घकाल तक जीवित नहीं रह सकता। मैं समझता हूँ कि इस पैतृक साहित्य-संपत्ति जैसी अमूल्य एवं अलभ्य निधिकी रक्षा करनेके उपलक्ष्यमें उत्तर भारतका दिगंबर जैन समाज कर्णाटकका सदा कृतज्ञ बना रहेगा।

अस्तु, मेरे लिखनेका आशय इतना ही है कि उपर्युक्त इन विद्वान् आचार्योंके उपरान्त भी दीर्घकाल तक कर्णाटकमें पठन-पाठनकी परिपाटी बनी रही और ग्रन्थ-लेखनादि साहित्यरक्षाके कार्य बराबर चलते रहे। दानचिन्तामणि अत्तिमब्बेके द्वारा कविचक्रवर्ती महाकवि पोन्नकृत शान्तिनाथपुराणकी एक हजार प्रतियोंको लिखवाकर शास्त्र दान करनेका शुभ उल्लेख उपर्युक्त मेरी इस धारणाके लिये उज्ज्वल निदर्शन है। दूर जानेकी आवश्यकता नहीं है। इस ग्रन्थतालिकामें पाठक स्वयं देख सकते हैं कि मूडबिद्रीमें विराजमान धवला टीकाकी आद्य प्रति मण्डलानाडु भुजबली गङ्गपेर्माडिकी सास देमियक्कके द्वारा कोपण तीर्थके प्रसिद्ध दानी जिन्नय्यसे लिखवाकर बन्निकेरे उत्तुंग जिनचैत्यालयके सिद्धान्तमुनि श्री शुभचन्द्रदेवको अपने श्रीपञ्चमीव्रतकी उद्यापनाके उपलक्षमें शास्त्र दानमें दीं गई थी। इसीकी दूसरी प्रतिको राजा गण्डरादित्यके सेनापति मल्लिदेवने लिखवाकर सिद्धान्तमुनि श्रीकुलभूषणको शास्त्रदान किया था। इसी प्रकार यहाँकी जयधवला टीकाकी आद्यप्रतिको चिक्कमय्यके बल्लिसेट्टिने लिखवाकर सिद्धान्तमुनि श्रीपद्मसेनको और महाबन्धकी आद्य प्रतिको राजा शान्तिसेन की पत्नी मल्लिकब्बादेवीने (उदयादित्यसे लिखवा कर) अपने श्रीपञ्चमीव्रतकी उद्यापनाके उपलक्षमें श्रीसिद्धान्तमुनि माघनन्दीको शास्त्रदान किया था। शास्त्रदान सम्बन्धी इस प्रकारके उदाहरण आपको दो-चार नहीं, सैकड़ों मिलेंगे। बल्कि मुझे कुछ ऐसी भी प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं जो कि ग्रन्थ रचयिताके खास विद्वान् शिष्य या प्रशिष्योंके द्वारा ही लिखी गई हों।

ग्रन्थ-भण्डारोंका संक्षिप्त परिचय

इस ग्रन्थ-तालिकामें जैन मठ तथा श्रीवीर-वाणीविलास जैन सिद्धान्त-भवन मूडबिद्री, जैन मठ कारकल, आदिनाथ ग्रन्थ-भण्डार अलियूर और अन्यान्य फुटकर संग्रह मूडबिद्रीके ताडपत्र एवं कागज पर लिखे गये दोनों प्रकारके ग्रन्थोंके नाम संगृहीत हैं। इन भण्डारोंमें जैन मठ और श्री वीर-वाणी-विलास जैन सिद्धान्त-भवन मूडबिद्री, जैन मठ कारकल, आदिनाथ जैन भण्डार अलियूर तथा फुटकर संग्रहोंमें सिर्फ सिद्धान्त बसदि मूडबिद्रीका परिचय ही उल्लेखनीय है। अन्य फुटकर संग्रहोंका परिचय देना कष्टसाध्य नहीं, मेरी दृष्टिमें उतना आवश्यक भी नहीं है। इसलिये यहाँ पर पूर्वोक्त भण्डारोंका आवश्यक परिचय निम्न प्रकार दिया जाता है—

जैनमठ, मूडबिद्री—मूडबिद्री मद्रास प्रान्तके दक्षिण कन्नड (South Kanara) जिलेमें एक विश्रुत प्राचीन जैन तीर्थ है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी यह स्थान जिले भरमें सर्वोत्तम समझा जाता है। इस जिलेमें जैनोंका आगमन कब हुआ यह निःसन्देह रूपसे कहना बहुत कठिन है। फिर भी इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि ई० सन् प्रथम शताब्दीमें यहाँ पर जैन-धर्म मौजूद था। क्योंकि ई० सन् ७८ में बारकूरमें[१] शासन करने वाला भूतालपांड्य जैनधर्मावलम्बी था। हाँ, साधनाभावके कारण तीसरी-चौथी शताब्दियोंमें इस जिलेमें जैन धर्मकी स्थिति कैसी रही, यह नहीं कहा जा सकता। ५ वीं शताब्दीके पश्चात् यहाँ पर शासन करनेवाले चालुक्य, राष्ट्रकूट और होय्सल शासनोंमें भी कई जैन धर्मावलम्बी ही रहे। १२ वीं शताब्दीके बाद तो इस जिलेमें जैन धर्म फिर विशेष रूपसे पल्लवित हुआ। ई० सन् १३ वीं शताब्दीसे १६ वीं शताब्दी तक राज्य करने वाले विजयनगरके शासकोंके शासन-कालमें यहाँ पर जैन धर्म विशेष रहा। इन्हीं शताब्दियोंमें कारकलकी गोम्मटेश्वर मूर्ति (१४३२), मडबिद्रीका होसबसदि अथवा त्रिभुवन-चूडामणि (१४२९) तथा भैरादेवी-मण्डप (१४५१) कारकलका चतुर्मुख-बसदि अथवा त्रिभुवन-तिलक-चैत्यालय (१५२१) और वेणूरकी गोम्मटेश्वरमूर्ति (१६०४) निर्मापित हुई है।

---

१. देखें 'जैन-सिद्धान्त-भास्कर' भा० ४, कि० ४ में प्रकाशित मेरा 'बारकूर' लेख।

अब देखना है कि मूडबिद्रीमें मठ कब स्थापित हुआ। पर यह उतना आसान काम नहीं है। इसमें शक नहीं है कि मूडबिद्रीका मठ श्रवणबेल्गोल मठको ही शाखा हैं। इसीलिये दोनों मठके मठाधीशोंका नाम भी एक ही चारुकीर्ति है। हाँ, यह शाखामठ कब स्थापित हुआ, इसे जाननेके लिये हमारे पास कोई साधन नहीं है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि मूडबिद्रीका मठ कमसे कम ८०० वर्ष पूर्वका अवश्य है। क्योंकि मूडबिद्री मठाधीशका ही दूसरा एक मठ उसी जिलेके नल्लूर ग्राममें ई० सन् ११२० में स्थापित हुआ है जिसका प्रमाण मौजूद है।

मैं अन्यत्र लिख चुका हूँ कि जैन मठोंमें ग्रन्थ-संग्रह एवं रक्षाका कार्य सुदीर्घ कालसे चला आ रहा है। अतः मूडबिद्री मठमें भी यह सत्कार्य प्रारम्भसे ही चालू रहा होगा। परन्तु सुननेमें आया है कि स्वर्गीय भट्टारकजीके कालमें संग्रहका कार्य तेजीसे हुआ। उस वक्त अन्यान्य मन्दिरों एवं श्रावकोंके घर पर जो ग्रन्थ संगृहीत थे, उनमेंसे अधिकांश ग्रन्थ सुरक्षाके खयालसे मठमें ही मँगवा लिये गये। इसके प्रेरक जिनवाणीभक्त आरानिवासी स्व० श्रीमान् बाबू देवकुमारजी थे जिनका जैन सिद्धान्त-भवन दिगम्बर जैन समाजमें एक बहुमूल्य निधि समझी जाती है। खैर, ये सब ग्रन्थ अब मठमें नहीं हैं। वर्तमान मठाधीश चारुकीर्तिजीके द्वारा धर्मशालाके ऊपर निर्मापित नवीन भव्य भवनमें रक्षा पूर्वक रखे गये हैं। आजकल इसके व्यवस्थापक पं० श्री नागराजजी शास्त्री, न्यायतीर्थ हैं।

श्री वीर वाणी-विलास जैन सिद्धान्त-भवन मूडबिद्री—यह भवन सन् १९३३ में स्थापित हुआ। इसके संस्थापक सरस्वतीभूषण पं० श्रीलोकनाथजी शास्त्री हैं। इसमें शास्त्रीजीके निजी ग्रन्थोंके अतिरिक्त अन्यान्य उदार दानियोंके द्वारा भी सैकड़ों हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थ प्रदान किये गये हैं। सामान्यतया संग्रह अच्छा है। शास्त्रीजीके प्रयत्नसे इस ग्रन्थ-भण्डारके लिये एक सुन्दर भवन भी बन गया है जिसमें स्थानीय और बाहरके अन्यान्य उदार दानियोंका पैसा भी लगा है। अभी भी इसकी व्यवस्था प्रेमसे स्वयं शास्त्रीजी ही कर रहे हैं। आप शीघ्र इसका एक ट्रस्टडीड करनेवाले हैं।

जैन मठ, कारकल—कारकल पूर्वमें जैन धर्मनियायी भैररस राजाओंकी समृद्धिशाली राजधानी रही। उस जमानेमें निर्मापित गोम्मटेश्वरकी विशालकाय भव्य मूर्ति, शिलामय त्रिभुवन तिलक-चैत्यालय आदि सुन्दर जिनालय, रामसमुद्र, आनेकेरे आदि चित्ताकर्षक जलाशय वगैरह आज भी यहाँके पूर्व वैभवको सूचित कर रहे हैं। इस समय कारकल तालुकाका हेड क्वॉर्टर है। यद्यपि आजकल यहाँ पर जैनोंकी संख्या कम है। फिर भी भुजबलि-ब्रह्मचर्याश्रम, जैन कन्या पाठशाला, जैन जीर्णोद्धार-सङ्घ और जैन विद्यार्थी-निलय आदि कुछ संस्थाएँ काम कर रही हैं। यहाँका विशेष परिचय मैं जैन सिद्धान्त-भास्कर आदिमें कई बार दे चुका हूँ, इसलिये उन्हीं बातोंको फिरसे दुहराना पिष्टपेषण होगा।

पर एक बात पर यहाँ प्रकाश डाल देना आवश्यक प्रतीत होता है। वह यह है कि एक ताम्रपत्र के आधार पर कुछ विद्वानोंका कहना है कि यहाँका गुरुपीठ (मठ) ई० सन् १५०४ में स्थापित हुआ था। किन्तु मैं इससे सहमत नहीं हूँ। क्योंकि कारकलकी गोम्मटेश्वरमूर्तिके दक्षिण पार्श्वमें वर्तमान एक लेखसे स्पष्ट है कि ई० सन् १४६२ में भी श्री ललितकीर्तिजी ही भैररस राजाओंके मनोनीत गुरु थे और उन्हींकी अध्यक्षतामें गोम्मट-मूर्तिके प्रतिष्ठामहोत्सवका समारोह सम्पन्न हुआ था। हाँ, इतनी बात तो अवश्य है कि जैसे मूडबिद्रीका मठ श्रवणबेल्गोलके मठकी शाखा है, उसी प्रकार कारकलका मठ हनसोगे (मैसूर) मठकी शाखा है। खैर, कारकल मठके ग्रन्थोंकी रक्षा वर्तमान भट्टारकजी स्वयं कर रहे हैं। आप पढ़े-लिखे एक उत्साही त्यागी हैं। मेरा खयाल है कि यहाँके संग्रहमें श्रद्धेय श्री नेमिसागरजी वर्णीके ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं, जिन्होंने लगभग २५ वर्ष पूर्व 'ललितनेमिग्रन्थ संग्रह के नामसे मसूरमें एक ग्रन्थालय स्थापित किया था। उसम उन्हें मैंने भी कुछ ग्रन्थ देहातोंसे एकत्रित करके दिया था। उस समय मैं मैसूरमें विद्याध्ययन कर रहा था।

आदिनाथ ग्रन्थ-भाण्डार अलियूर–यह कारकल तालुकामें मडबिद्री से ९ मील दूरी पर पूर्व दिशामें

अवस्थित है। इस समय तो अलियूर एक सामान्य ग्राम है। हाँ, सुननेमें आता है कि पूर्वमें यह एक नगर रहा। आदिनाथ मन्दिरका जोर्णोद्धार मजलोडि स्व० अनंतय्य शेट्टि द्वारा हालहीमें कराया गया। मन्दिरका स्थान बहुत सुंदर है। स्थान काफी ऊँचा भी है। मन्दिरकी व्यवस्थाके लिये स्थानीय श्रावकोंके सिवाय सरकारसे भी कुछ वर्षाशन नियमित रूपसे मिलता है। मन्दिरके वर्तमान अर्चक श्री अनन्तराजेंद्र उत्साही हैं। सुना है कि इनके पूर्वज बड़े विद्वान् थे। खास कर ज्योतिष और मन्त्र-शास्त्रमें उनकी अच्छी गति रही। इस आदिनाथ ग्रन्थ-भण्डारके कुल ग्रन्थ पहले अर्चकके घर पर थे। मेरी प्रेरणासे अब वे मन्दिरमें ही एक आलमारीमें सुरक्षित रखे गये हैं।

सिद्धान्त बसदि मूडबिद्री—स्थानीय मठके मठाधिपतिका पट्टाभिषेक इसी मन्दिरमें होता है। इसलिये इसे गुरुबसदि भी कहते हैं। बल्कि धवला, जयधवला और महाबंधकी प्राचीन प्रतियाँ इसीमें विराजमान होनेसे सिद्धान्त बसदि भी इसका नाम है। इसमें सोना, चाँदी, स्फटिक, नीलम, गरुडोद्गार, गोमेधक, वैडूर्य, माणिक्य, मोती, हीरा, पुखराग और मूंगा आदि रत्न तथा उपरत्नोंकी ३२ अमूल्य एवं अनर्घ्य जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं जिनके दर्शनके लिये दूर दूरसे अधिक संख्यामें यात्री यहाँ पर आया करते हैं। ये प्रतिमाएँ आधे अंगुलसे लेकर ९ अंगुल तक की हैं। वस्तुतः इनके दर्शनसे हृदयमें एक अभूतपूर्व आनंद पैदा होता है। जनश्रुति है कि धवलादि ग्रन्थ पहले बंबई प्रान्तके धारवाड़ जिलेके बंकापुरमें थे और वहाँसे देवताओंके द्वारा यहाँ पर लाये गये हैं। एक जमानेमें बंकापुर बहुत ही उन्नत स्थितिमें था। यह नगर जैन वीर बंकेयके[१] द्वारा बसाया गया था। उस जमानेमें बंकापुरमें ५ धार्मिक महाविद्यालय[२] वर्तमान थे। खैर, यह विषयांतर है। उक्त सिद्धान्त वसदिमें ९ फीट उन्नत शिलामयी पार्श्वनाथजीकी कायोत्सर्ग मूर्ति है। यह ई० सन् ७१८ में स्थापित हुई है। मूडबिद्रीके कुल मन्दिरोंमें यह सर्व प्राचीन है।

उपर्युक्त ग्रन्थभण्डारोंमें वर्तमान अप्रकाशित ग्रन्थोंमेंसे कुछ ग्रन्थोंके नाम—

विषय—सिद्धांत

क्रम नं०	ग्रन्थ का नाम	कर्ता का नाम	भाषा	ग्रं०सू०पृ०
१	आरोहणसार	×	संस्कृत	१
२	आस्रवसन्तति	श्रुतिमुनि	प्राकृत	१
३	कर्मप्रकृति	अभयचन्द्र	संस्कृत	२
४	कालस्वरूप	×	प्राकृत	४+
५	चतुर्गतिबन्ध तथा चतुर्बन्ध	×	कन्नड	८
६	त्रिभङ्गिटीका	कनकनन्दी	संस्कृत	१०
७	त्रिभङ्गिटीका	श्रुतमुनि	कन्नड	१०
८	द्रव्यसंग्रहलघुवृत्ति	बालचन्द्र	"	१३
९	*नवपदार्थनिश्चय	वादीभसिंह (?)	संस्कृत	१३
१०	पदार्थसार	माघनन्दी	सं०, प्रा०, क०	१३
११	*परमागमसार	श्रुतमुनि	प्रा०, सं०	१५
१२	बन्धूपदेश	बालचन्द्र	संस्कृत	१६

विषय—अध्यात्म

१३	†ध्यानस्तव	भास्करनन्दी	संस्कृत	२६

१. देखें 'जैन सिद्धांतभास्कर' भा० १२, कि० १ में प्रकाशित मेरा "जैन वीर बंकेय" लेख।

२. देखें 'बम्बई प्रांतके प्राचीन जैन स्मारक' पृष्ठ ११६।

× इस नामके दो-एक ग्रन्थ और है। † यह 'जैन सिद्धान्त भास्कर' में प्रकाशित हुआ है।

विषय–धर्म

१४	*आराधनासमुच्चय	रविचन्द्र	संस्कृत	३७
१५	उद्योगसार	नेमिचन्द्र	"	३९
१६	तत्त्वरत्नप्रदीपिका	बालचन्द्र	कन्नड	४४
१७	तत्त्वार्थवृत्ति	प्रभाचन्द्र	संस्कृत	४५
१८	तत्त्वार्थलघुवृत्ति	दिवाकरमुनीन्द्र	कन्नड	४५
१९	त्रैवर्णिकाचार	इन्द्रनन्दी	संस्कृत	४७
२०	दानसार	प्रभाचन्द्रदेव	कन्नड	४७
२१	प्रायश्चित्तविधि	इन्द्रनन्दी	प्राकृत	५८
२२	भव्यजनकण्ठरत्नाभरण	अभयचन्द्र	कन्नड	६०
२३	गुणप्रकाश	×	संस्कृत	२०७

विषय–न्याय

२४	न्यायमणिदीपिका	×	संस्कृत	९६
२५	*परीक्षामुखवृत्ति	शुभचन्द्रदेव	"	९८
२६	विश्वतत्त्वप्रकाश	भावसेन	"	१०३
२७	सत्यशासनपरीक्षा	विद्यानन्दी	"	१०३
२८	*स्याद्वादसिद्धि	वादीभसिंह	"	१०४
२९	प्रवचनपरीक्षा	अभयचन्द्र	"	२२१

विषय–व्याकरण

३०	कातन्त्रविस्तर	वर्धमान	"	१०७
३१	चिन्तामणिटीका	समन्तभद्र	"	१०७
३२	मन्त्रव्याकरण	समन्तभद्र	"	२२३
३३	जैनेन्द्रन्यास	प्रभाचन्द्र	"	२९०

विषय–काव्य

३४	चन्द्रप्रभचरितव्याख्या	मुनिचन्द्र	"	१२३
३५	धर्मशर्माभ्युदयटीका	देवर	"	१२५
३६	नेमिनिर्वाणटीका	×	"	१२६
३७	यशोधरकाव्यटीका	लक्ष्मण	"	१३०
३८	राघवपाण्डवीयटीका	देवर तथा सूरि (१)	"	१३१
३९	शृंगारसुधाब्धि	मङ्गरस	कन्नड	१३४
४०	पञ्चसंधान	शान्तिराज	संस्कृत	२९१
४१	यशोधरटीका	लक्ष्मण	"	२९२
४२	सरसजनचिन्तामणि	शान्तिराज	"	२९२
४३	सन्देहध्वांतदीपिका	यशःकीर्ति	"	२९३

विषय–अलङ्कार

४४	*अलङ्कारसंग्रह	अमृतानन्दी	"	१३५
४५	वाग्भटालंकार	बालचन्द्र	"	१३७

विषय—पुराण

४६	त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण	मल्लिषेण	संस्कृत	१४६
४७	*धर्मनाथपुराण	बाहुबली	कन्नड	१४६
४८	पाण्डवपुराण	वादिचन्द्र	संस्कृत	१४८
४९	पार्श्वनाथपुराण	पार्श्वनाथ	कन्नड	१४८
५०	श्रीपुराण	हस्तिमल्लि	संस्कृत	१४८

विषय—चरित

५१	ज्ञानचन्द्राभ्युदय	कल्याणकीर्ति	कन्नड	१५२
५२	ज्ञानचन्द्रचरित	पायणवर्णी	,,	१५२
५३	पार्श्वनाथचरित	शान्तिकीर्ति	,,	१५४
५४	प्रभंजनचरित	मंगरस	,,	१५५
५५	प्रद्युम्नचरित	महासेन	संस्कृत	१५५
५६	श्रीपालचरित	सकलकीर्ति	,,	१५७
५७	ज्ञानभास्करचरित	नेम्मण	कन्नड	२३१
५८	धन्यकुमारचरित	आदिनाथ	,,	२३२
५९	नागकुमारषड्पदि	विजयण्ण	,,	२३३
६०	,,	कल्याणकीर्ति	,,	२३३
६१	बाहुबलिचरित	चिक्कण	,,	२३३
६२	यशोधरचरित	चन्दण	,,	२३४
६३	रोहिणीचरित	जिनचन्द्र	,,	२३४
६४	लोभदत्तचरित	नेमरस	,,	२३४
६५	वर्धमानचरित	पद्म	,,	२३४
६६	वसन्ततिलकाचरित	नेमिचन्द्र	,,	२३४
६७	विजयकुमारीचरित	श्रुतिकीर्ति	,,	२३४
६८	श्रीपालचरित	इन्द्रदेवरस	,,	२३४
६९	,,	वर्धमान	,,	२३५
७०	श्रेणिकचरित	जिनदेवण	,,	१३५
७१	अनन्तमतिचरित	सातणवर्णी	,,	२६७
७२	अञ्जनाचरित	शिशुमायण	,,	२६९
७३	आंजनेयचरित	मायण	,,	२६९
७४	सुकुमारचरित	शान्तिनाथ	,,	२६९
७५	सुदर्शनचरित	नेमरस	,,	२६९

विषय—इतिहास

७६	श्रीपालचरित	केशण	,,	२९७
७७	गोम्मटेश्वरचरित (कारकल)	चन्द्रम	,,	१६४
७८	,, (वेणूर)	गुरुराम	,,	२६८

विषय—वैद्यक

७९	कल्याणकारक	सोमनाथ	,,	१६५
८०	बालग्रहचिकित्सा	देवेन्द्रमुनि	,,	२७१

विषय–ज्योतिष

८१	अक्षरकेवलिप्रश्न	×	,,	१६६
८२	केवलज्ञानहोराशास्त्र	चन्द्रसेन	,,	१६६
८३	केवलिप्रश्न	×	कन्नड	१६७
८४	गर्भप्रश्न	×	,,	२४२
८५	चन्द्रोन्मीलनप्रश्न	×	संस्कृत	२४२
८६	जिनेन्द्रमाला	×	कन्नड	२४२
८७	*ज्योतिर्ज्ञानविधि	श्रीधराचार्य	संस्कृत	२४२
८८	अट्टमत	अर्हद्दास	कन्नड	२७३
८९A	तीर्थंकेवलिप्रश्न	×	संस्कृत	२७४
८९B	*केवलज्ञानचूडामणि	समन्तभद्र (?)	,,	२४७

विषय–गणित

९०	गणितविलास	चन्द्रम	कन्नड	१६८
९१	*गणितसार	श्रीधराचार्य	संस्कृत	१६९
९२	गणितसंग्रह	राजादित्य	कन्नड	१६९

विषय–मन्त्रशास्त्र

९३	गणधरवलयकल्प	×	संस्कृत	१६९
९४	पञ्चनमस्कारचक्र	×	,,	१७०
९५	*कामचाण्डालिनीकल्प	मल्लिषेण	,,	२४४
९६	ज्वालिनीकल्प	इन्द्रनन्दी तथा मल्लिषेण	,,	२४४–५
९७	ब्रह्मविद्याविधि	×	,,	२४५
९८	विद्यानुवादांग	×	,,	२४६
९९	सरस्वतीकल्प	मल्लिषेण तथा विजयकीर्ति	,,	२६६
१००	*श्रीदेवताकल्प	अरिष्टनेमि	,,	२७६

विषय–स्तोत्र

१०१	निजाष्टक	योगींद्रदेव	प्राकृत	१८९
१०२	वृषभनाथगद्य	हस्तिमल्ल	संस्कृत	१९३
१०३	सिद्धस्तोत्र	आशाधर	,,	१९६
१०४	अर्हद्भक्ति	,,	,,	२५०
१०५	चतुर्विंशतिस्तव	केशवसेन		२५०
१०६	चन्द्रप्रभस्वामिघोष	पूज्यपाद		२५०
१०७	चतुर्विंशतिस्तोत्र	माघनन्दी		२७८
१०८	आरोग्यस्तोत्र	श्रुतकीर्ति	कन्नड	३०३
१०९	प्रश्नोत्तरचतुर्विंशतिजिनस्तव	धर्मचन्द्र	संस्कृत	३०४

विषय–प्रतिष्ठा तथा पूजा

११०	प्रतिष्ठाकल्प	भट्टाकलङ्क	संस्कृत	२१४

१११	अष्टमनन्दीश्वरपूजा	विद्यानन्दी	संस्कृत	२१६
११२	सिद्धचक्रपूजा	आशाधर	,,	२२०
११३	संक्षिप्तश्रुतज्ञानविधान	चन्द्रम	,,	२२०

विषय–आराधना तथा व्रतविधान

११४	भुजबलिकल्याणव्रतविधान	पद्मनन्दी	,,	२१८
११५	श्रुतस्कन्धाराधना	विजयवर्णी	,,	२१९

विषय–परीक्षा

११६	अश्वपरीक्षा	अभिनवचंद्रम	कन्नड	२४६

विषय–क्रियाकाण्ड

११७	*दशभक्त्यादिसंग्रह	वर्धमान	सं०, प्रा०, क०	२४९

विषय–कथा

११८	चन्द्रषष्ठिकथा	माधवचन्द्र	संस्कृत	२३५
११९	त्रैलोक्यविधानकथा	अभ्रदेव	संस्कृत	२३६
१२०	रत्नत्रयकथा	पद्मनन्दी	,,	२३६
१२१	रुक्मिणीकथा	सोमदेव	,,	२३६

विषय–गीत

१२२	आदिनाथयक्षगान	सदानन्द	कन्नड	२५१
१२३	पद्मावतीयक्षगान	बाहुबली तथा शङ्कर भट्ट	,,	२५२

विषय–नीति

१२४	*नीतिवाक्यामृतटीका	नेमिनाथ	कन्नड	२९३

ग्रन्थतालिका-निर्माणमें कठिनाइयाँ

ग्रन्थतालिकानिर्माणमें सबसे बड़ी कठिनाई यह होती है कि एक बंडलमें एक-दो नहीं, किसी-किसीमें दस-बीस ग्रन्थ तक रहते हैं। वे भी एक विषयके नहीं, भिन्न-भिन्न विषयके। ऐसा भी है कि किसी-किसी बंडलमें पूर्ण ग्रन्थ एक भी नहीं मिलता। किन्तु किसीका एक पत्र, किसीके दो पत्र, किसीके चार पत्र और किसीके आठ। इसके साथ-साथ दूसरी यह दिक्कत भी है कि ताडपत्रीय ग्रन्थोंकी लिपि बहुत ही बारीक़ रहती है। बल्कि, किसी-किसीकी लिपि इतनी खराब होती है कि वह पढ़ी ही नहीं जाती। ऐसे भी संग्रह मिलते हैं कि एक ही में ज्योतिष, मंत्रशास्त्र, कामशास्त्र, स्तुति और भजनादि सब कुछ भर दिये गये हैं। जैसे कोई आधे पत्रमें, कोई एक पत्रमें, कोई दो पत्रोंमें और कोई चार पत्रोंमें। पाठक ही सोचें कि इसका क्या नाम लिखा जाय और क्या विषय। इसे एक छोटा नोट-बुक कहना ही समुचित है।

वस्तुतः प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंकी तालिका तैयार करना आसान काम नहीं है, जैसे कुछ व्यक्ति समझ रहे हैं। प्रत्युत यह बहुत ही कष्टसाध्य एवं रूक्ष काम है। इस बातका अनुभव एक भुक्तभोगी ही कर सकता है। बंडलके प्रत्येक पत्रको सावधानीसे उलट-पुलट कर देखना आवश्यक होता है। अन्यथा बीचमें जो ग्रन्थ छिपा हुआ है, वह छूट ही जाता है। गणितसार-श्रीधराचार्य, परीक्षामुखवृत्ति-शुभचन्द्र, स्याद्वादसिद्धि तथा नवपदार्थ-निश्चय-वादीभसिंह, आराधनासार-रविचन्द्र और ध्यानस्तव-भास्करनंदी आदि अभी उपलब्ध अप्रकाशित नये ग्रन्थ क्या पहलेसे भाण्डारोंमें मौजूद नहीं थे? फिर इसके पूर्व, पूर्वमें तालिकानिर्माण करनेवालोंको ये ग्रन्थ क्यों नहीं मिले? कृपया इसका अर्थ कोई यह न लगावें कि प्रस्तुत तालिका त्रुटियोंसे सर्वथा मुक्त है। इसमें भी बहुत सी त्रुटियाँ होंगी और उन त्रुटियोंका होना कोई अस्वाभाविक नहीं है। हाँ, सावधानीसे काम लिया गया है। फिर भी एक व्यक्तिके हाथका काम नहीं है, मैं इस पर विज्ञ पाठकोंको पूर्ण विश्वास दिला दूँ।

धन्यवाद समर्पण

अंतमें ग्रन्थभाण्डारके संरक्षकों एवं अन्यान्य सहयोगियोंको धन्यवाद देना भी मेरा कर्तव्य है। ग्रन्थ-भाण्डारके संरक्षकोंमें खास कर श्रद्धेय स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्तिजी मूडबिद्री और स्वस्ति श्री भट्टारक ललित-कीर्तिजी कारकल विशेष धन्यवादके पात्र हैं। आप दोनोंने अपने यहाँके ग्रन्थ-तालिका-निर्माणमें विशेष रूपसे सहायता की है। इसके अतिरिक्त श्री वीरवाणी-विलास जैन सिद्धान्त-भवनके संचालक सरस्वतीभूषण पं० वी० लोकनाथजी शास्त्री, आदिनाथ ग्रन्थभाण्डार अलियूरके अधिकारी श्री अनंतराजेन्द्रजी, मूडबिद्रीके अन्यान्य फुटकर संग्रहोंके संरक्षक जैसे सिद्धांत बसदिके प्रबंधक जैन पंच, चौटर श्री धर्मसाम्राज्यजी, पं० श्री नेमिराजजी सेट्टि, पं० श्री एम्० एस० पद्मनाभजी शास्त्री, बेंकणतिकारीबसदि श्री जिनराजेंद्रजी, होसबसदि श्री शांतिराजेंद्रजी पडुबसदि श्री अनन्तराजेंद्रजी और मा० श्री देवराजजी सेट्टि भी धन्यवादके अधिकारी हैं, जिन्होंने बड़ी उदारतासे सूचीनिर्माणार्थ अपने यहाँके बहुमूल्य ग्रन्थोंको सहर्ष प्रदान किया है।

सहयोगियोंमें सरस्वतीभूषण पं० श्री० लोकनाथजी शास्त्री, पं० श्री एस० चन्द्रराजेंद्रजी शास्त्री, पं० श्री एम० एस० पद्मनाभजी शास्त्री तथा पं० श्री एम० पी० भोजराजजी पुर्वाणिका भी मैं नहीं भूल सकता जिनकी सहायतासे इस ग्रन्थ तालिकाको मैं इस रूपमें आप पाठकोंके समक्ष रख सका। इस अवसर पर 'जैन विद्या-वर्द्धक संघ' मूडबिद्रीके सुयोग्य कार्यदर्शी श्री एम० जगत्पालजीके उपकारका स्मरण करना भी मैं अपना धर्म समझता हूँ, जिन्होंने बड़ी उदारतासे 'भारतीय ज्ञानपीठ' के शाखा-कार्यालयको लगभग दो साल तक बिना प्रति-फलापेक्षाके अपने ही यहाँ संघ-भवनमें स्थान दे कर इसके प्रत्येक कार्यमें समय-समय पर सहायता की है। इस तालिका-निर्माण-कार्यमें मठके ग्रन्थभाण्डारके व्यवस्थापक पं० श्रीनागराजजी शास्त्रीसे भी काफी सहायता मिली है, अतः वे भी धन्यवादके पात्र हैं।

---

* इस चिह्नवाले ग्रन्थ भारतीय ज्ञानपीठकी ओरसे प्रकाशित होनेवाले हैं।

मेरा निवेदन

अब ग्रन्थ-तालिकाके संपादनके संबंधमें भी दो शब्द लिख देना परमावश्यक है। इस ग्रन्थ-तालिकाका निर्माण कार्ड सिस्टममें 'भारतीय ज्ञानपीठ' काशीके शाखाकार्यालय मूडबिद्रीमें हुआ। बाद आज्ञानुसार ये कार्ड सबके सब प्रधान कार्यालय काशीमें भेज दिये गये, और व्यवस्थापकजीको लिख दिया था कि इसका प्रूफ़ मेरे पास आ जाना चाहिये, ताकि प्रूफ़में सुधारी जानेवाली आवश्यक बातें सहज सुधार दी जाँय। किंतु छपाई आदिकी असुविधासे वे ऐसा नहीं कर सके। परिणामस्वरूप ग्रंथ-तालिका में कहीं ग्रंथ तथा ग्रंथकर्ताके जैसे-चंद्रप्रभका चंद्रप, शान्तिका शान्ति और यंत्रप्रतिष्ठा विधानका यथाप्रतिष्ठाविधान, यंत्रविधिका यंत्रीविधि आदि नामोंमें भी अशुद्धियाँ रह गई हैं।

ग्रंथ तालिकातर्गत अजैन ग्रंथोंको * इस चिन्हके द्वारा सूचित करनेका प्रयास कार्यालय वालोंने किया है अवश्य, पर यह भी कहीं कहीं छूट गया है।

अस्तु, इस ग्रंथ-तालिकाको प्रकाशमें लानेके उपलक्षमें 'भारतीय ज्ञानपीठ'के संस्थापक श्रीमान् दानवीर सेठ शांतिप्रसादजी, मंत्री बाबू श्री अयोध्याप्रसादजी गोयलीय तथा न्यायाचार्य श्रीमान् पं० महेंद्रकुमारजी शास्त्री इन तीनोंका समाज अवश्य कृतज्ञ रहेगा। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि ग्रंथ-तालिकाके दूसरे भागमें बारंग, हुंबुज, श्रवणबेलगोल और कोल्हापुर आदि दक्षिणके शेष ग्रंथभाण्डारोंके ग्रंथ भी अवश्य सम्मिलित किये जायेंगे। तब ही 'ज्ञानपीठ' का यह कार्य पूर्ण संपन्न हुआ समझा जायगा।

मूडबिद्री
६।११।४७

—भुजबली शास्त्री

कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची

कन्नडग्रन्थसूची

मूडबिद्री जैनमठके ताडपत्रीय ग्रन्थ

विषय—सिद्धान्त

ग्रन्थ नं० २०७।

१ आरोहणसार— · · · · पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-८६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—इसमें गुणस्थानक्रमारोहणपर प्रकाश डाला गया है।

ग्रन्थ नं० ४६२।

२ आसवतिभंगी—आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०-६४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—इसमें कन्नडवृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० ५११।

३ आसवसंतति—श्रुतमुनि। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष—इसमें बालचन्द्रकृत कन्नडटीका भी है। टीकाका प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है—

अभिवन्द्य जिनान्वीरान् सद्ज्ञानादिगुणात्मकान्। कर्णाटभाषया वक्ष्ये टीकामास्रवसन्ततेः॥

ग्रन्थ नं० ७७४।

४ आसवसंतति—श्रुतमुनि। पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७४। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष—इसमें कन्नडटीका है।

ग्रन्थ नं० ४२।

५ कम्मपयडि [कर्मप्रकृति]—आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं० २०। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष—इसमें कन्नडवृत्ति एवं 'रयणसार' के कुछ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ८७।

६ कम्मपयडि [कर्मप्रकृति]—आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—इसमें मूलमात्र है।

ग्रन्थ नं० ३२०।

७ कम्मपयडि [कर्मप्रकृति]—आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३७५।

८ कम्मपयडि [कर्मप्रकृति]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१३९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें मुनि प्रभाचन्द्रदेवकृत कन्नडटीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५६३।

९ कम्मपयडि [कर्मप्रकृति]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें कन्नडटीका है तथा 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के कुछ खण्डित पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ५६३।

१० कम्मपयडि [कर्मप्रकृति]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें 'सूक्तिमुक्तावली' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८७।

११ कर्मप्रकृति–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८६।

१२ कर्मप्रकृति–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र संख्या–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४५।

१३ कर्मप्रकृति–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२०।

१४ कर्मप्रकृति–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५१।

१५ कर्मप्रकृति–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

अन्तिम पद्य–जयन्ति विधुताशेषपापाञ्जनसमुच्चयाः। अनन्तानन्तधीदृष्टिसुखवीर्या जिनेश्वराः॥ कृतिरियमभयचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्तिनः।

ग्रन्थ नं० ३८३।

१६ कर्मप्रकृति–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं० २४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

प्रारम्भिक पद्य–प्रक्षीणावरणद्वैतमोहप्रत्यूहकर्मणे। अनन्तानन्तधीदृष्टिसुखवीर्यात्मने नमः॥ १॥

विशेष–यह ग्रन्थ 'गोम्मटसार' से भिन्न है, तथा गद्यरूप है।

ग्रन्थ नं० ५८२।

१७ कर्मप्रकृति–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०।

लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

अन्तिम पद्य–जयन्ति विधुताशेषपापाञ्जनसमुच्चयाः। अनन्तानन्तधीदृष्टिसुखवीर्या जिनेश्वराः॥

ग्रन्थ नं० ३३४।

१८ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१९ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५० ।

२० कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९५ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५१ ।

२१ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६९ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नडटीका भी है।

ग्रन्थ नं० ९० ।

२२ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७८ । लिपि–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–मेरुनन्दिके शिष्य जिनचन्द्रदेवने तेंकण आदियण्णके वास्ते इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० २१४ ।

२३ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१८ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

२४ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–२५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

२५ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–प्रतिमें इसका नाम 'कर्मप्रकृतिबोल्लि' है।

ग्रन्थ नं० ४६४ ।

२६ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४८१ ।

२७ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

२८ कर्मप्रकृति–···· । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६५९।

२९ कर्मप्रकृति-····। पत्र सं०-८०। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७४५।

३० कर्मप्रकृति-····। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें 'लोकस्वरूप' का भी एक पत्र है।

ग्रन्थ नं० ७६८।

३१ कर्मप्रकृति-····। पत्र सं०-११। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें 'पंचपरमेष्ठिस्वरूप' (कन्नड) के भी २ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ९०३।

३२ कर्मप्रकृति-····। पत्र सं०-७½। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३५।

३३ कालविभाग-····। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६३६।

३४ कालस्वरूप-····। पत्र सं०-२५। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें बीच बीच में संस्कृतविवरण भी है।

प्रारम्भिक पद्य-वन्दित्ता पंचगुरू सदिदपरिपूजिए अणंतगुणे। भरहेरावहखेत्तजकालसरूवं पवक्खामि॥१॥

ग्रन्थ नं० ७४०।

३५ कालस्वरूप-······। पत्र सं-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-८१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १०१।

३६ गोम्मटसार [जीवकाण्ड तथा कर्मकाण्ड] आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें संदृष्टिके भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ नं० ५८९।

३७ गोम्मटसार [जीवकाण्ड तथा कर्मकाण्ड] आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०-५०। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-नागरी। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-अतिजीर्ण तथा खण्डित।

विशेष-इसमें 'दशवैकालिक' तथा 'आप्तमीमांसा' के भी कुछ खण्डित पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २१।

३८ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]-आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं० ९। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१३०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें केशववर्णीकृत संस्कृतटीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६६ ।

३९ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० २२४ । पंक्ति प्रतिपत्र ६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा– सामान्य ।

विशेष–इसमें आचार्य अभयचन्द्रकी संस्कृतटीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८० ।

४० गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९३ ।

४१ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–५१ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१०४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें धनञ्जयनाममालाके भी ३ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५१ ।

४२ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० २६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रति-पंक्ति–६७ । लिपि–कन्नड । भाषा– प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९६ ।

४३ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–५५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

विशेष–इसमें केशववर्णीकृत कन्नडटीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५११ ।

४४ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–३९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रति-पंक्ति–१०४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नडटीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५७ ।

४५ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रति-पंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५६७ ।

४६ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० १७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रति-पंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७३ ।

४७ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० ५० । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति १२० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कवि अग्गलकृत 'चन्द्रप्रभपुराण' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५७४।

४८ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र– ६। अक्षर प्रति-पंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय– सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५८८।

४९ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१३७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५०। लिपि–कन्नड। भाषा– प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके अन्तकी ७ गाथाएँ नहीं हैं। इसमें केशववर्णीकृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६७२।

५० गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रति-पंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'द्रव्यसंग्रह' तथा 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७६७।

५१ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–११२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रति-पंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय– सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें केशवण्णविरचित 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नडवृत्ति है।

ग्रन्थ नं० ७८७।

५२ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रति-पंक्ति–९८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें मूलगाथाओंकी संस्कृत-छाया है तथा त्रिभंगी आदिके भी कुछ खण्डित पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८१३।

५३ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रति-पंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसम षोडशभावनाके गीत भी हैं।

ग्रन्थ नं० ९०५।

५४ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–६६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रति-पंक्ति–१४६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संदृष्टियाँ तथा संस्कृतटिप्पणी भी हैं।

ग्रन्थ नं० ५८।

५५ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२९४। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रति-पंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें चामुण्डरायके द्वारा शालिवाहन शक १८२१ में रचित कन्नडवृत्ति भी है। वृत्तिके अन्तमें एक विस्तृत कन्नडप्रशस्ति लगी है।

ग्रन्थ नं० २३७।

५६ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें केशववर्णीकृत विस्तृत कन्नडटीका भी है।

ग्रन्थ नं० २३७।

५७ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २९४।

५८ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३१७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें केशण्णरचित कन्नडटीका है। यह टीका शालिवाहन शक १२८१ विकारि संवत्सर, चैत्र शुक्ला ५ के दिन रची गई है।

ग्रन्थ नं० ४२३।

५९ गोम्मटसार [जीवकाण्ड की टिप्पणी]–पत्र सं० २२। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–१९९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३२।

६० गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२२५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें केशववर्णीकृत कन्नडटीका है। भट्टारक धर्मभूषणकी आज्ञासे उक्त केशववर्णीने शालि शक १२८१ में इस टीकाकी रचना की है। लेखक पण्डितदेव हैं।

ग्रन्थ नं० ५०९।

६१ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५४४।

६२ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१७१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१६०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

विशेष–इसमें बीच बीचमें कन्नडटीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५८६।

६३ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२८१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। शालि शक १२५१। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

विशेष–इसमें केशववर्णीकृत कन्नडवृत्ति है। यह वृत्ति शालि शक १२५१ विकारि संवत्सर, चैत्र शुक्ला ५ के दिन रची गई है।

ग्रन्थ नं० ६७० ।

६४ **गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]**–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें संस्कृत तथा कन्नडवृत्ति है, तथा पूजा एवं वैद्यक संबंधी कुछ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५००।

६५ **चतुर्गतिबन्धक्रम**–······पत्र सं० ५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–८४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

६६ **चतुर्बन्ध**–······ पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

६७ **चतुर्बन्ध**–······पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८१ ।

६८ **ठिदिबन्ध–[स्थितिबन्ध]**–······पत्र सं०–६३ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११३ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं ३२१ ।

६९ **तत्त्वस्वरूप**–······पत्र सं०– ६ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

७० **तत्त्वानुशासन**–मुनि रामसेन । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७०६ ।

७१ **तत्त्वानुशासन**–मुनि रामसेन । पत्र सं० १४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

७२ **तत्त्वानुशासन**–मुनि रामसेन । पत्र सं० ५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें किसी धर्मग्रंथके संस्कृतटिप्पणीके आद्यन्तरहित ५ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २९१ ।

७३ **तत्त्वार्थराजवार्तिक**–आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०–२८० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८७ ।

७४ **तत्त्वार्थराजवार्तिक**–आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०–१७५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४९७ ।

७५ **तत्त्वार्थराजवार्तिक**–आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०–३५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८८९ ।

७६ तत्त्वार्थराजवार्तिक–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २०।

७७ तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें गोम्मटसारकी सन्दृष्टिके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४३।

७८ तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नडवृत्ति है।

ग्रन्थ नं० ५१।

७९ तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८१। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नडटीका है।

ग्रन्थ नं० १२८।

८० तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नडटीका है।

ग्रन्थ नं० २०९।

८१ तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६४।

८२ तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९०।

८३ तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें बालचन्द्रकृत कन्नडवृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० ४१७।

८४ तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६०६।

८५ तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नडटीका है।

ग्रन्थ नं० ६०९।

८६ तिभंगी–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नडटीका है।

ग्रन्थ नं० ७२६।

८७ **त्रिभंगी**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत 'आदिपुराण' के भी कुछ पत्र हैं। उक्त ग्रंथ कन्नडटीकासहित है।

ग्रन्थ नं० ७५६।

८८ **त्रिभंगी**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २०३।

८९ **त्रिभंगिटीका**–आचार्य कनकनन्दी। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २०४।

९० **त्रिभंगिटीका**–श्री श्रुतमुनि। पत्र सं०–१०४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४५८।

९१ **त्रिभंगिटीका**–········। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रंथ नं० ७७४।

९२ **त्रिभंगीवृत्ति**–केशवण्ण। पत्र सं०–८९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह 'गोम्मटसार' [कर्मकाण्ड]का एक प्रकरण है। ग्रंथारंभमें मुनि जयकीर्ति कृत संस्कृत अवतरणिका भी इसमें उद्धृत की गयी है।

ग्रन्थ नं० २०।

९३ **दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रंथ नं० २६।

९४ **दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–शालि० शक–११९५। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें लेखनकाल–"शकवर्षं बाणपदार्थकलाधररूपसंख्येयं" अर्थात् शालिवाहन शक ११९५ लिखा है। इसमें बालचन्ददेवकी कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० ४१।

९५ **दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। विषय–सिद्धान्त। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'गोम्मटसार' (जीवकाण्ड) के कुछ पत्र और संदृष्टि भी है।

ग्रन्थ नं० ५०।

९६ **दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

९७ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१८½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१२७ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

९८ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१०२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२८ ।

९९ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–५६ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रति-पंक्ति–५८ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

१०० दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–२७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१०१ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ३०० ।

१०१ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रति-पंक्ति–८७ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१६ ।

१०२ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रति-पक्ति–११६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ४५२ ।

१०३ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–७६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रति-पंक्ति–८४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

१०४ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–३½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रति-पंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

१०५ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति है। इसके रचयिता पण्डित बालचन्द्र हैं। यह शालि० शक ११९५ अंगिर संवत्सर कार्तिक कृष्णा पंचमीके दिन रची गयी है।

ग्रन्थ नं० ५५२।

१०६ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–७५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रति-पंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें श्रीब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका है। ग्रंथ पूर्ण है, पर बीच-बीच में कुछ पत्र खण्डित हैं।

ग्रन्थ नं० ५९८।

१०७ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रति-पंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ६३६।

१०८ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रति-पंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें ७७ गाथाएं हैं।

ग्रन्थ नं० ६७८।

१०९ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रति-पंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। शालि० शक १६६८। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें पण्डित बालचन्द कृत कन्नड टीका है। यह टीका शालि० शक ११९५ आंगीरस संवत्सर कार्तिक कृष्णा ५ के दिन रची गयी है।

ग्रन्थ नं० ६७९।

११० दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रति-पंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–अडगूरुनिवासी मल्यण्णने मुनि जिनदेवके लिये शास्त्रदान-निमित्त इसे लिखा है। इसमें 'अकलंकाष्टक' भी है।

ग्रन्थ नं० ६८९।

१११ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१८½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रति-पंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६९६।

११२ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचंद्र। पत्र सं०–६३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ७८२।

११३ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–५७½ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८०९।

११४ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–३० । पंक्ति प्रतिपत्र–१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४९ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८१३।

११५ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–९½ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपत्र–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१५।

११६ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–२५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८१९।

११७ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९१ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८०।

११८ दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८९।

११९ द्रव्यसंग्रहलघुवृत्ति–पण्डित बालचन्द । पत्र सं०–३४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–शालि० शक ११९५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–वृत्तिके रचयिता बालचन्द्र भट्टारक नेमिचन्द्र तथा अभयचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ७५५।

१२० नवपदार्थनिश्चय–वादीभसिंह । पत्र सं०–१½ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २६८।

१२१ पदार्थसार–आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०–६३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३८२ ।

१२२ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९२ ।

१२३ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-९१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९१ ।

१२४ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५६३ ।

१२५ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ८०७ ।

१२६ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४१

१२७ पयडिसमुक्कित्तण [प्रकृतिसमुत्कीर्तन]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध ।

विशेष-यह 'गोम्मटसार' [कर्मकाण्ड] का एक प्रकरण है ।

ग्रंथ नं ५० ।

१२८ पयडिसमुक्कित्तण [प्रकृतिसमुत्कीर्तन]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखननकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २८१ ।

१२९ पयडिसमुक्कित्तण [प्रकृतिसमुत्कीर्तन]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३१३ ।

१३० पयडिसमुक्कित्तण [प्रकृतिसमुत्कीर्तन]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत छाया एवं कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

१३१ पयडिसत्तट्ठाण [प्रकृतिसत्त्वस्थान] की टीका-आचार्य कनकनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

१३२ परमागमसार–श्रुतिमुनि । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यों तो यह ग्रंथ प्राकृतमें है । पर अन्तमें थोड़ी सी टिप्पणी संस्कृतमें दी गयी है ।

ग्रन्थ नं० ४५८ ।

१३३ परमागमसार······· । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५८ ।

१३४ परमागमसार········· । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४५६ ।

१३५ पवयणसार [प्रवचनसार]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–१३७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें मुनि पद्मनन्दिकृत कन्नड तात्पर्यवृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

१३६ पवयणसार [प्रवचनसार]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें आचार्य अमृतनन्दि कृत 'तत्त्वदीपिका' नामक संस्कृत वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ५३६ ।

१३७ पवयणसार [प्रवचनसार]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–१०५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

विशेष–इसमें 'पंचास्तिकायप्राभृत' के कुछ पत्र हैं, एवं संस्कृत व्याख्या भी है ।

ग्रंथ नं० ६९२ ।

१३८ पवयणसार [प्रवचनसार]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२८ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष—इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रंथ नं० ७५६ ।

१३९ पवयणसार (प्रवचनसार)–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रंथ नं० ५५४ ।

१४० पंचपरूवणा–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–यह 'गोम्मटसार' [जीवकाण्ड] का एक भाग है ।

ग्रंथ नं० ३१ ।

१४१ पंचसत्तावण्ण [सप्तपंचाशदास्रव]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–३७ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । शुद्ध तथा

अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह 'गोम्मटसार' का एक प्रकरण है। इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रंथ नं० १५४।

१४२ पंचसंसारविस्तर–पत्र सं०–२३/४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रंथ नं० ३१८।

१४३ पंचस्थिकाय–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड । भाषा– प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रंथ नं० ६९२।

१४४ पंचत्थिकाय–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें मलधारी पद्मप्रभ देव कृत कन्नड टीका भी है।

ग्रंथ नं० ७५६।

१४५ पंचत्थिकाय–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–३३/४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रंथ नं० १४१।

१४६ बन्धूपदेश–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५५४।

१४७ बन्धूपदेश–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–११/२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

१४८ बन्धूपदेश–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कर्म-बन्धों का लक्षण कहा गया है।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१४९ मोक्खपाहुड [मोक्षप्राभृत]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यह १०५ गाथाओंमें मूलमात्र है।

ग्रन्थ नं० २०९ ।

१५० मोक्खपाहुड [मोक्षप्राभृत]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेषः–इसमें बीच बीच में संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ न० ४९४ ।

१५१ मोक्खपाहुड [मोक्षप्राभृत]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य

शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५२९ ।

१५२ मोक्खपाहुड [मोक्षप्राभृत]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७५८ ।

१५३ मोक्खपाहुड [मोक्षप्राभृत]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–११½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें पण्डित बालचन्द्रकृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७९० ।

१५४ मन्दप्रबोधिनी–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–२९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष–यह गोम्मटसार [पंचसंग्रह] की वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

१५५ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–४५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष—इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४२ ।

१५६ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

१५७ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९१ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष—इसमें 'गोम्मटसार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २९८ ।

१५८ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–४० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५७ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४१९ ।

१५९ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–६७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१३६ । लिपि–कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष—इसमें केशववर्णी कृत संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५१

१६० लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

विशेष—इसमें कन्नड टीका एवं न्यायसम्बन्धी कुछ खण्डित पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ५५७

१६१ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–९२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५६०।

१६२ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष—इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ५०।

१६३ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–५८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–शालि०शक १४४०। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसे बोम्मि सेट्टिके पुत्र चन्दि सेट्टिने श्री वर्धमानदेवके लिये लिखवाया है। इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है, इसका अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है–

"स्याद्वादाचलकेसरीकुमतजालक्षोणीभृद्वासवः श्रीबालेन्दुपदारविंदमकरन्दानन्दपुष्पन्धयः।

सिद्धान्तामृतवार्धिवर्धनकरप्रालेयरोचिः सदा जीयाद् भूनुतपद्मनन्दियतिपस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः॥ "

यह गोम्मटसार (जीवकाण्ड)का अपर नाम है।

ग्रन्थ नं० ७७।

१६४ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–६७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२१। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–शालि०शक१६७३। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति है। वृत्तिके रचयिता अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्तीके शिष्य केशवण्ण हैं। इसे मूडबिद्रीके त्रिभुवनचूडामणि मन्दिरमें स्थानीय अय्यण्ण सेट्टिने श्री मुनि श्रुतकीर्तिके लिये लिखा है। यह गोम्मटसार [जीवकाण्ड] का अपर नाम है।

ग्रन्थ नं० २४५

१६५ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर-प्रतिपंक्ति–१०८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध-दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें मुनि बालचन्द्रके अग्रशिष्य त्रैविद्यचक्रवर्ती पद्मप्रभके द्वारा रचित विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० २६०।

१६६ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१००। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें बालचन्द्रके शिष्य त्रैविद्यचक्रवर्ती पद्मप्रभके द्वारा रचित कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० २७३ ।

१६७ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–२८ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लखनकाल × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें त्रैविद्यचक्रवर्ती पद्मप्रभ कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३४० ।

१६८ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१३२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४१ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड टीका है । इसके टीकाकार श्री पद्मप्रभ त्रैविद्यचक्रवर्ती हैं ।

ग्रन्थ नं० ४५२ ।

१६९ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–५८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५४० ।

१७० वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

१७१ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–३३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५७१ ।

१७२ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–५१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें आचार्य पद्मप्रभदेव कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५७४ ।

१७३ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्ता । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें पद्मप्रभ त्रैविद्यदेव कृत कुछ संस्कृत पद्य भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५७७ ।

१७४ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें अमरकोश पदवृत्ति के भी ७ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८२।

१७५ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–८$\frac{1}{3}$। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६०४।

१७६ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रंथ नं० ६१५।

१७७ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल ×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६८९।

१७८ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है तथा, प्रमेयरत्नमाला' एवं 'सागारधर्मामृत' के कुछ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ७०६।

१७९ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५६९।

१८० सत्ततिभंगी [सत्त्वत्रिभंगी]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५३७।

१८१ समयपाहुड [समयप्राभृत]–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७३६।

१८२ समयसार–कवि ब्रह्मदेव। पत्र सं०–५६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त-धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २३२।

१८३ सिद्धराशिवर्णन–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९२।

१८४ सिद्धराशिवर्णन–····। पत्र सं०–२$\frac{1}{3}$। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१८५ **सिद्धराशिवर्णन**—कल्याणकीर्ति। पत्र सं०-३$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रंथ नं० ९

१८६ **सिद्धन्तसार**-आचार्य जिनचन्द्र। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष—यह ८१ गाथाओंमें मूल मात्र है।

ग्रंथ नं० ५१।

१८७ **सिद्धन्तसार**-आचार्य जिनचन्द्र। पत्र सं०-२६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

अन्तिम पद्य—

प्रभाचन्द्रं स्तुवे नित्यं मोक्षमार्गप्रकाशकम्। अमेया यद्गुणा लोके प्रयान्ति गणनीयताम्॥ १॥
तस्मै भव्यगुणाम्भोधिवर्धनाय महीयसे। नष्टं जगत्तमो यस्मात्प्रभेन्दुमुनये नमः॥ २॥

विशेष—इसमें प्रभाचन्द्रकी कन्नड टीका भी है।

ग्रंथ नं० १०१।

१८८ **सिद्धन्तसार**-आचार्य जिनचन्द्र। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-८९। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रंथ नं० १४५।

१८९ **सिद्धन्तसार**-·····। पत्रसं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-९१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रंथ नं० २३७।

१९० **सिद्धन्तसार**-आचार्य जिनचन्द्र। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-६५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रंथ नं० २८३।

१९१ **सिद्धन्तसार**-आचार्य जिनचन्द्र। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१३०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रंथ नं० ५४४।

१९२ **सिद्धन्तसार**-आचार्य जिनचन्द्र। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१६०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष—इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रंथ नं० ६९२।

१९३ **सिद्धन्तालाव**········। पत्र सं०-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा उत्तम।

विशेष—इसके लेखक माघनन्दी हैं।

ग्रंथ नं० १८१

१९४ **सिद्धान्तसारवृत्ति**-आर्य प्रभाचन्द्र। पत्रसं०-३५। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-सिद्धान्त। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—यह आचार्य जिनचन्द्र कृत प्राकृत 'सिद्धान्तसार' की कन्नड वृत्ति है।

विषय—अध्यात्म

ग्रन्थ नं० १४।

१ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१२५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।
विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ७५।

२ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२२।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।
विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति है। वृत्तिकार माघनन्दी हैं। इनका काल शालि० शक १३१४ है।

ग्रन्थ नं० ८७।

३ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७९।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १०१।

४ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२६।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २१७।

५ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३७।

६ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–७६।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२०।

७ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२८।

८ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४४३।

९ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।
विशेष–इसमें प्रभाचन्द्रकृत संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ४८५।

१० **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३६।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।
विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४१९।

११ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०९।
लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५०५।

१२ आत्मानुशासन–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५०८।

१३ आत्मानुशासन–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५५४।

१४ आत्मानुशासन–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५५५।

१५ आत्मानुशासन–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–५१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है तथा 'प्रवचनसार' के भी ९ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५७५।

१६ आत्मानुशासन–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष—इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ७२१।

१७ आत्मानुशासन–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७२३।

१८ आत्मानुशासन–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें हस्तिमल्ल भट्टोपाध्याय कृत 'ऋषभनाथगद्य' के २½ पत्र, एवं मुनि शुभकीर्ति कृत 'आरोग्यस्तवन' के २½ पत्र भी सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ७६२।

१९ आत्मानुशासन–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७४८।

२० आत्मज्योति–····। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९८।

२१ चारुतत्त्वभेदाष्टक–कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २०२।

२२ चिन्मयचिन्तामणि–मुनि कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३२।

२३ चिन्मयचिन्तामणि–कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। पिलि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४८।

२४ **चिन्मयचिन्तामणि**–कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३६८।

२५ **चिन्मयचिन्तामणि**–कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३३८।

२६ **चिन्मयचिन्तामणि**–कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६६८।

२७ **चिन्मयचिन्तामणि**–कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९२।

२८ **चिन्मयचिन्तामणि**–सिंहराज। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५।

२९ **जीवसम्बोधन**–कवि बन्धुवर्म। पत्र सं०–५२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४५।

३० **जीवसम्बोधन**–बन्धुवर्म। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १९५।

३१ **जीवसम्बोधन**–बन्धुवर्म। पत्र सं०–१२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष—रचनाकाल–शालि० शक १४४४ चित्रभानु संवत्सर आश्वयुज शुक्ला ७ शुक्रवार।

ग्रन्थ नं० २१६।

३२ **जीवसम्बोधन**–बन्धुवर्म। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४२६।

३३ **जीवसम्बोधन**–बन्धुवर्म। पत्र सं०–१३३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष—सेमितदेवके जामाता काज कुन्दय सेट्टिने नन्दीश्वरव्रतोद्यापनके उपलक्ष्यमें इसे शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ नं० ६४५।

३४ **जीवसम्बोधन**–बन्धुवर्म। पत्र सं०–२०½। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७९०।

३५ **जीवसम्बोधन**–बन्धुवर्म। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

ग्रन्थ नं० ५६२।

३६ जोगसार [योगसार]–आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–५७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष—आनन्द संवत्सर कार्तिक शुक्ला १ मङ्गलवारके दिन सूगूरनिवासी अन्तण्णके पुत्र चन्द्रण्णने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ६६३।

३७ जोगसार [योगसार]–आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष—इसमें 'गोम्मटसार' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६८९।

३८ जोगसार [योगसार]–आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष—इसमें पद्मनन्दि कृत कन्नड टीका है, एवं 'आनन्दाष्टक'के कुछ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ७०७।

३९ जोगसार [योगसार]–आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–९२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें पद्मनन्दि कृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ८२५।

४० जोगसार [योगसार]–आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३२।

४१ ज्ञानसार–····। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–शालि शक १४८७। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह ग्रन्थ शालि० शक–१४८७ क्रोधन संवत्सर श्रावण शुक्ला १३ सौम्यवारके दिन वर्द्धमान अण्णके द्वारा लिखा गया है।

ग्रन्थ नं० ४५८।

४२ ध्यानलक्षण–····। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४६२।

४३ ध्यानलक्षण–····। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६८९।

४४ ध्यानलक्षण–····। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इमें 'लघुप्रायश्चित' तथा [कन्नड टीका सहित] 'गोम्मटसार' [जीवकाण्ड] के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७५५।

४५ ध्यानस्तव–भास्करनन्दी। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह ग्रन्थ प्रकाशनीय है।

ग्रन्थ नं० ३५४।

४६ ध्यानस्वरूप····। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८३।

४७ ध्यानामृत–····। पत्र सं० १२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३७।

४८ निजात्माष्टक–····। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४२।

४९ परमप्पपयासु [परमात्मप्रकाश]–आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–७७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें मुनि पद्मनन्दीकी कन्नड टीका भी है। सेनगणीय मुनिभद्रदेव के शिष्य सेवनूर मुनियण ने कोट्टूरु निवासी ज्ञानश्री के लिये इसे लिखवाकर दिया था।

ग्रन्थ नं० ५१०।

५० परमप्पपयासु [परमात्मप्रकाश]–आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें मुनि पद्मनन्दिकृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ५५७।

५१ परमप्पपयासु [परमात्मप्रकाश]–आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ८२७।

५२ परमात्मज्योति–····। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'क्रियापाठ' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३९८।

५३ भावनाष्टक–····। पत्र सं०–१½। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४००।

५४ भावनाष्टक–····। पत्र सं०–१½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३७।

५५ योगामृत–·····। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८३।

५६ योगामृत–·····। पत्र सं०–५½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १६०।

५७ रत्नाकरशतक–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५३।

५८ रत्नाकरशतक–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–रक्ताक्षि संवत्सर, भाद्रपद शुक्ला ७, बृहस्पतिवारके दिन रामराजने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ६३१।

५९ रत्नाकरशतक–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत ज्योतिष तथा कन्नड अनुप्रेक्षा सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८३०।

६० रत्नाकरशतक–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८३२।

६१ रत्नाकरशतक–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७९०।

६२ विषमपदव्याख्यान–·······। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह आ० गुणभद्रकृत 'आत्मानुशासन' की टीका है।

ग्रन्थ नं० ३९८।

६३ शतकत्रय–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म आदि। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'रत्नाकरशतक' 'अपराजितेश्वरशतक, एवं 'त्रिलोकशतक' हैं।

ग्रन्थ नं० ४७।

६४ शतकद्वय–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म आदि। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७७।

६५ शतकद्वय–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म आदि। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३२।

६६ षोडशभावनापद्य–·······। पत्र सं–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६२८ ।

६७ सद्बोधचन्द्रोदय–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१११। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

६८ समयसार–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–१०७। पंक्ति प्रतिपत्र–३। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० ३५५ ।

६९ समयसार–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५४० ।

७० समयसार–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–७९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति-जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

७१ समयसार–आचार्य कुन्दकुन्द। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

७२ समयसारचूलिया–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११९। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

ग्रन्थ नं० ३१७ ।

७३ समयसारवृत्ति–आचार्य अमृतचन्द्र। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

७४ समाधिशतक–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

७५ समाधिशतक–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें आचार्य मेघचन्द्र त्रैविद्य कृत कन्नड वृत्ति है।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

७६ समाधिशतक–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १६२।

७७ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८२।

७८ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ३१६।

७९ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१४३/४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें महाकवि पम्पके पुत्रके लिये यति मेघचन्द्रके द्वारा रचित कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४४३।

८० **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ४६२।

८१ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–३१/३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७६।

८२ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१३५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४९२।

८३ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०९।

८४ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें यति मेघचन्द्र कृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ५१७।

८५ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण

ग्रन्थ नं० ५५२।

८६ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें पण्डित प्रभाचन्द्रकृत संस्कृत टीका है। टीकाका अन्तिम भाग—"श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरपरमेष्ठिप्रणामोपार्जितामलपुण्यनिराकृताखिलमलकलङ्केन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपण्डितेन समाधिशतकटीका कृतेति।"

ग्रन्थ नं० ६३६।

८७ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०-१३½। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रति पंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६८९।

८८ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिप्रंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५८।

८९ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०- २। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७७१।

९० समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें इष्टोपदेशके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७७५।

९१ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८०१।

९२ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८३८।

९३ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४०२।

९४ सहजात्मप्रकाश-(संग्रह)-आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०-१२२। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-२८। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-'मोक्षपाहुड' 'परमात्मप्रकाश' 'जीवसम्बोधना' आदि ग्रन्थोंके श्लोक इसमें संग्रह किये गये हैं। प्रकाशमें कन्नड टीका भी है। दुंदुभि संवत्सर आश्वयुज शुक्ला ७ के दिन बेलतंगडिस्थ ब्रह्मसूरिके शिष्य पद्मणने गोमटपुर-निवासी भोगी सेट्टिके पुत्र चउडि सेट्टिके लिये इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ६०३।

९५ सहजात्मप्रकाश-आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०-५३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० २३७।

९६ स्वरूपभावनाष्टक-····। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३५३।

९७ स्वरूपभावनाष्टक····। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २६।

९८ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–कन्नड टीकाकार नयसेनके शिष्य महासेन तथा श्रोता सिद्धान्तचक्रवर्ती वासुपूज्य सिद्धान्तदेवके शिष्य पद्मरस हैं।

डा० ए० एन० उपाध्याय का मत है कि इसके रचयिता आचार्य अकलङ्क नहीं हैं किन्तु आचार्य महासेन हैं। पर सभी प्रतियोंमें अकलङ्क ही लिखा मिलता है।

ग्रन्थ नं० १०१।

९९ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं० ७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है। वृत्तिकार पं० नयसेनके शिष्य पं० पद्मसेन हैं।

ग्रन्थ नं० १०१।

१०० **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० १३४।

१०१ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–१$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १६२।

१०२ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं–५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १६२।

१०३ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–शालि० शक १३६८। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें पण्डित महासेन कृत कन्नड वृत्ति है। यह वृत्ति सूरस्तगणीय वासुपूज्य सिद्धान्तचक्रवर्तीके शिष्य पद्मरसके वास्ते पण्डित महासेनके द्वारा रची गयी है। प्रतिलिपिकार वाडगेरे निवासी अणि सेट्टिके पुत्र नागण्ण हैं।

ग्रन्थ नं० २०९।

१०४ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २०९।

१०५ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २५४।

१०६ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**-आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-४१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यातम। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३१६।

१०७ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**-आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यातम। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें नयसेनके शिष्य पण्डित महासेनकृत संस्कृत टीका तथा सिद्धान्तमुनि वासुपूज्य के शिष्य पद्मरस कृत कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ४६२।

१०८ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**-आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७६।

१०९ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**-आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०-११। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यातम। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ४९२।

११० **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**-आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-७८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यातम। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०९।

१११ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**-आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-९४।। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यातम। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५१४।

११२ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**-आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-६१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यातम। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें पद्मरसकृत कन्नड टीका है, साथ ही साथ संस्कृत टीका भी।

ग्रन्थ नं० ५२९।

११३ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**-आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यातम। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें केशववर्यकृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ५५२ ।

११४ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति–आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०–८$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है । टीकाका प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है:—

'स्वरूपसम्बोधनाख्य'-ग्रन्थस्यानम्य तन्मुनिम् । रचितस्याकलङ्केन वृत्तिं वक्ष्ये जिनं नमिम् ।।"

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

११५ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति–आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

११६ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति–आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०–२$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–प्रस्तुत प्रतिमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७७९ ।

११७ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति–आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें व्याकरण तथा धर्मसम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७७५ ।

११८ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति–आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

११९ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति–आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विषय—धर्म

ग्रन्थ नं० २६७

१ **अकृत्रिमचैत्यालयवर्णन**–····। पत्र सं०–१$\frac{1}{2}$। पंक्तिप्र तिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४५८।

२ **अकृत्रिमचैत्यालयवर्णन**–····। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–मूडबिद्रीस्थ पडुबसदि निवासी पदुमय्य उपाध्यायके पुत्र पदुमने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ३५३।

३ **अणुव्रतियोंके अन्तराय**–···। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २९।

४ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–१९६। पंक्ति प्रतिपत्र १२। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–शालि० शक १५००। हेमलंबी संवत्सर निज आश्वयुज कृष्णा ३ मंगलवार रोहिणी नक्षत्र। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका भी है। सरस्वती-गच्छ, बलात्कार-गण, कुन्दकुन्दाम्नायके मुनि महेन्द्रकीर्तिदेवके शिष्यान्यतम श्री चन्द्रकीर्तिदेवके लिये बंगवाडीके सान्तु सेट्टिके पुत्र आदि सेट्टि ने शास्त्रदान किया है।

प्रतिलिपिकार–बंगवाडीके बोम्मय्यण्णके पुत्र ब्रह्मय्य हैं।

ग्रन्थ नं० १३१।

५ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–१७४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है। बीच,बीच में कुछ पत्र खण्डित हैं।

ग्रन्थ नं० १३८।

६ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–२०१। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६। लिपि–कन्नड। भाषा संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० १७५।

७ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–६५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ४५३।

८ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–८१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०९।

९ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं ५३५ ।

१० **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

विशेष–इसमें आचार्य महावीरकृत संस्कृत 'गणितसारसंग्रह' के भी तीन पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५७५ ।

११ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–६३ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा समान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६२५ ।

१२ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–९७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें व्रतविधान सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं०६२५ ।

१३ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–३४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'गोम्मटसार' जीवकाण्ड सम्बन्धी संदृष्टिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

१४ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–३२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० १६० ।

१५ **अपराजितेश्वरशतक**–कवि रत्नाकर । पत्र सं०–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १६१ ।

१६ **अपराजितेश्वरशतक**–कवि रत्नाकर । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

१७ **अपराजितेश्वरशतक**–कवि रत्नाकर । पत्र सं०–२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४५८ ।

१८ **अपराजितेश्वरशतक**–कवि रत्नाकर । पत्र सं०–३२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३४ ।

१९ **अमृताशीति**–आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें बालचन्द्रकी कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं २०९ ।

२० **अमृताशीति**–आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–प्रभाकरभट्टके प्रतिबोधनार्थ श्री योगीन्द्रदेवने इस ग्रंथ को रचा । सिद्धान्तचक्रवर्ती नयकीर्ति के शिष्य मुनि बालचन्द्रने चन्द्रप्रभार्यके लिये इसकी कन्नड वृत्ति रची ।

ग्रन्थ नं० २०९।

२१ **अमृताशीति**-आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-११८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३५५।

२२ **अमृताशीति**-आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०-४७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-१९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें बालचन्द्र कृत कन्नड टीका है। अवलिस्थ बोंमणके पुत्र माणिकदेवने बुल्लिसेट्टिके लिये इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ३९८।

२३ **अर्हत्प्रवचन [लघुतत्त्वार्थसूत्र]**······। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७२१।

२४ **आचारवृत्ति**-आचार्य वसुनन्दी। पत्र सं०-४६। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२८। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-मूल प्राकृतमें है।

ग्रन्थ नं० ६०।

२५ **आचारसार**-आचार्य वीरनन्दी। पत्र सं०-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६८।

२६ **आचारसार**-आचार्य वीरनन्दी। पत्र सं०-९५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है।

ग्रन्थ नं० ९४।

२७ **आचारसार**-आचार्य वीरनन्दी। पत्र सं०-१४२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें संस्कृत और कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० १५४।

२८ **आचारसार**-आचार्य वीरनन्दी। पत्र सं०-२६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० २०७।

२९ **आचारसार**-आचार्य वीरनन्दी। पत्र सं०-४६। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

अन्तिम पद्य:-

विमेघचन्द्रोज्वलमूर्तिकीर्तिस्समस्तसैद्धान्तिकचक्रवर्ती।
श्रीवीरनन्दी कृतवानुदारमाचारसारं यतिवृत्तसारम्॥

ग्रन्थ नं० ३३०।

३० **आचारसार**-आचार्य वीरनन्दी। पत्र सं०-४६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३५९ ।

३१ **आचारसार**–आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६४ ।

३२ **आचारसार**–आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०–६७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

३३ **आचारसार**–आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।
विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६८७ ।

३४ **आचारसार**–आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०–१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–काणूरगण श्री मुनि देवकीर्तिकी शिष्या गुम्मक्कने देशीगण देवकीर्तिकी शिष्या चिक्कमल्लि देवी अव्वको इसे दान किया है ।

ग्रन्थ नं० ७७५ ।

३५ **आचारसार**–आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०–३० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' द्विसन्धानकाव्य' तथा 'धनकुमारचरित' (कन्नड) के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

३६ **आप्तस्वरूप**–······ । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

३७ **आप्तागमस्वरूप**–······ । पत्रसं०–४½ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

३८ **आराधनासमुच्चय**–मुनि रविचन्द्र । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

अन्तिम पद्यः–

श्रीरविचन्द्रमुनीन्द्रैः पनसोगेग्रामवासिभिर्ग्रन्थः ।
रचितोऽयमखिलशास्त्रप्रवीणविद्वन्मनोहारी ॥

श्रावकाचारसम्बन्धी यह ग्रंथ प्रकाशनीय है ।

ग्रन्थ नं० ५५४ ।

३९ **आराधनासमुच्चय**–मुनि रविचन्द्र । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०३ ।

४० **आराधनासमुच्चय**–मुनि रविचन्द्र । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं ६८९ ।

४१ आराधनासमुच्चय–मुनि रविचन्द्र । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५४ ।

४२ आराहणासार[आराधनासार]–आचार्य देवसेन । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें संस्कृत छाया भी है ।

ग्रन्थ नं० ५५४ ।

४३ आराहणासार [आराधनासार]–आचार्य देवसेन । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

४४ आशीर्वादपद्य–······ । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

४५ आशीर्वादपद्य···· । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका एवं 'गायत्रीमन्त्र' का अर्थ भी है ।

ग्रन्थ नं० २६ ।

४६ इष्टोपदेश–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–८३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति भी है । यह महाकवि पंपके सुपुत्रके लिये श्री यति मेघचन्द्रके द्वारा रची गयी है ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

४७ इष्टोपदेश–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–१२½ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

४८ इष्टोपदेश–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १६२ ।

४९ इष्टोपदेश–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–७½ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें संस्कृत और कन्नड टीका भी है । संस्कृत टीकाकार कवि मेघचन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३१६ ।

५० इष्टोपदेश–आचार्य पूज्यापाद । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

५१ **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–३½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९२ ।

५२ **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–३½ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

५३ **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । पक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५२ ।

५४ **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष–इसमें केशववर्य कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

५५ **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'स्वरूपसम्बोधनपंचविंशति' भी है ।

ग्रन्थ नं० ७५८ ।

५६ **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–९½ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७७५ ।

५७ **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–२½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८०१ ।

५८ **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें प्रारम्भिक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ८३८ ।

५९ **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

६० **इष्टोपदेश**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३३५ ।

६१ **उद्योगसार**–यति नेमिचन्द्र । पत्र सं०–४० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २२२ ।

६२ **उद्योगसार**–······। पत्रसं०–३७ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०३ ।

६३ **उद्योगसार**–······। पत्र सं०–२८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५१ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४८१ ।

६४ **उद्योगसार**–······। पत्र सं०–१४ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४९ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०० ।

६५ **उद्योगसार**–······। पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

६६ **उद्योगसार**–······। पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ६७२ ।

६७ **उद्योगसार**–······। पत्र सं०–३२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

६८ **उपवासविधि**–······पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें सर्वतोभद्र आदि उपवासोंकी संख्या बतलायी गयी है ।

ग्रन्थ नं० १५७ ।

६९ **उपासकाचार**–आचार्य अमितगति । पत्र सं०–७६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

'विशेष–इसमें 'जिनचतुर्विशतिका' आदि स्तोत्रोंके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४८८ ।

७० **उपासकाचार**–आचार्य अमितगति । पत्र सं०–९० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

७१ **उपासकाचार**–आचार्य अमितगति । पत्र सं०–३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

७२ **उपासकाचार**–आचार्य अमितगति । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

७३ **उपासकाचार**–आचार्य अमितगति । पत्र सं०–३९ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३४७।

७४ उपासकाचार–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८१।

७५ उपासकाचार–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५५।

७६ उपासकाचार–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि–कन्नड। भाषा– संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'पद्मनन्दिपंचविंशति' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १४१।

७७ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३४७।

७८ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५४।

७९ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'क्रियाकाण्डचूलिका' भी है।

ग्रन्थ नं० ५२३।

८० उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५७४।

८१ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६७३।

८२ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–३½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम :

ग्रन्थ नं० ७९८।

८३ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८१९।

८४ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८२७।

८५ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'रत्नाष्टक' सटीक, प्राकृत 'पंचस्तोत्र' तथा 'द्रव्यसंग्रह' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २६।

८६ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १०१।

८७ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति है।

ग्रन्थ नं० १०१।

८८ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १३४।

८९ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १६२।

९० **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१५३/४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० २०९।

९१ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३१६।

९२ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४९२।

९३ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–४३/४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५१४।

९४ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है। साथ ही साथ 'इष्टोपदेश' तथा 'नीतिवाक्यामृत' के कुछ पत्र भी।

ग्रन्थ नं० ५५२।

९५ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ६२८।

९६ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ६३६।

९७ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७७१।

९८ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रति पंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×–। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७७५।

९९ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८०१।

१०० **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–६$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें प्रारम्भिक पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० ८१९।

१०१ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टिप्पणी है।

ग्रन्थ नं० ८३८।

१०२ **एकत्वसप्तति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६६८।

१०३ **गुणप्रकाशक**–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें अहिंसा धर्म तथा अधर्म का वर्णन है। इसीमें पद्मनन्दी कृत 'क्रियाकाण्डचूलिका' भी है।

ग्रन्थ नं० ३५३।

१०४ **गोसावित्री**–······। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६९।

१०५ **चारित्रसार**–चामुण्डराय। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७५८।

१०६ **चारित्रसार**–चामुण्डराय। पत्र सं०–२७$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें पण्डित बालचन्द्रकृत कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३५३।

१०७ **जपलक्षण**–······। पत्र सं०–$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३६।

१०८ **जिनमुनितनय**–चन्द्रसागर वर्णी। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५८।

१०९ जिनमुनितनय–चन्द्रसागर वर्णी। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६४५।

११० जिनमुनितनय–चन्द्रसागर वर्णी। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड भावार्थ भी है।

ग्रन्थ नं० ६४५।

१११ जिनमुनितनय–चन्द्रसागर वर्णी। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि––कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×–। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८३२।

११२ जिनमुनितनय–चन्द्रसागर वर्णी। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३५३।

११३ जीवरगले–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–'रगले' कन्नड छन्दका एक भेद है। इसमें पंचाणुव्रत दान आदिका वर्णन है।

ग्रन्थ नं० ६६२।

११४ जीवरगले–······। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५०५।

११५ ज्ञानदीपिका–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–यह पं० आशाधरकृत 'धर्मामृत' की स्वोपज्ञ पंचिका है।

ग्रन्थ नं० ३४८।

११६ ज्ञानसार–······। पत्र सं०–७$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १६८।

११७ तत्त्वरत्नप्रदीपिका–पण्डित बालचन्द्र देव। पत्र सं०–१९६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह आचार्य उमास्वाति कृत 'तत्त्वार्थसूत्र' की विस्तृत कन्नड वृत्ति है। यह वृत्ति श्री मूलसंघ देशीयगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुंन्दान्वयी चन्द्रकीर्ति मुनिके सुत–शिष्य राद्धान्तचक्री पण्डित नयकीर्तिके पुत्र–शिष्य मुनीन्द्र बालचन्द्रके द्वारा रची गयी है।

ग्रन्थ नं० ७६३।

११८ तत्त्वरत्नप्रदीपिका–पण्डित बालचन्द्र देव। पत्र सं०–१३६$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १३७।

११९ तत्त्वार्थवृत्ति–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

अन्तिम पद्यः–

ज्ञानस्वच्छजलस्सुरत्ननिचयश्चारित्रवीचीचयस्सिद्धान्तादिसमस्तशास्त्रजलधिः श्रीपद्मनन्दिप्रभुः।
तच्छिष्यान्निखिलप्रबोधजननं तत्त्वार्थवृत्तेः पदं सुव्यक्तं परमागमार्थविषयं जातं प्रभाचन्द्रतः॥
श्रीपद्मनन्दिसैद्धान्तशिष्योऽनेकगुणालयः। प्रभाचन्द्रश्चिरं जीयात्पादपूज्यपदे रतः॥
मुनीन्दुर्नन्दतादिन्दन्निजमानन्दमन्दिरम्। सुधाधारोद्गिरन्मूर्तिः काममामोदयज्जि (ज्ज) नम्॥

ग्रन्थ नं० ५७।

१२० तत्त्वार्थलघुवृत्ति–भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। विषय–धर्म। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८८।

१२१ तत्त्वार्थलघुवृत्ति–भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र। पत्र सं०–६२। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–९८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १७३।

१२२ तत्त्वार्थलघुवृत्ति–भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र। पत्र सं०–६९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह आचार्य उमास्वाति कृत 'तत्त्वार्थसूत्र' की कन्नड लघुवृत्ति है। श्री भट्टारक चन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य, सिद्धान्तदेव पद्मनन्दीके शिष्य सिद्धान्त-मुनीन्द्र दिवाकरनन्दीके द्वारा यह वृत्ति रची गयी है। प्रतिलिपिकार शिशलग्राम निवासी गुरुवप्प हैं।

ग्रन्थ नं० ७८५।

१२३ तत्त्वार्थलघुवृत्ति–भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र। पत्र सं०–८२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९०६।

१२४ तत्त्वार्थलघुवृत्ति–भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९०८।

१२५ तत्त्वार्थसुखबोधवृत्ति–भास्करनन्दी। पत्र सं०–५४। पंक्ति प्रतिपत्र–१४। अक्षर प्रतिपंक्ति–२०३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २२९।

१२६ तत्त्वार्थसूत्र–आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३०३।

१२७ तत्त्वार्थसूत्र–आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०–७१। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–९७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–शालि० शक १६८०। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें भट्टारक दिवाकरमुनि कृत कन्नड वृत्ति भी है। लक्ष्मीसेन मठके अधिकारो बिक्रसेट्टि के पुत्र, विद्यार्थी चन्दने भट्टारक लक्ष्मीसेनके लिये शा० शक १६८०, बहुधान्य संवत्सर मार्गशिर कृष्णा १४ के दिन मूडबिद्री के त्रिभुवनचूडामणि चैत्यालयमें इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ३३४।

१२८ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५१।

१२९ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३५५।

१३० **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३६३।

१३१ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-१२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४००।

१३२ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५१७।

१३३ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-१४। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-४४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६२३।

१३४ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६९८।

१३५ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-११। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७३६।

१३६ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३९। लिपि-कन्नड-। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७४५।

१३७ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमे भानुकीर्ति कृत 'शंखदेवाष्टक' भी है।

ग्रन्थ नं० ७४९।

१३८ **तत्त्वार्थसूत्र**-आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०-१४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८१९।

१३९ **तत्त्वार्थसूत्र**-अस्चार्य उमास्वाति। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७८ ।

१४० त्रैवर्णिकाचार–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–५५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल– शालि० शक १५२१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–लेखक छत्रत्रय-नगरनिवासी अध्यापक पद्मण का पुत्र चंदप्प है ।

अन्तिम पद्यः–

शाकाब्दे विधुदृक्शराब्जकलिते पुष्ये विलंब्यब्दके पूते सोमजवारयुक्प्रथमभद्रायां तिथौ सर्पभे ।
श्रीमत्क्षेमपुरे चतुर्मुखमहाचैत्यालये श्रेयसस्तीर्थेशस्य पदाम्बुजद्वयपुरोदेशे सिते पक्षके ।।
श्रीछत्रत्रयनामधेयनगरीचैत्यालये चाष्टमस्तीर्थेशोऽस्ति तदंघ्रिभक्तिभरणः श्रीपद्मणोऽध्यापकः ।
तस्य श्चौरसचंदन्पन (चंदपेन) तु मया भट्टाकलङ्कार्यसत्पादाब्जभ्रमरेण लेखितमिदं शास्त्रं चिरं तिष्ठतु ।।

ग्रन्थ नं० ४६७ ।

१४१ त्रैवर्णिकाचार–ब्रह्मसूरि । पत्र सं०–१३५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

१४२ त्रैवर्णिकाचार–ब्रह्मसूरि । पत्र सं०–१४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८६४ ।

१४३ त्रैवर्णिकाचार–ब्रह्मसूरि । पत्र सं०–८३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमे प्रारंभके तीन पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ४९६ ।

१४४ दशधर्मव्याख्यान–······ । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

१४५ दानपञ्चाशत्–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

१४६ दानपञ्चाशत्–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६८४ ।

१४७ दानशासन–महर्षि वासुपूज्य । पत्र सं०–१७१ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–शालि० शक १३४३ विषु संवत्सर, माघ शुक्ला १० के दिन यह ग्रंथ रचा गया है ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

१४८ दानसार–प्रभाचन्द्रदेव । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह ग्रन्थ देशी-गणान्वयश्रीपण्डितदेवाचार्यप्रसाधित श्री योगीन्द्रप्रभाचन्द्रदेवके द्वारा रचित है ।

ग्रन्थ नं० ८१५ ।

१४९ दानसार–······। पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६९ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७०८ ।

१५० दीक्षाविधि–······। पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२४ । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

१५१ दीक्षादानविधि–······। पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४५१ ।

१५२ दीक्षाविचार–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६९ । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

१५३ द्वादशाङ्गव्याख्यान–अभयसूरि सिद्धान्तचक्रवर्ती । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

१५४ द्वादशाङ्गव्याख्यान–अभयचन्द्रसूरि । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें आचारांग आदि १२ अंगोंका संक्षिप्त वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० ३३७ ।

१५५ द्वादशानुप्रेक्षा–आचार्य सोमदेव । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१५६ द्वादशानुप्रेक्षा–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह 'उपासकसंस्कार' का एक भाग है ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

१५७ द्वादशानुप्रेक्षा–······। पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

प्रारम्भिक पद्य–

द्वादशापि सदा चिन्त्या अनुप्रेक्षा महात्मभिः । तद्भावना भवत्येवं कर्मणः क्षयकारणम् ॥

ग्रन्थ नं० ८२३ ।

१५८ द्वादशानुप्रेक्षा–······। पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८ ।

१५९ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण । पत्र सं०–६० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें ज्योतिष के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

१६० द्वादशानुप्रेक्षा–कवि विजयण्ण । पत्र सं०–३७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । शालि० शक १७२२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–प्रतिलिपिकारतुमकूर गुम्मण्पके पुत्र यल्लप्प हैं ।

ग्रन्थ नं० १५६ ।

१६१ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण । पत्र सं०–१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपत्र–५२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २२७ ।

१६२ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २४६ ।

१६३ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण । पत्र सं०–६८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६७ ।

१६४ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण । पत्र सं०–१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें आदिका एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ५७९ ।

१६५ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण । पत्र सं०–७५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें आदिके २ पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८० ।

१६६ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८३९ ।

१६७ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण । पत्र सं०–७२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

१६८ द्वादशानुप्रेक्षा–कल्याणकीर्ति । पत्र सं०–५$\frac{१}{२}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ७७० ।

१६९ द्वादशानुप्रेक्षा–बाहुबली । पत्र सं०–१२$\frac{१}{२}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १४९ ।

१७० द्वादशानुप्रेक्षा–······ । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९४।

१७१ द्वादशानुप्रेक्षा–····। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें अन्यान्य विषयके कुछ और भी खण्डित पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३५३।

१७२ द्वादशानुप्रेक्षा–····। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८६।

१७३ द्वादशानुप्रेक्षा–····। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१७४ द्वादशानुप्रेक्षा–····। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४६२।

१७५ द्वादशानुप्रेक्षा–····। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७७।

१७६ द्वादशानुप्रेक्षा–····। पत्र सं०–६५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६६०।

१७७ द्वादशानुप्रेक्षा–····। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड स्तोत्रों के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८६७।

१७८ द्वादशानुप्रेक्षा–····। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'वृत्तरत्नाकर' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २३७।

१७९ द्वाविंशतिपरीषहजयसूत्र–····। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३७।

१८० द्वाविंशतिपरीषहजयसूत्र–····। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६१।

१८१ धर्मोपदेशामृत–('पद्मनन्दिपंचविंशति' का एक प्रकरण)–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'अनित्य-पंचाशत्' 'सिद्धस्तुति' एवं न्यायविषयके भी कुछ खण्डित तथा जीर्ण पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६३३ ।

१८२ **धर्मोपदेशामृत**–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

विशेष–इसमें 'अमरकोश' तथा 'सारसमुच्चय' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

१८३ **धर्मोपदेशामृत**–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यह 'पद्मनन्दिपंचविंशति' का एक प्रकरण है ।

ग्रन्थ नं० १६२ ।

१८४ **नित्यनिगोंदविवरण**–····। पत्र स०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल– शालि० शक १४३९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसे शालि० शक० १४३९, धातुसंवत्सर भाद्रपद शुक्ला १० को तिलुवल्लि शान्तिनाथ मन्दिर में दोन्नत्ति सांतप्पके पुत्र पालप्पने बाहुबलीके वास्ते लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ५४६ ।

१८५ **नियमसार**–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–४३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष–इसमें मलधारी पद्मप्रभदेवकृत तात्पर्यवृत्ति नामक संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१८६ **नीतिसारसमुच्चय**–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है । इसका अपरनाम समयभूषण है ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

१८७ **नीतिसारसमुच्चय**–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

१८८ **नीतिसारसमुच्चय**–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनलाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२० ।

१८९ **नीतिसारसमुच्चय**–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

१९० **नीतिसारसमुच्चय**–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

१९१ **नीतिसारसमुक्चय**–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३९३।

१९२ पत्रलेखनक्रम–····। पत्र सं०–१$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें मुनि अर्जिका आदि त्यागियोंको पत्र लिखने का क्रम दिया है।

ग्रन्थ नं० ५३।

१९३ पद्मनन्दिपंचविंशति–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'सम्यक्त्वकौमुदी' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १९८।

१९४ पद्मनन्दिपंचविंशति–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'सद्बोधचन्द्रोदय' की कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३१७।

१९५ पद्मनन्दिपंचविंशति–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–६५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–९९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें विस्तृत संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ४९९।

१९६ पद्मनन्दिपंचविंशति–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७५५।

१९७ पद्मनन्दिपंचविंशति–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७५६।

१९८ पद्मनन्दिपंचविंशति–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–८$\frac{1}{2}$ पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २०३।

१९९ परमागमसार–चन्द्रकीर्ति। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७८।

२०० परमागमसार–चन्द्रकीर्ति। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७१।

२०१ परमागमसार–चन्द्रकीर्ति। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५५७।

२०२ परमागमसार–चन्द्रकीर्ति। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ८०४।

२०३ **परमागमसार**—चन्द्रकीर्ति। पत्र सं०—१२। पंक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपंक्ति—४९। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

विशेष—इसमें 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र' तथा 'क्रियापाठ' आदिके भी कुछ पत्र हैं।

२०४ **परीषहजय**—कवि मुकुन्द। पत्र सं०—३। पंक्ति प्रतिपत्र—७। अक्षर प्रतिपंक्ति—५०। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६४५।

२०५ **परीषहजय**—कवि मुकुन्द। पत्र सं०—४½। पंक्ति प्रतिपत्र—५। अक्षर प्रतिपंक्ति—४४। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७८।

२०६ **परीषहजय**—······। पत्र सं०—४। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—४०। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६।

२०७ **पुव्वाणुपेहा[पूर्वानुप्रेक्षा]**—······। पत्र सं०—१७। पंक्ति प्रतिपत्र—११। अक्षर प्रतिपंक्ति—८६। लिपि—कन्नड। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—जीर्ण।

विशेष—इसमें यति बाहुबलीकृत कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० २४३।

२०८ **पञ्चकल्याणपद्य**—······। पत्र सं०—३०। पंक्ति प्रतिपत्र—५। अक्षर प्रतिपंक्ति—३०। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ९९।

२०९ **पञ्चपरमेष्ठिव्याख्यान**—······। पत्र सं०—१६। पंक्ति प्रतिपत्र—१०। अक्षर प्रतिपंक्ति—७१। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० २०२।

२१० **पञ्चपरमेष्ठिव्याख्यान**—······। पत्र सं०—३१। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—९७। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—इसमें पंचपरमेष्ठियोंके गुणोंका विस्तृत वर्णन है।

ग्रन्थ नं० ३२१।

२११ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**—पण्डित बालचन्द्र। पत्र सं०—८। पंक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपंक्ति—४५। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—इसके रचयिता बालचन्द्र सिद्धान्तवेदी अभयचन्द्रके शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० ३४४।

२१२ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**—पण्डित बालचन्द्र। पत्र सं०—२½। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—१२५। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३४८।

२१३ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**—पण्डित बालचन्द्र। पत्र सं०—६½। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—३८। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—धर्म। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—इसमें 'जिनगुणसंपत्तिमंत्र' का भी एक पत्र है।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

२१४ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३१ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

२१५ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९० ।

२१६ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६४५ ।

२१७ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–१६$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

२१८ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें इस ग्रन्थकी दो प्रतियाँ हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३३ ।

२१९ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें भिन्न-भिन्न विषयोंके १०० अपूर्ण पत्र भी सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ७४५ ।

२२० **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९१ ।

२२१ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–६$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८१६ ।

२२२ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशष–इसमें 'अकलङ्काष्टक' आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८३५ ।

२२३ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–बालचन्द्र । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । बिषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'समवसरणाष्टक' 'दृष्टाष्टक' 'पञ्चपरमेष्ठिस्तोत्र' (कन्नड) भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ३७ ।

२२४ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–······। पत्र सं०–४६ । पंक्ति प्रतिपत्र--९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९३ ।

२२५ **पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप**–······। पत्र सं०–१८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३४ ।

२२६ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–······। पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७० ।

२२७ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–······। पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २२४ ।

२२८ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–······। पत्र सं०–४४ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

२२९ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–······। पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

२३० पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–······। पत्र सं०–१४ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २५९ ।

२३१ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–······। पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८२ ।

२३२ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप······। पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

२३३ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–······। पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

२३४ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप······। पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०० ।

२३५ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–·····। पत्र सं०–३१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७९ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७४९ ।

२३६ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–·····। पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८३५ ।

२३७ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप–······। पत्र सं०–३१ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसका अपर नाम 'पञ्चपरमेष्ठिव्याख्यान' है ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

२३८ पञ्चनमस्कारमाहात्म्य–······। पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०१।

२३९ पञ्चसंसारविस्तर–·······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें गणित विषयके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३२०।

२४० पञ्चसंसारविस्तर–·········। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५१।

२४१ पञ्चसंसारविस्तर–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९।

२४२ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

अन्तिम पद्य–विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका। रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलङ्कृतिः ॥

ग्रन्थ नं० ९३।

२४३ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–१$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १४१।

२४४ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र ६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८१।

२४५ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–२$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३१८।

२४६ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५९।

२४७ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–१$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८०।

२४८ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५२३।

२४९ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–१$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६०४।

२५० प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ६२८।

२५१ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६७२।

२५२ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–१½। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें आ० प्रभाचन्द्र कृत 'व्रतस्वरूप' भी है।

ग्रन्थ नं० ६७३।

२५३ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें नीतिसम्बन्धी २ पत्र और हैं।

ग्रन्थ नं० ७०९।

२५४ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७५६।

२५५ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८१९।

२५६ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २०३।

२५७ प्रायश्चित्तविधि–······। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–११५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४०१।

२५८ प्रायश्चित्तविधि–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६३७।

२५९ प्रायश्चित्तविधि–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७७१।

२६० प्रायश्चित्तविधि–······। पत्र सं०–५½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'केशलुञ्चनविधि' भी है।

ग्रन्थ नं० ७७२।

२६१ प्रायश्चित्तविधि–······। पत्र सं० ६½। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८४१।

२६२ प्रायश्चित्तविधि–······। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'ऋषिमण्डलस्तोत्र' 'दीक्षाविधि' संगीत एवं ज्योतिष संबंधी भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ९०२ ।

२६३ प्रायश्चित्तविधि–······। पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'गणधरवलययन्त्राराधना' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७७१ ।

२६४ प्रायश्चित्तविधि–स्वामी अकलङ्क । पत्र सं०–६१/२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें प्रायश्चित्त-संबंधी और भी २ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७७२ ।

२६५ प्रायश्चित्तविधि–इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–३११/२ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–ग्रन्थमें इस प्रकरणका नाम 'छेदपिण्ड' लिखा मिलता है । नं० ३५४ वीं गाथा इस प्रकार है:–
"भावेइ छेदपिण्डं जो एदं इन्दणन्दिगणिरचिदं । लोइय लोउत्तरिए ववहारे होइ सो कुसलो ।।"

ग्रन्थ नं० १८२ ।

२६६ प्रायश्चित्तसमुच्चय–······। पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसके अन्तमें प्रायश्चित्तसे सम्बन्ध रखनेवाले कन्नड भाषाके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २२५ ।

२६७ प्रायोपगमनविधान–······। पत्र सं०–३२ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

२६८ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–मूलमें इसका नाम 'अनुप्रेक्षा' ही लिखा हुआ है । वास्तवमें 'अणुपेहा' होना चाहिये ।

ग्रन्थ नं० ९० ।

२६९ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–प्राकृतमें इसका नाम 'अणुपेहा' होना चाहिये । इसमें 'द्रव्यसंग्रह' तथा 'समवसरण-स्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

२७० बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २५९ ।

२७१ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८३।

२७२ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–स्वामी कार्तिकेय । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१४३ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०५।

२७३ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३५।

२७४ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम

ग्रन्थ नं० ३९८।

२७५ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–४½ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०९।

२७६ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–स्वामी कार्तिकेय । पत्र सं०–४८ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६४९।

२७७ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३७ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६८९।

२७८ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें बाहुबलिसिद्धान्तिकृत कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ८२४।

२७९ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [द्वादशानुप्रेक्षा]–स्वामिकार्तिकेय । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४२७।

२८० भव्यकुमुदचन्द्रिकाटीका–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–१७४ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१५३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें सागारधर्मामृत और अनगारधर्मामृतकी सिर्फ टीकाएँ हैं।

ग्रन्थ नं० २९९।

२८१ भव्यजनकण्ठरत्नाभरण-अभयचन्द्र। पत्र सं०-३०। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-अभयचन्द्रदेव श्रीबालचन्द्रदेव एवं नेमचन्द्रदेवके शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० ३९८।

२८२ मुनिरगले-मायण्ण। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसके रचयिता मायण्ण नागण्णके पुत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७६५।

२८३ मूडबिद्रीके मन्दिरोंका दानविवरण-······। पत्र सं०-४५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-२८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-स्थानीय मन्दिरोंको भिन्न २ दानियोंके द्वारा प्रदत्त चावल, तैल आदि पूजाद्रव्योंका विवरण इसमें अंकित है।

ग्रन्थ नं० ५६।

२८४ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०-२०२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८। विषय-धर्म। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

अन्तिम पद्य-

मूलाचाराख्यशास्त्रं वृषभजिनवरोपज्ञमर्हत्प्रवाहादायातं कुण्डकुन्दाह्वयचरमलसच्चारणैस्सुप्रणीतम्॥
तद्व्याख्यां वासुनन्दीमबुधविलिखनावाचनानायाशमक्त्यां(?)
संशोध्याध्यैतुमर्हामिकृतयतिकृति (?)··················॥२०५॥

इसमें आचार्य वसुनन्दीकी विस्तृत संस्कृत वृत्ति भी है। प्रारंभमें मूल-रचयिताका नाम 'कोण्डकुन्द' ही लिखा है, और अन्तमें 'कुण्डकुन्द, भी मिलता है।

ग्रन्थ नं० १६४।

२८५ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०-१८०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें मुनि मेघचन्द्रके द्वारा रचित कन्नड वृत्ति भी है। बीच-बीचमें इसके कुछ पत्र खण्डित हैं।

ग्रन्थ नं० २७९।

२८६ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०-१९८। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१६६। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें आचार्य वसुनन्दिकृत संस्कृत वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० ६२९।

२८७ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०-१९२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ९।

२८८ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-४५। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। शुद्ध तथा पूर्ण। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

२८९ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–३५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६६ । विषय–धर्म । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

२९० रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–४३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १४६ ।

२९१ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–६९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा साधारण शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति तथा पंचाणुव्रत एवं अष्टांगकी कथाएँ भी हैं । इसे श्रवणबेल्गोलके चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके प्रशिष्य मुनि प्रभाचन्द्र के शिष्यने लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

२९२ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०३ ।

२९३ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३३ ।

२९४ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–२७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

२९५ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६१ ।

२९६ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–४७ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २७२ ।

२९७ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७४ ।

२९८ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–४२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें 'अष्टांग' 'पंचाणुव्रत' आदि की कन्नड कथाएँ भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ३०५ ।

२९९ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–२९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३०५।

३०० रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३१५।

३०१ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३१८।

३०२ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३४७।

३०३ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४८।

३०४ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपत्र–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें अमोघवर्ष कृत 'प्रश्नोत्तररत्नमाला' के भी २ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३५२।

३०५ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं–१००। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें १५५ श्लोक हैं। एवं विस्तृत कन्नड टीका भी है। आदिके ३ पत्र खण्डित हैं।

ग्रन्थ नं० ३५४।

३०६ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–८८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष– इसमें प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है। विभवसंवत्सर, कार्तिक शुक्ला ५ शुक्रवारके दिन भट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य गुणसागरने बंगवाडिस्थ शान्तीश्वर चैत्यालयमें इसे लिखा।

ग्रन्थ नं० ३६०।

३०७ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है। कोपण निवासी चन्दिसेट्टिके पुत्र चन्द्रमने रायबाग निवासी बाहुबलिदेवके लिये इसे लिखा है। यह ग्रन्थ विरोधी संवत्सर, भाद्रपद शुक्ला १० मङ्गलवारके दिन लिखा गया है।

ग्रन्थ नं० ४४३।

३०८ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ४५८।

३०९ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४७४।

३१० **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–९५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४७८।

३११ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४७८।

३१२ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७९।

३१३ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–१०९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है। इसके लेखक देवण्णके पुत्र मंचण्ण हैं।

ग्रन्थ नं० ४८१।

३१४ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४९५।

३१५ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४९९।

३१६ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५१७।

३१७ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५२३।

३१८ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५२६ ।

३१९ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–२७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय– धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५३७ ।

३२० रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–८२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५४७ ।

३२१ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५४९ ।

३२२ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–२१ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

३२३ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५७८ ।

३२४ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–६३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें 'आत्मानुशासन' के भी ६ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६०७ ।

३२५ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–२०$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६३७ ।

३२६ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–३६$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६७० ।

३२७ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इस ग्रन्थ की २ प्रतियां हैं, तथा इसकी कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

३२८ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है, आ० पद्मनन्दिकृत 'एकत्वसप्तति' भी है ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

३२९ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–७½ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशष–इसमें 'व्रतस्वरूप' तथा शान्त्यष्टक के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८०९ ।

३३० रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८१३ ।

३३१ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमे आ० वीरनन्दिकृत 'आचारसार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८२४ ।

३३२ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९०३ ।

३३३ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–२९½ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६०१ ।

३३४ रत्नमाला–आचार्य शिवकोटि । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'सज्जनचित्तवल्लभ' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १८६ ।

३३५ रयणसार–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २६७ ।

३३६ रयणसार–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३६।

३३७ रयणसार-आचार्य कोण्डकुद। पत्र सं०-१४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८१५।

३३८ रयणसार-आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०-१६३। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-६६। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है, तथा 'त्रिलोकसार' का एक पत्र भी है।

ग्रन्थ नं० ५०।

३३९ लघुप्रायश्चित्त-·····। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-९५। विषय-धर्म। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४५।

३४० लघुप्रायश्चित्त-········। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० १९७।

३४१ लघुप्रायश्चित्त-·······। पत्र सं०-८४। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-९२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें बीच २ में अन्यान्य ग्रन्थों के उद्धरण दिये गये हैं। ग्रन्थ संग्रहात्मक मालूम होता है।

ग्रन्थ नं० ६३६।

३४२ व्यासवचनसंग्रह-········। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-इतरधर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें वर्णाश्रमधर्म तथा पुराण आदि का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है।

ग्रन्थ नं० २६।

३४३ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विषेश-इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३७।

३४४ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसका अपर नाम 'व्रतफलवर्णन' है। इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० १४१।

३४५ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-५९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८१।

३४६ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-५८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३०८।

३४७ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३१८।

३४८ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–१$\frac{1}{3}$। पंक्ति प्रतिपत्र ७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३२५।

३४९ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५२।

३५० **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३५४।

३५१ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–सस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८०।

३५२ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभावन्द्र। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिप्रत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३८६।

३५३ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९३।

३५४ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४६२।

३५५ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४९९।

३५६ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५२३।

३५७ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखतकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५५३।

३५८ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ६२८।

३५९ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा मामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६६२।

३६० **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-३८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६६२।

३६१ **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-११। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विमेष-इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ७०८।

३६२ **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-२१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत : विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्म।

ग्रन्थ नं० ७१७।

३६३ **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ७५५।

३६४ **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अत्रर प्रतिपंक्ति-९४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७५६।

३६५ **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-११४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७७०।

३६६ **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-५$\frac{१}{२}$। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-५९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ७९१।

३६७ **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ८३८।

३६८ **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड टीका एवं 'स्वरूपसबोधना' 'सध्यावन्दना' आदि के कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ९०३।

३६९ **व्रतस्वरूप**-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० १३९।

३७० **शास्त्रसारसमुच्चय**-आचार्य माघनन्दी। पत्र सं०-२३१। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतितंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २३१ ।

३७१ शास्त्रसारसमुच्चय–आचार्य माघनन्दी। पत्र सं०–२२३। पंक्ति–प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४१६।

३७२ शास्त्रसारसमुच्चय–आचार्य माघनन्दी। पत्र सं०–१३१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ५६४।

३७३ शास्त्रसारसमुच्चय–आचार्य माघनन्दी। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६१०।

३७४ शास्त्रसारसमुच्चय–आचार्य माघनन्दी। पत्र सं०–१०७। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। तथा कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७९२।

३७५ शास्त्रसारसमुच्चय–आचार्य माघनन्दी। पत्र सं०–१४१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'त्रैवर्णिकाचार' के भी दो पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३५४।

३७६ शैवशास्त्र······। पत्र सं०–८। पंक्ति–प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति––४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–इतरधर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २०२।

३७७ श्रावकचारित्र–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–विषु संवत्सर, माघ शु० १०, शुक्रवार अगलि के आदीश्वरचैत्यालय में विद्यानगरी के मुनि वीरसेन ने चन्द्रमति अम्म के लिये इसे लिखा। इस चरित्र में श्रावकों के आचार पर प्रकाश डाला गया है।

ग्रन्थ नं० ३२१।

३७८ श्रावकप्रायश्चित्त······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३५४।

३७९ श्रावकप्रायश्चित्त······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३१।

३८० श्रावकाचार–आचार्य अमितगति। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० २९९।

३८१ श्रावकाचार–आचार्य अमितगति। पत्र सं०–७३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७७।

३८२ श्रावकाचार–······। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ९।

३८३ श्रावकाचार–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'चिक्क श्रावकाचार' के नामसे प्रसिद्ध है।

ग्रन्थ नं० ५७९।

३८४ श्रावकाचार–······। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह ग्रन्थ 'चिक्क श्रावकाचार' के नाम से प्रसिद्ध है।

ग्रन्थ नं० ६४५।

३८५ श्रावकाचार–······। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसका अपर नाम 'चिक्क श्रावकाचार'

ग्रन्थ नं० ६४९।

३८६ श्रावकाचार–······। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसका अपर नाम 'चिक्क श्रावकाचार' है।

ग्रन्थ नं० ३०९।

३८७ श्रावकाचार–······। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–१६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३२१।

३८८ श्रावकाचार–······। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२५।

३८९ श्रावकाचार–······। पत्रसं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतितंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–क्षय संवत्सर, निजश्रावण कृष्णा १ शुक्रवार के दिन शृंगेरी पुट्टय्य। के पुत्र पोम्मय्य। ने धर्ममति अर्जिका के लिये इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० २३७।

३९० श्रीपदाशीति–कवि आचाण्ण। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २५९।

३९१ श्रीपदाशीति–कवि आचण्ण। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

३९२ **श्रीपदाशीति**–कवि आचण्ण । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

३९३ **श्रीपदाशीति**–कवि आचण्ण । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४९ ।

३९४ **श्रीपदाशीति**–कवि आचण्ण । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७० ।

३९५ **षोडशभावनाचरित्र**–······ । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०२ ।

३९६ **सकलागमसार**······ । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३१४ ।

३९७ **सकलागमसार**–······· । पत्र सं०–७१ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५०० ।

३९८ **सकलागमसार**–······ । पत्र सं०–४२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७१ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

३९९ **सज्जन-चित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–१$\frac{१}{२}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५७ ।

४०० **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–७ । पंक्ति पतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड लघु वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० ९३ ।

४०१ **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–९ । पंक्ति–प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशष–इसमें कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० १३६ ।

४०२ **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

४०३ **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १६० ।

४०४ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षरप्रति पंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें और भी वैद्यक विषय के कुछ खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

४०५ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७२ ।

४०६ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३०५ ।

४०७ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–२½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३०८ ।

४०८ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–३४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३१८ ।

४०९ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३४७ ।

४१० सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७१ ।

४११ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४७९ ।

४१२ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नडटीका है ।

ग्रन्थ नं० ५१० ।

४१३ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५१९ ।

४१४ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

। ग्रन्थ नं० ५२३ ।

४१५ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१३० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६२८ ।

४१६ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

४१७ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–६३ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें अभिनव श्रुतमनि कृत कन्नड टीका भी है । टीकाके अन्तिम पद्य–"श्रीमत्सज्जनचित्तवल्लभ इति प्रख्याततनाम्नः कृतेः टीका भव्यविभावुका बुधजनश्रव्या हि नव्या कृता । कामानेकपकेसरीश्रुतमुनेः शुद्धात्मसंवित्खनेः पादाब्जाल-सुचन्द्रकीर्तियतिनः शिष्येण पुण्यात्मना ॥ या अभिनवश्रुतमुनिना गुणिना साध्वी हिता कृता लध्वी । तां शोधयन्तु निपुणाः श्रीजैनागमसुधाब्धिविधुसङ्काशाः ॥"

ग्रन्थ नं० ६५८ ।

४१८ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

४१९ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७९१ ।

४२० सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८१३ ।

४२१ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–४$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१६ ।

४२२ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

४२३ सज्जनचित्तवल्लभ–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–१$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रनिपंक्ति–९५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४३ ।

४२४ सर्वार्थसिद्धि–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–९० । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ । विषय–धर्म । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत ! लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

४२५ सर्वार्थसिद्धि–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–१०१ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २८६ ।

४२६ सर्वार्थसिद्धि–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–११६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–शालि० शक १५२१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–शालि० शक १५२१, विलंबि संवत्सर भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदाके दिन सरस्वती-गच्छ बलात्कारगण कोण्डकुन्दान्वयके आ० वसुन्धरने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

४२७ सर्वार्थसिद्धि–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७६ ।

४२८ सर्वार्थसिद्धि–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–७१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१३ ।

४२९ सर्वार्थसिद्धि–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

४३० सद्बोधचन्द्रोदय–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

४३१ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–ग्रंथ स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

४३२ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–७४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १०० ।

४३३ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–७४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है । इसके अन्तके ६ श्लोक नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ११२ ।

४३४ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३२४ ।

४३५ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–६२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३७६ ।

४३६ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–१०८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि––कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है। यह टीका शालि० शक १५३६, आनन्द संवत्सर आश्वयुज शुक्ला ५ के दिन क्षेमपुर (गेरुसोप्पे) निवासी बाहुबली (भुजबली) उपाध्यायके द्वारा रची गयी है। राक्षस संवत्सर कार्तिक १० के दिन मूल्के निवासी कुल्यने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ४४३।

४३७ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–६८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ४७३।

४३८ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टिप्पणी है।

ग्रन्थ नं० ४७५।

४३९ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–८५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ५१२।

४४० **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५२३।

४४१ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५३३।

४४२ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ५५४।

४४३ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५६६।

४४४ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–८९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५८५।

४४५ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें व्याकरणसंबंधी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५९८।

४४६ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'आप्तपरीक्षा' के भी ३ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५९८।

४४७ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५९८।

४४८ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–११३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६०९।

४४९ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें अनुप्रेक्षा संबंधी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६३२।

४५० सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–८६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ७५१।

४५१ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–८७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ८८०।

४५२ सागारधर्मामृत–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ९।

४५३ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें विमलसूरि कृत कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ७५।

४५४ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति है।

ग्रन्थ नं० ९१।

४५५ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति है।

ग्रन्थ नं० १००।

४५६ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें विमलसूरि कृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १७५।

४५७ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८२।

४५८ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है। आदिके २२ पद्य नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० २३७।

४५९ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७३।

४६० सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–कीलक संवत्सर माघ शुक्ला ५ रविवारके दिन जीयण्णके शिष्य नेमिचन्द्र देवने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ३०८।

४६१ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें विमलसूरिकी कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३१८।

४६२ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३२८।

४६३ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३५।

४६४ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४८।

४६५ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५४।

४६६ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३७७।

४६७ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है, एवं 'परीक्षामुख' के कुछ खण्डित पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ३८०।

४६८ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४०९।

४६९ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ५२०।

४७० सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५५४।

४७१ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६०२।

४७२ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत 'नागकुमारचरित' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६२५।

४७३ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–१५$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत 'पार्श्वनाथाष्टक' आदिके भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं।

ग्रन्थ नं ६३१।

४७४ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत 'अर्हत्स्तोत्र' 'सिद्धस्तोत्र' तथा 'रत्नत्रयस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६७६।

४७५ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–८$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७२३।

४७६ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५६।

४७७ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–३$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

ग्रन्थ नं० ८६२।

४७८ सूक्तिमुक्तावली–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है। खर संवत्सर भाद्रपद प्रतिपदा मङ्गलवारके दिन उपाध्याय अनन्त भट्टके पुत्रने वेणुपुर–[मूडबिद्री] स्थ कोटिसेट्टिबसदि [नेमिनाथ चैत्यालय] में इसे लिखा है।

विषय—योगशास्त्र

ग्रन्थ नं० ६७१।

१ आनन्दविंशतिका–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–योगशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें योगशास्त्रसंबंधी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २८३।

२ ध्यानस्वरूप–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–योगशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२१।

३ ध्यानस्वरूप–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–योगशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७७।

४ योगरत्नाकर–कवि शान्तरस। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–योगशास्त्र। लेखनकाल–×। शालि० शक १६४१ विकारी संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १५। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–सोमवंशीय राजा लक्ष्मप्परसराय (बंगभपाल) के गुरु आचार्य चन्द्रशेखरके पुत्र पद्मनाभने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ७४४।

५ योगरत्नाकर–कवि शान्तरस। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–योगशास्त्र। लेखनकाल–×। शालि० शक १६५३। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि० शक १६५३ खर संवत्सर आश्वयुज शुक्ला १५ भार्गव (शुक्र) वारके दिन सूरात्न निवासी चन्दप्पने सिधु उपाध्यायके लिये इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ८९२।

६ योगरत्नाकर–कवि शान्तरस। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–योगशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'गोम्मटसार (जीवकाण्ड) 'तथा आशीर्वादपद्य' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७५१।

७ **योगसार**–श्री गुरुदास । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यह ग्रन्थ प्रकाशनार्ह है।

ग्रन्थ नं० १४४ ।

८ **योगामृत**–कवि शान्तरस । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६३ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें और भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३३२ ।

९ **योगामृत**–कवि शान्तरस । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७०२ ।

१० **योगामृत**–कवि शान्तरस । पत्र सं०–२९ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९० ।

११ **योगाङ्ग**–······ । पत्र सं०–११६ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १७२ ।

१२ **ज्ञानार्णव**–आचार्य शुभचन्द्र । पत्र सं०–११५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६२८ ।

१३ **ज्ञानार्णव**–आचार्य शुभचन्द्र । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें गद्यभाग मात्र है । इसकी कन्नड टीका है । साथ ही साथ 'गोम्मटसार' जीवकाण्ड संबंधी संदृष्टिके भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६२८ ।

१४ **ज्ञानार्णव**–आचार्य शुभचन्द्र । पत्र सं०–३८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७१० ।

१५ **ज्ञानार्णव**–आचार्य शुभचन्द्र । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२० । लिपि–नागरी । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

१६ **ज्ञानार्णव**–आचार्य शुभचन्द्र । पत्र सं०–२८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति ११० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

विशेष–इसमें 'तत्त्वानुशासन' 'आराधनासार' आदिके भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

विषय—प्रतिष्ठा

ग्रन्थ नं० ४२१।

१ जिनयज्ञकल्पटीका–·······। पत्र सं०–४६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यह पण्डित आशाधर विरचित 'जिनयज्ञकल्प' अथवा 'प्रतिष्ठासारोद्धार' नामक प्रतिष्ठापाठ की संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० १९० ।

२ जिनयज्ञकल्पदीपक–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–७३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह 'प्रतिष्ठासारोद्धार' का स्वोपज्ञ निबन्ध है । प्रति में इसका नाम जिनयज्ञकल्पदीपक नाम निबन्ध लिखा मिलता है ।

ग्रन्थ नं० ५०८ ।

३ जिनसंहिता–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६८२ ।

४ जिनसंहिता–भ०एकसंधी । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें 'एकीभाव', 'विषापहार' 'एवं तत्त्वार्थसूत्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७२० ।

५ जिनसंहिता–भ० एकसन्धी । पत्र सं०–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'गणितविलास' (कन्नड) के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६८३ ।

६ जिनसंहिता–भ०एकसंधी । पत्र सं०–७६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रंथ नं० ११३ ।

७ जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय–आर्यप । पत्र सं०–६८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

प्रारम्भिक भागः–

तर्कव्याकरणागमादिलहरीपूर्णश्रुताम्भोनिधेः स्याद्वादाम्बरभास्करस्य धरसेनाचार्यवर्यस्य च । शिष्येणार्यपकोविदेन रचितः कौमारसेनेर्मुनेर्ग्रन्थोऽयं जयताज्जगत्त्रयगुरोर्बिम्बं (ब) प्रतिष्ठाविधिः ॥

ग्रंथ नं० ५७७ ।

८ जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय–आर्यप । पत्र सं०–५४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें 'कातंत्ररूपमाला' के भी ७ पत्र हैं ।

ग्रंथ नं० ८७४ ।

९ ध्वजारोहणविधि–नेमिचन्द्र । पत्र सं०–३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यह नेमिचन्द्रकृत 'प्रतिष्ठातिलक' का एक प्रकरण है ।

ग्रंथ नं० २१४।

१० प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि- कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-६४। पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नन्दीश्वरपूजा' के भी २० पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २५१।

११ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि-आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-६२। पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६८२।

१२ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि-आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-६७। पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है तथा 'जिनसहस्रनाम' एवं 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७३०।

१३ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि-आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-५१। पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७७९ ।

१४ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि-आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २३४।

१५ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि। पत्र सं०-४८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०६।

१६ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-१८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-जीर्ण ।

विशेष-यह ग्रन्थ पूर्ण है, पर आदि के कुछ पत्र खण्डित हैं।

ग्रन्थ नं० ८८१।

१७ प्रतिष्ठातिलक-नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-शा० शक १७९९। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८९१।

१८ प्रतिष्ठातिलक-नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'गणितविलास', 'क्षत्रचूडामणि' तथा 'व्याकरण' आदिके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७०।

१९ प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-४४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११५।

२० प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-

१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० २६३।

२१ प्रतिष्ठासारोद्धार–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसका अपर नाम 'जिनयज्ञकल्प' है।

ग्रन्थ नं० ८७२।

२२ यथाप्रतिष्ठाविधान–·······। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'ध्वजारोहणविधि' भी है।

ग्रन्थ नं० १९०।

२३ यन्त्रीविधि······। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें प्रतिष्ठा में काम आनेवाले कतिपय यन्त्रों के नियम दिये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ८८२।

२४ यंत्रसंग्रह–नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–×। अक्षर प्रतिपंक्ति–×। लिपि–कन्नड। भाषा–×। विषय–प्रतिष्ठा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें प्रतिष्ठा सम्बन्धी कतिपय यंत्र संग्रह किये गये हैं।

विषय—व्रतविधान

ग्रन्थ नं० ७८३।

१ अनन्तव्रतविधान–······पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'यज्ञोपवीतलक्षण' 'मुद्रालक्षण' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ११४।

२ अभिषेकपाठ–·······। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें और भी कतिपय स्तोत्रों के कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३५५।

३ अभिषेकपाठ–ब्रह्मसूरि। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७१३।

४ अभिषेकपाठ–·······। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८९३।

५ अभिषेकपाठ–······। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'वज्रपाणि' नाम से प्रसिद्ध है।

ग्रन्थ नं० ३८१।

६ अभिषेकपूजापाठ–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३८८।

७ अभिषेकपूजापाठ–······। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३७।

८ अर्हत्पूजा–······। पत्र सं०–१। पंक्ति–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८९४।

९ आराधनासंग्रह–······। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'कलिकुण्डाराधना' 'नागार्जुनयंत्राराधना' तथा वज्रपञ्जराराधना' आदि कई आराधनाएं संग्रह की गई हैं। एवं 'शान्तिहोमविधि' भी है।

ग्रन्थ नं० ११४।

१० कर्मदहनआराधना–······। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३५।

११ कर्मदहनपूजाविधान–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २२७।

१२ कर्मदहनमंत्र–······। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८१०।

१३ कर्मदहनमंत्र–······। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'सिद्धचक्र' 'दशलक्षण' तथा 'श्रुतज्ञान' के जाप्यमंत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ३६३।

१४ कल्पामरव्रतविधान–······। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५०।

१५ कलिकुण्ड-आराधनादिसंग्रह–······। पत्र सं०-१३०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १९७।

१६ गणधराष्टक–······। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १९७।

१७ गणधराधिवासन–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'त्रिभुवनतिलकव्रतकथा' के भी तीन पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८९०।

१८ गणधरवलययंत्राराधना–······। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि––कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४४५।

१९ ग्रहयज्ञविधान–······। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८६३।

२० चतुर्विंशतिजिनपूजा–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें पंचपरमेष्ठी, श्रुत तथा गणधरपूजाएं भी हैं।

ग्रन्थ नं० ८७१।

२१ चतुर्विंशतितीर्थंकरसमुदायपूजा–······। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें श्रुतपूजा, गणधरपूजा तथा रत्नत्रयपूजा भी हैं।

ग्रन्थ नं० ८४४।

२२ चारित्राराधनामंत्र–······। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें १३ विध चारित्र-संबन्धी पूजामंत्र हैं।

ग्रन्थ नं ३३४।

२३ चारित्रसिद्धिव्रतविधान–······। पत्र सं०–१। पंक्ति–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३४।

२४ चारित्रसिद्धिव्रत-पूजाविधान–भट्टारक शुभचन्द्र। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–मन्मथ संवत्सर वैशाख कृष्णा ६ शनिवार के दिन बल्लसे वैलुर देवरसने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० २१५।

२५ जिनगुणसंपत्तिव्रतविधान–······। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र ९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रंथ नं० ३३४।

२६ जिनगुणसंपत्तिव्रतविधान–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८७७।

२७ तीर्थंकरमंगलारती–······। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें वर्तमान २४ तीर्थंकरों तथा पचपरमेष्ठियोंकी आरती है।

ग्रन्थ नं० ६७८ ।

२८ त्रिकालतीर्थंकरपूजा–······। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'अभिषेकपाठ' भी है।

ग्रन्थ नं० ८३४ ।

२९ त्रिकालतीर्थंकरपूजा–·······। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें आचार्य समन्तभद्र कृत 'स्वयंभूस्तोत्र' 'भक्तामरस्तोत्र' तथा 'समवसरणस्तोत्र' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६४७ ।

३० **नवदेवतापूजाविधि**–·······। पत्र सं०–६$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६३ ।

३१ **नवनिधिभण्डारव्रतविधान**–·······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३५३

३२ **नित्यव्रतादानक्रम**–·······। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें श्रावकोंके प्रतिदिन नियम लेने का क्रम बतलाया है।

ग्रन्थ नं० ८५४ ।

३३ **नन्दीश्वरपूजा**–·······। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५२९ ।

३४ **नन्दीश्वरव्रतविधान**–····। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं ०५७९ ।

३५ **नन्दीश्वरव्रतविधान**–····। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३७८ ।

३६ **नान्दीमंगलविधान**–·······। पत्र सं०–५२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७०० ।

३७ **नान्दीमंगलविधान**–संग्रह। पत्र सं०–११६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत, प्राकृत तथा कन्नड। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

३८ **पल्यविधानव्रतविधान**–·······। पत्र सं०–१। पंक्ति–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४०७ ।

३९ **पूजापाठसंग्रह**······। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४०९।

४० पूजापाठसंग्रह—······। पत्र सं०—२५। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—१००। लिपि—कन्नड। भाषा— संस्कृत। विषय—पूजा। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६९९।

४१ पूजापाठसंग्रह—······। पत्र सं०—६०। पंक्ति प्रतिपत्र—५। अक्षर प्रतिपंक्ति—३५। लिपि—नागरी। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। लेखनकाल—×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८६८।

४२ पूजापाठसंग्रह—······। पत्र सं०—२७। पंक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपंक्ति—३४। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० २१५।

४३ पंचकल्याणव्रतविधान—······। पत्र सं०—१६। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—५८। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—व्रतविधान। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८१।

४४ पंचपरमेष्ठिपूजा—······। पत्र सं०—३। पंक्ति प्रतिपत्र—७। अक्षर प्रतिपंक्ति—८५। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत तथा कन्नड। विषय—पूजा। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८४८।

४५ पंचपरमेष्ठिपूजा—······। पत्र सं०—१६। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—३७। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—इसमें 'बाहुबलिपूजा' भी है।

ग्रन्थ नं० ८४०।

४६ पंचपरमेष्ठि तथा नवदेवतापूजा—······। पत्र सं०—३०। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—३३। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—उत्तम।

विशेष—इसमें 'नवदेवतास्तोत्र' भी है।

ग्रन्थ नं० ८७६।

४७ ब्रह्मयक्षार्चन—······। पत्र सं०—९। पंक्ति प्रतिपत्र—१०। अक्षर प्रतिपंक्ति—७०। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—इसमें 'सुप्रभातस्तोत्र' 'स्वप्नावली' तथा 'त्रिलोकचरित' [कन्नड] भी है।

ग्रन्थ नं० ६५८।

४८ भुजबलिकल्याणव्रतविधान—पद्मनन्दी वर्णी। पत्र सं०—१९३। पंक्ति प्रतिपत्र—५। अक्षर प्रतिपंक्ति—१८। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—व्रतविधान। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८१३।

४९ भूमिशुद्धिविधान—······। पत्र सं०—१९। पंक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपंक्ति—३१। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६७८।

५० महापुण्याहवाचना—······। पत्र सं०—१५। पंक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपंक्ति—४५। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। लेखनकाल—×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—जीर्ण।

विशेष—यह 'नान्दीमङ्गलविधान, का एक अंश है। इसमें 'अकलङ्काष्टक' 'नन्दीश्वरपूजा' तथा 'षोडशभावनापूजा' के कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३५५।

५१ महाभिषेक–·······। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६४७।

५२ महाभिषेक–·······। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८९३।

५३ महाभिषेक–·······। पत्र सं०–४४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८९५।

५४ महाभिषेक–·······। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३४।

५५ मुक्तावलीव्रतविधान–·······। पत्र सं०–१। पंक्ति–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि– कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८९४।

५६ मृत्युञ्जयआराधना–·······। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५८०।

५७ वस्तुकल्याणव्रतविधान–·······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'नन्दीश्वरव्रतविधान' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६४७।

५८ वास्तुपूजा तथा शान्तिविधान–·······। पत्र सं०–७५। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'नान्दीमङ्गलविधान' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८४७।

५९ वास्तुपूजा तथा शान्तिविधान–·······। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६४७।

६० विमानशुद्धिविधान–·······। पत्र सं०–११½। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८९३।

६१ विमान [चैत्यालय] शुद्धिविधान–·······। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–२१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल– ईसवी सन् १८७५। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–ईसवी सन् १८७५ जुलाई ता० २३ के दिन पदुमसेट्टिने इसे लिखा है।

ग्रंथ नं० ६०४।

६२ व्रतविधानसंग्रह–·····। पत्र सं०–४९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रंथ नं० ७०७।

६३ शुक्रवारव्रतविधान……। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

बिशेष–इसमें प्रभाचन्द्रकृत 'व्रतस्वरूप' है तथा कविरत्नाकर कृत 'भरतेशवैभव' के कुछ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ३२५।

६४ श्रुतज्ञानमन्त्र–……। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। बिषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३४।

६५ श्रुतज्ञानव्रतोपवासक्रम–………। पत्र सं०–१। पंक्ति–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८५।

६६ श्रुतस्कन्धपूजाविधान–……। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १९७।

६७ श्रुताष्टक–……। पत्र सं०–१। पंक्ति–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १९७।

६८ श्रुताधिवासन–……। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८१।

६९ षोडशभावनापूजा……। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६३।

७० सप्तपरमस्थानव्रतविधान……। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६३।

७१ सर्वतोभद्रव्रतविधान–……। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४७।

७२ सर्वदोषपरिहारव्रतविधान–……। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३२५।

७३ सहस्रनाममन्त्र–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३६३।

७४ सिद्धचक्रव्रतविधान–……। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्रतविधान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३७।

७५ सिंहप्रायोपगमन-······। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-व्रतविधान। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

न्याय तथा दर्शन.

ग्रन्थ नं० ७१९।

*१ **अथर्वशिखोपनिषद्दीपिका**-शंकरानन्द। पत्र सं०-६८½। पंक्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपंक्ति ४५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-यह 'अथर्वशिखोपनिषत्' की टीका है।

ग्रन्थ नं० ७८३।

२ **अष्टशती**-आचार्य भट्टाकलङ्कदेव। पत्र सं०-५५½। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-शालि० शक १५९९। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-शालि०शक १५९९ पिंगल संवत्सर पुष्य शुक्ला १३ बुधवार के दिन संकिघट्टस्थ वर्धमान चैत्यालय में यह ग्रन्थ लिखा गया है।

ग्रन्थ नं० ९०७।

३ **अष्टशती**-आचार्य भट्टाकलङ्कदेव। पत्र सं०-२४। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४९।

४ **अष्टसहस्री**-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-२४। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५१९।

५ **अष्टसहस्री**-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-४९। पंक्ति प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६२५।

६ **अष्टसहस्री**-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-२८। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ९०७।

७ **अष्टसहस्री**-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-१७६। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें ज्योतिष तथा गणित संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ९०९।

८ **अष्टसहस्री**-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-१५६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-११४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

---

* तारकाङ्कित जैनेतर ग्रन्थ हैं

ग्रन्थ नं० ५६४।

९ अहिंसालक्षण (?)–······। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–ग्रन्थ का 'अहिंसालक्षण' यह नाम अनुमानपरक है। क्योंकि प्रारंभका पत्र खण्डित है। प्रारंभिक पद्य निम्नप्रकार हैः–"आनम्य सन्मतिं देवमधर्मःऋतुहिंसनं। हिंसात्वादिति सिद्धचर्थं·········ब्रुवे ॥ इसमें न्याय संबंधी और भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ७३।

१० आप्तपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९५।

११ आप्तपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–५६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७७।

१२ आप्तपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४११।

१३ आप्तपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–६६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७६।

१४ आप्तपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९७।

१५ आप्तमीमांसा–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–६७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २०८।

१६ आप्तमीमांसा–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें आचार्य अकलङ्कदेवकी संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० २०८।

१७ आप्तमीमांसा–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २१८।

१८ आप्तमीमांसा–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७७।

१९ आप्तमीमांसा–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २९२।

२० आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३४।

२१ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७१।

२२ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं०४९२।

२३ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-७९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें वैद्यकसम्बन्धी दो पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ४९७

२४ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-१८। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६७६।

२५ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-२½। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें 'शान्तिनाथाष्टक' भी है।

ग्रन्थ नं०७८३।

२६ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-४½। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-४९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७९६।

२७ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-५२। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें संस्कृत टिप्पणी भी है।

ग्रन्थ नं० ९०७।

२८ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७५५।

२९ आलापपद्धति-आचार्य देवसेन। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६७१।

*३० खण्डनदीपिका-मुनि चित्सुख। पत्र सं०-४६। पंक्ति प्रतिपत्र-१७। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-यह महाकवि श्रीहर्ष कृत खण्डनग्रन्थ की संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ५६०।

*३१ गौतमसिद्धान्त-पण्डित शशधर शर्मा। पत्र सं०-४२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष–इसमें 'तार्किकरक्षा' के भी तीन पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५२०।

***३२ तत्त्वकौमुदी**–श्री वाचस्पति मिश्र। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७१।

***३३ तत्त्वकौमुदी**–वाचस्पति मिश्र। पत्र सं०–९$\frac{१}{२}$। पंक्ति प्रतिपत्र–१६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७२४।

***३४ तत्त्वचिन्तामणि**–महोपाध्याय गणेश्वर। पत्र सं०–८०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–११६। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५११।

***३५ तत्त्वदीपिका**–खण्डनाकन्द। पत्र सं०–२००। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० २०९।

३६ तत्त्वनिश्चय–प्रवरकीर्ति। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६८।

३७ तत्त्वप्रदीप–देवण्ण। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–कालयुक्ति संवत्सर, श्रावण कृष्ण १४, शुक्रवारके दिन कृष्णने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ४८।

३८ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति। १४०। विषय–न्याय। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३६।

३९ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–१०४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०८।

४० तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५८१।

४१ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–१८५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५८४।

४२ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३१।

४३ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–२५५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–शालि० शक १४२१। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इस प्रतिके लेखक पण्डितदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

*४४ तर्कपरिभाषा–केशव मिश्र । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध ।

ग्रन्थ नं० ८१ ।

*४५ तर्कपरिभाषा–केशव मिश्र । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६५ ।

*४६ तर्कपरिभाषा–केशव मिश्र । पत्र सं–३४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–दुंदुभि संवत्सर ज्येष्ठ कृष्ण ७ के दिन नन्दावरपुरस्थ आदिनाथ चैत्यालय में यह ग्रन्थ लिखा गया ।

ग्रन्थ नं० ४१३ ।

*४७ तर्कपरिभाषा–केशव मिश्र । पत्र सं०–२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । शालि० शक १५०३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–शालि० शक १५०३, विषु संवत्सर, भाद्रपद शुक्ला १३, रविवारके दिन कनकपुरस्थ बोम्मरस ने होंगनूरुनिवासी पदुमण उपाध्यायके पुत्र चिक्कय्यके लिये क्षेमपुरस्थ शान्तिनाथमन्दिरमें लिखवाकर इसे दान किया था ।

ग्रन्थ नं० ६६६ ।

*४८ तर्कदीपिका–········ । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२६ ।

*४९ तर्कभाषा–केशव मिश्र । पत्र सं० ५८ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–नागरी । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३९० ।

*५० तर्कसंग्रह–अन्नंभट्ट । पत्र सं०–९½ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७२९ ।

*५१ तर्कसंग्रह–अन्नंभट्ट । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७६४ ।

*५२ तर्कसंग्रह–अन्नंभट्ट । पत्र सं०–१५½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७७६ ।

*५३ तर्कसंग्रह–अन्नंभट्ट । पत्र सं०–१६½ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें आशीर्वाद गद्य भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ७८९ ।

*५४ तर्कसंग्रह–अन्नंभट्ट । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १११।

*५५ तर्कसंग्रहदीपिका–····। पत्र सं०–६१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९०।

*५६ तर्कसंग्रहदीपिका–······। पत्र सं०–६६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७८९।

*५७ तर्कसंग्रहदीपिका–····पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११।

*५८ तार्किकरक्षा–वरदराज। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं०८२।

*५९ तार्किकरक्षा–वरदराज। पत्र सं०–१०८। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें गणित विषयके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १७८।

*६० तार्किकरक्षा–वरदराज। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २०६।

*६१ तार्किकरक्षा–वरदराज। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि-कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४४८।

*६२ तार्किकरक्षा–मायिभट्ट। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–२७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें वरदराज कृत संस्कृत व्याख्या भी है।

ग्रन्थ नं० ४१३।

*६३ तार्किकरक्षाव्याख्यान–······। पत्र सं०–८५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। शालि० शक १५०५। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि० शक १५०५ भानु संवत्सर, चैत्र शुक्ला पूर्णिमा के दिन इसकी प्रतिलिपि समाप्त हुई थी।

ग्रन्थ नं० ६७१।

*६४ तार्किकरक्षा की टीका–पण्डित हरिहर। पत्र सं०–३११। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह वरदराजकृत 'तार्किकरक्षा' की टीका है। साथमें न्यायसम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६४०।

६५ नयलक्षण–····। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह एक संग्रह-ग्रन्थ है

ग्रन्थ नं० ६७९ ।

६६ **नयलक्षण**–········। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७९।

६७ **नयसंग्रह**– ········। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत 'समवसरणाष्टक' तथा 'वीतरागाष्टक' भी है

ग्रन्थ नं० ६।

*६८ **न्यायकन्दली**–पाण्डुदास यति श्रीधर भट्ट। पत्र सं०–१३०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–प्रारम्भके १४ पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० ५७०।

*६९ **न्यायकन्दलीटीका**–राजा इरुंगोल। पत्र सं०–१६०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड तथा नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ९०८।

७० **न्यायकुमुदचन्द्र**–प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–१३४। पंक्ति प्रतिपत्र–१९। अक्षर प्रतिपंक्ति–२१०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'न्यायकुमुदचन्द्र' की अपूर्ण कारिकाएं तथा 'परीक्षामुख' के अपूर्ण सूत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ५८७।

*७१ **न्यायकुसुमाञ्जलि**–कवि वरदराज। पत्र सं–७९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७१।

*७२ **न्यायदीपावलीकी टीका**–मुनि सुखप्रकाश। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७१।

*७३ **न्यायदीपावलीविवेक**–मुनि अमृतानन्द। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–१६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह 'न्यायदीपावली' की टीका है

ग्रन्थ नं० ७६९।

७४ **न्यायमणिदीपिका**–·········। पत्र सं०–९२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह आ० अनन्तवीर्यकृत 'प्रमेयरत्नमाला' नामक परीक्षामुखवृत्तिकी टीका है। टीकाकारने अपना नाम सिर्फ 'बाल:' लिखा है।

ग्रन्थ नं० ८१।

*७५ **न्यायसार**–·······। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३१०।

*७६ **न्यायसार**–·········पत्र सं–५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २८३ ।

*७७ न्यायपारटीका–······ । पत्र सं०–५६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१० ।

*७८ न्यायसारपदपञ्चिका–पण्डित वासुदेव । पत्र सं०–३४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७८० ।

*७९ न्यायसारपदपञ्चिका–पण्डित वासुदेव । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८२१ ।

*८० न्यायसारपदपञ्चिका–पण्डित वासुदेव । पत्र सं०–४५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८२४ ।

*८१ न्यायसिद्धान्तदीप–शशधर शर्मा । पत्र सं०–२५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०१ ।

*८२ न्यायामृत···· । पत्र सं०–१४९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ९५ ।

८३ पत्रपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य

ग्रन्थ नं० ३७७ ।

८४ पत्रपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा शिथिल ।

ग्रन्थ नं० ४११ ।

८५ पत्रपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र –८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१५४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०९ ।

८६ पत्रपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

८७ पत्रपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा –उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९० ।

८८ पत्रपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा –संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८० ।

८९ परमतखण्डन–······ । पत्र सं०–२७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०८ ।

९० परीक्षामुख–आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४१ ।

९१ परीक्षामुख–आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०–५७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९३ ।

९२ परीक्षामुख–आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३०७ ।

९३ परीक्षामुख–आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'प्रमेयकमलमार्तण्ड, आप्तपरीक्षा, आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४६३ ।

९४ परीक्षामुख–आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०–१०६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें अनन्तवीर्यकी संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६०४ ।

९५ परीक्षामुख–आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

९६ परीक्षामुख–आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७६१ ।

९७ परीक्षामुखवृत्ति–श्री शुभचन्द्रदेव । पत्र सं०–९४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३१० ।

*९८ प्रबोधसाधन–मायिभट्ट । पत्र सं०–४६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१५७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह वरदराज कृत 'सारसंग्रह' की टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

*९९ प्रबोधसाधन–मायिभट्ट । पत्र सं०–५२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–११० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष–यह वरदराजीय न्याय-ग्रन्थकी संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४९१ ।

१०० प्रमाणपदार्थ–······ । पत्र सं०–५६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१३० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १३२।

१०१ प्रमाणपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें ग्रन्थकर्ताका नाम नहीं मिलता है। प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है–.

जयन्ति निर्जिताशेषसर्वथैकान्तनीतयः। सत्यवाक्याधिपाः शश्वद्विद्यानन्दा जिनेश्वराः॥

ग्रन्थ नं० २९३।

१०२ प्रमाणपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–६६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४११।

१०३ प्रमाणपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०८।

१०४ प्रमाणपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५४८।

१०५ प्रमाणपरीक्षा–आचार्य विद्यानदी। पत्र स०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७३।

१०६ प्रमाणनिर्णय–आचार्य वादिराज। पत्र सं०–३१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९५।

१०७ प्रमाणनिर्णय–आचार्य वादिराज। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थके अन्तिम पद्य–

श्रीमद्व्याकरणोन्नताग्रनखरं षट्तर्कदंष्ट्रोत्कटं सत्साहित्यवरोरुकेसरसटासुभ्राजितं सिंहवत्। यद्वाक्यं परवादिवारणगणध्वंसोदवादुद्धतं (?) ते नन्दन्तु मुनीन्दवः सुकृतिनः श्रीनागवीरात्मजाः॥ काणादः कोणमेकं भजतु भयवशात्सौगतस्यागतोऽयं मृत्युर्मीमांसकाद्याः किमिति जडधियः कुर्वते गर्वबुद्धिम्। येनाय न्यायमार्गप्रकटपटुवचःप्रौढपर्यायरूढो बाढं दुस्तर्कगाढग्रहणपरिवृढान्वादिराजस्तृणेथि ? ॥०॥ विद्यानन्दबुधाग्रणीः समयनाथोऽनन्तवीर्यो मुनिर्नैत्रद्वन्द्वसमौ मता भगवतो भट्टाकलङ्कस्य च। लालाटं पुनरीक्षणं समजनि श्रीवादिराजो मुनिर्मिथ्यात्वादिपुरत्रयस्य दहने देवस्त्रिणेत्रो भुवि॥

ग्रन्थ नं० ४११।

१०८ प्रमाणनिर्णय–आचार्य वादिराज। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसे पोसवलल चन्द्रमति अव्वने विजयोपाध्यायके पुत्र पण्डितदेवके लिये लिखवाया।

ग्रन्थ नं० ५४९।

१०९ प्रमाणनिर्णय–आचार्य वादिराज। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें आचार्य विष्णुसेन कृत 'समवसरणस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६६८।

११० **प्रमाणनिर्णय**–आचार्य वादिराज। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७१।

*१११ **प्रमाणमालातात्पर्यटीका**–मुनि चित्सुख। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–१६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६३९।

११२ **प्रमाणसिद्धि**–······। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें षड्दर्शनोंका संक्षिप्त वर्णन भी है।

ग्रन्थ नं० १३।

११३ **प्रमेयकमलमार्तण्ड**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–२२२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल-शालिवाहन श०१५३८। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५२।

११४ **प्रमेयकमलमार्तण्ड**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–२४५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। विषय–न्याय। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १०८।

११५ **प्रमेयकमलमार्तण्ड**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४२९।

११६ **प्रमेयकमलमार्तण्ड**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–१३५। पंक्ति प्रतिपत्र–१४। अक्षर प्रतिपंक्ति–२८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३९।

११७ **प्रमेयकमलमार्तण्ड**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–१२८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४४४।

११८ **प्रमेयकमलमार्तण्ड**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७२२।

११९ **प्रमेयकमलमार्तण्ड**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–२१०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १९।

१२० **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५४।

१२१ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य। पत्र सं०–६८। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४८० ।

१२२ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०–५३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर–प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५७ ।

१२३ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०–३५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५६४ ।

१२४ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१४ ।

१२५ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०–३७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'सप्तभंगी' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३५ ।

१२६ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०–५० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७६४ ।

१२७ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०–२७½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८०८ ।

१२८ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०–८० । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८३० ।

१२९ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०–३४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०८ ।

१३० **प्रवचनप्रवेश**–आचार्य भट्टाकलंक । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९०८ ।

१३१ **प्रवचनप्रवेश**–आचार्य भट्टाकलंक । पत्र सं०–६½ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१३० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४८९ ।

*१३२ **बृहदारण्यकभाष्य**–······ । पत्र सं०–२६६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

विशेष–इसमें 'आप्तमीमांसा' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

*१३३ **भगवद्गीता**–········· । पत्र सं०–४५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १११।

*१३४ **भाषापरिच्छेद**–विश्वनाथ भट्टाचार्य। पत्र सं०–३½। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १११।

*१३५ **मुक्तावलीप्रकाश**–महादेव भट्ट। पत्र सं०–६१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १२०।

१३६ **युक्त्यनुशासन**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–६४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है। टीकाकार आचार्य विद्यानन्दी हैं।

ग्रन्थ नं० २०८।

१३७ **युक्त्यनुशासन**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रथ नं० ५७५।

१३८ **युक्त्यनुशासन**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें आ० मल्लिषेण कृत 'सज्जनचित्तवल्लभ' के भी तीन पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६७६।

१३९ **युक्त्यनुशासन**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३½। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५५।

१४० **युक्त्यनुशासन**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७८३।

१४१ **युक्त्यनुशासन**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'शारदाष्टक' तथा 'नवदेवाष्टक' भी हैं।

ग्रन्थ नं० ११।

१४२ **लघीयस्त्रय**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–१७२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें आचार्य अभयचन्द्र कृत वृत्ति भी है। यह ग्रन्थ हल्लेरबीड मुनिचंद्रदेवके द्वारा मंजेश्वरके नेमिनाथमन्दिरमें लिखा गया।

ग्रन्थ नं० २३५।

१४३ **लघीयस्त्रय**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें आचार्य अभयचन्द्र कृत तात्पर्यवृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० ४९२।

१४४ **लघीयस्त्रय**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०२।

१४५ त्रिभुवनप्रकाश–आचार्य भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–११३ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १९६ ।

***१४६ वेदान्तकल्पतरु**–अमलानन्द । पत्र सं०–३२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७२४ ।

***१४७ शब्दखण्डव्याख्यान**–...... । पत्र सं०–१२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११८ । लिपि–नागरी । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१९ ।

***१४८ शिवसूत्रत्रिशिका**–..... । पत्र सं०–३½ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २८८ ।

१४९ श्लोकवार्तिक–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–१४५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–नागरी । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

१५० षण्मत तर्क–..... । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५२२ ।

१५१ सत्यशासनपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–४३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६५२ ।

१५२ सत्यशासनपरीक्षा–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–१८½ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७९ ।

१५३ सप्तभंगी–....... । पत्र सं०–१४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका सहित गोम्मटसार जीवकाण्डके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७८ ।

***१५४ सारसंग्रह**–वरदराज । पत्र सं०–७२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–यह वादिराज कृत 'तार्किकरक्षा' की टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३१० ।

***१५५ सारसंग्रह**–वरदराज । पत्र सं०–३७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१४३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १११ ।

***१५६ सिद्धान्तमुक्तावली**–विश्वनाथ भट्टाचार्य । पत्र सं०–३० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०१।

१५७ **सृष्टिवादपरीक्षा**–······ । पत्र सं०–१ । पंक्ति–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें न्यायसंबधी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६७१ ।

* १५८ **सांख्यसप्तति**–······ । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०९ ।

१५९ **स्याद्वादसिद्धि**–वादीभसिंह । पत्र सं०–१४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जोर्ण ।

विशेष–इसमें व्याकरण संबंधी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २८२ ।

१६० **स्वमतस्थापन**–····· । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

व्याकरण

ग्रन्थ नं० ६४८ ।

* १ **उणादिवृत्ति**–दुर्गसिंह । पत्र सं०–४५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७८३ ।

* २ **उणादिवृत्ति**–दुर्गसिंह । पत्र सं०–३४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'सर्वदोषपरिहारव्रत' तथा 'गोम्मटसार' संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७९३ ।

* ३ **उणादिवृत्ति**–दुर्गसिंह । पत्र सं०–३०½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'धातुरूपमाला' के भी ३ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३६१ ।

४ **कर्णाटकभाषाभूषण**–नागवर्म । पत्र सं०–६० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड । विषय–व्याकरण। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें मूलसूत्र संस्कृतमें और वृत्ति कन्नडमें है। दोनोंके रचयिता नागवर्म ही हैं। यह बहुत पुराना कन्नड व्याकरण है ।

ग्रन्थ नं० ४६ ।

५ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–२०५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७।

६ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–२०५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य

ग्रन्थ नं० ७९।

७ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८५ ।

८ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–१४६ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–शालि० शक १३०५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–सेनगणाग्रगण्य भट्टारक जिनसेनके शिष्य पायण्णके वास्ते श्रवणबेल्गोलके बोगार लक्कि सेट्टिने इसे लिखवाया है ।

ग्रन्थ नं० ११७।

९ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–१३० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५२ ।

१० **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७१ ।

११ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–१३९ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७४ ।

१२ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–२७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १७९ ।

१३ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९९ ।

१४ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१३ ।

१५ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–११५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–अन्यत्र 'त्रैविद्य' शब्द का अर्थ आगम, तर्क तथा व्याकरणका ज्ञाता बतलाया गया है ।

ग्रन्थ नं० २३० ।

१६ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–७९ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २५२ ।

१७ **कातन्त्ररूपमाला**–भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०–१४६ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–शालि० शक १२८९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–शालि० शक १२८९, प्लवंग संवत्सर श्रावण शुक्ला १५ गुरुवारके दिन कनकप्रभद्रदेवके लिये कल्लहू निवासी बेचिसेट्टिने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० २६६।

१८ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७०।

१९ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–५२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २८९।

२० कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–६३। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५९।

२१ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४५५।

२२ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–१००। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५०७।

२३ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–११६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५१३।

२४ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–१०७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५७१।

२५ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–६८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५८०।

२६ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' के भी चार पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६५०।

२७ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१८।

२८ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें सूत्रपाठ तथा परिभाषा-सूत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ७३२।

२९ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५३।

३० कातन्त्ररूपमाला– भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५९।

३१ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–८२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८१८।

३२ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४४१।

३३ कातन्त्रविस्तर–कवि वर्धमान। पत्र सं०–१३४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४८०।

३४ कारकरूप–······। पत्र सं०– ४७। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७७।

३५ कारकरूप–······। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २६५।

३६ कारकरूप–······। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथ सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं०२०६।

*३७ कारकान्यसम्बन्धपरीक्षा–पाणिनि। पत्र सं०–५१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसे उपाध्याय पुष्पदन्तने लिखा है।

ग्रन्थ नं० ५४५।

३८ काशिकावृत्ति–जिनेन्द्रबुद्धि। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

विशेष–यह पाणिनीय व्याकरणकी वृत्ति है।

ग्रन्थ नं० २।

३९ चिन्तामणिकी टीका–समन्तभद्र। पत्र सं०–५८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

प्रारम्भिक पद्य—जिनचिन्तामणिमीशं नत्वा चिन्तामणेः स्फुटां टीकाम्।
विषमोदाहृतिसिद्ध्यै कुर्वे शक्त्या समन्तभद्रोऽहम्॥

विशेष–इसमें व्याकरणसे सम्बन्ध रखनेवाले ओर भी ११ पत्र हैं। पर पता नहीं लगता है कि ये पत्र इसीके हैं या दूसरे के।

ग्रन्थ नं० १३३।

४० चिन्तामणिकी टीका–समन्तभद्र। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९७।

४१ चिन्तामणिकी टीका–समन्तभद्र। पत्र सं०–५२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४०५।

४२ चिन्तामणिवृत्ति-आचार्य यक्षवर्म। पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-यह 'शाकटायनव्याकरण' की वृत्ति है।

ग्रन्थ नं० ५४३।

४३ जैनेन्द्र-आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०-१९६। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें संस्कृत वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० ५९८।

४४ जैनेन्द्र-आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०-२२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५९१।

४५ जैनेन्द्रप्रक्रिया-आचार्य गुणनन्दी। पत्र सं०-५४। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १५२।

४६ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन। पत्र सं०-१२। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-५९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४१।

४७ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन। पत्र सं०-२२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-३४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३८४।

४८ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन। पत्र सं० १०½। पंक्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपंक्ति-४६। लिपि कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-शालि शक० १६७९ ईश्वर संवत्सर मार्गशीर्ष कृष्ण १०। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-मूडबिद्रीनिवासी बिक्रसेट्टिके पुत्र चन्दय्यने सूरालनिवासी चन्दय्यरसके लिये इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ३८५।

४९ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन। पत्र सं०-२४। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९४।

५० धातुपाठ-आचार्य्य शाकटायन। पत्र सं०-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-४७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६११।

५१ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन। पत्र सं०-१२। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति ४८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७२८।

५२ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन। पत्र सं०-१७½। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसके लेखक वेणुपुर (मूडबिद्री) निवासी हिरेबसदि पायण हैं।

ग्रन्थ नं० ८६२।

५३ धातुपाठ-केशव। पत्र सं०-७६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० २५७।

५४ **धातुपाठ**–········। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र ७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५१८।

५५ **धातुपाठ**–········। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५२।

५६ **धातुपाठ (सार्थ)**–········। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–× अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–अर्थ कन्नड भाषामें है। इसमें 'कातन्त्ररूपमाला'के भी १२ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८१६।

५७ **धातुपाठ**–········। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८८३।

५८ **धातुपाठ**–········। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'ज्योतिष' तथा 'पूजापाठ' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५७७।

५९ **धातुरूपमाला**–········। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८४५।

६० **धातुरूपमाला**–········। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४९।

६१ **प्रक्रियासंग्रह**–········। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५२३।

*६२ **प्राकृतमञ्जरी**–श्री वररुचि। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १८१।

६३ **रूपसिद्धि**–मुनि दयापाल। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपत्र–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५३८।

६४ **रूपसिद्धि**–मुनि दयापाल। पत्र सं०–८१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८७।

६५ **रूपसंग्रह**–········। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

अन्तिम पद्य—सिद्धरूपमभिष्टुत्य प्रणम्य प्रणिधाय च। प्रसिद्ध-रूपसिद्धयर्थं क्रियते रूपसंग्रहः॥

ग्रन्थ नं० ३४३।

६६ **शब्दमणिदर्पण**–केशिराज। पत्र सं०–१४४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६२।

६७ **शब्दमणिदर्पण**–केशिराज। पत्र सं०–१३१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३७९।

६८ **शब्दमणिदर्पण**–केशिराज। पत्र सं०–१५८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४६६।

६९ **शब्दमणिदर्पण**–केशिराज। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५२७।

७० **शब्दमणिदर्पण**–केशिराज। पत्र सं०–१२३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७९०।

७१ **शब्दमणिदर्पण**–केशिराज। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–शालि० शक १४७३। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–शालि० शक १४७३ नल संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ८ गुरुवारके दिन उद्दसि-निवासी देवरसके पुत्र बोम्मिप्पने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ८१९।

७२ **शब्दमणिदर्पण**–केशिराज। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३८४।

७३ **शब्दरूपावली**–..............। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें धनञ्जय कृत 'नाममाला' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३९४।

७४ **शब्दरूपावली**–..............। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७५।

७५ **शब्दरूपावली**–..............। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८४५।

७६ **शब्दरूपावली**–..............। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८८५।

७७ **शब्दरूपावली**–..............। पत्र सं०–१। पंक्ति–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७५।

७८ **शब्दधातुरूप**–..............। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४३० ।

७९ शब्दधातुरूप तथा समासचक्र—············· । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

८० शब्दानुशासन—आचार्य शाकटायन । पत्र सं०–२६८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'चिन्तामणि वृत्ति' भी है ।

ग्रन्थ नं० ८३ ।

८१ शब्दानुशासन—आचार्य शाकटायन । पत्र सं०–१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें अभयनन्दी कृत 'प्रक्रियासंग्रह' नामक वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० १२३ ।

८२ शब्दानुशासन—आचार्य शाकटायन । पत्र सं०–९८ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५० ।

८३ शब्दानुशासन—आचार्य शाकटायन । पत्र सं०–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५१५ ।

८४ शब्दानुशासन—आचार्य भट्टाकलङ्क । पत्र सं०–९२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत तथा कन्नड । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८३२ ।

८५ शब्दानुशासन—भट्टाकलङ्क । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत तथा कन्नड । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'एकत्वसप्तति' 'श्रुतावतार कथा' 'तत्त्वार्थसूत्र' एवं 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' आदि के भी अधूरे पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८६२ ।

८६ शब्दानुशासन—भट्टाकलङ्क । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत तथा कन्नड । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०५ ।

८७ शब्दानुशासनपरिभाषासूत्र—············· । पत्र सं०–९५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–शार्वरि संवत्सर, ज्येष्ठ कृष्ण ३० के दिन रामभट्टने चरकल्लिनिवासी रविवर्म अरसके लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० २२६ ।

८८ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–८१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें अन्तका एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० २७५ ।

८९ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–२०९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य।

विशेष–देशीगणाग्रगण्य प्रभेन्दुदेवने कल्लहल्लि-निवासी बिजयण्णके शिष्य पदुमके लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ४५९ ।

९० **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें स्त्रीप्रत्यय तक ही है ।

ग्रन्थ नं० ५१६ ।

९१ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–८१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण

ग्रन्थ नं० ५७१ ।

९२ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–६४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५७३ ।

९३ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–५० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कवि माघ कृत 'शिशुपालवध' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८४ ।

९४ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–७० । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । शालि०शक १४७५ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–शालि०शक १४७५ परिधावी संवत्सर कार्तिक शुक्ल (?) मंगलवारके दिन हंपनायककी पौत्री नागम्म नायकीने शास्त्रदानार्थ इसे लिखवाया है ।

ग्रन्थ नं ६२२ ।

९५ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–४२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६८६ ।

९६ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–११५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ७११ ।

९७ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०– १९७ । पंक्ति प्रतिपत्र– ० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । लेखनकाल–शालि० शक १७०५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–शालि० शक १७०५ शुभकृत् संवत्सर श्रावण शुक्ला १५ गुरुवारके दिन वेणुपुरनिवासी विक्रम सेट्टिके पुत्र सोमने स्थानीय त्रिभुवनतिलक-चूडामणि चैत्यालयमें इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७१४।

९८ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५०।

९९ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–६३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७९०।

१०० **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८१८।

१०१ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–९२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २२१।

१०२ **शाकटायन अमोघवृत्ति**–आचार्य शाकटायन। पत्र सं०–१७९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–९९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

अन्तिम पद्य–श्रीमत्कारकले ग्रामे माभिश्रेष्ठी सुदृक् सुधीः। विशालकीर्तिदेवेभ्योऽमोघां वृत्तिमलीलिखत्॥

ग्रन्थ नं० ६३६।

१०३ **शाकटायन अमोघवृत्ति**–आचार्य शाकटायन। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २११।

१०४ **षट्कारक**–विनश्वरनन्दी। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६५।

१०५ **षट्कारक**–विनश्वरनन्दी। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१५।

१०६ **षट्कारक**–विनश्वरनन्दी। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें आ० पूज्यपादकृत 'सर्वार्थसिद्धि' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २८२।

१०७ **समासचक्र**–······। पत्र सं०–२½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९४।

१०८ **समासचक्र**–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४९९।

१०९ समासचक्र–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति– ५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें व्याकरणसंबन्धी ८ पत्र और भी हैं।

ग्रन्थ नं० ६४९।

११० समासचक्र–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १०१।

१११ सारस्वतप्रक्रिया–······। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६६८।

११२ सारस्वतप्रक्रिया–······। पत्र सं०–२५$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय-कोश

ग्रन्थ नं० १५८।

१ अभिधानचिन्तामणि–आचार्य हेमचन्द्र। पत्र सं०–१५१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३७४।

२ अभिधानचिन्तामणि–आचार्य हेमचन्द्र। पत्र सं०–६५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७७८।

३ अभिधानरत्नमाला– ·········। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'चतुरास्यनिघण्टु' (कन्नड) के भी २ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८०१।

४ अभिधानरत्नमाला–नागवर्म। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

ग्रन्थ नं० ३५६।

५ अनेकार्थनाममाला–पण्डित रामचन्द्र। पत्र सं०–१७४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५।

६ अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें प्रारम्भके १७ पत्र नहीं है।

ग्रन्थ नं० २५।

७ अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–७०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–तमिल। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १२६।

८ अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–७६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें विस्तृत संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० १४०।

९ अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–११७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १९१।

१० अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–९१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० २८०।

११ अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–७६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें विठल कृत कन्नड वृत्ति है।

ग्रन्थ नं० २८२।

१२ अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–७७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९४।

१३ अमरकोश (तृतीयकाण्ड मात्र)–अमरसिंह। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९७।

१४ अमरकोश–अमरसिंह। पत्रसं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९७।

१५ अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–७९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३७।

१६ अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–७१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–सौम्य संवत्सर वैशाख कृष्ण ७ शुक्रवारके दिन पदुमण्णाने इसे लिखा है। इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५२८।

१७ अमरकोश–अमरसिंह। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६०१ ।

१८ अमरकोश–अमरसिंह । पत्र सं०–७४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६१२ ।

१९ अमरकोश–अमरसिंह । पत्र सं०–७४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६५१ ।

२० अमरकोश–अमरसिंह । पत्र सं०–१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें लिंगयसूरिकृत पदविवृति नामक संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ७१६ ।

२१ अमरकोश–अमरसिंह । पत्र सं०–६० । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–नागरी । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१७ ।

२२ अमरकोश–अमरसिंह । पत्र सं०–४४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७६० ।

२३ अमरकोश–अमरसिंह । पत्र सं०–१७२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८३६ ।

२४ अमरकोश–अमरसिंह । पत्र सं०–१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'क्षत्रचूडामणिकाव्य' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८५८ ।

२५ अमरकोश–अमरसिंह । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२० । लिपि–कन्नड भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९०० ।

२६ अमरकोश–अमरसिंह । पत्र सं०–१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें विट्ठलकृत 'विदग्धचूडामणि' नामक संस्कृत टीका तथा कन्नड टिप्पणी भी है ।

ग्रन्थ नं० ६०७ ।

२७ अमरकोशकी टीका–·········· । पत्र सं०–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २४९ ।

२८ अमरकोशपदविवृति–लिङ्गयसूरि । पत्र सं०–५६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८२।

२९ एकाक्षरनिघण्टु–············। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६५३।

३० एकाक्षरनिघण्टु–···········। पत्र सं०–२½। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'हरदनीति' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३७४।

३१ एकाक्षरनाममाला–अमरेन्द्र। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४५।

* **३२ चतुरास्यनिघण्टु**–चतुरास्य। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५६४।

* **३३ चतुरास्यनिघण्टु**–चतुरास्य। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६५३।

* **३४ चतुरास्यनिघण्टु**–चतुरास्य। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–हन्नावर-निवासी जयकीर्तिदेवने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ७८६।

३५ नानार्थकोश–कवि चक्रवर्ती। पत्र सं०–२१½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'एकाक्षरनिघण्टु' तथा 'त्रिलोकसार' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४७।

३६ नानार्थरत्नाकर–कवि नागवर्म। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५५३।

३७ नानार्थरत्नाकर–नागवर्म। पत्र सं०–५६½। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कोश। लेखनकाल–शा० शक १५०४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है। शालि० शक १५०४ विषु संवत्सर ज्येष्ठ शु० ५ रविवारके दिन श्री अकलङ्कदेवके शिष्य हन्नावर-निवासी जयकीर्तिदेवने धातकीपुरस्थ नेमिनाथ चैत्यालय में इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ६५३।

***३८ नानार्थरत्नाकर**–रामचन्द्र द्राविड। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कोश। लेखनकाल–शालि० शक–१५०४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–शालि० शक १५०४ विषु संवत्सर, ज्येष्ठ शु० ५ रविवारके दिन श्रीअकलङ्कदेवके शिष्य हन्नावर-निवासी जयकीर्तिदेवने धातकीपुरस्थ नेमिनाथ चैत्यालयमें इसे लिखा है। इसमें कन्नड टीकाके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १५३।

३९ नाममाला–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३६।

४० नाममाला–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७२।

४१ नाममाला–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३१८।

४२ नाममाला–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–६$\frac{१}{२}$। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५८।

४३ नाममाला–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४६९।

४४ नामनाला–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६५३।

४५ नाममाला–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–१५$\frac{१}{२}$। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–शा० शक १५०५। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि० शक १५०५ चित्रभानु संवत्सर वैशाख शु० १२ के दिन हन्नावर-निवासी जयकीर्तिदेवने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ७८२।

४६ नाममाला–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी हैं।

ग्रन्थ नं० ८३०।

४७ नाममाला–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–९। पंक्ति–प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। बशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४३०।

*** ४८ विदग्धचूडामणि**–पण्डित विट्ठल। पत्र सं०–१०३। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह अमरसिंह कृत 'नामलिङ्गानुशासन' की विस्तृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४६६।

*** ४९ विदग्धचूडामणि**–पण्डित विट्ठल। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४९४।

*५० **विदग्धचूडामणि**–पण्डित विट्ठल। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५४८।

*५१ **विदग्धचूडामणि**–पण्डित विट्ठल। पत्र सं०–५४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–यह 'अमरकोश' की कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ७८८।

*५२ **विदग्धचूडामणि**–पण्डित विट्ठल। पत्र सं०–८२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'अमरकोश' की टीका है।

ग्रन्थ नं० ४९२।

*५३ **वैजयन्तीकोश**–..........। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७७८।

५४ **शब्दमञ्जरी**–प्रदौम्यसूरि। पत्र सं०–२९$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। ाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें व्याकरण सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

विषय–काव्य

ग्रन्थ नं० ४९९।

*१ **अमरुशतक**–कवि अमरुक। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें लक्ष्मीधराचार्यके पुत्र चेन्निभट्ट कृत 'श्रृंगारदीपिका' नामक संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ४९९।

*२ **अमरुशतक**–कवि अमरुक। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें पेद्दकोमटिग वेम भूपाल विरचित 'श्रृंगारदीपिका' नामक संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ५५८।

*३ **किरातार्जुनीय**–महाकवि भारवि। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६११।

*४ **किरातार्जुनीय**–महाकवि भारवि। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'मेघदूत' तथा 'रघुवंश' के भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

***५ कुमारसम्भव**–महाकवि कालिदास । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

***६ कुमारसम्भव**–महाकवि कालिदास । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७०५ ।

***७ कुमारसम्भव**–महाकवि कालिदास । पत्र सं०–७७ । पंक्ति प्रतिपत्र–३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०५ ।

***८ कुमारसम्भवटीका**–मल्लिनाथ । पत्र सं०–३७ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५३२ ।

***९ कुमारसम्भवदीपिका**–नन्दिसूरि । पत्र सं०–१०६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

विशेष–यह कालिदास कृत 'कुमारसम्भव' की टीका है । इनके रचयिता पण्डित नारायणार्यके पुत्र पं० नन्दिसूरि हैं ।

ग्रन्थ नं० १ ।

१० छत्रचूडामणि–महाकवि वादीभसिंह । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३६ ।

११ छत्रचूडामणि–वादीभसिंह । पत्र सं०–२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

१२ छत्रचूडामणि–वादीभसिंह । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३९ ।

१३ छत्रचूडामणि–वादीभसिंह । पत्र सं०–४७ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८४ ।

१४ छत्रचूडामणि–वादीभसिंह । पत्र सं०–६४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५२१ ।

१५ छत्रचूडामणि–वादीभसिंह । पत्र सं०–३२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

१६ छत्रचूडामणि–वादीभसिंह । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५२६।

१७ **छत्रचूडामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६३५।

१८ **छत्रचूडामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–६४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६६८।

१९ **छत्रचूडामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६४०।

२० **छत्रचूडामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–७७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६७३।

२१ **छत्रचूडामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१५।

२२ **छत्रचूडामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८२२।

२३ **छत्रचूडामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८५६।

२४ **छत्रचूडामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–६७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'समासचक्र' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १८७।

२५ **छत्रचूडामणि टीका**–······। पत्र सं०–६९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४०।

*२६ **खण्डनग्रन्थ**[१]–श्रीहर्ष। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४९९।

२७ **गद्यचिन्तामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८१९।

२८ **गद्यचिन्तामणि**–वादीभसिंह। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

---

१ यह दर्शन ग्रन्थ मालूम होता है। –सम्पा०

ग्रन्थ नं० ४।

२९ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–प्रारम्भके ४८ पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० ८।

३० चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११०।

३१ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १४३।

३२ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–७९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसे बिदरे पार्श्वनाथ चैत्यालयमें ब्रह्मचारी वासुपूज्यने लिखवाया।

ग्रन्थ नं० १६६।

३३ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–८९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें १५ पत्रोंमें 'विषमपदपंचिका' नामक संस्कृत टिप्पणी भी है।

ग्रन्थ नं० २८१।

३४ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९६।

३५ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–५६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–११४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४१४।

३६ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३०।

३७ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५५५।

३८ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५६७।

३९ चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६१५।

४० चन्द्रप्रभचरित–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६४६।

४१ **चन्द्रप्रभचरित**–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–७५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६८०।

४२ **चन्द्रप्रभचरित**–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–४८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'द्विसंधानकाव्य' के भी ७ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७४३।

४३ **चन्द्रप्रभचरित**–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८१७।

४४ **चन्द्रप्रभचरित**–महाकवि वीरनन्दी। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११०।

४५ **चन्द्रप्रभचरित-व्याख्यान**–विद्यार्थी मुनिचन्द्र। पत्र सं०–१००। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–व्याख्यानका नाम विद्वन्मनोवल्लभ है। व्याख्याता अलगंचीपुरीके निवासी द्विजोत्तम देवचन्द्रके पुत्र विद्यार्थी मुनिचन्द्र हैं। यह व्याख्यान प्रमोदूत संवत्सर माघ शुक्ला प्रतिपत् रोहिणी नक्षत्रमें रचा गया।

ग्रन्थ नं० ४९४।

*४६ **चम्पूरामायण**–भोजराज। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११९।

*४७ **जगन्नाथविजय**–······। पत्र सं०–१३३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३००।

*४८ **जयनृपकाव्य**–कवि मंगरस। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–निट्टूरु निवासी समन्तभद्रदेवने बिदुरेके चन्द्रप्रभ चैत्यालयमें इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० २१९।

४९ **ज्ञानचन्द्राभ्युदय**–कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–७५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १२।

५० **धर्मशर्माभ्युदय**–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–९४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २४।

५१ **धर्मशर्माभ्युदय**–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

प्रशस्तिका प्रारम्भिक पद्य–श्रीमानमेयमहिमास्ति स नेमदानां वंशः समस्तजगतीवलयावतंसः॥
हस्तावलम्बनमवाप्य यमुल्लसन्ती वृद्धापि न स्खलति दुर्गपदेषु लक्ष्मीः॥१॥

ग्रन्थ नं० २८ ।

५२ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–४८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४।

५३ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–६१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें चित्रबन्धोंकी कुछ रचनायें भी हैं।

ग्रन्थ नं० ७१।

५४ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १८३।

५५ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–८७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १८४।

५६ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–४४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

अन्तिम पद्य–आर्द्रदेवसुतेनेदं काव्यं धर्मजिनोदयम्। रचितं हरिचन्द्रेण परमं रसमन्दिरम्॥

यह पद्य मुद्रित प्रतिमें नहीं मिलता है।

ग्रन्थ नं० २३५।

५७ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–५७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२२।

५८ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–५५। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५७।

५९ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–९३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें बीच बीचमें टिप्पणी भी दी गई है।

ग्रन्थ नं० ४५७।

६० धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६२७।

६१ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'सर्वार्थसिद्धि' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६८०।

६२ धर्मशर्माभ्युदय–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें गुणस्थान संबंधी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६९१।

६३ **धर्मशर्माभ्युदय**–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–८१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७२०।

६४ **धर्मशर्माभ्युदय**–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७८४।

६५ **धर्मशर्माभ्युदय**–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–४७। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७८४।

६६ **धर्मशर्माभ्युदय**–महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०–५४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४।

६७ **धर्मशर्माभ्युदयटीका**–कवि देवर। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

प्रारम्भिक पद्य–अनेकान्तगिरां पत्युरङ्घ्रिद्वयनखानि वः। अमृतश्रीरिरंसूनां सन्तु शृङ्गारदर्पणाः॥ १॥

अरलिश्रेष्ठिनः स्नेहादातनिष्यति दीपिकाम्। धर्मशर्मेति रूढस्य काव्यस्य कविदेवरः॥ २॥

विशेष–टीका १२ सर्गावधि है।

ग्रन्थ नं० ६०१।

६८ **धर्मशर्माभ्युदयटीका**–कवि देवर। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७८४।

६९ **धर्मशर्माभ्युदयटीका**–कवि देवर। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'अमरकोश,' 'द्विसंधानकाव्य' तथा 'धर्मशर्माभ्युदयटिप्पणी' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २८१।

७० **धर्मशर्माभ्युदयविषमपदटिप्पणी**–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १७७।

७१ **नेमिनिर्वाणकाव्य**–वाग्भट। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४९१।

७२ **नेमिनिर्वाणकाव्य**–वाग्भट। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४९७।

७३ **नेमिनिर्वाणकाव्य**–वाग्भट। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५९४।

७४ **नेमिनिर्वाणकाव्य**–वाग्भट। पत्र सं०–५४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६२८।

७५ नेमिनिर्वाणकाव्य–वाग्भट। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७६२।

७६ नेमिनिर्वाणकाव्यटीका–······। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १०४।

***७७ नैषधकाव्य**–श्रीहर्ष। पत्र सं–९७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३३१।

***७८ नैषधकाव्य**– श्रीहर्ष। पत्र सं०–८७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४७२।

***७९ नैषधकाव्य**–श्रीहर्ष। पत्र सं०–८०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें नरसिंह पण्डितके पुत्र नारायण कृत संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ४९६।

***८० नैषधकाव्य**–श्रीहर्ष। पत्र सं०–६६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३५।

८१ पार्श्वाभ्युदय–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। विषय–काव्य। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। लेखनकाल–×। शुद्ध तथा पूर्ण। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'नागकुमार' चरित के कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १६५।

८२ पार्श्वाभ्युदय–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४७।

८३ पंपरामायण–अभिनव पंप (नागचन्द्र)। पत्र सं०–१७७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–प्रजोत्पत्ति संवत्सर भाद्रपद सप्तमीके दिन मलधारी भट्टारक ललितकीर्तिके शिष्य देवचन्द्रके पुत्र कल्लह (?) निवासी चन्दण्णने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० १०५।

*** ८४ भट्टिकाव्य (रामकथा)**–भट्टि। पत्र सं०–२०६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'जयमंगल' नामक संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६१७।

*** ८५ भट्टिकाव्य**–भट्टि। पत्र सं०–५८। पंक्ति प्रतिपत्र–३। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४४।

८६ मुनिसुव्रतकाव्य–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध।

विशेष–इसमें 'पदमात्रविवरण' नामक कन्नड वृत्ति भी है।

ग्रन्थ नं० १२७।

८७ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १७७।

८८ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २०५।

८९ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें श्री श्रुतमुनिकी विस्तृत कन्नड टीका भी है।

ग्रंथ नं० ३०४।

९० **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–८२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३०४।

९१ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३१९।

९२ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–३१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें विस्तृत संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३२६।

९३ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३४७।

९४ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–७४। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ४०६।

९५ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४२४।

९६ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३०।

९७ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३०।

९८ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४८४।

९९ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६०४।

१०० **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६३०।

१०१ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–५७। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८३२।

१०२ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृन। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'गायत्री' तथा 'आशीर्वाद–पद्य' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८९०।

१०३ **मुनिसुव्रतकाव्य**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–१६½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४१८।

१०४ **मुनिसुव्रतकाव्य टीका**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–८२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–शालि० शक १७५३ विकृत संवत्सर कार्तिक कृष्ण १३। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार पायसागर वर्णी हैं। इसमें सिर्फ टीका है।

ग्रन्थ नं० ६६८।

१०५ **मुनिसुव्रतकाव्यटीका**–कवि अर्हद्दास। पत्र सं०–२१½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भापा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–शालि० शक १४२५। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–शालि० शक १४२५ दुंदुभि संवत्सर आश्वयुज कृष्ण १३ बुधवारके दिन गंगसेन बोवके पुत्र गोपणने मुनि विशालकीर्तिके शिष्य ब्र० धर्मदासका ग्रंथ देखकर चंद्रप्रभदेवके लिये इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० १६५।

*१०६ **मेघसन्देश**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–११४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३०१।

*१०७ **मेघसन्देश**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४९९।

*१०८ **मेघसन्देश**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–१४। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७०५।

*१०९ **मेघसन्देश**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–३। अक्षर प्रतिपंक्ति–२४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८१७।

*११० **मेघसन्देश**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें मल्लिनाथकृत 'संजीवनी' नामक टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५३२।

*१११ **मेघसन्देश टीका**–कवि मल्लिनाथ। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अति अशुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २०५।

११२ **यशोधरकाव्य**–कवि वादिराज। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४२।

११३ **यशोधरकाव्य**–वादिराज। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० २५५।

११४ **यशोधरकाव्य**–वादिराज। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३०३।

११५ **यशोधरकाव्य**–वादिराज। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका भी है। यह टीका क्षेमपुरके नेमिनाथ चैत्यालयमें रची गई है।

ग्रन्थ नं० ३७०।

११६ **यशोधरकाव्य**–वादिराज। पत्र सं०–६१। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–३६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें तृतीय सर्ग तक कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३७०।

११७ **यशोधरकाव्य**–वादिराज। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें द्वितीय सर्ग तक भट्टारक लक्ष्मीसेन कृत संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५२३।

११८ **यशोधरकाव्य**–वादिराज। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५६७।

११९ **यशोधरकाव्य**–वादिराज। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'प्रायश्चित्तविधि'के भी चार पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५७८।

१२० यशोधरकाव्य–वादिराज। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७०३।

१२१ यशोधरकाव्य–वादिराज। पत्र सं०–१०३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ७८०।

१२२ यशोधरकाव्य–वादिराज। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ७९९।

१२३ यशोधरकाव्य–वादिराज। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत टिप्पणी है।

ग्रन्थ नं० ८१२।

१२४ यशोधरकाव्य–वादिराज। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें चिक्कणके पुत्र लक्ष्मण कृत संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ८१६।

१२५ यशोधरकाव्य–वादिराज। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके लेखक पायण्ण हैं।

ग्रन्थ नं० १९९।

१२६ यशोधरकाव्यटीका–पण्डित लक्ष्मण। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

अन्तिम पद्य–अकारयदिमां टीकां चिक्कणो गुणरक्षणः। अकरोज्जिनदासोऽयं चिक्कणात्मजलक्ष्मणः ॥१॥

श्रीमत्पद्मणगुम्मटेत्यभिहितौ श्रीवर्णिनौ भूतले भातश्चारुचरित्रवार्धिहिमगू तत्प्रीतये लक्ष्मणः।
मन्दो बन्धुरवादिराजविदुषः काव्यस्य कल्याणदां टीकां क्षेमपुरेऽकरोद्गुरुतरश्रीनेमिचैत्यालये ॥२॥

विशेष–इस प्रतिमें सिर्फ टीका है। सम्भव है कि मूल अन्यत्र रखा गया हो। टीका सुन्दर है।

ग्रन्थ नं० १५५।

***१२७ रघुवंशकाव्य**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४०।

***१२८ रघुवंशकाव्य**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–७५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४९।

***१२९ रघुवंशकाव्य**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–७१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४९९।

*१३० **रघुवंशकाव्य**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५५७।

*१३१ **रघुवंशकाव्य**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६३।

१३२ **राघवपाण्डवीय [द्विसंधान काव्य]**–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–१३६। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्तित–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है। टीकाका अन्तिम पद्य इस प्रकार है–

अकारयदिमां टीकामरळिःश्रेष्ठिपुंगवः। अकरोदमृताश्लिष्टवचनः कविदेवरः।

ग्रन्थ नं० १२५।

१३३ **राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]**–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–८७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है। प्रत्येक सर्गके अन्तमें टीकाका पद्य इस प्रकार है–

साधीयसी कृता टीका काव्यस्यास्य लघीयसी। पुष्पसेनार्यवर्यस्य प्रियशिष्येण सूरिणा॥

ग्रन्थ नं० ५०४।

१३४ **राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]**–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें व्याकरण सम्बन्धी भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५५१।

१३५ **राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]**–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है। एवं व्याकरणसम्बन्धी कुछ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ५६२।

१३६ **राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]**–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५६९।

१३७ **राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]**–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–६१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६३४।

१३८ **राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]**–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–७८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७४३।

१३९ राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–२१। पंक्ति–प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के भी चार पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८२०।

१४० राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'नाममाला' तथा 'मुनिसुव्रतकाव्य' के भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ नं० ८२७।

१४१ राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]–महाकवि धनञ्जय। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'वैजयन्तीकोश, 'विषापहारस्तोत्र' आदिके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५४९।

१४२ राघवपाण्डवीय [द्विसन्धान काव्य]की टीका–कविदेवर। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें न्यायसंबंधी कुछ अपूर्ण पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० २७।

१४३ रामचरित [पंपरामायण]–महाकवि पंप। पत्र स०–१२९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। विषय–काव्य। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। लेखनकाल–शालि० शक १३५०। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–देशीगणाग्रगण्य अनेकगुणगणालंकृत-सहस्रकीतिदेवके शिष्य चिट्टूर नागिसेट्टिके पुत्र सिरियण्णके द्वारा लिखित।

ग्रन्थ नं० ८४।

१४४ लीलावति–नेमिचन्द्र। पत्र सं०–८१। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–काव्य। लेखनकाल–भाव संवत्सर मार्गशीर्ष कृष्ण ३। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसके लेखक गोणियबीड निवासी देवण्णके पुत्र बोम्मरस हैं।

ग्रन्थ नं० ८३८।

१४५ लीलावति–नेमिचन्द्र। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'दानविधि,' 'सर्पशकुन' तथा 'कर्मप्रकृति' आदिके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १७५।

१४६ वर्द्धमानकाव्य–असग। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०९।

१४७ **वर्द्धमानकाव्य**–असग। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५४०।

१४८ **वर्धमानकाव्य**–असग। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५४७।

१४९ **वर्धमानकाव्य**–असग। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें उदयकीर्ति (?) कृत 'पुष्पाञ्जलिकाव्य' का भी एक पत्र है।

ग्रन्थ नं० ५९९।

१५० **वर्धमानकाव्य**–असग। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'शाकटायनप्रक्रियासंग्रह'के भी पांच पत्र हैं।

ग्रन्थ नं ७९०।

१५१ **वर्धमानकाव्य**–असग। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें अयकीर्ति [?] कृत संस्कृत 'पुष्पाञ्जलिमहाकाव्य' का भी एक पत्र है।

ग्रन्थ नं० ३३८।

१५२ **विदग्धमुखमण्डन**–धर्मदास। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५२९।

१५३ **विदग्धमुखमण्डन**–धर्मदास। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'द्रव्यसंग्रह' तथा संस्कृत 'द्वादशानुप्रेक्षा' के कुछ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० २८१।

१५४ **विषमपदपञ्चिका**–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह महाकवि वीरनन्दि कृत 'चन्द्रप्रभकाव्य' की टिप्पणी है इसमें कन्नड अर्थ भी है।

ग्रन्थ नं० १८४।

१५५ **विषमपदपञ्चिका**······। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–यह महाकवि वीरनन्दि कृत 'चन्द्रप्रभकाव्य' की टिप्पणी है।

ग्रन्थ नं० २८७।

*१५६ **शिशुपालवध**–महाकवि माघ। पत्र सं०–१०२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४९।

*१५७ **शिशुपालवध**–महाकवि माघ। पत्र सं०–८४। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६१९ ।

*१५८ **शिशुपालवध**–महाकवि माघ । पत्र सं०–६० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथ खण्डित।

ग्रन्थ नं० ७९४ ।

*१५९ **शिशुपालवध टीका**–मल्लिनाथ । पत्र सं०–४६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें सुभाषितसंबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५५० ।

*१६० **शृङ्गारदीपिका**–वेम भूपाल । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–यह कवि अमरुक कृत 'श्रृंगारशतक' से संगृहीत है ।

ग्रन्थ नं० ३६७ ।

१६१ **शृङ्गारसुधाब्धि**–कवि मंगरस । पत्र सं०–७२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विषय–नाटक

ग्रन्थ नं० ६७ ।

*१ **अभिज्ञानशाकुन्तल**–महाकवि कालिदास । पत्र सं०–३२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नाटक । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०१ ।

*२ **अभिज्ञानशाकुन्तल**–महाकवि कालिदास । पत्र सं०–४० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नाटक । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०१ ।

*३ **नागानन्द**······ । पत्र सं०–३७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नाटक । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०१ ।

*४ **मालविकाग्निमित्र**–महाकवि कालिदास । पत्र सं०–३१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नाटक । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०१ ।

*५ **विक्रमोर्वशीय**–महाकवि कालिदास । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नाटक । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विषय–अलंकार आदि

ग्रन्थ नं० ५६५।

१ अलङ्कारचिन्तामणि–अजितसेन। पत्र सं०–७०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३।

२ अलङ्कारसंग्रह–अमृतानन्दी। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'क्रियाकाण्डचूलिका' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८६।

३ अलङ्कारसंग्रह–अमृतानन्दी। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

अन्तिम वाक्य–श्रीमतु (?) पुरस्थितस्य चन्दरसनामधेयस्य पुत्रेण चन्दप्पनाथनामधेयेन लिखितस्य·····।

विशेष–इसमें 'वृत्तरत्नाकर' आदि और भी कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १४२।

४ अलङ्कारसंग्रह–अमृतानन्द। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६००।

५ अलङ्कारसंग्रह–अमृतानन्दी। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६०४।

६ अलङ्कारसंग्रह–अमृतानन्दी। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६७४।

७ अलङ्कारसंग्रह–अमृतानन्दी। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'नाममाला' तथा 'वृत्तरत्नाकर' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७२७।

८ अलङ्कारसंग्रह–अमृतानन्दी। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७४२।

९ अलङ्कारसंग्रह–अमृतानन्दी। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें व्याकरण सम्बन्धी २७ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ८१२।

१० अलङ्कारसंग्रह–अमृतानन्दी। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४१२।

***११ काव्यप्रकाश**–कवि मम्मट। पत्र सं०–९३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७४६।

*१२ **काव्यप्रकाश**–कवि मम्मट। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–१६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–प्रमाथी संवत्सर श्रावण कृष्णा प्रतिपदाके दिन नागमंगल निवासी अच्यप्पके पुत्र तिम्मय्यने चौडरसोपाध्यायके पुत्र समन्तभद्रके लिये इसे लिखा है। इसमें 'भाषामञ्जरी'के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५५६।

*१३ **काव्यादर्श**–कवि दण्डी। पत्र सं०–५५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें महोपाध्याय केशव मिश्र कृत संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६१५।

*१४ **काव्यादर्श**–कवि दण्डी। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ९९२।

१५ **काव्यानुशासन**–आचार्य हेमचन्द्र। पत्र सं०–१३½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ११६।

*१६ **काव्यालोक**–आनन्दवर्धन। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३८।

*१७ **काव्यालंकार**–......। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २१२।

*१८ **कुवलयानन्द**–अप्पय दीक्षित। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४०६।

*१९ **कुवलयानन्द**–अप्पय दीक्षित। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४४।

*२० **चन्द्रालोक**–जयदेव। पत्र सं०–११७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० २१७।

*२१ **प्रतापरुद्रीय**–पण्डित विद्यानाथ। पत्र सं०–१०३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार आदि। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७६।

*२२ **प्रतापरुद्रीय**–पण्डित विद्यानाथ। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसका अपर नाम 'प्रतापरुद्रयशोभूषण' है।

ग्रन्थ नं० ३२८।

*२३ **प्रतापरुद्रीय**–पण्डित विद्यानाथ। पत्र सं०–९१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३३८।

* २३ प्रतापरुद्रीय–पण्डित विद्यानाथ। पत्र सं०–९१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३५०।

* २४ प्रतापरुद्रीय–पण्डित विद्यानाथ। पत्र सं०–१०६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११६।

* २५ लोकलोचनालङ्कार–अभिनव गुप्त। पत्र सं०–५६। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३८।

२६ वाग्भटालङ्कार–कवि वाग्भट। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४९७।

२७ वाग्भटालङ्कार–कवि वाग्भट। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६००।

२८ वाग्भटालङ्कार–कवि वाग्भट। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८१२।

२९ वाग्भटालङ्कारटिप्पणी–बालचन्द्र। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४०८।

३० शृङ्गारदीपिका–कोमटदेव भूपाल। पत्र सं०–८२। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलंकार। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–छन्दःशास्त्र

ग्रन्थ नं ५१४।

१ काव्यावलोकन–कवि नागवर्म। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–छन्दःशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४।

*२ वृत्तरत्नाकर–केदार भट्ट। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–छन्दःशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–पण्डिताचार्य चारुकीर्तिके शिष्य बिदुरे सांतण्णके द्वारा लिखित।

ग्रन्थ नं० १३२।

*३ वृत्तरत्नाकर–केदार भट्ट। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–छन्दःशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें पण्डित गोविन्द भट्टके पुत्र पण्डित श्रीनाथके द्वारा रचित संस्कृत टीका भी हे ।

ग्रन्थ नं० २१७ ।

*४ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २३५ ।

*५ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८४ ।

*६ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५९६ ।

*७ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–३० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३६९ ।

*८ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६९५ ।

*९ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–६० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कवि श्रीनाथ विरचित संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७०१ ।

*१० **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–९४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–शालि० शक १६८० । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कवि श्रीनाथ कृत संस्कृत टीका है । शालि० शक १६८० बहुधान्य संवत्सर मार्गशिर शुक्ला ५ मंगलवारके दिन लक्ष्मीसेनके शिष्य पार्श्व उपाध्यायने वेणुपुरस्थ त्रिभुवनतिलक चैत्यालयमें इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ७२८ ।

*११ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५९ ।

*१२ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७७६ ।

*१३ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट । पत्र सं०–२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छन्दःशास्त्र । लेखनकाल–शालि० शक १६९३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–शालि० शक १६९३ खर संवत्सर भाद्रपद शुक्ला १० के दिन केसरीपुर–निवासी सरसिज ने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७९५।

*१४ **वृत्तरत्नाकर**–केदार भट्ट। पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–छन्दःशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २०९।

*१५ **श्रुतबोध**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–छन्दःशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २८४।

*१६ **श्रुतबोध**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–छन्दःशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९२।

*१७ **श्रुतबोध**–महाकवि कालिदास। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–छन्दःशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय–नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ नं० १२८।

१ **नीतिप्रकाशन**–·········। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है। इसका प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है—

नत्वा जिनेश्वरं वीरं वक्ष्ये नीतिप्रकाशनम्। शिष्याचार्योक्तिसम्बन्धं प्रश्नोत्तरविधानकम्॥

ग्रन्थ नं० ५८०।

२ **नीतिप्रकाशक**–········। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें प्राकृत 'श्रुतभक्ति' की कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० १४९।

३ **नीतिरसायनशतक**–शुभचन्द्र। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–नीति। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७७।

४ **नीतिरसायन**–········। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–नीति। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १६।

५ **नीतिवाक्यामृत**–आचार्य सोमदेव। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ४०।

६ **नीतिवाक्यामृत**–आचार्य सोमदेव। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–साधारण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४५ ।

७ **नीतिवाक्यामृत**–आचार्य सोमदेव । पत्र सं०–८९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है । टीकाकार मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवके शिष्य कवि नेमिनाथ हैं ।

ग्रन्थ नं० ३४५ ।

८ **नीतिवाक्यामृत**–आचार्य सोमदेव । पत्र सं०–११४ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९५ ।

९ **नीतिवाक्यामृत**–आचार्य सोमदेव । पत्र सं०–८० । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६४४ ।

१० **नीतिवाक्यामृत**–आचार्य सोमदेव । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

११ **नीतिवाक्यामृत**–आचार्य सोमदेव । पत्र सं०–३५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६९३ ।

१२ **नीतिवाक्यामृत**–आचार्य सोमदेव । पत्र सं०–१६० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६५ ।

१३ **नीतिसंग्रह**–········ । पत्र सं०–८४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत तथा कन्नड । विषय–नीति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

१४ **पुराणश्लोकसंग्रह**–·········· । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें महाभारत आदिके कुछ नीति श्लोक संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

१५ **राजनीति**–········ । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–नीति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १८८ ।

*१६ **शतकद्वय–[नीति तथा शृङ्गार]**–कवि भर्तृहरि । पत्र सं०–४२ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

१७ **सुभाषितसंग्रह**–······ । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत तथा कन्नड । विषय–सुभाषित । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७९ ।

१८ **सुभाषितसंग्रह**–·········· । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत तथा कन्नड । विषय–सुभाषित । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६१७।

१९ सुभाषितसंग्रह–······। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ८७५।

२० सुभाषितसंग्रह–··········। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–सुभाषित। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें भजन, सरस्वती भजन आदिके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १८२।

२१ सुभाषितसंग्रह··········। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–सुभाषित। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १६९।

२२ हरदनीति–सिंहराज। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–नीति। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३६।

२३ हरदनीति–सिंहराज। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–नीति। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६४५।

२४ हरदनीति–सिंहराज। पत्र सं०–१०½। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–नीति। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–प्रभव संवत्सर, भाद्रपद शुक्ला १२ के दिन बङ्गवाडिस्थ शान्तिनाथ–जिनालयमें मुनि गुणसागरने इसे लिखा है।

विषय–पुराण

ग्रन्थ नं० ५२८।

१ अजितनाथपुराण–महाकवि रन्न। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८२८।

२ अनन्तनाथपुराण–महाकवि जन्न। पत्र सं०–११९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–शालि०शक१४४०। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसकी रचना शालि०शक११५२ विकृति संवत्सर चैत्र शुक्ला १०के दिन हुई है। एवं शालि० शक१४४० बहुधान्य संवत्सर श्रावण शुक्ला १० रविवारके दिन होललंकि निवासी नागेन्द्रके पुत्र पायणने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ७४।

३ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–९६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११८।

४ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–१२२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह ग्रन्थ शालि०शक ८६३ में रचा गया।

ग्रन्थ नं० ४१०।

५ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–१०९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४४६।

६ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–१०४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५५९।

७ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–८८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५९२।

८ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–८०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६०२।

९ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'सज्जनचित्तवल्लभ' तथा 'अकलङ्काष्टक' के भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६१४।

१० आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–१२१। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६९०।

११ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–१३४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–शालि० शक १५००। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–शालि० शक १५०० ईश्वर संवत्सर ज्येष्ठ कृष्णा १४ शुक्रवारके दिन हन्नावरनिवासी जयकीर्तिने संगीत-पुरस्थ आदिनाथ तथा चन्द्रप्रभमन्दिरके मध्यस्थित मानस्तंभके निकट इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ७२०।

१२ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७३६।

१३ आदिपुराण–महाकवि पम्प। पत्र सं०–५८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६४।

१४ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–२४७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २६०।

१५ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–१२५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७८।

१६ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–२८९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२२४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखमकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४४२।

१७ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–१७७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१६३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि०शक १७३० फाल्गुन प्रतिपदाके दिन धर्मस्थलके स्वामी कुमारय्य हेग्डेको उनके गुरु श्री चारुकीर्तिने इसे दिया है।

ग्रन्थ नं० ४४७।

१८ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–२३४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४४९।

१९ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–२३७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२१७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४९६।

२० **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५०५।

२१ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५०९।

२२ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–१५८। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५८३।

२३ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–१३६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५८४।

२४ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–१७५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६८१।

२५ **आदिपुराण**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–२०४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७४७ ।

२६ **आदिपुराण**-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-१२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'गोम्मटसार' 'सज्जनचित्तवल्लभ' तथा 'आचारसार' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४१५ ।

२७ **आदिपुराण टिप्पणी**-ललितकीर्ति । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५६१ ।

२८ **आदिपुराण टिप्पणी**-ललितकीर्ति । पत्र सं०-१४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६२३ ।

२९ **आदिपुराण टिप्पणी**-ललितकीर्ति । पत्र सं०-१६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें नं० ६६ का पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ४४० ।

३० **उत्तरपुराण टिप्पणी**-ललितकीर्ति । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४६० ।

३१ **उत्तरपुराण टिप्पणी**-ललितकीर्ति । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५३४ ।

३२ **उत्तरपुराण टिप्पणी**-ललितकीर्ति । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३० ।

३३ **उत्तर-पुराण**-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१४० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसके कुछ पत्र खण्डित हैं ।

ग्रन्थ नं० ६५ ।

३४ **उत्तरपुराण**-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९२ ।

३५ **उत्तरपुराण**-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१७८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टिप्पणी भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १२७ ।

३६ **उत्तरपुराण**-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-९९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८५।

३७ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१३१। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। शालि० शक १४७०। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–शालि०शक १४७० कीलक संवत्सर श्रावण शुक्ला १३ सौम्यवार उत्तरानक्षत्र में पण्डित पद्मने इसे लिखा है। मुनि महेन्द्रकीर्तिके शिष्य चन्द्रकीर्तिके लिये कारकल-निवासी भैरव अरस की पटरानी वर्द्धमानक्क ने इसे उन्हें शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ नं० ३८७।

३८ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१३६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–वट्टगक पुराधीश्वरके पुत्र चिक्किंदप्परसने मुनि ज्ञानचन्द्रके लिये इसे लिखवाया है।

ग्रन्थ नं० ४२०।

३९ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–६६। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४३४।

४० **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१४३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३८।

४१ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–११३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि०शक ८२४ दुंदुभि संवत्सर कार्तिक कृष्णा ५ बुधवारके दिन यह ग्रन्थ रचा गया।

ग्रन्थ नं० ५४२।

४२ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–१३५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५८५।

४३ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'आदिपुराण' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६६४।

४४ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–२५७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। कक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–शालि०शक १७३४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि ०शक १७३४ श्रीमुख संवत्सर जेष्ठ शुक्ला ५ के दिन वेणुपुर (मूडबिद्री) निवासी विक्रमसेट्टिके पुत्र चन्दय्योपाध्यायने स्थानीय त्रिभुवनतिलकचूडामणि (श्रीचन्द्रप्रभ) चैत्यालय में इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० २५८।

४५ **कन्नडभारत**–वेदव्यास। पत्र सं०–३५०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८४।

४६ **चन्द्रप्रभपुराण**–अग्गलदेव। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८९ ।

४७ चन्द्रप्रभपुराण–अग्गलदेव । पत्र सं०–९१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह अग्गलदेव आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ४२८ ।

४८ चन्द्रप्रभपुराण–अग्गलदेव । पत्र सं०–१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१४० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

४९ चन्द्रप्रभपुराण–अग्गलदेव । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड 'रामायण' के भी १० पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं ५३५ ।

५० चन्द्रप्रभपुराण–अग्गलदेव । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–कन्नड । भापा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७६७ ।

५१ चतुर्विंशतितीर्थंकरपुराण–मुनि शान्तिकीर्ति । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम– ।

विशेष–शालि० शक १६४६ में यह ग्रन्थ रचा गया है । इसमें २४ तीर्थंकरोंकी भवावली तथा पंचकल्याणोंका संक्षिप्त वर्णन दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० ६४२ ।

५२ त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–५९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि––कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'अमरकोश' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५९९ ।

५३ त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण–चामुण्डराय । पत्र सं०–५८ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर पतिपंक्ति–९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७२ ।

५४ त्रिषष्टिलक्षण-महापुराण–चामुण्ड-राय । पत्र सं०–३९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०२ ।

५५ धर्मनाथपुराण–यति बाहुबली । पत्र सं०–१९७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेषः–यह ग्रन्थ शालि० शक १२६४ (चतुष्षष्ठ्द्वयैकांक) में रचा गया है । गुम्मट उपाध्यायके पौत्र आदि उपाध्यायके पुत्र पद्मनाभने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७८७ ।

५६ धर्मनाथपुराण–यति बाहुबली । पत्र सं०–१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–शालि०शक १२७४ नन्दन संवत्सर चैत्र शुक्ला ८ सोमवारके दिन यह ग्रन्थ रचा गया है।

ग्रन्थ नं० ५५।

५७ नेमिजिनेशसङ्गति (हरिवंशपुराण)–मंगरस। पत्र सं०–२६४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। विषय–पुराण। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५०४।

५८ नेमिजिनेशसङ्गति–मंगरस। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७८७।

५९ नेमिजिनेशसङ्गति–मंगरस। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'अमरकोश' 'तीर्थकरजयमाला' (कन्नड) आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८२९।

६० नेमिजिनेसङ्गति–मंगरस। पत्र सं०–१०६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। वियय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दसा–उत्तम।

विशेष–इसका प्रारम्भ केरेवासे श्रीवर्धमान चैत्यालयमें अलदंगडि निवासी चुंङ्सेट्टिके पुत्र बिम्मयने आङ्गीरस संवत्सर ज्येष्ठ कृष्णा ४ को किया था।

ग्रन्थ नं० १०३।

६१ नेमिनाथपुराण–कवि कर्णपार्य। पत्र सं०–१८०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। शालि०शक–१३५३। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–यह कवि कर्णपार्य चारित्रचक्रवर्ती मुनि कल्याणकीर्तिके शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० ६०२।

६२ नेमिनाथपुराण–············। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षअप्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें व्याकरणसंबन्धी कुछ पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ६१६।

६३ नेमिनाथपुराण–कर्णपार्य। पत्र सं०–१२२। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७३५।

६४ नेमिनाथपुराण–कर्णपार्य। पत्र सं०–७५। पंक्ति प्रतिपत्र ८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४३५।

६५ पद्मपुराण–आचार्य रविषेण। पत्र सं०–६२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–शालि०शक १३३१ विरोधि संवत्सर पुष्य शुक्ला प्रतिपदा। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–ब्रह्मण्णने कल्याणपुर निवासी वरधि सेट्टिकी धर्मपत्नी सुब्बांबिकाके लिये इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ८०२।

६६ पद्मपुराण–आचार्य रविषेण। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण तथा खण्डित।

ग्रन्थ नं० ७२५।

६७ **पाण्डवपुराण**–श्री वादिचन्द्र। पत्र सं०–१६०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६७।

६८ **पार्श्वनाथपुराण**–कवि पार्श्वपण्डित। पत्र सं०–८२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६२।

६९ **पुष्पदन्तपुराण**–महाकवि गुणवर्म। पत्र सं०–१२१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति ७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४९४।

७० **पुष्पदन्तपुराण**–महाकवि गुणवर्म। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६५५

७१ **पुष्पदन्तपुराण**–महाकवि गुणवर्म। पत्र सं०–१२९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९५।

७२ **वर्द्धमानपुराण**–कवि वाणीवल्लभ। पत्र सं०–१९९। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–१३५१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशष–शालि०शक १३५१ कीलक संवत्सर चैत्र शुक्ला ७ के दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है।

ग्रन्थ नं० ५६८।

७३ **वर्धमानपुराण**–कवि वाणीवल्लभ। पत्र सं०–८०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६१८।

७४ **वर्धमानपुराण**–कवि वाणीवल्लभ। पत्र सं०–१८५। पंक्ति प्रतिपत्र–३। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें आदिका एक पत्र नहीं है।

ग्रन्थ नं० ८९२।

७५ **वर्धमानपुराण**–कवि वाणीवल्लभ। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५३९।

७६ **शान्तीश्वरपुराण**–कवि कमलभव। पत्र सं०–१३४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६६१।

७७ **शैवपुराण**–············। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–२। अक्षर प्रपिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा– जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है। एवं 'द्रव्यसंग्रह 'व्रतस्वरूपी, आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २४।

७८ **श्रीपुराण**–आचार्य हस्तिमल्लि। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

अन्तिम पद्य–

श्रीपुराणसमाम्नायमाम्नातं हस्तिमल्लिना।
तरण्डं सर्वशास्त्राब्धेरखण्डं धारयन्त्वमुम्।

विशेष–इसमें २-४ पत्र खण्डित हैं।

ग्रन्थ नं० ५३।

७९ श्रीपुराण–आचार्य हस्तिमल्लि। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६५।

८० श्रीपुराण–आचार्य हस्तिमल्लि। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १२१।

८१ श्रीपुराण–आचार्य हस्तिमल्लि। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'गोम्मटसारके' तथा 'पद्मनन्दिपञ्चविंशति' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १२७।

८२ श्रीपुराण–आचार्य हस्तिमल्लि। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४९३।

८३ श्रीपुराण–आचार्य हस्तिमल्लि। पत्र सं०–९६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५२३।

८४ श्रीपुराण–आचार्य हस्तिमल्लि। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६४०।

८५ श्रीपुराण–आचार्य हस्तिमल्लि। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५९२।

८६ हरिवंशपुराण–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–४४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विषय–चरित्र

ग्रन्थ नं० १७६।

१ अनन्तव्रतचरित–कवि आदियप्प। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–होंगिनूरुके राजा लरक्खभैरवके वास्ते विप्रकुलोत्तम आदियप्पने इसकी रचना की है।

ग्रन्थ नं० ३००।

२ अहिंसाचरित–···········। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–११४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८९।

३ आदीश्वरजन्माभिषेक चरित–विजयवर्णी । पत्र सं०–१०३ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'व्रतस्वरूप' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५०।

४ अञ्जनाचरित– ·········। पत्र सं०–१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३७१।

५ कामदेवचरित–··········। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम।

विशेष–कन्नडमें इसका नाम 'कामनतोरवि' है ।

ग्रन्थ नं० ७०४।

***६ किरातार्जुनचरित**–··········। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड । भाषा–तेलुगु । विषय–चरित्र । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १३०।

***७ कृष्णचरित**–·············। पत्र सं०–७६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९७। लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७२।

८ गोमटेश्वरचरित–कवि बाहुबली । पत्र सं०–३४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२९।

९ चन्द्रप्रभचरित–कवि दोड्डय्य । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ ।अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४६७।

१० चन्द्रप्रभचरित–कवि ब्रह्म । पत्र सं०–१००। पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य।

विशेष–इसके रचयिता पश्चिमदुर्गके स्वामी देवरायके पुत्र कवि ब्रह्म हैं ।

ग्रन्थ नं० २३२।

११ जिनचरित–··········। पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य।

विशेष–प्रतिमें इसका नाम 'जिनान्तचरित' लिखा है। इसमें तीर्थंकरोंके लाञ्छन, यक्ष-यक्षी, मुक्तिस्थान आदिका संक्षिप्त वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० २९२।

१२ जिनचरित–············। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८५१।

१३ जिनदत्तचरित–कवि पद्मनाभ । पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम।

विशेष–इसका अपर नाम 'पद्मावतीमाहात्म्य' है। इसमें 'तर्कसंग्रह, 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र' तथा तत्त्वार्थसूत्र' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८५५।

१४ जिनदत्तचरित–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–१११। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–रक्ताक्षि संवत्सर, आषाढ़ शुक्ला प्रतिपदाके दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है।

ग्रन्थ नं० ८५७।

१५ जिनदत्तचरित–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६४१।

१६ जीवन्धरचरित–कवि ब्रह्मसूरि। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १७६।

१७ जीवन्धरषट्पदि–कवि भास्कर। पत्र सं०–६४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह ग्रन्थ बसवणांकके पुत्र, जिनभक्त कवि भास्करके द्वारा पेनुगोण्डेके श्री शान्तिनाथ चैत्यालयमें रचा गया। रचनाकाल शालि० शक १३४५ क्रोधि संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० रविवार है।

ग्रन्थ नं० २५६।

१८ जीवन्धरषट्पदि–कवि भास्कर। पत्र सं०–८२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–शालि० शक १३४५ क्रोधि संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० शनिवारके दिन पेनुगोण्डे शान्तिनाथ चैत्यालयमें कवि भास्करने इसकी रचना की है।

ग्रन्थ नं० ४२५।

१९ जीवनधरषटपदि–कवि भास्कर। पत्र सं०–५२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–'षटपदि' कन्नड छन्द का एक भेद है। शालि०शक १३४५ क्रोधि संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० सोमवारके दिन मेरपिनगुंडिस्थ शान्तिनाथ मन्दिरमें यह ग्रन्थ रचा गया है।

ग्रन्थ नं० ६९०।

२० जीवनधरषटपदि–कवि भास्कर। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७९७।

२१ जीवन्धरषट्पदि–कवि भास्कर। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें 'सुकुमारचरित' तथा 'मोक्षप्राभृत'के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८३१।

२२ जीवंधरषटपदि–कवि भास्कर। पत्र सं०–१५२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८८४।

२३ जीवन्धरषट्पदि–कवि भास्कर। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–शालि० शक १३४५ क्रोधि संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० रविवारके दिन पेनुगोण्डे पुरस्थ शान्तिनाथ चैत्यालयमें यह ग्रन्थ रचा गया है। इसमें व्याकरण तथा स्तोत्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

२४ **ज्ञानभास्करचरित्र**–नेमण्ण। पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८२० ।

२५ **ज्ञानभास्करचरित्र**–नेमण्ण। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७५ ।

२६ **ज्ञानचन्द्रचरित**–पायण्ण वर्णी । पत्र सं०–२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८४३ ।

२७ **ज्ञानचन्द्रचरित**–पायण्ण वर्णी। पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें सिर्फ ६ वाँ आश्वास है।

ग्रन्थ नं० ८९२।

२८ **ज्ञानचन्द्रचरित**–पायण्ण वर्णी । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसका अपरनाम 'ज्ञानचन्द्रचरितपुराण' है।

ग्रन्थ नं० ४२५ ।

२९ **ज्ञानचन्द्राभ्युदय**–कवि कल्याणकीर्ति । पत्र सं०–५१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–शालि० शक १६६२ सिद्धार्थि संवत्सर ज्येष्ठ शुक्ला ५ रविवारके दिन यह ग्रन्थ रचा गया है।

ग्रन्थ नं० १३० ।

*३० **तुलसीचरित**–······ । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९८ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

३१ **तीर्थंकरचरित**–········ । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें २४ तीर्थंकरोंके उत्सेध, आयु एवं मुक्तिस्थान आदिका संक्षिप्त वर्णन दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३२ **तीर्थंकरवर्णन**–········ । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें २४ तीर्थंकरोंके उत्सेध, आयु आदिका वर्णन दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० १६१ ।

३३ **त्रिपुरदहनचरित**–कवि शिशुमायण । पत्र सं०–१८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । शालि०शक १४५० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह ग्रन्थ शालि० शक १४५० नल संवत्सर श्रावण कृष्णा चन्द्रवारके दिन लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

३४ **त्रिपुरदहनचरित**–कवि शिशुमायण । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–८२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८४३।

*३५ **त्रिपुरदहनचरित**–कवि शिशुमायण। पत्र सं०–५$\frac{१}{२}$। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३१२।

३६ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८६।

३७ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

प्रारम्भिक पद्य–श्रीनेमिजिनमानम्य सर्वसत्त्वहितप्रदम्। वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहम्॥१॥

ग्रन्थ नं० ४८२।

३८ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४८४।

३९ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५०८।

४० **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५२१।

४१ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५२३।

४२ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५९५।

४३ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६२०।

४४ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें वादीभसिंहसूरि कृत 'क्षत्रचूडामणि' के भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ७३२।

४५ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७३८।

४६ **नागकुमारचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८२२।

४७ नागकुमारचरित–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८५९।

४८ नागकुमारचरित–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार'के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४३०।

४९ नागकुमारचरित–कवि बाहुबली। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७३१।

५० नागकुमारचरित–कवि बाहुबली। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७९७।

५१ नागकुमारचरित–कवि बाहुबली। पत्र सं०–८१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें चन्द्रनाथाष्टक, अनन्तनाथाष्टक तथा पार्श्वनाथाष्टक भी हैं।

ग्रन्थ नं० ८६१।

५२ नागकुमारचरित–कवि बाहुबली। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८८९।

५३ नागकुमारचरित–कवि बाहुबली। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २३८।

५४ पद्मावतीचरित–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–१०१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७२।

५५ पद्मावतीचरित–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७२।

५६ पार्श्वनाथचरित–कवि पार्श्वपण्डित। पत्र सं०–९७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह ग्रन्थ लोकण नायक और कामियक्कके पुत्र, नागणणके लघु भ्राता तथा आचार्य वासुपूज्यके शिष्य पार्श्वपण्डितके द्वारा रचा गया है।

ग्रन्थ नं० ७६८।

५७ पार्श्वनाथचरित–मुनि शान्तिकीर्ति। पत्र सं०–१०। पंक्ति–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह ग्रन्थ शालि०शक १६५५ प्रमादीच संवत्सर, मार्गशिर शुक्ला ५ गुरुवारके दिन तौलवदेशीय वेणुपुर–(मूडबिद्री) स्थ विक्रमसेट्टिबसदि [आदिनाथ-मन्दिर] में रचा गया है।

ग्रन्थ नं० ३६८।

५८ **पुरुदेवचरित**–मुनि शान्ति। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३३३।

५९ **प्रभञ्जनचरित**–कवि मंगरस। पत्र सं०–७८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–९९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२०।

६० **प्रभञ्जनचरित**············। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५२३।

६१ **प्रभञ्जनचरित**–················। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५३५।

६२ **प्रभञ्जनचरित**–···········। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० १५।

६३ **प्रद्युम्नचरित**–पण्डित महासेन। पत्र सं०–९७। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। विषय–चरित्र। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५०९।

६४ **प्रद्युम्नचरित**–पण्डित महासेन। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसके रचयिता फप्पट गुरुके शिष्य आचार्य महासेन हैं।

ग्रन्थ नं० ६५६।

६५ **प्रद्युम्नचरित**–पण्डित महासेन। पत्र सं०–९४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

अन्तिम भाग:–"इति श्रीसिन्धुराजसक्तमहामहत्तमश्रीपप्पटगुरोः पण्डितमहासेनाचार्यकृते प्रद्युम्नचरिते त्रयोदशमः सर्गः।"

ग्रन्थ नं० ७९५।

६६ **बाहुबलिचरित**–कवि चिक्कण। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

ग्रन्थ नं० २३४।

६७ **भरतेशवैभव**–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९२।

६८ **भरतेशवैभव**–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३७२।

६९ **भरतेशवैभव**–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–१३८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–शालि शक० १५९८ नल संवत्सर पुष्य कृष्णा ५ बृहस्पतिवार। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३९८।

७० **भरतेशवैभव**–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९९।

७१ **भरतेशवैभव**–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–५८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१७।

७२ **भरतेशवैभव**–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें जिनचतुर्विंशतिका तथा दृष्टाष्टक भी है।

ग्रन्थ नं० ८६०।

७३ **भरतेशवैभव**–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५४।

७४ **मण्डूकदेवचरित**–कवि रायण्ण। पत्र सं०–४७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–९३। लपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें समवसरण जाते हुए महाराज श्रेणिकके हाथी के पादाघातसे मरकर तत्क्षण ही स्वर्गमें देव-पर्यायको प्राप्त करनेवाले मण्डूकका चरित्र वर्णित है। इसमें महाकवि धनञ्जय कृत 'द्विसंधान' काव्यके भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ नं० १८६।

७५ **यशोधरचरित**–चन्दन वर्णी। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह श्रुतमुनिके पौत्र–प्रशिष्य शुभचन्द्र मुनिके पुत्र शिष्य चन्दन वर्णीकी रचना है।

ग्रन्थ नं० ५१२।

७६ **यशोधरचरित**–कवि चन्द्रम। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–शुक्ल संवत्सर मार्गशिर कृष्ण १ के दिन बंगवाडीस्थ शान्तिनाथचैत्यालय में ब्र० गुणसागरने इसे लिखा हैं। इसमें कन्नड 'चतुरास्य निघण्टु'के भी तीन पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५९८।

७७ **यशोधरचरित**–······। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ७९५।

७८ **यशोधरचरित**–······। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५००।

७९ यशोधरचरित–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसके रचयिता पद्मनाभ श्रुतकीर्तिके शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० ७३२।

८० यशोधरचरित–वादिराज। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–शालि० शक १५१३। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३०१।

***८१ रामायण**–······। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५५७।

***८२ रामायण**–······। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'प्रतापरुद्रीय' के भी कुछ श्लोक हैं।

ग्रन्थ नं० ८४३।

८३ रोहिणीचरित–जिनचन्द्र। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसके लेखक बिर्मण हैं।

ग्रन्थ नं० ३११।

८४ विजयम्मिचरित–·······। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसका अपर नाम 'विजयकुमारीचरित' है। इसमें विजयण्णार्य कृत 'चन्दनाचरित' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४३।

८५ श्रीपालचरित्र–भट्टारक सकलकीर्ति। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८१। विषय–चरित्र। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें बीचके तीन पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० ४३३।

८६ श्रुतकीर्तिमुनिचरित–कवि रायण्ण। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि० शक १५८१ बहुधान्य संवत्सरमें यह ग्रन्थ रचा गया है।

ग्रन्थ नं० ७२३।

८७ श्रुतकीर्तिमुनिचरित–कवि रायण्ण। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६०९।

८८ श्रेणिकचरित······। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड 'सीताचरित' भी सम्मिलित है।

ग्रन्थ नं० ७०८।

८९ **श्रेण्यारोहणसंधि**–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह भरतेशवैभव का एक भाग है।

ग्रन्थ नं० ६४१।

९० **षोडशस्वप्नसन्धि**–कवि रत्नाकर। पत्र सं०–५१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह भरतेशवैभव का एक प्रकरण है।

ग्रन्थ नं० ७०८।

९१ **सीताचरित**–......। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–१४। अक्षर प्रतिपंक्ति–२८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४०३।

९२ **सुकुमारचरित**–......। पत्र सं०–३१। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५६२।

९३ **सुकुमारचरित**–......। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७२९।

९४ **सुकुमारचरित**–......। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'लब्धिसार' की कन्नड टीकाके भी ४ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७९७।

९५ **सुकुमारचरित**–......। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें 'भरतेश्वरप्रशस्ति' (कन्नड) भी है।

ग्रन्थ नं० ५९८।

९६ **सुवर्णभद्रचरित**–कवि पदुमण्ण। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें आदि और अन्तके पत्र नहीं हैं। इसका सुवर्णभद्रचरित यह नाम अनुमानपरक है।

ग्रन्थ नं० ५००।

९७ **सुवर्णभद्रचरित**–कवि पदुमण्ण। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय–कथा

ग्रन्थ नं० २२३।

१ **अनन्तव्रतकथा–**...... । पत्र सं०–३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५१ ।

२ **अनन्तव्रतकथा–**...... । पत्र सं०–३½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७८० ।

३ **अनन्तव्रतकथा–**...... । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

४ **अरिञ्जयभट्टारककथा–**........ । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९९ ।

५ **अष्टाङ्गपञ्चाणुव्रतकथा–**........ । पत्र सं०–४५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१८ ।

६ **आणतिव्रतकथा–**........ । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०३ ।

७ **कौतुककलिकाकथा–**...... । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

अन्तिम पद्य–देशीगणतिलकश्रीनेमिन्दुमुनेरनुज्ञया विवृतम् ।
कौतुककलिकाकथनं शुभेन्दुशिष्येण विधिनेदम् ॥

ग्रन्थ नं० २९२ ।

८ **गुणरत्नमाला–**कवि बोम्मरस । पत्र सं०–६½ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७१ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१० ।

९ **गौरीव्रतकथा–**...... । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षरप्रतिपंक्ति–८४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३२९ ।

१० **जिनगुणसम्पत्तिव्रतकथा–**...... । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ९०२ ।

११ **जैनकथासंग्रह–**...... । पत्र सं०–४६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें अष्टांग पंचाणुव्रत आदि की २३ कथाएं संगृहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० २४८ ।

१२ **धर्मकथासंग्रह–**...... । पत्र सं०–७७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'पंचाणुव्रत' 'अष्टांग' आदि की कथाएं हैं। अन्त में 'गणधरवलय–पूजा' के कुछ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० १७।

१३ धर्मामृत–नयसेन। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। विषय–कथा। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १८०।

१४ धर्मामृत–नयसेन। पत्र सं०–१३९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३०९।

१५ धर्मामृत–नयसेन। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–१७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३११।

१६ नवनिधिभाण्डार तथा कल्पकुज-व्रतकथा–......। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१७ नागकुमारपञ्चमीकथा–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५२३।

१८ नागकुमारपञ्चमीकथा–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६०९।

१९ नागकुमारकथा–......। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६७।

२० नन्दीश्वरव्रतकथा–चन्दय उपाध्याय। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३०९।

२१ नन्दीश्वरव्रतकथा–चन्दनवर्णी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७८।

२२ नन्दीश्वरव्रतकथा–......। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८७८।

२३ नन्दीश्वरव्रतकथा–......। पत्रसं०–७½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें गीतवीतराग के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७०८।

२४ पल्यविधानव्रतकथा–......। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें उक्त व्रतका फल भी दिया गया है।

ग्रन्थ नं० २०२ ।

२५ पार्श्वनाथव्रतकथा–....... । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें 'शान्त्यष्टक' 'सिद्धचक्रजयमाला' आदि के भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २४९ ।

२६ पुण्यास्रवकथा–कवि नागराज । पत्र सं०–१२० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७१२ ।

२७ पुण्यास्रवकथा–मुनि रामचन्द्र । पत्र सं०–३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३८९ ।

२८ पुरुदेवकथा–.............. । पत्र सं०–१८$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

२९ फलमङ्गलवारव्रतकथा–........ । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

३० मुक्तावलीव्रतकथा–.......... । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

३१ रत्नत्रयव्रतकथा–........... । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

३२ रोहिणीव्रतकथा–.......... । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९९ ।

३३ लब्धिविधानव्रतकथा–............ । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८७८ ।

३४ लब्धिविधानव्रतकथा–......... । पत्र सं०–४$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९५ ।

३५ ललिताङ्गदेवकथा–नयसेन । पत्र सं०–३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष–यह नयसेनकृत धर्मामृतान्तर्गत एक कथा है ।

ग्रन्थ नं० ३०९ ।

३६ वड्डाराधना–आचार्य शिवकोटि । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३०९।

३७ **वड्डाराधना**–आचार्य शिवकोटि। पत्र सं०–६६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–शालि०श०१३२५। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–शालि०शक १३२५ सुभानु संवत्सर कार्तिक कृष्ण अमावास्या बुधवारके दिन कल्लप्प सेट्टिने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० १५९।

३८ **वस्तुकल्याणव्रतकथा**–········। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५९।

३९ **व्रतकथासंग्रह**–···············। पत्र सं०–१२१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–श्रवण-बेल्गोलके भट्टारक चारुकीर्तिके प्रशिष्य, अन्नतकीर्तिके शिष्य, पायण्णके द्वारा लिखित।

ग्रन्थ नं० ६२।

४० **व्रतकथासंग्रह**–··················। पत्र सं०–१६५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६५८।

४१ **व्रतकथासंग्रह**–··················। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–१८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'भक्तामर' आदि स्तोत्रोंके कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७३४।

४२ **व्रतकथासंग्रह**–··········। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८३७।

४३ **व्रतकथासंग्रह**–··················। पत्र सं०–९६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें १० व्रतोंकी कथाएं संगृहीत हैं।

ग्रन्थ नं० ८६५।

४४ **व्रतकथासंग्रह**–················। पत्र सं०–१५०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें ३१ व्रतोंकी कथाएं हैं।

ग्रन्थ नं० ८६९।

४५ **व्रतकथासंग्रह**–···············। पत्र सं०–११५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें २२ व्रतकथाएं हैं।

ग्रन्थ नं० ९८।

४६ **सम्यक्त्वकौमुदी**–मुनि धर्मकीर्ति। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६५४।

४७ **सम्यक्त्वकौमुदी**–मुनि धर्मकीर्ति। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें पद्यभाग मात्र है।

ग्रन्थ नं० ६९७।

४८ सम्यक्त्वकौमुदी–मुनि धर्मकीर्ति। पत्र सं०–५१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'क्षत्रचूडामणि' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३९८।

४९ सम्यक्त्वकौमुदी–कवि नीलकण्ठ। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसके रचयिता तिलिवल्लिपुरस्थ श्रीशान्ति तीर्थंकरके भक्त कवि नीलकण्ठ हैं। श्रवणबेल्गोलस्थ भट्टारक चारुकीर्तिके शिष्य कुंबुलेनिवासी प्रभाचन्द्रदेवने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० १४८।

५० सम्यक्त्वकौमुदी–कवि मंगरस। पत्र सं०–८७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह ग्रन्थ यदुवंशभूवरसचिवान्वयी कवि मंगरसके द्वारा शालि०शक १३३१ आश्वयुज शुक्ला प्रतिपदाके दिन रचा गया है। इसमें 'रामचरित,' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २२८।

५१ सम्यक्त्वकौमुदी–कवि मंगरस। पत्र सं०–९८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–शालि०शक १४३१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–शालिवाहन शक १४३१ आश्वयुज शु० १ शनिवारके दिन यह ग्रन्थ लिखा गया।

ग्रन्थ नं० ३६९।

५२ सम्यक्त्वकौमुदी–कवि मंगरस। पत्र सं०–१२५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–शा० शक १५१६। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–शालि०शक १५१६ मन्मथ संवत्सर आषाढ·····में रामचन्द्र के पुत्र चन्द्रप्रभने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ४५२।

५३ सम्यक्त्वकौमुदी–कवि मंगरस। पत्र सं०–६५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–शालि०शक १७·····कीलक संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ३ गुरुवार। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–कनकपुरस्थ आदिनाथ मन्दिरके अर्चक कोटप्प इन्द्रके पुत्र भास्करने हन्नारग्रामके देवालयमें इसे लिखकर समाप्त किया है।

ग्रन्थ नं० ८०५।

५४ सम्यक्त्वकौमुदी–कवि मंगरस। पत्र सं०–९०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–शालि०शक १४३१ आश्वयुज शुक्ला १ शनिवारके दिन कवि मंगरसने इसकी रचना की है। सौम्य संवत्सर भाद्रपद शुक्ला १४ रविवारके दिन पण्डित देवप सेट्टिके पुत्र भद्रैयने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० १५९।

५५ सिद्धचक्रव्रतकथा–················। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें और भी कुछ खण्डित पत्र हैं।

विषय–इतिहास

ग्रन्थ नं० ८०० ।

१ **आयव्यविवरण**–······। पत्र सं०–११० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–इतिहास । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें मूडबिद्री जैन मठके पुराने आयव्ययका विवरण दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० ८१४ ।

२ **आयव्ययविवरण**–······। पत्र सं०–६६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–इतिहास । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें मूडबिद्री जैन मठके पुराने आयव्ययका विवरण अङ्कित है । यह ग्रंथ नं० ८०० से भिन्न है ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३ **गुणभद्रप्रशस्ति**–······। पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रशस्ति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यह भट्टारक गुणभद्रकी गद्यमय प्रशस्ति है ।

ग्रन्थ नं० ३२९ ।

४ **गोमटेश्वरचरित**–कवि चन्द्रप । पत्र सं०–४५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–इतिहास । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कार्कलस्थ बाहुबली मूर्तिका परिचय अङ्कित है ।

ग्रन्थ नं० ७३७ ।

५ **मूडबिद्रीके जैन मन्दिर**–······ । पत्र सं०–७० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–इतिहास । लेखनकाल–शा० शक १७५३ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें मूडबिद्रीके प्रत्येक मन्दिरमें वर्तमान मूर्तियों एवं बर्तनोंकी सविवरण सूची दी गई है । यह सूची शालि० शक १७५३ खर संवत्सर आश्वयुज मासमें लिखी गई है ।

ग्रन्थ नं० ८४१ ।

६ **विज्ञप्तिपत्र**–······ । पत्र सं० ११ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–इतिहास । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें श्रवणबेलगोल मठके भट्टारकजीको अर्चक तथा श्रावकोंके द्वारा भिन्न-भिन्न समयमें लिखे गये विज्ञप्तिपत्र संगृहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ६८५ ।

७ **शासनादिसंग्रह**–······पत्र सं०–१०१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–इतिहास । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें बारकूर तथा बटकलसे सम्बन्ध रखनेवाले कुछ शासन तथा भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंके द्वारा भिन्न-भिन्न समयमें स्थानीय देवालयोंकी संपत्तिकी रक्षाके लिये लिखे गये राजकीय पत्र एवं श्रवणबेलगोलके भट्टारकजीके पास लिखे गये कतिपय प्रार्थनापत्र भी संगृहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

८ **सङ्घोत्पत्ति**–······ । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें देव, सेन आदि संघोंकी उत्पत्तिका वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

९ **श्रुतावतार**–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । लेखनकान–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विषय–आयुर्वेद

ग्रन्थ नं० ३४४।

***१ अष्टांगहृदयदीपिका**–उदयादित्य भट्ट। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह वाग्भट कृत 'अष्टाङ्गहृदय' की टीका है। इसमें सिर्फ शरीरस्थान है।

ग्रन्थ नं० ९६।

***२ आरोग्यचिन्तामणि**–पण्डित दामोदर भट्ट। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–तारण संवत्सर मार्गशिर शुक्ला ५। सौम्यवार। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–मुलवागिलनिवासी धनञ्जयदेवके पुत्र ब्रह्मदेवने विजयनगरस्थ चिक्कोडेयरङ्गडि चैत्यालयके मुद्दुमाणिक्य तीर्थेशके निकट आरगके आदिपण्डितके वास्ते इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ८४६।

***३ आरोग्यचिन्तामणि**–पण्डित दामोदर भट्ट। पत्र सं०–६४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४४।

४ इन्दुदीपिका–सुन्दर। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–साान्य।

विशेष–इसमें सिर्फ 'सूत्रस्थान' की टीका है। पर मालूम नहीं हो सका कि यह किस ग्रन्थका प्रकरण है।

ग्रन्थ नं० २००।

५ कल्याणकारक–सोमनाथ। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें वैद्यकविषयक और भी कुछ खण्डित पत्र हैं। यह 'कल्याणकारक' आचार्य पूज्यपादके संस्कृत 'कल्याणकारक' का कन्नड अनुवाद कहा जाता है।

ग्रन्थ नं० ६७३।

६ कृत्रिमविषचिकित्सा–········। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५९२।

***७ धन्वन्तरिनिघण्टु**–धन्वन्तरि। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यककोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २९९।

***८ योगरत्नाकर**–··········। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८५२।

९ योगरत्नावली–कवि पार्श्व। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८११।

१० योगशतक–·········। पत्र सं०–७६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–शालि० शक १३११। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–शालि० शक १३११ शुक्ल संवत्सरके वैशाख मासमें नागराजने इसे लिखा है।

ग्रन्थ णं० १९३।

११ रसरत्नाकर–नित्यनाथ सिद्ध। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–शालि० शक १४१३। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–शालिवाहन शक १४१३ विरोधिकृत् संवत्सर कार्तिक शुक्ला ५ के दिन कुदिहिरनिबासी चन्दप्प गौडके पुत्र ? चन्दप्प गौड के वास्ते स्थानीय आदप्प उपाध्यायके पुत्र बोम्मरसके द्वारा यह ग्रन्थ लिखा गया।

ग्रन्थ नं० ३३७।

१२ रसवैद्यसार–········। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८११।

१३ रसेन्द्रोदय–·········। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४०। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–अतिजीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–यह एक संग्रह ग्रन्थ है। इसमें 'सकल' 'सारसमुच्चय' 'रहस्यसंहिता' आदि ग्रन्थोंके रसप्रकरण का संग्रह है। तथा इसमें वैद्यक सम्बन्धी और भी कुछ खण्डित पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ३९१।

१४ विषचिकित्सा–······। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपत्र–२७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४०४।

१५ वैद्यसार–··········। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ८५२।

१६ वैद्यसंग्रह–········। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–ज्योतिष

ग्रन्थ नं० ३२१।

***१ अक्षरकेलिप्रश्न**–·······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९१।

२ कालज्ञान–·······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २१।

३ केवलज्ञानहोराशास्त्र–मुनिचन्द्रसेन। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र ११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ४८३।

४ **केवलिप्रश्न**–······। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४८३।

५ **चिंतामणिप्रश्न**–·······। पत्र सं०–५६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८९८।

६ **ज्योतिष**–·······। पत्र सं०–६३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७४९।

७ **ज्योतिष**–······। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'अनन्तनाथपूजा' तथा जयमाला (कन्नड) भी है।

ग्रन्थ नं० १६९।

८ **ज्योतिष**–······। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–एक संग्रह ग्रन्थ इसमें ज्योतिष की कुछ बातें बतलाई गई हैं।

ग्रन्थ नं० २१५।

९ **ज्योतिषसंग्रह**–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८७०।

१० **ज्योतिषसंग्रह**–·······। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर पतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'दूतलक्षण' 'चद्रगति' आदि ज्योतिषके कतिपय विषय संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ८९६।

११ **पञ्चाङ्गगणित**–·······। पत्र सं०–६२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ९०१।

१२ **पंचांगफल**–······। पत्र सं०–३०½। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८९९।

१३ **पंचांगसंग्रह**–······। पत्र सं०–२२९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–शालि० शक १७९२। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८९७।

१४ **पंचांग तथा जातकसंग्रह**–······। पत्र सं०–७१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–शालि० शक १७८५। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह पंचांग तथा जन्मपत्रोंका संग्रह है।

ग्रन्थ नं० ३३९।

१५ प्रश्नचिन्तामणि-······। पत्र सं०-७९। पंक्ति प्रतिपत्र-८ अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३३९।

१६ प्रश्नचिन्तामणि-······। पत्र सं०-२१। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८५३।

१७ मुहूर्तदर्पण······। पत्र सं०-११३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१८ वायसशकुन-······। पत्र सं०-१। पंक्ति-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१९ वास्तुनिर्माणमुहूर्त-······। पत्र सं०-१। पंक्ति-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४६१।

२० शकुनशास्त्र-·······। पत्र सं-३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-× अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३९।

२१ सुग्रीवप्रश्न-सुग्रीव। पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३८। लिपि-कन्नड। भाषा संस्कृत तथा कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विषय-गणित

ग्रन्थ नं० १६९।

१ गणितविलास-चन्द्रम। पत्र सं०-२९। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गणित। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२७।

२ गणितसार-आचार्य महावीर। पत्र सं० १३५। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-४९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। लेखनकाल-शालि०शक १४४९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६१३।

३ गणितसार-आचार्य महावीर। पत्र सं०-५७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६३८।

४ गणितसार-आचार्य महावीर। पत्र सं०-२९। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६७७।

५ गणितसार–आचार्य महावीर। पत्र सं०–१०१। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–गणित। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८७३।

६ गणितसार–आचार्य महावीर। पत्र सं०–६४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–गणित। लेखनकाल–शालि०शक १५९६। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–शालि०शक १५९६ आनन्द संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ७ गुरुवारके दिन मुनिभद्रदेवके शिष्यने वेणुपुरस्थ त्रिभुवनतिलक चैत्यालयमें इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ७८१।

७ गणितसार–श्रीधराचार्य। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–गणित। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें गणितज्ञ वल्लभ कृत आंध्र (तेलुगु)–भाषीय टीका भी है। ग्रन्थ प्रकाशनार्ह है।

ग्रन्थ नं० ५९०।

८ गणितसंग्रह–राजादित्य। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–गणित। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'गोम्मटाष्टक, 'अकलंकाष्टक' तथा 'देवराजवल्लभाष्टक' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २८२।

९ चतुरंगलेखन तथा तण्डुलस्थापनक्रम–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गणित। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय–मन्त्रशास्त्र

ग्रन्थ नं० ४५९।

१ गणधरकल्प–·········। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२१।

२ गणधरवलय-मन्त्र–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४३३।

३ गणधरवलयमन्त्र–········। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'समवसरणाष्टक' 'पद्मावतीचरित्र' आदिके भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४६२।

४ गणधरवलयमन्त्र जपविधि–······। पत्र सं०–$1\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५३।

५ **णमोकारमन्त्रकी अक्षरसंख्या**–············। पत्र सं०–१। पंक्ति–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२१।

६ **पार्श्वनाथमन्त्राष्टक**–आचार्य इन्द्रनन्दी। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसका अपर नाम 'मालामन्त्र' है। इसमें विद्वेषण, उच्चाटन आदि कर्मोंके मन्त्र दिये गये हैं। यह 'कलिकुण्डयन्त्राराधना' में भी पाये जाते हैं।

ग्रन्थ नं० २०१।

७ **पञ्चनमस्कारचक्र**–·········। पत्र सं०–२८२। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–शालि० शक १२१४ मार्गशिर कृष्णा १३ बुधवार। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें बीचका एक पत्र नहीं है।

ग्रन्थ नं० ८४९।

८ **बृहच्छान्तिविधान**–·········। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'नवदेवतापूजा' 'अनन्तव्रतविधान' तथा शकुन सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७४८।

९ **मन्त्रशास्त्र**–··············। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कल्याणकीर्तिकृत कन्नड 'द्वादशानुप्रेक्षा' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४७०।

१० **यन्त्रमन्त्रसंग्रह**–··········। पत्र सं०–५४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८४२।

११ **लघुशान्तिविधान**–··········। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'अभिषेकपाठ' 'पञ्चपरमेष्ठी' तथा 'नवदेवता पूजा' एवं 'जयमाला'के भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ८५०।

१२ **लघुशान्तिविधान**–··········। पत्र सं०–७½। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'बास्तुपूजा' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८९३।

१३ **लघुशान्तिविधि**–··········। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४००।

१४ **सकलीकरण**–··········। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० ४९८ ।

१ तिलोयपएणत्ति [त्रिलोकप्रज्ञप्ति]–आचार्य यतिवृषभ । पत्र सं०–१५१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९९ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अतिजीर्ण ।

विशेष–इसमें 'गोम्मटसार (जीवकाण्ड)' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६४३ ।

२ तिलोयपएणत्ति [त्रिलोकविज्ञप्ति]–आचार्य यतिवृषभ । पत्र सं०–८८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १० ।

३ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१४० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९३ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें आचार्य माधवचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

४ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–२५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२४ ।

५ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–५४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० १३५ ।

६ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–८० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें बहुतसे पत्र गायब हैं ।

ग्रन्थ नं० १९२ ।

७ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–६१ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०१ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २२९ ।

८ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०६।

९ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२१। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें आचार्य माधवचन्द्रकी संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३५१।

१० **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४२२।

११ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१८०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५८२।

१२ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें माधवचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६२१।

१३ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१०४। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–नागरी। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें माधवचन्द्र कृत संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ६२४।

१४ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६४४।

१५ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१४२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–शालि० शक १४५९। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि० शक १४५९ मन्मथ संवत्सर आषाढ़ शुक्ला २ बृहस्पतिवारके दिन मरदालनिवासी चन्दरसके पुत्र देवरसने चन्दण्णके लिये इसे लिखा है। इसमें माधवचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ७४१।

१६ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–७०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ९०४।

१७ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–१४। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२४। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें सन्दृष्टियां भी है।

ग्रन्थ नं० १६०।

१८ **त्रिलोकशतक**–रत्नाकर वर्णी। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५३७।

१९ **त्रिलोकशतक**–रत्नाकर वर्णी। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० १०९।

२० **लोकतत्त्व**–आचार्य सिंहसूरि। पत्र सं०–५११/२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध दशा–सामान्य।

अन्तिम भाग—युक्तः प्राणिदयागुणेन विमलेऽसत्यादिभिश्च व्रतैर्मिथ्यादृष्टिकषायनिर्जयरुचिर्जितेन्द्रियाणां वशम्॥दग्ध्वा दीप्ततपोऽग्निना विरचितं कर्मापि सर्वं मनःसिद्धिं याति विहाय जन्मगहनं शार्दूल (विक्रीडितम्)॥·· ····वर्द्धमानार्हता यत्प्रोक्तं जगतो विधानमखिलं ज्ञातं सुधर्मादिभिः॥ आचार्यावलिकागतं विरचितं तत्सिंहसूरर्षिणा भाषायाः परिवर्तनेन निपुणैस्सम्मान्यतां साधुभिः॥ वैश्वे स्थिते रविसुते वृषभे च जीवे राज······लिकनामनि पाणराष्ट्रे[1] शास्त्रं पुरा लिखितवान्मुनिसर्वनन्दि (दी)॥ संवत्सरे तु द्वाविंशे[2] कांचीशः सिंहवर्मणः अशीत्यब्दे शकाब्दानां सिद्धमेतच्छतत्रये॥ पञ्चादशशतान्याहुः षट्त्रिंशदधिकानि वै।··························॥

ग्रन्थ नं० १४४।

२१ **लोकस्वरूप**–कवि चन्द्रम। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १४५।

२२ **लोकस्वरूप**–कवि चन्द्रम। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६७।

२३ **लोकस्वरूप**–कवि चन्द्रम। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २७७।

२४ **लोकस्वरूप**–कवि चन्द्रम। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६८९।

२५ **लोकस्वरूप**–कवि चन्द्रम। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड भावार्थ भी है।

---

१. द्रविडदेशे। २. सर्वदारिससम्वत्सरे।

विषय–शिल्पशास्त्र

ग्रन्थ नं० २२।

१ **वास्तु-शास्त्र**–सनत्कुमार। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–शिल्पशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५२४।

२ **वास्तुशास्त्र**–सनत्कुमार। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–शिल्पशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६६७।

३ **वास्तुशास्त्र**–सनत्कुमार। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–शिल्पशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें 'प्रमाणनिर्णय' 'नाममाला' आदि के भी कुछ खण्डित पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८८०।

४ **शिल्पशास्त्र**–......। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–शिल्पशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

विषय–लक्षण तथा समीक्षा

ग्रन्थ नं० १४५।

१ **नवरत्नपरीक्षा**–......। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–समीक्षा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७६।

२ **धर्मपरीक्षा**–वृत्तविलास। पत्र सं०–४७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–समीक्षा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २१०।

३ **धर्मपरीक्षा**–वृत्तविलास। पत्र सं०–१२८। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–समीक्षा। लेखनकाल–शालि० शक १४३०। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–शालि० शक १४३० शुक्ल संवत्सर चैत्र शुक्ला ५ भानुवारके दिन यह ग्रन्थ लिखकर समाप्त हुआ था।

ग्रन्थ नं० २७१।

४ **धर्मपरीक्षा**–वृत्तविलास। पत्र सं०–९२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–समीक्षा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३०९।

५ **धर्मपरीक्षा**–वृत्तविलास। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२८५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–समीक्षा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसके लिपिकार वेलतंगडि-निवासी पायण्ण हैं।

ग्रन्थ नं० १९२।

६ **धर्मपरीक्षा**–आचार्य अमितगति । पत्र सं०–३४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१३८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–समीक्षा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

रचनाकालसम्बंधी पद्य–

संवत्सराणां विगते सहस्रे ससप्ततौ विक्रमपार्थिवस्य ।

इदं निषिद्धान्यमतं समाप्तं जिनेन्द्रधर्मप्रतिपादि शास्त्रम् ॥

ग्रन्थ नं० ७९०।

७ **धर्मपरीक्षा**–आचार्य अमितगति । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–समीक्षा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष–इसमें 'सम्यक्त्वकौमुदी' के भी ३ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६२६।

८ **समयपरीक्षा**–कवि ब्रह्मदेव (ब्रह्मशिव) । पत्र सं०–१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६१ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–समीक्षा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विषय–क्रियाकाण्ड

ग्रन्थ नं० ३२८।

१ **आलोचना**–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४।

२ **आलोचना**–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९७।

३ **आलोचना**–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'क्रियाकाण्डचूलिका' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३८।

४ **आलोचनाक्रिया**–······ । पत्र सं०–७५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध ।

विशेष–इसमें 'संगीतसमयसार' और 'नीतिसार' के भी कुछ श्लोक हैं ।

ग्रन्थ नं० १६७।

५ **आलोचनापाठ**–······ । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७८।

६ **आलोचनापाठ**–······ । पत्र सं०–४४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड। टीका है, तथा 'कालज्ञानवासुपूज्ययंत्र' का एक पत्र भी।

ग्रन्थ नं० ३४६।

७ **आलोचनाप्रतिक्रमण**······। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'त्रिलोकसार' एवं 'गोम्मटसार' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४००।

८ **ईर्यापथशुद्धि**–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४००।

९ **क्रियाचूलिका**–······। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह पद्मनन्दिकृत से भिन्न है।

ग्रन्थ नं० ७५।

१० **क्रियाकलाप**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–११५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नडवृत्ति है। वृत्तिकार माघनन्दी हैं, जिनका काल शालि० शक १११० है।

ग्रन्थ नं० १४७।

११ **क्रियाकलाप**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–१३४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १२२।

१२ **क्रियाकलापटीका**–······। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–यह 'क्रियाकलाप' की विस्तृत सुन्दर संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ३८३।

१३ **क्रियाकाण्डचूलिका**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–१½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १३४।

१४ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १५२।

१५ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–६७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २२९।

१६ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द पूज्यपाद आदि। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३३।

१७ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३७।

१८ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २५३।

१९ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २५८।

२० **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–९९। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–७१। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २५९।

२१ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११५।

२२ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३५५।

२३ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३७३।

२४ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५३०।

२५ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५९३।

२६ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–१००। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५९७।

२७ **क्रियापाठ**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०।

लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६०६।

२८ क्रियापाठ–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ६०८।

२९ क्रियापाठ–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–१३०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–नागरी। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६६२।

३० क्रियापाठ–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६८८।

३१ क्रियापाठ–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–१८८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७१७।

३२ क्रियापाठ–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड श्रीपालचरित शान्तिनाथाष्टक आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७५३।

३३ क्रियापाठ–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–७०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें प्रभाचन्द्रकृत संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ८२०।

३४ क्रियापाठ–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

ग्रन्थ नं० ३५३।

*३५ गायत्रीव्याख्यान–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–अक्षय संवत्सर, निज ज्येष्ठ शुक्ला ५ के दिन रामराज ने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ४७१।

३६ चत्तारिदण्डक तथा थोस्सामिदण्डक–·········। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर

प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

३७ **चैत्यभक्ति**–आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०–३½ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

३८ **दशभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०–७४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । अशुद्ध तथा अपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

विशेष:–इसमें 'रत्नकरण्ड-श्रावकाचार,' 'नक्षत्रमाला', 'जिनमुनितनय' आदि अनेक ग्रन्थों के शिथिल पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

३९ **दशभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०–२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०७ ।

४० **दशभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०–३० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७१ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७५४ ।

४१ **दशभक्त्यादिसंग्रह**–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०–११२ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–स्तोत्र क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३४६ ।

४२ **दैनिकप्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति ४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५१ ।

४३ **दैवसिकप्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५८ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४०१ ।

४४ **दैवसिकप्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४१७ ।

४५ **दैवसिकप्रतिक्रमण**–······ । पत्रसं०–२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–नागरी । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २०९ ।

४६ **नन्दीश्वरभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४५० ।

४७ **नन्दीश्वरभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०–४० । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें ज्योतिष तथा पूजा संबंधी भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६३७ ।

४८ **नन्दीश्वरभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

४९ **निर्वाणभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति ४१ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें आचार्य-भक्ति तथा योगिभक्ति भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १६७ ।

५० **पाक्षिकप्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४६ ।

५१ **पाक्षिकप्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–३५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय– क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५१ ।

५२ **पाक्षिकप्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–२७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८१ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १८५ ।

५३ **प्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–४३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

५४ **प्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–३९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७०१ ।

५५ **प्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–७८ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७४५ ।

५६ **प्रतिक्रमण**–······ । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'प्रायश्चित्त' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १९७।

५७ **प्रतिक्रमणत्रय की टीका**–पण्डित प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–८४। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसके मूल-रचयिता गौतम स्वामी हैं।

यन्मोक्षेश्चिदपि (?) प्रसन्नवचनैः निश्शेषशुद्धिप्रदं, व्याख्यातं प्रवरं प्रतिक्रमणसद्ग्रन्थत्रयं धीमता।

तद्येन प्रकटीकृतं भवहरं शब्दार्थतो निर्मलं सः श्रीमान्निखिलोपकारनिरतो जीयात्प्रभेन्दुर्बुधः॥

पटेलापद्रके श्रीचन्द्रप्रभदेवपादानामग्रे श्रीगौतमस्वामिकृतप्रतिक्रमणत्रयस्य टीकात्रयं श्रीप्रभाचन्द्रपण्डितेन कृतमिति मङ्गलम्।

ग्रन्थ नं० १६७।

५८ **बृहत्पाक्षिकप्रतिक्रमण**–······। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४०१।

५९ **बृहत्पाक्षिकप्रतिक्रमण**–······। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५७८।

६० **महाव्रतप्रतिक्रमण**–······। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें गणितसंबंधी ५ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० १६७।

६१ **श्रावकप्रतिक्रमण**–······। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४६२।

६२ **श्रावकप्रतिक्रमण**–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८५१।

६३ **श्रावकप्रतिक्रमण**–······। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'क्रियाकाण्ड' 'रयणसार' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५८०।

६४ **श्रुतभक्ति तथा चारित्रभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है तथा 'त्रिलोकसार' के ११ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २०५।

६५ **सामायिकपाठ**–आचार्य अमितगति। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४००।

६६ **सामायिकस्तव**–······। पत्र सं०–३½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'चत्तारिदण्डक' एवं 'थोस्सामिदण्डक' भी है।

ग्रन्थ नं० ३५४।

६७ संध्यावन्दना–·······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८७९।

६८ संध्यावन्दना–·······। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'लोकस्वरूप' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८८९।

६९ संध्यावन्दना–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–स्तोत्र

ग्रन्थ नं० १८२।

१ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १८५।

२ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० २७२।

३ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २८४।

४ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३१८।

५ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३३५।

६ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४१।

७ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३८०।

८ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५१७।

९ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६२८।

१० अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८६७।

११ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'अर्हत्स्तोत्र' तथा 'प्रश्नोत्तररत्नमाला' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६७५।

१२ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है तथा ग्राम्यगीत के भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० २३७।

१३ अकृत्रिमचैत्यालयवन्दनाष्टक–······। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९२।

१४ अक्षरमालिकास्तोत्र–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८६।

१५ अद्याष्टक–·····। पत्र सं० २। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'समवसरणाष्टक' भी है।

ग्रन्थ नं० ३९३।

१६ अनन्तनाथाष्टक–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१७ अनन्तनाथाष्टक–······। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३३४।

१८ अर्हत्सिद्धस्तोत्र–·······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४६।

१९ अर्हत्स्तोत्र–·······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड 'गोमटेश्वराष्टक' भी सम्मिलित है।

ग्रन्थ नं० ६६२।

२० **अर्हत्स्तोत्र**-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-२१/२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३७।

२१ **अर्हदष्टक**-......। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २५९।

२२ **अर्हदष्टक**-कवि नागचन्द्र। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०३।

२३ **आदिनाथाष्टक**-......। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८०।

२४ **ऋषिमण्डलस्तोत्र**-श्री गुणनन्दी। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४७९।

२५ **ऋषिमण्डलस्तोत्र**-श्री गुणनन्दी। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५५।

२६ **एकीभावस्तोत्र**-वादिराज। पत्र सं०-३१/२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३६।

२७ **एकीभावस्तोत्र**-वादिराज। पत्र सं०-२१/२। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४००।

२८ **एकीभावस्तोत्र**-वादिराज। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६६२।

२९ **एकीभावस्तोत्र**-वादिराज। पत्र सं०-२१/२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-३९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७६२।

३० **एकीभावस्तोत्र**-वादिराज। पत्र सं०-३१/२। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७९७।

३१ **एकीभावस्तोत्र**-वादिराज। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी ह।

ग्रन्थ नं० ५७२ ।

३२ एकीभाव तथा विषापहारस्तोत्र–वादिराज तथा धनंजय । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'लघीयस्त्रय', 'युक्त्यनुशासन', 'द्रव्यसंग्रह', 'इष्टोपदेश' तथा 'स्वयंभस्तोत्र' आदिके भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

३३ एलापुरनेमीश्वराष्टक–······। पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

३४ कलिकुण्डस्तोत्र–·······। पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३५ कल्याणमन्दिरस्तोत्र–कुमुदचन्द्र । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८६ ।

३६ कल्याणमन्दिरस्तोत्र–कुमुदचन्द्र । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

३७ कल्याणमन्दिरस्तोत्र–कुमुदचन्द्र । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४५८ ।

३८ कूष्माण्डिनीस्तोत्र······। पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह नेमिनाथ तीर्थङ्करकी यक्षी कूष्माण्डिनीका स्तोत्र है।

ग्रन्थ नं० १९७ ।

३९ कोल्लिपाकापुरचन्द्रनाथस्तोत्र······। पत्र सं०–३½ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

प्रारम्भिक पद्य–स जयति जिनचन्द्रस्सद्गुणाम्बोधिचन्द्रः कुगतिगजमृगेन्द्रस्तुंगभद्रो नगेन्द्रः ।
शमदमयमरुन्द्रश्चारुचारित्रसान्द्रश्चरणनतसुरेन्द्रः कोल्लिपाकापुरेन्द्रः
पाठान्तर–चन्द्रनाथो जिनेन्द्रः ॥१॥

ग्रन्थ नं० ३७८ ।

४० गणधरगद्य–······। पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

४१ गणधरस्तोत्र········। पत्र सं०–१½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

४२ गणधरस्तोत्र–········। पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८।

४३ गोम्मटजिनाष्टक—·········। पत्र सं०—½। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—७०। लिपि-कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३५३।

४४ गोम्मटेशाष्टक—·······। पत्र सं०—३। पंक्ति प्रतिपत्र—५। अक्षर प्रतिपंक्ति—४१। लिपि-कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—यह श्रवणबल्गोलस्थ श्री बाहुबली स्वामीकी स्तुति है।

ग्रन्थ नं० ३९३।

४५ गोम्मटेशाष्टक·········। पत्र सं०—२। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—४३। लिपि-कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८६।

४६ चतुर्विंशतिस्तोत्र—·······। पत्र सं०—२०। पंक्ति प्रतिपत्र—५। अक्षर प्रतिपंक्ति—७०। लिपि-कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४००।

४७ चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र—व्रती माघनन्दी। पत्र सं०—२। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति ४६। लिपि-कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३२८।

४८ चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र—·······। पत्र सं०—१½। पंक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपंक्ति—९२। लिपि-कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८३।

४९ चारणाष्टक—·······। पत्र सं०—१। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—८४। लिपि-कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९१।

५० चारुकीर्तिपण्डिताचार्यस्तुति—·······। पत्र सं०—४½। पंक्ति प्रतिपत्र—७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—यह श्रवणबेलगोलस्थ भट्टारक जीकी स्तुति है।

ग्रन्थ नं० ३८४।

५१ चन्द्रप्रभगद्य—कवि शब्दब्रह्म। पत्र सं०—२। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—६५। लिपि-कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—यह सिंहपुरस्थ चन्द्रप्रभस्वामीका स्तोत्र है। प्रतिमें इसका नाम 'उदाहरणमालिकापूजा' भी लिखा मिलता है।

ग्रन्थ नं० ४००।

५२ चन्द्रप्रभस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०—१। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—४०। लिपि-कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३७।

५३ चन्द्रप्रभाष्टक—·······। पत्र सं०—१। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—९६। लिपि-कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३९८।

५४ चन्द्रनाथस्तोत्र—·······। पत्र सं०—१½। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—६७। लिपि-कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३२८।

५५ **चन्द्रनाथाष्टक**–मुनिचन्द्र । पत्र सं०–१½ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४००।

५६ **चन्द्रनाथाष्टक**–······ । पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । बिषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९३ ।

५७ **चन्द्रनाथाष्टक**–······ । पत्र सं०–१½ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

५८ **जिनचतुर्विंशतिका**–कवि भूपाल । पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६७ ।

५९ **जिनचतुर्विंशतिका**–कवि भूपाल । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६६ ।

६० **जिनचतुर्विंशतिका**–कवि भूपाल । पत्र सं०–२½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३७३ ।

६१ **जिनचतुर्विंशतिका**–कवि भूपाल । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

६२ **जिनचतुर्विंशतिका**–कवि भूपाल । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४४ । लिपि कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७२ ।

६३ **जिनचतुर्विंशतिका**–कवि भूपाल । पत्र सं०–१½ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९१ ।

६४ **जिनचतुर्विंशतिका**–कवि भूपाल । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

६५ **जिनचतुर्विंशतिका**–कवि भूपाल । पत्र सं०–६½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १२२ ।

६६ **जिनशतक**–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष–इसमें महाकवि नरसिंह भट्ट कृत संस्कृत वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० २०५ ।

६७ **जिनशतक**-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६६ ।

६८ **जिनसहस्रनाम**-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५१७ ।

६९ **जिनसहस्रनाम**-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६३७ ।

७० **जिनसहस्रनाम**-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।
विशेष-इसमें नागार्जुनके कुछ यंत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

७१ **जिनसहस्रनाम**-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-४$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६७५ ।

७२ **जिनसहस्रनाम**-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

७३ **जिनाक्षरमाला**-महाकवि पोन्न । पत्र सं०-२$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४९ ।

७४ **जिनाक्षरमाला**-महाकवि पोन्न । पत्र सं०-२$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

७५ **तीर्थङ्कराष्टक**-········· । पत्र सं०-१$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

७६ **त्रैलोक्यरत्नामणिस्तव**-········ । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६७ ।

७७ **त्रैलोक्यचूडामणिस्तव**-········· । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५५ ।

७८ **त्रैलोक्यचूडामणिस्तव**-······· । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६८ ।

७९ **त्रैलोक्यचूडामणिस्तव**-········ । पत्र सं०-५$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष–इसका अपर नाम 'छत्तीसरत्नमाला' मिलता है।

ग्रन्थ नं० ३७१।

८० **त्रैलोक्यचिन्तामणिस्तव–**·······। पत्र सं०–४½। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४००।

८१ **दृष्टाष्टक–**मुनि सकलचन्द्र। पत्र सं०–१½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५७२।

८२ **दृष्टाष्टक–**मुनि सकलचन्द्र। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६६२।

८३ **दृष्टाष्टक–**मुनि सकलचन्द्र। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९१।

८४ **नवदेवतास्तोत्र–**·········। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६८९।

८५ **निजाष्टक–**आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–२½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'द्रव्यसंग्रह' भी है।

ग्रन्थ नं० ८२७।

८६ **नित्यानन्दाष्टक–**·········। पत्र सं०–३½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें बालचन्द्र कृत कन्नड टीका भी है एवं 'तार्किकरक्षा', 'द्रव्यसंग्रह' तथा 'नागकुमारचरित' आदिके कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३९८।

८७ **निर्मलरूपस्तवन–**······। पत्र सं०–२½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३७१।

८८ **निरञ्जनस्तोत्र–**·········। पत्र सं०–१½। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २९९।

८९ **निरञ्जनाष्टक–**·········। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६८९।

९० **निरञ्जनाष्टक–**······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० २५१।

९१ **निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र**······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४४।

९२ **निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र**-······। पत्र सं०-१½। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३८३।

९३ **निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र**-······। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-९२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४६२।

९४ **निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र**-······। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६६२।

९५ **निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र**-······। पत्र सं०-२½। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-३३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० २९२।

९६ **नेमिनाथस्तोत्र**-······। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५१।

९७ **परमानन्दस्तोत्र**-······। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५६।

९८ **परमानन्दस्तोत्र**-······। पत्र सं०-१। पंक्ति-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-९४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

९९ **पार्श्वजिनाष्टक**-······। पत्र-१½। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३५३।

१०० **पार्श्वनाथाष्टक**-······। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-(?) ×। अक्षर प्रतिपंक्ति-२९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-यह कनकगिरिस्थ श्री पार्श्वनाथका स्तोत्र है।

ग्रन्थ नं० ७७१।

१०१ **पार्श्वनाथाष्टक**-आचार्य इन्द्रनन्दी। पत्र सं०-७½। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-यह मंत्राक्षरयुक्त स्तोत्र है। इसमें पं० श्रुतकीर्ति विरचित संस्कृत टीका तथा दूसरा भी एक मंत्राक्षर-युक्त 'पार्श्वनाथाष्टक' है।

ग्रन्थ नं० ८८०।

१०२ **पार्श्वनाथाष्टक**-······। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें 'कलिकुण्डाराधना' 'गोम्मटाष्टक' तथा 'वेदीप्रतिष्ठा' आदि कई विषयोंके अधूरे पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३२०।

१०३ **पार्श्वनाथस्तोत्र**-विद्यानन्दी। पत्र सं०-२½। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३७८।

१०४ पार्श्वनाथस्तोत्र–······। पत्र सं०–४½। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–प्रतिमें इसका नाम 'पार्श्वनाथघोष' लिखा मिलता है।

ग्रन्थ नं० २३७।

१०५ पञ्चनमस्काराष्टक······। पत्र सं०–½। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३७।

१०६ पञ्चपदाष्टक–······। पत्र सं०–१। पंक्ति–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१०७ पञ्चपरमेष्ठिस्तोत्र–······। पत्र सं०–½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८२।

१०८ भक्तामरस्तोत्र–आचार्य मानतुंग। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३१५।

१०९ भक्तामरस्तोत्र–आचार्य मानतुंग। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५४।

११० भक्तामरस्तोत्र–आचार्य मानतुंग। पत्र सं०–२०½। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३८६।

१११ भक्तामरस्तोत्र–आचार्य मानतुंग। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

११२ भक्तामरस्तोत्र–आचार्य मानतुंग। पत्र सं०–५½। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४००।

११३ भक्तामरस्तोत्र–आचार्य मानतुंग। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४५९।

११४ भक्तामरस्तोत्र–आचार्य मानतुंग। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७७७।

११५ भक्तामरस्तोत्र–आचार्य मानतुंग। पत्र सं०–४½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत 'पार्श्वनाथाष्टक' भी है।

ग्रन्थ नं० ६६७।

११६ भैरवपद्मावतीस्तोत्र–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–१। पंक्ति–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३६६।

११७ मैलापुरनेमीश्वरस्तोत्र–······। पत्र सं०–१। पंक्ति–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३८३।

११८ मैलापुरनेमीश्वराष्टक–·········। पत्र सं०–½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९३।

११९ मैलापुरनेमीश्वराष्टक–·········। पत्र सं०–२½। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८९३।

१२० मङ्गलाष्टक–·········। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९६।

१२१ वर्द्धमानस्तवन–·········। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३९३।

१२२ वल्लभाष्टक–·········। पत्र सं०–१½। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रत्येक पद्यके अन्तमें 'वल्लभ' शब्द है।

ग्रन्थ नं० ३५५।

१२३ विषापहारस्तोत्र–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३६६।

१२४ विषापहारस्तोत्र–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–२½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६६२।

१२५ विषापहारस्तोत्र–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७६२।

१२६ विषापहारस्तोत्र–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–३½। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'स्वप्नावली' भी है।

ग्रन्थ नं० ७९७।

१२७ विषापहारस्तोत्र–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ८०४।

१२८ **विषापहारस्तोत्र**–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १९७।

१२९ **वृषभनाथगद्य**–·········। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३७।

१३० **वृषभनाथगद्य**–·········। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५७२।

१३१ **वृषभनाथगद्य**–कवि हस्तिमल्ल। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४००।

१३२ **वृषभाष्टक**–·········। पत्र सं०–१। पंक्ति–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१३३ **वृषभजिनाष्टक**–·········। पत्र सं०–$\frac{१}{२}$। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३३४।

१३४ **शारदास्तोत्र**–·······। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४००।

१३५ **शारदास्तोत्र**–·······। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९३।

१३६ **शङ्खदेवाष्टक**–भानुकीर्ति। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१३७ **शङ्खदेवाष्टक**–भानुकीर्ति। पत्र सं०–$\frac{१}{२}$। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४९९।

१३८ **शङ्खदेवाष्टक**–भानुकीर्ति। पत्र सं०–१। पंक्ति–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४७१।

१३९ **शान्त्यष्टक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–४$\frac{१}{२}$। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ८०६।

१४० **शान्त्यष्टक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें न्यायसम्बन्धी तथा 'दशवैकालिक' आदि के भी कुछ खण्डित पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३७४।

१४१ शान्त्यष्टकटीका–··········। पत्र सं०–५½। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८१३।

१४२ शान्तीश्वरनक्षत्रमाला–·········। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३५३।

१४३ षडारचक्रमाला–देवनन्दी। पत्र सं०–१। पंक्ति–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११।

१४४ समवसरणाष्टक–आचार्य विष्णुसेम। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १४९।

१४५ समवमरणस्तोत्र–आचार्य विष्णुसेन। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३४८।

१४६ समवसरणस्तोत्र–आचार्य विष्णुसेन। पत्र सं०–८½। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३८३।

१४७ समवसरणस्तोत्र–आचार्य विष्णुसेन। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१४८ समवसरणस्तोत्र–आचार्य विष्णुसेन। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५४७।

१४९ समवसरणस्तोत्र–आचार्य विष्णुसेन। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अतिजीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है, एवं 'शांत्यष्टक' 'एकीभावस्तोत्र' और 'विषापहारस्तोत्र' के कुछ खण्डित पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० ७४९।

१५० समवसरणस्तोत्र–आचार्य विष्णुसेन। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'सुप्रभातस्तोत्र' तथा 'स्वप्नावली' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७५६।

१५१ समवसरणस्तोत्र–आचार्य विष्णुसेन। पत्र सं०–१। पंक्ति–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–११९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८१९।

१५२ **समवसरणस्तोत्र**–आचार्य विष्णुसेन। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'नागकुमारचरित' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४००।

१५३ **समवसरणाष्टक**–········। पत्र सं०–१। पंक्ति–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१५४ **सरस्वतीरगले**–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३४६।

१५५ **सरस्वतीस्तोत्र**–········। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४५९।

१५६ **सरस्वतीस्तोत्र**–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६६२।

१५७ **सरस्वतीस्तोत्र**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६६२।

१५८ **सरस्वतीस्तोत्र**–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत 'रत्नत्रयस्तोत्र' भी है।

ग्रन्थ नं० ७५१।

१५९ **सरस्वतीस्तोत्र**–········। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें अग्गलदेव कृत कन्नड 'समवसरणगद्य' भी है।

ग्रन्थ नं० ७५३।

१६० **सरस्वतीस्तोत्र**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–६½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ८३४।

१६१ **सरस्वतीस्तोत्र**–········। पत्र सं०–१। पंक्ति–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'जिनसहस्रनाम', पंचपरमेष्ठिपूजा, 'जिनचतुर्विंशतिका' एवं 'एकीभावस्तोत्र' आदि ग्रन्थोंके भी अधूरे पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १५२।

१६२ **सहस्रनामस्तोत्र**–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३९६।

१६३ सिद्धगद्य–········। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६६२।

१६४ सिद्धस्तोत्र–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८८५।

१६५ सिद्धपरमेष्ठिगद्य–·········। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें तीर्थङ्करगद्य भी है।

ग्रन्थ नं० १९८।

१६६ सिद्धिप्रियस्तोत्र–आचार्य देवनन्दी। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका अपरनाम 'षडारचक्र' है। इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३०८।

१६७ सुप्रभातस्तोत्र·······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४००।

१६८ सुप्रभातस्तोत्र–·········। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४९९।

१६९ सुप्रभातस्तोत्र तथा स्वप्नावली–·······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें कन्नड 'निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र' भी है।

ग्रन्थ नं० ३२।

१७० स्तोत्रसंग्रह–(पंचस्तोत्र, चतुर्विंशतिस्तोत्र आदि) ·····। पत्र सं०–४३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध।

विशेष–इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' और 'दशभक्ति' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ९३।

१७१ स्तोत्रसंग्रह–·········। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–७३। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'थोस्सामि दण्डक' आदि कुछ स्तोत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १०७।

१७२ स्तोत्रसंग्रह–कवि भूपाल आदि। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'जिनचतुर्विशतिका', 'विषापहार', 'अकलंक', आदि स्तोत्र तथा 'तत्त्वार्थसूत्र' भी है।

ग्रन्थ नं० १६३।

१७३ स्तोत्रसंग्रह–कवि माणिकदेव। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह ग्रन्थ मंटूरके सुकवि माणिकदेवके द्वारा रचा गया है। इसमें चतुर्विंशतिस्तव, पार्श्वनाथ-स्तोत्र, जिनस्तवन आदि कई स्तोत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५१९।

१७४ **स्तोत्रसंग्रह**–आचार्य कोंडकुन्द आदि। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५३।

१७५ **स्तोत्रसंग्रह**–आचार्य मानतुंग आदि। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'भक्तामर', 'समवसरण', निर्वाणलक्ष्मीपति' आदि स्तोत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ७८३।

१७६ **स्तोत्रसंग्रह**–पण्डित आशाधर आदि। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'अर्हत्स्तोत्र' 'सिद्धस्तोत्र' 'गणधरस्तोत्र' 'रत्नत्रयस्तोत्र' तथा 'सरस्वतीस्तोत्र' हैं।

ग्रन्थ नं० ८८९।

१७७ **स्तोत्रसंग्रह**–कवि भूपाल आदि। पत्र सं०–१४३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'जिनचतुर्विंशतिका', 'मंगलाष्टक', 'दृष्टाष्टक', 'समवसरणाष्टक' 'अद्याष्टक' तथा अर्हत्-स्तोत्र है, एवं 'सिद्धभक्ति' 'नन्दीश्वरपूजा' तथा 'सिद्धपूजा' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४००।

१७८ **स्वप्नावलिस्तव**–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३६६।

१७९ **स्वयम्भूस्तोत्र**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४००।

१८० **स्वयम्भूस्तोत्र**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५१७।

१८१ **स्वयम्भूस्तोत्र**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७७७।

१८२ **स्वयम्भूस्तोत्र**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'जिनचतुर्विंशतिकास्तोत्र' आदि के भी कुछ पत्र हैं।

विषय- भजन तथा गीत

ग्रन्थ नं० ३२३ ।

१ उदयराग [प्राभातिक-गीत]–· · · · · । पत्र सं०–४३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–गीत । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

२ नेमिकुमारगीत–· · · · · · · · · । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–गीत । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

३ नन्दीश्वरगीत–· · · · · · · · । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३२९ ।

४ पद्मावतीभजन–· · · · · · · · · । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–भजन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८८ ।

५ पार्श्वनाथपञ्चकल्याणका गीत–· · · · · · · । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–गीत । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'नेमीश्वरमंगलारती' 'पंचाणुव्रतगीत' 'त्रिलोकचरित' तथा 'आदिनाथयक्षगान' भी है ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

६ भजनसंग्रह–· · · · · · · । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–भजन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३२ ।

७ भजनसंग्रह–· · · · · · · । पत्र सं०–७२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–भजन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८६ ।

८ भजनसंग्रह–· · · · · · · । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–भजन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९३ ।

९ भजनसंग्रह–· · · · · · · । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–भजन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४६५ ।

१० भजनसंग्रह–· · · · · · · । पत्र सं०–१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–भजन । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८२ ।

११ भजनसंग्रह–· · · · · · · । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–भजन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८१५ ।

१२ भजनसंग्रह–· · · · · · · · · । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७९ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–भजन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८६६।

१३ भजनसंग्रह–……। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–भजन। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८८६।

१४ भजनसंग्रह–…………। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–भजन। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'संध्यावन्दना' 'नवग्रहमंत्र' एवं २४ तीर्थंकरोंकी जयमाला भी है।

ग्रन्थ नं० १४५।

१५ षोडशभावनोदयराग–……। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गीत। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय–प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० २०६।

१ गायत्र्यादिसंग्रह–……। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह एक संग्रह-ग्रन्थ है। इसमें कई विषय हैं।

ग्रन्थ नं० २८४।

२ रत्नकरण्डश्रावकाचारादिसंग्रह–आचार्य समन्तभद्र आदि। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८८।

३ वाक्यमञ्जरी–अनन्तपण्डित। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४५१।

४ विवेकविलास–जिनदत्तसूरि। पत्र सं०–५५। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–८३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म, ज्योतिष आदि। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४५४।

५ विवेकविलास–जिनदत्तसूरि। पत्र सं०–७६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म, शिल्प आदि। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २८४।

६ सुभाषितसंग्रह–……। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६५७।

७ सुभाषितसंग्रह–……। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कुछ ग्राम्यगीत भी सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० २८२।

८ सुभाषित- वैद्य- ज्योतिषादिसंग्रह–······। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५४१।

९ सूक्तिमुक्तावली–पण्डित जल्हण। पत्र सं०–१०१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–विविध। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–यह एक संग्रहग्रन्थ है। इसके संग्रहकर्ता जल्हण राजा अरिवृन्दनाथके पुत्र हैं। इनके महीधर, शाम्ब और गंगाधर नामके तीन सहोदर थे। इनमें से महीधरने राजा विज्जणको युद्धमें परास्त किया था। यह उल्लेख ग्रन्थके प्रारम्भिक पद्योंमें मिलता है। इसमें 'प्रतापरुद्रीय' के भी कुछ खण्डित पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २२०।

१० सूक्तिसंग्रह–······। पत्र सं०–११०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–विविध। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ६९४।

११ संग्रह–······। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कई विषयोंके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ७३९।

१२ संग्रह–······। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'भाषामंजरी' 'क्षत्रचूडामणि' 'धन्यकुमारचरित' आदि कतिपय ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ७५७।

१३ संग्रह–आचार्य समंतभद्र आदि। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' 'श्रुतभक्ति' आदि कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ७६५।

१४ संग्रह–······। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'शाकटायनप्रक्रिया' 'समवसरणस्तोत्र' आदिके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ७६६।

१५ संग्रह–······। पत्र सं०–१३०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें व्याकरण, धर्म, न्यायादि अनेक विषयोंके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं।

ग्रन्थ नं० ८०३।

१६ संग्रह–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–६८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'प्रतिक्रमण' 'वृत्तरत्नाकर' 'प्रश्नोत्तररत्नमाला' आदिके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं।

ग्रन्थ नं० ८१०।

१७ **संग्रह**–पण्डित आशाधर आदि। पत्र सं०–७६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'सरस्वतीस्तोत्र' 'गणधरस्तोत्र' पंचपरमेष्ठिस्तोत्र' तथा 'रघुवंश' आदिके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं।

ग्रन्थ नं० ८२६।

१८ **संग्रह**–आचार्य समन्तभद्र आदि। पत्र सं०–१२४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत, प्राकृत तथा कन्नड। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' 'मुनिसुव्रत-काव्य' आदि कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं।

ग्रन्थ नं० ८३३।

१९ **संग्रह**–कल्याणकीर्ति आदि। पत्र सं०–९३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड, प्राकृत, संस्कृत तथा तमिल। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'ज्ञानचन्द्राभ्युदय' 'दृष्टाष्टक' 'मंगलाष्टक' आदि कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं।

ग्रन्थ नं० ८८७।

२० **संग्रह**–भ० चारुकीर्ति आदि। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–विविध। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'गीतवीतराग' 'मंगलाष्टक' 'महाभिषेक' तथा पूजा आदि कई विषयोंके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं।

मूडबिद्री जैनभवनके ताडपत्रीयग्रन्थ

विषय–सिद्धान्त

ग्रन्थ नं० २०४।

१ कम्मपयडि [कर्मप्रकृति]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४७।

२ कर्मप्रकृतिनिरूपण–आचार्य अभयनन्दी। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३६।

३ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७१। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें केशववर्णकी कर्णाटकवृत्ति है।

ग्रन्थ नं० १८४।

४ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ५९।

५ गोम्मटसारकर्मकाण्डस्थसंदृष्टि–······। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–२०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–नागरी। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११७।

६ चतुर्बन्धनिरूपण–······। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार पायण्ण सेट्टि हैं।

ग्रन्थ नं० ७।

७ तत्त्वानुशासन–मुनि नागसेन। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११७।

८ तत्त्वानुशासन–मुनि नागसेन। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८७।

९ तिभंगी–सिद्धान्तचक्रवर्ती कनकनंदी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

१० **दंसणसार [दर्शनसार]**-आचार्य देवसेन । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २९ ।

११ **दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]**-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है इसमें दो पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

१२ **दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]**-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

विशेष-इसमें श्री बालचन्द्रदेवकी कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० २०४ ।

१३ **दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]**-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २०६ ।

१४ **दव्वसंगह [द्रव्यसंग्रह]**-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसकी गाथा संख्या ८९ है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१५ **पदार्थसार**-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-२२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह आचार्य माघनन्दी कुमुदचन्द्रदेवके शिष्य हैं।

अन्तिम पद्य-नमो नम्रजनानादस्यन्दिने माघनन्दिने । जगत्प्रसिद्धसिद्धान्तवेदिने चित्प्रमोदिने ॥
सिद्धान्तसारसर्वस्वकोशावासैकमूर्तये । नमः श्रीमाघनन्द्याख्यविश्वविख्यातकीर्तये ॥

ग्रन्थ नं० ७८ ।

१६ **पदार्थसार**-आचार्य माघनंदी । पत्र सं०-८६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंवित-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २२८ ।

१७ **पदार्थसार**-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

ग्रन्थ नं० २४० ।

१८ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

१९ पवयणसार [प्रवचनसार]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४६५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १४६५ विकारी सं० श्रुतपञ्चमीके दिन पेरुवलु शांति सेट्टीके पुत्र वर्धमान सेट्टीने इस ग्रन्थको लिखकर पूर्ण किया था । इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

२० पंचत्थिकाय [समयसार]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-९४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें नयकीर्तिदेवके शिष्य मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

२१ पञ्चसंसारविस्तर······ । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

मङ्गलाचरण-पञ्चसंसारमुक्तेभ्यः सिद्धेभ्यः खलु सर्वदा । नमस्कृत्वा प्रवक्ष्येऽहं पञ्चसंसारविस्तरम् ॥

ग्रन्थ नं० २९ ।

२२ भव्यराशिपरिमाण-······ । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२२ ।

२३ वीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है। इसके प्रतिलिपिकार भट्टारक सोमसेनके प्रिय शिष्य अभिनव समन्तभद्रदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

२४ सक्कम्मपंचिय [सत्कर्मपञ्जिका]-······ । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-२५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १९४१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

२५ समयसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि० शक १४६५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका है । प्रतिलेखक वर्धमान सेट्टि हैं ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

२६ स्याद्वादमतसिद्धान्त-श्री चन्दय्य उपाध्याय । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विषय–अध्यात्म

ग्रन्थ नं० १२२।

१ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–९३। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है। इसके प्रतिलिपिकार अभिनव समन्तभद्रदेव हैं।

ग्रन्थ नं० १९२।

२ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–८८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–अति शिथिल।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० २३१।

३ **आत्मानुशासन**–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–५८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि०शक १३००। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–अति शिथिल।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है

ग्रन्थ नं० २६६।

४ **आत्मोदयसार**–······। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–अति शिथिल।

ग्रन्थ नं० ११७।

५ **चिन्मयचिन्तामणि**–श्री कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १३८।

६ **चिन्मयचिन्तामणि**–मुनि कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४३।

७ **चिन्मयचिन्तामणि**–मुनि कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

ग्रन्थ नं० १५०।

८ **जीवसम्बोधन**–श्री बंधुवर्म। पत्र सं०–११४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह ग्रन्थ प्रकाशनीय है।

ग्रन्थ नं० १३७।

९ **परमप्पयासु [परमात्मप्रकाश]**–आचार्य योगीन्द्रदेव। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका भी है।

मङ्गलाचरण–जे आया झाणग्गीये कम्मकलंक डहेवि। णिच्च णिरंजणणाणमया ते परमप्प णवेवि॥

ग्रन्थ नं० २४६।

१० **परमात्मस्वरूप**–आचार्य अमितगति। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका अपर नाम 'सामायिकपाठ' भी है।

ग्रन्थ नं० २९।

११ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० १८१।

१२ **समाधिशतक**–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

विशेष–इसमें श्री बालचन्द्रदेवकी कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० २९।

१३ **स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति**–आचार्य अकलङ्कदेव। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है।

विषय–धर्म

ग्रन्थ नं० ८७।

१ **अनगारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११७।

२ **आप्तस्वरूप**–·········। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

मङ्गलाचरण–सर्वेन्द्रस्तुत्यपादाब्जं सर्वज्ञं दोषवर्जितम्। श्रीजिनाधीश्वरं नौमि परमानन्दमक्षयम्॥

आप्तागमः प्रमाणं स्याद्यथावद्वस्तुसूचकः। यस्तु दोषैर्विनिर्मुक्तस्सोऽयमाप्तो निरञ्जनः॥

ग्रन्थ नं० २९।

३ **आराहणासार [आराधनासार]**–आचार्य देवसेन। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ७१।

४ **आराधनासमुच्चय**–मुनि रविचन्द्र। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८७।

५ आराधनासमुच्चय–मुनि रविचन्द्र। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसे मुनि रविचन्द्रने पनसोगे ग्राम में रचा है।

ग्रन्थ नं० २९।

६ इष्टोपदेश–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ११७।

७ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'पद्मनन्दिपञ्चविंशति' का एक प्रकरण है।

ग्रन्थ नं० १३७।

८ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'पद्मनन्दिपंचविंशति' का एक प्रकरण है।

ग्रन्थ नं० २९।

९ एकत्वसप्तति–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें केशवण्णकृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १८१।

१० एकत्वसप्तति–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

विशेष–इसमें श्री बालचन्द्रदेवकी कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० २९।

११ गुणप्रकाशक–······। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्माधर्मस्वरूपविवरण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

श्रीवर्धमानमानम्य धर्माधर्मस्वरूपकम्। गुणप्रकाशकं नाम वक्ष्ये भव्योपकारकम्।

ग्रन्थ नं० ४४।

१२ जिनमुनितनय–नागचन्द्र। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९०।

१३ जिनमुनितनय–कवि नागचन्द्र। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १३४।

१४ जिनमुनितनय–कवि नागचन्द्र। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–अति शिथिल।

ग्रन्थ नं० २५४।

१५ जिनमुनितनय–कवि नागचन्द्र। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७६।

१६ **तत्त्वार्थसूत्र**–आचार्य उमास्वामी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७२।

१७ **तत्त्वार्थसूत्र**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १९०।

१८ **तीर्थङ्करनामावली**–······। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें पंचभरत और पंच ऐरावत क्षेत्रोंके त्रिकाल तीर्थङ्करोंके नाम प्रतिपादित हैं।

ग्रन्थ नं० ३१।

१९ **त्रैवर्णिकाचार**–श्री ब्रह्मसूरि। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–७६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५१।

२० **त्रैवर्णिकाचार**–श्री ब्रह्मसूरि। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–४०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–कागज। लेखनकाल–सन् १८३९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मैसूरके ब्रह्मदेवय्य हैं।

ग्रन्थ नं० १३०।

२१ **त्रैवर्णिकाचार**–श्री ब्रह्मसूरि। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५७।

२२ **दानसार**–ऋषि वासुपूज्य। पत्र सं०–८४। पंक्ति प्रतिपत्र–१७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४२।

२३ **द्वादशानुप्रेक्षा**–विजयण्ण। पत्र सं०–५७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १३१।

२४ **द्वादशानुप्रेक्षा**–विजयण्ण। पत्र सं०–१२९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'सांगत्य' पद्य में है।

ग्रन्थ नं० १८५।

२५ **द्वादशानुप्रेक्षा**–विजयण्ण। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३०।

२६ **द्वादशानुप्रेक्षा**–विजयण्ण। पत्र सं०–५७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार श्री शान्तिसागरवर्णी हैं।

ग्रन्थ नं० २४५।

२७ **द्वादशानुप्रेक्षा**–विजयण्ण। पत्र सं०–५४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १३७।

२८ **द्वादशानुप्रेक्षा**–आचार्य सोमदेव। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५१।

२९ **द्वादशानुप्रेक्षा**–वादीभसिंह। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'क्षत्रचूडामणि' काव्य से उद्धृत है। इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३८।

* ३० **द्विजवदनचपेटा**–अश्वघोष भिक्षु। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका अपर नाम 'लघुषड्दर्शनसमुच्चय' भी है।

ग्रन्थ नं० १३७।

३१ **नीतिसारसमुच्चय**–आचार्य इन्द्रनन्दी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४०।

३२ **पद्मनन्दिपञ्चविंशति**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २६६।

३३ **परमागमसार**–······। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–शिथिल।

विशेष–यह कन्नड गद्यरूप है।

ग्रन्थ नं० ११७।

३४ **पायच्छित [प्रायश्चित] विधि**–······। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० १६५।

३५ **पञ्चपरमेष्ठिव्याख्यान**–······। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४२।

३६ **पञ्चपरमेष्ठिव्याख्यान**–······। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७६। लिपि कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

ग्रन्थ नं० १३७।

३७ **प्रश्नोत्तररत्नमाला**–अमोघवर्ष। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १७३।

३८ **प्रश्नोत्तररत्नमाला**–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८७।

३९ **प्रायश्चित्त**–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १८९।

४० **प्रायश्चित्तविधि**–······। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४६।

४१ **प्रायश्चित्तविधान**–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह कन्नड गद्यमें है।

ग्रन्थ नं० २९।

४२ **बारस अणुपेहा [द्वादशानुप्रेक्षा]**–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ४०।

४३ **बारस अणुपेहा [द्वादशानुप्रेक्षा]**–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४१।

४४ **बारस अणुपेहा [द्वादशानुप्रेक्षा]**–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८७।

४५ **बारस अणुपेहा [द्वादशानुप्रेक्षा]**–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४४।

४६ **भव्यामृत**–········। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २५४।

४७ **भव्यामृत**–········। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८७।

४८ **भव्यानन्दशास्त्र**–पाण्ड्यभूपति। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४०।

४९ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–६४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है। इसके प्रतिलिपिकार मूलकी अनन्नय्य इन्द्रके पुत्र चन्दय्य इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७०।

५० **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–४३३। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–कागज। लेखनकाल–विक्रम शक १९२९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें पं० सदासुखकी हिन्दी वचनिका भी है।

ग्रन्थ नं० ७६।

५१ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १२२।

५२ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–९३। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें आचार्य प्रभाचन्द्रदेवकी संस्कृत टीका भी है। इसके प्रतिलिपिकार भट्टारक सोमसेनके प्रिय शिष्य अभिनव समन्तभद्रदेव हैं।

ग्रन्थ नं० १७०।

५३ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–१०८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० २०४।

५४ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें १९२ श्लोक हैं। विचारणीय है।

ग्रन्थ नं० २१४।

५५ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है। इसकी श्लोकसंख्या २०४ है।

ग्रन्थ नं० २७।

५६ **रत्नमाला**–आचार्य शिवकोटि। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १७३।

५७ **रत्नमाला**–आचार्य शिवकोटि। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४६।

५८ **रत्नमाला**–आचार्य शिवकोटि। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४१।

५९ **रयणसार**–आचार्य कुंदकुंद । पत्र सं०–१४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५६ ।

६० **विद्यादिपद्धति**–······ । पत्र सं०–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'विद्यापद्धति' 'दानपद्धति' आदि बारह पद्धतियाँ हैं ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

६१ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

६२ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

६३ **शास्त्रसारसमुच्चय**-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०–३० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत और कन्नड । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९५ ।

६४ **शिवलिङ्गमाहात्म्य**–········ । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

६५ **श्रावकाचार**–आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०–१२८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–शालि० शक १६४२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार नगलेग्रामके राजय्य हैं । इसे नगले देवरसय्यके पुत्र बोम्मरसय्यने लिखवाया है।

ग्रन्थ नं० १० ।

६६ **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

६७ **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–२१ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें आचार्य चन्द्रकीर्तिके शिष्य श्रुतकीर्तिकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४१ ।

६८ **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११७।

६९ **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९८ ।

७० **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १६५ ।

७१ **समवसरणस्वरूपविवरण**–मुनि विजयण्ण । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यह षट्पदिपद्यमें है । प्रकाशनीय है ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

७२ **सागारधर्मामृत**–पं० आशाधर । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०६ ।

७३ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–५० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १२८ ।

७४ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ टीका है । इसका अपर नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । इसके प्रतिलिपिकार ब्रह्मसूरि हैं ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

७५ **सिद्धपरमेष्ठिस्वरूप**–······ । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

७६ **सूक्तिमुक्तावली**–आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–सोमप्रभदेव आचार्य अजितदेवके शिष्य विजयसिंहके प्रशिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ४१

७७ **सूक्तिमुक्तावली**–आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०–४३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९८ ।

७८ **सूक्तिमुक्तावली**–आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०–५८ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

विषय–योगशास्त्र

ग्रन्थ नं० ९७।

१ **योगामृत**–······।पत्र सं०–१३।पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–योगशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि०शक–१७८२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री चोलसेट्टिबसदि मंजप्प इन्द्रके पुत्र पुरोहित पाचप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० २७९।

२ **योगामृत**–······।पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–योगशास्त्र ; वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय–प्रतिष्ठा

ग्रन्थ नं० १२।

१ **जिनसंहिता**–आचार्य एकसंधि। पत्र सं०–६२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें अन्तके दो पत्र नहीं हैं। ग्रन्थ सटिप्पण है।

ग्रन्थ नं० १३।

२ **जिनसंहिता**–आचार्य एकसंधि। पत्र सं०–१०९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–अन्तके दो पत्र नहीं हैं। क्लिष्ट शब्दोंका अर्थ भी दिया गया है।

ग्रन्थ नं० ३४।

३ **जिनसंहिता**–आचार्य एकसंधि। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कठिन शब्दोंका अर्थ भी दिया गया है।

ग्रन्थ नं० २४१।

४ **जिनसंहिता**–आचार्य एकसंधि। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

ग्रन्थ नं० १८९।

५ **जिनसंहिता**–आचार्य इन्द्रनन्दी। पत्र सं०–६६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपत्र–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १९४।

६ **पञ्चकल्याणविधि**–नेमिचन्द्र। पत्र सं०–५७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री हिरेबसदि पाचप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५१।

७ **प्रतिष्ठाकल्प**–भट्टाकलंकदेव। पत्र सं०–७४। पंक्ति प्रतिपत्र–४०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–सन् १८३९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मैसूरके ब्रह्मदेवय्य हैं।

ग्रन्थ नं० ४७।

८ **प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि**–आचार्य कुमुदचन्द्र। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५३।

९ **प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि**–आचार्य कुमुदचन्द्र। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–वीर शक २४५२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११।

१० **प्रतिष्ठातिलक**–नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१०९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके अन्तमें ग्रन्थकर्ताकी प्रशस्ति है। मुद्रित प्रशस्तिसे इसमें इतनी विशेषता है—

श्रीजैनागमवेदी गुणमणिगणरचितभूषणधारी।
सोमरसनामसूरिर्जयति जिनेशाङ्घ्रि वनजलीनालिः॥१॥
पायात्सदा निर्मलदिव्यचित्तं रत्नत्रयालङ्कृतसौख्यदेहम्।
श्रीपार्श्वनाथस्सुजनैकसेव्यं सोमात्तनामाङ्कितभव्यरत्नम्॥२॥
श्रीवीरद्रुमपत्तनावृतनदीतीरे सुचैत्यालये
पीठे निर्मलसिंहलाञ्छनयुते संरूढपार्श्वं प्रभोः।
नित्यार्च्यर्चनतत्परस्य लिखितः श्रीनेमिचन्द्रोत्तमे
नात्तः सोमरसाह्वयस्य सकलप्रीत्यर्हपूजाक्रमः॥३॥
श्रीमत्स्वर्णमहीधराग्रविलसच्छ्रीपार्श्वनाथाङ्घ्रि-
केजद्वन्द्व विलीनमत्तमधुपस्याख्यादिनाथस्य च।
श्रीवत्सान्वयपूर्णचन्द्रसदृशश्रीशान्तिनाथस्यसत्त-
पुत्रेणार्हमहामहं विलिखितं सोमात्तनाम्ना च ते॥४॥

ग्रन्थ नं० १५।

११ **प्रतिष्ठातिलक**–ब्रह्मसूरि। पत्र सं०–४४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें नं० ३१ से ४९ तक के पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० ५१।

१२ **प्रतिष्ठातिलक**–ब्रह्मसूरि। पत्र सं०–११०। पंक्ति प्रतिपत्र–४०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–सन् १८३९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–प्रतिलिपिकार मैसूर के ब्रह्मदेवय्य हैं।

ग्रन्थ नं० २६।

१३ **प्रतिष्ठाविधि अथवा विधान**–हस्तिमल्ल। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५२।

१४ **प्रतिष्ठासारसंग्रह**–पण्डित अय्यप्पार्य। पत्र सं०–१०९। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–देवनागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका अपर नाम 'जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय' है।

ग्रन्थ नं० १७।

१५ **प्रतिष्ठासारोद्धार**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–५६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका अपरनाम 'जिनयज्ञकल्प' है। इसे विजयण स्वामीके शिष्य पार्श्वने लिखा हैं।

ग्रन्थ नं० १८६।

१६ **प्रतिष्ठासारोद्धार**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–७८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार श्रीचारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य मुनिचन्द्रदेव हैं।

विषय–पूजापाठ, आराधना तथा व्रतविधान

ग्रन्थ नं० २४१।

१ **अष्टमनन्दीश्वरपूजा**–विद्यानन्द। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १९१।

२ **आराधनायन्त्रसंग्रह**–······। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५१।

३ **ऋषिमण्डलाराधना**–मुनि गुणनन्दी। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७१।

४ **ऋषिमण्डलाराधना**–मुनि गुणनन्दी। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २१।

५ **कर्मदहनाराधना**–······। पत्र सं०–२४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३६।

६ **कर्मदहनविधान**–श्री चन्द्रकीर्ति। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५५।

७ **कर्मदहनादिविधानसंग्रह**–······। पत्र सं०–७१। पंक्ति प्रतिपत्र–१८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–सन् १९२७। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार पडुबसदि पाचप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० ८१।

८ **क्षेत्रपालपूजा**······। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

९ **गणधरवलयविधान**–······। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल––×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७।

१० **गणधरवलयाराधना**–······। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–१९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६७।

११ **गोमारियन्त्राराधना**–······। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–१९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६।

१२ **चक्रवालव्रतविधान**–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रतविधान। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १०६।

१३ **चारित्रसिद्धिव्रतविधान**–······। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रतविधान। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६।

१४ **जिनगुणसंपत्तिव्रतविधान**–······। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रतविधान। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३७।

१५ **ध्वजार्चनाविधि**–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९६।

१६ **नान्दिमङ्गलविधान**······। पत्र सं०–८६। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १९७।

१७ **नान्दिमङ्गलविधान**–······। पत्र सं०–५६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पूजा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १५४।

१८ **नान्दिमङ्गलादिपूजापाठसंग्रह**–······। पत्र सं०–१७०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २०।

१९ **नित्यपूजाविधि**–······। पत्र सं०–१२७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १७२२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें मंगलाष्टक, वज्रपाणि, भूमिशुद्धिविधान, पंचपरमेष्ठि-नवदेवता-षोडशभावनापूजा, महाभिषेकविधान, विमानशुद्धिविधान आदि कई विषय हैं। –शालि० शक १७२२ रौद्री सं० भाद्रपद शु० ९ मडबिद्रि कोटि सेट्टि बसदिमें पद्मय्य उपाध्यायने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० २१ ।

२० पल्यविधान–······ । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्रतविधान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–आचार्यं महावीर्यं प्रणम्य (?) कल्याणनायकम् । भक्त्या पल्योपवास-लक्षणं विधीयते सम्यक् ॥

प्रतिलिपिकार नेमण्ण उपाध्याय हैं ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

२१ पल्यविधान–······ । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्रतविधान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

२२ पूजापाठसंग्रह–······ । पत्र सं०–१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २२४ ।

२३ पूजासंग्रह–······ । पत्र सं०–४० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं ४७ ।

२४ पूजाफलादिलक्षणसंग्रह–······ । पत्र सं०–२५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१ ।

२५ पूजापूजकलक्षण–आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

२६ पञ्चपरमेष्ठिआराधना–······ । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–आराधना । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११६ ।

२७ पंचमंदरपूजा–······ । पत्र सं०–२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–शिथिल ।

विशेष–इसमें अष्टमनन्दीश्वरद्वीपकी पूजा भी है ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

२८ भुजबलीकल्याणव्रतविधान–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्रतविधान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसके रचयिता पद्मनंदी हैं । यह देवेंद्रकीर्तिके शिष्य श्रुतकीर्तिके प्रशिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ६६ ।

२९ भैरवाराधना–······ । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–१७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–आराधना । वस्तु–कागज । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९४ ।

३० महाभिषेकादिपूजाविधि–······ । पत्र सं०–१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–

४०। लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें महाशांति, वास्तु, नान्दीमंगल आदि भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १४७ ।

३१ **महाभिषेकादिपूजासंग्रह**–·······। पत्र सं०–६० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा तथा आराधना । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'कलिकुण्ड', 'वज्रपंजर', 'मृत्युंजय' आदि आराधनाओंका संग्रह भी है ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

३२ **मुक्तावलिविधान**–······। पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्रतविधान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

३३ **रत्नत्रयविधान**–······। पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्रतविधान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५१ ।

३४ **शान्तिचक्राराधना**–······। पत्र सं०–१४ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–आराधना । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

३५ **श्रुतस्कन्धाराधना**–विजयवर्णी । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–आराधना । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–श्रीमूलसंघ, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगणके आचार्य महेन्द्रकीर्तिके शिष्य, ज्ञानभूषणके प्रशिष्य विजयवर्णीने श्रीमुख सं० कार्तिक शु० १४ में इसकी रचना की है ।

ग्रन्थ नं० ११६ ।

३६ **श्रुतस्कन्धाराधना**–मुनि विजयकीर्ति । पत्र सं०–३१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–आराधना । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

३७ **श्रुतज्ञानविधान**–विजयवर्णी । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्रतविधान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–श्रीचन्द्रमके पुत्र पार्श्वनाथने इसकी प्रतिलिपि की है ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

३८ **सर्वदोषपरिहारविधान**–······। पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–व्रतविधान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

३९ **सहस्रनामाराधना**–······। पत्र सं०–३० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसे नेमण्ण उपाध्यायने लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ५६।

४० सहस्रनामाराधना-······। पत्र सं०-७१। पंक्ति प्रतिपत्र-२०। अक्षर प्रतिपंक्ति-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-आराधना। वस्तु-कागज। लेखनकाल-सन् १९२७। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसे पडुबस्ति पाचप्प इन्द्रने लिखा है।

ग्रन्थ नं० १९।

४१ सिद्धचक्रार्चनाष्टक-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

सिद्धचक्रं प्रणम्यादौ सिद्धचक्रार्चनाष्टके।
निबन्धं रचयन्त्येते श्रुतसागरसूरयः॥ १॥

विशेष-इसमें श्रुतसागरकी संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ८७।

४२ सिद्धचक्रपूजा-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६।

४३ संक्षिप्तश्रुतज्ञानविधान-उपाध्याय चन्द्रम। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-३८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रतविधान। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विषय-न्याय तथा दर्शन,

ग्रन्थ नं० २१२।

१ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २२०।

२ तत्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार-स्वामी विद्यानन्द। पत्र सं०-७१। पंक्ति प्रतिपत्र-१४। अक्षर प्रतिपंक्ति १०२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-अति शिथिल।

ग्रन्थ नं० २५२।

*३ तर्कचिन्तामणि-महामहोपाध्याय गंगेश्वर। पत्र सं०-९१। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति १००। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-अति शिथिल।

ग्रन्थ नं० २६८।

*४ तर्कसंग्रह-·······। पत्र सं०-३१। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८८।

*५ तार्किकरक्षा-वरदराज। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १ ।

६ **न्यायविनिश्चयालंकार**–मूलकर्ता–अकलंकदेव । टीकाकर्ता–वादिराजसूरि । पत्र सं०–३०२ । पंक्ति–प्रतिपत्र–····। अक्षर प्रतिपंक्ति–····। लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसका अपर नाम 'व्याख्यानरत्नमाला' है ।

ग्रन्थ नं० ७२ ।

७ **न्यायविनिश्चयालंकार**–अकलंकदेव । पत्र सं०–२७७ । पंक्ति प्रतिपत्र–×। अक्षर प्रतिपंक्ति–× । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८ ।

८ **पत्रपरीक्षा**–आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम।

विशेष–इस में 'आप्तपरीक्षा' के मूलश्लोक भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ८८ ।

९ **परीक्षामुखसूत्र**– आचार्य माणिक्यनंदी । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५८ ।

१० **परीक्षामुखसूत्र**–आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५८ ।

११ **प्रमेयरत्नमाला**–आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०–५८ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

१२ **प्रवचनपरीक्षा**–आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०–२१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१२ ।

१३ **षडदर्शनप्रपंच**–······ । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विषय–कोश

ग्रन्थ नं० ८६ ।

१ **अमरकोश**–अमरसिंह । पत्र सं०–४६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०३ ।

२ **अमरकोश**–अमरसिंह । पत्र सं०–७५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें श्री विट्ठलकृत विदग्धचूडामणिनामक कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११२।

३ **अमरकोश**–अमरसिंह। पत्र सं०–६५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २२५।

४ **अमरकोश**–अमरसिंह। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपत्र–३६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेय–इसमें 'धनंजय नाममाला' भी है।

ग्रन्थ नं० २४४।

५ **अमरकोश**–अमरसिंह। पत्र सं०–१३५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडविद्री होसबसदि पाचप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० २४७।

६ **अमरकोश**–अमरसिंह। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८७।

७ **नाममाला**–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। वस्तु ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १३३।

८ **नाममाला**–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–१८। प्रंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें शब्दरूपावली, धातुपाठ और समासचक्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० १७३।

९ **नाममाला**–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १९३।

१० **नाममाला**–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २२३।

११ **नाममाला**–महाकवि धनंजय। पत्र सं०– ४१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३४।

१२ **नाममाला**–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० २५४।

१३ **नाममाला**–महाकवि धनंजय। पत्र सं०–४४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

विषय–व्याकरण

ग्रन्थ नं० २१८।

१ कातन्त्र–शर्ववर्म । पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण । वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसका अपर नाम 'कौमार' है।

ग्रन्थ नं० २५५।

२ कातन्त्ररूपमाला–भावसेन त्रैविद्य। पत्र सं०–६८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। वस्तु ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १९९।

३ धातुपाठादिसंग्रह–आचार्य शाकटायन। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'शब्दरूपावली' 'समासचक्र' आदि भी हैं।

ग्रन्थ नं० १०२।

४ मन्त्रव्याकरण–······। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसके अंतमें 'इति समन्तभद्रस्वामिकृत मंत्रव्याकरणम्' यह वाक्य मिलता है।

ग्रन्थ नं० १६२।

५ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–७७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २०२।

६ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८।

***७ सारस्वतव्याकरण**–······। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

प्रणम्य परमात्मानं बालधीवृद्धिसिद्धये। सारस्वतीमृजुं कुर्वे प्रक्रियां नातिविस्तराम्॥

ग्रन्थ नं० ९१।

***८ सारस्वत**–······। पत्र सं०–९०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार कवि निम्मणके पुत्र महाबल हैं।

विषय-काव्य

ग्रन्थ नं० २०० ।

१ **काव्यसारसंग्रह**-······। पत्र सं०-५६। पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १६७ ।

२ **क्षत्रचूडामणि**-वादीभसिंह । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०५ ।

३ **चन्द्रप्रभचरित**-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-९८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

ग्रन्थ नं० २२ ।

४ **जयनृपकाव्य**-प्रभुराज मंगरस । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । षट्पदि । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १७१ ।

५ **जयनृपकाव्य**-प्रभुराज मंगरस । पत्र सं०-८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७७ ।

६ **ज्ञानचन्द्राभ्युदय**-कवि कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

७ **नागकुमारकाव्य**-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३१ ।

८ **नागकुमारकाव्य**-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिप्रत्र-८ अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अतिशिथिल ।

ग्रन्थ नं० १६८ ।

९ **मुनिसुव्रतकाव्य**-पण्डित अर्हद्दास । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९५ ।

१० **मुनिसुव्रतकाव्य**-पण्डित अर्हद्दास । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २५७ ।

११ **मुनिसुव्रतकाव्य**-पण्डित अर्हद्दास । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३२ ।

१२ **यशोधरकाव्य**-महाकवि वादिराजसूरि । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षरप्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-साहित्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें सिर्फ चार सर्ग हैं ।

विषय–अलङ्कार आदि

ग्रन्थ नं० ७९।

१ अलङ्कार संग्रह–अमृतानन्दी। पत्र सं०–३१। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलङ्कार। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४०।

*२ काव्यादर्श–महाकवि दण्डी। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अलङ्कार। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–छन्दः शास्त्र

ग्रन्थ नं० २७७।

*१ वृत्तरत्नाकर–केदारभट्ट। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–छन्दःशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७७।

*२ शृङ्गारमञ्जरी–········। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–छन्दःशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ नं० १४३।

१ नीतिश्लोकसंग्रह–······। पत्र सं०–५१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २००।

२ नीतिसारसंग्रह–········। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–११४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत और कन्नड। विषय–नीति। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४८।

*३ शतकत्रय–श्री भर्तृहरि। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति आदि। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि०शक १७११। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री चन्दय्य सेट्टि हैं।

ग्रन्थ नं० १२५।

४ सुभाषितपद्यसंग्रह–·········। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत और कन्नड। विषय–सुभाषित। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय-पुराण

ग्रन्थ नं० २१७।

१ **अर्द्धनेमिपुराण**-कवि नेमिचन्द्र। पत्र सं०-१०३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७४।

२ **अर्द्धनेमिपुराण**-कवि नेमिचन्द्र। पत्र सं०-१०३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-६१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४।

३ **आदिपुराण**-महाकवि पंप। पत्र सं०-१२९। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक १४८५। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसे शालिवाहन शक १४८५ दुर्मति संवत्सर ज्येष्ठ शुक्ल १५, बुधवार के दिन मेलु बंगवाडी के पद्मरस ने लिखकर पूर्ण किया था।

ग्रन्थ नं० ८।

४ **आदिपुराण**-महाकवि पंप। पत्र सं०-११३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसे आदिशान्तय्यके पुत्र गुम्मटने लिखा है। उम्मक्क-पम्मक्कने शास्त्रदानके लिये इनसे लिखवाया है।

ग्रन्थ नं० १७६।

५ **आदिपुराण**-महाकवि पंप। पत्र सं०-१०१। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-९७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९८।

६ **आदिपुराण**-आचार्य जिनसेन। पत्र सं०-१६३। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४६।

७ **आदिपुराण**-········। पत्र सं०-२१। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-यह कन्नडगद्यरूप है।

ग्रन्थ नं० २।

८ **उत्तरपुराण**-आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०-१६१। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-११२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि०शक १८२४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें क्लिष्ट शब्दों का अर्थ भी दिया गया है।

ग्रन्थ नं० ७४।

९ **उत्तरपुराण**-आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०-१८६। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-९७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक ८२४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें ग्रन्थसमाप्तिकाल शकनृपकालानतिसंवत्सरशतेषु अष्टसु चतुर्विंशत्यधिक दुंदुभि सं० कार्तिक कृष्ण ५। यों लिखा है।

ग्रन्थ नं० ७४।

१० उत्तरपुराण टिप्पणी—······। पत्र सं०—४१। पंक्ति प्रतिपत्र—१०। अक्षर प्रतिपंक्ति—१००। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० १६३।

११ चतुर्विंशतितीर्थंकरलघुपुराण—······। पत्र सं०—३९। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—२४। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—पुराण। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

विशेष—इसमें कई स्त्रोत्रोंका संग्रह है। इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य कंचिदेशके अय्यण्ण हैं।

ग्रन्थ नं० ७।

१२ चंद्रप्रभपुराण—अग्गलदेव। पत्र सं०—१८०। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—६४। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—पुराण। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—शालि० शक १४३८। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

विशेष—शालि० शक १४३८, धातु सं०, आषाढ़ कृष्ण ५, बृहस्पति वारके दिन कोणसूर बिट्टिदेवरसके पुत्र पुट्टदेवरसने इसकी प्रतिलिपि की है।

ग्रंथ नं० ८।

१३ चन्द्रप्रभपुराण—अग्गलदेव। पत्र सं—९७। पंक्ति प्रतिपत्र—७। अक्षर प्रतिपंक्ति—८३। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय पुराण। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल— ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४८।

१४ त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण—चामुण्डराय। पत्र सं—१३१। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—८२। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—पुराण। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—शालि० शक १६०२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७३।

१५ त्रिषष्टिलक्षणपुराण—श्री चाउण्डराय। पत्र सं—२०३। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—९०। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—पुराण। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

विशेष—इसका रचनाकाल शालि० शक ९०० है। आरगद बिद्रूर लक्कप्प सेट्टिके पुत्र शान्तण्ण सेट्टिने इसे लिखवाकर महेन्द्रकीर्तिके शिष्य अनन्तकीर्तिको शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ नं० ४४।

१६ तीर्थंकरपुराण—······। पत्र सं—१२। पंक्ति प्रतिपत्र—५। अक्षर प्रतिपंक्ति—२६। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—पुराण। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६।

१७ धर्मनाथपुराण—पण्डित बाहुबली। पत्र सं—२३३। पंक्ति प्रतिपत्र—७। अक्षर प्रतिपंक्ति—८१। लिपि—कन्नड। भाषा—कन्नड। विषय—पुराण। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—शालि० शक १३४२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—इसे कार्कलके भट्टारक ललितकीर्तिके शिष्य भंडारी देवर सेट्टीने लिखकर स्थानीय शांतिनाथमंदिर को दान किया था।

ग्रन्थ नं० ९९।

१८ **नेमिनाथपुराण**–श्री कर्णप्पार्य। पत्र सं–१५०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मनियण्ण हैं। यह समन्तभद्रदेवके शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० ३।

१९ **पद्मपुराण**–आचार्य रविषेण। पत्र सं–२२४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १२०४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके दो पत्र खण्डित हैं।

ग्रन्थ नं० १८७।

२० **पुष्पदन्तपुराण**–श्री गुणवर्म। पत्र सं–९७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १४२२। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार भुजबली हैं।

ग्रन्थ नं०१२७।

२१ **रामचन्द्रपुराण**–महाकवि अभिनव पंप। पत्र सं–१३२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक१३५९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–अ शिथिल।

विशेष–इसमें कई पत्र खण्डित हैं। इसके प्रतिलिपिकार कोपण नगरके सिरियण्ण हैं। इस ग्रंथके रचयिता अभिनव पंप मुनि बालचन्द्रके शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० २७६।

२२ **लघुपुराण**–······। पत्र सं–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं०४९।

२३ **वृषभनाथपुराण**–हस्तिमल्लि। पत्र सं–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–११८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसका अपर नाम 'श्रीपुराण' है।

ग्रन्थ नं० ५४।

२४ **वृषभनाथपुराण**–हस्तिमल्लि। पत्र सं–५२। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। वस्तु–कागज। लेखनकाल–सन् १९३५। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–श्रीपुराणसमाम्नायमाम्नातं हस्तिमल्लिना। तरण्डं सर्वशास्त्राब्धेरखण्डं धारयत्वमम् ॥

इसे पंजिकल्लु पं० अनन्तराजेन्द्र ने लिखा है।

ग्रन्थ नं० ४१।

२५ **संक्षिप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरपुराण**–चामुण्डराय। पत्र सं०–९७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १७४।

२६ **हरिवंशपुराण**–प्रभुराज मंगरस। पत्र सं०–२३६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम है।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार कावल गांवके मंजुनाथ

ग्रन्थ नं० २१०।

२७ **हरिवंशपुराण**–प्रभुराज मंगरस। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १८०।

२८ **हरिवंशपुराण**–प्रभुराज मंगरस। पत्र सं०–२२२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार बंगर गोत्रके चन्दय्य उपाध्याय हैं।

विषय–चरित्र

ग्रन्थ नं० १५५।

१ **अनन्तकुमारीचरित**–वर्णी शान्तण्ण। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १७८६। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इस ग्रन्थके रचयिता वर्णी शान्तण्ण भारंगीपुरके निवासी हैं। प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पडुबसदि पुरोहित पद्मय्य इन्द्रके पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० १७५।

२ **अनन्तकुमारीचरित**–वर्णी शान्तण्ण। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६१।

३ **अहिंसाचरित**–वर्णी पायण्ण। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–२०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १५५।

४ **अहिंसाचरित**–वर्णी पायण्ण। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १७८६। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इस ग्रन्थ का रचनाकाल शालि० शक १३६९ है। इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पडुबसदि पुरोहित पद्मय्य इन्द्र के पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० १७९।

५ **अहिंसारचित**–वर्णी पायण्ण। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार किपुर के गुम्मय्य हैं।

ग्रन्थ नं० २४।

६ **अंजनादेवीचरित**–मायण्ण सेट्टि। पत्र सं०–११४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–विरोधिकृत् सं०, चैत्र शु १० के दिन स्वामी विद्यानन्दी के शिष्या ज्ञानमती अव्वे के लिये मायण्ण सेट्टि ने इस की रचना की।

ग्रन्थ नं० १३५।

७ **चन्द्रप्रभचरित**–कवि दोड्डय्य। पत्र सं०–१९१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह चरित्र 'सांमत्य'पद्य में है।

ग्रन्थ नं० ४६।

८ **जिनदत्तरायचरित**–कवि पद्मनाभ। पत्र सं० ९०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल– ×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है।

ग्रन्थ नं० १०५।

९ **जिनदत्तरायचरित**–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल– ×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–अतिशिथिल।

विशेष–इसमें बीच २ के कई पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० १२४।

१० **जिनदत्तरायचरित**–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–८१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १६९०। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री ब्रह्मय्य हैं। इसमें ७ से १० तक के चार पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० १८३।

११ **जिनदत्तरायचरित**–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–८८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६१।

१२ **जिनदत्तरायचरित**–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल– ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २६४।

१३ **जिनदत्तरायचरित**–कवि पद्मनाभ। पत्र सं०–११५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा– सामान्य।

ग्रन्थ नं० २२८।

१४ **जीवन्धरषट्पदि**–कवि बोम्मरस। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७३। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'षट्पदि' कन्नड छन्दका एक भेद है।

ग्रन्थ नं० १११।

१५ **जीवन्धरषट्पदि**–कवि भास्कर। पत्र सं०–२१८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२४। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका रचनाकाल शालि० शक १३४५ है। इसकी रचना पैनगोंडे श्री शांतिनाथ चैत्यालयमें हुई है।

ग्रन्थ नं० १४१।

१६ **जीवन्धरषट्पदि**–कवि भास्कर। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

विशेष–इसमें प्रथम पत्र नहीं है।

ग्रन्थ नं० १६९।

१७ **जीवन्धरषट्पदि**–कवि भास्कर। पत्र सं–९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २१८।

१८ **जीवन्धरषट्पदि**–कवि भास्कर। पत्र सं०–७१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–ग्रंथ रचनाकाल शालि० शक १३४५ है। इसके प्रतिलिपिकार पम्मण्ण हैं।

ग्रन्थ नं० २२७।

१९ **जीवन्धरषट्पदि**–कवि भास्कर। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–११८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मुनिभद्रदेवके शिष्य लघु मुनिभद्रदेव हैं। इसकी प्रतिलिपि क्षेमपुर में हुई है।

ग्रन्थ नं० २५९।

२० **जीवन्धरषट्पदि**–कवि भास्कर। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६७।

२१ जीवन्धरषट्पदि–कवि भास्कर। पत्र सं०–६२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

ग्रन्थ नं० १३९।

२२ **जैमिनिभारत**–कवि लक्ष्मीश। पत्र सं०–६८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६ ,। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १००।

२३ **ज्ञानचन्द्रचरित**–वर्णी पायण्ण। पत्र सं०–१७१। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–१५८१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका रचनाकाल शालि० शक १५८१ है।

ग्रन्थ नं० १८८।

२४ **ज्ञानभास्करचरित**–नेमण्ण। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इस ग्रंथका रचनाकाल शालि० शक १४८२ है।

ग्रन्थ नं० २६०।

२५ **ज्ञानभास्करचरित**–नेमण्ण। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १७४५। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २६२।

२६ **ज्ञानचन्द्राभ्युदय**–मुनि कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–४७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं०र १५५।

२७ **त्रैलोक्यभूषणचरित**–चन्दय्य उपाध्याय। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १७८६। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके रचयिता मूडबिद्री निवासी हैं। प्रतिलिपिकार भी मूडबिद्री पडुबसदि पुरोहित पद्मय्य इन्द्र के पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० २६०।

२८ **त्रैलोक्यभूषणचरित**–श्री चन्दय्य उपाध्याय। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६१।

२९ **धन्यकुमारचरित**–कवि आदिनाथ। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–२०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १५५।

३० **धन्यकुमारोचरित**–कवि आदिनाथ। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक१७८६। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इस ग्रन्थके रचयिता आदिनाथ चङ्गदेशके चप्परग्रामके निवासी हैं। प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पडुबसदि पुरोहित पद्मय्य इन्द्रके पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० १७५।

३१ **धन्यकुमारचरित**–कवि आदिनाथ। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इस ग्रंथके रचयिता चंगनाडु चप्पर गांवके निवासी हैं।

ग्रन्थ नं० ६८।

३२ **नागकुमारपंचमीचरित**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३०।

३३ **नागकुमारचरित**–कवि बाहुबली। पत्र सं०–२००। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११८।

३४ **नागकुमारचरित**–कवि बाहुबली। पत्र सं०–२१६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १७२८। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री चन्दय्य उपाध्याय हैं।

ग्रन्थ नं० १४२।

३५ **नागकुमारचरित**–कवि बाहुबली। पत्र सं०–१५३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–अति शिथिल।

विशेष–इसमें बीच २ के कई पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० १५३।

३६ **नागकुमारचरित**–कवि बाहुबली। पत्र सं०–१७९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १६९।

३७ **नागकुमारचरित**–कवि बाहुबली। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १७८।

३८ **नागकुमारचरित**–कवि बाहुबली। पत्र सं०–२२२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–अति शिथिल।

विशष–इसके प्रतिलिपिकार हामि गुम्मट सेट्टिके पुत्र कोंडे अंतणण सेट्टि है।

ग्रन्थ नं० २०१।

३९ **नागकुमारचरित**–कवि बाहुबली। पत्र सं०–८८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १८२।

४० **नागकुमारषट्पदि**–विजयण्ण। पत्र सं०–३१। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

ग्रन्थ नं० २३२।

४१ **नागकुमारषट्पदि**–मुनि कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–५१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर पतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १७१

४२ **नेमिजिनेशसंगति**–प्रभुराज मंगरस। पत्र सं०–२३३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मालद बसदि ब्रह्मय्य इन्द्रके पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० ६२।

४३ **बाहुबलिचरित**–पण्डित चिक्कण्ण। पत्र सं०–११५। पंक्ति प्रतिपत्र–२०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड षट्पदि। विषय–चरित्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २२७।

४४ **बाहुबलिचरित**–पण्डित चिक्कण्ण। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६०।

४५ **बुद्धिसागरचरित**–कवि चिदानन्द। पत्र सं०–१०५। पंक्ति प्रतिपत्र–२१। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १६०।

४६ **बुद्धिसागरचरित**–कवि चिदानन्द। पत्र सं०–१५९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १०९।

४७ **भरतेशवैभव**–रत्नाकरवर्णी। पत्र सं०–१६२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११०।

४८ **भरतेशवैभव**–रत्नाकरवर्णी। पत्र सं०–२५३। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–कोल्लं सं०८७१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–समन्तभद्रके शिष्य, नन्दावरके निवासी चन्द्रमने शान्तिकीर्तिके ग्रन्थपर से इसकी प्रतिलिपि की है।

ग्रन्थ नं० १७७।

४९ भरतेशवैभव–रत्नाकरवर्णी। पत्र सं०–१२९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–९६। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १५९।

५० यशोधरचरित–चन्दण वर्णी। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४१। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें प्रारम्भके चार पत्र नहीं हैं। यह षट्पदि पद्यमें है। इसमें जैनव्रतकथाओंका भी संग्रह है। इनमें 'रुक्मिणी' और 'सिद्धचक्रव्रतविधान' की कथायें संस्कृतमें शेष कन्नडमें हैं।

ग्रन्थ नं० ८५।

५१ रत्नशेखरचरित–पट्टाभिराम। पत्र सं०–११८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६१।

५२ रोहिणीचरित–जिनचन्द्र। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–२०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह जिनचन्द्र मेरुनन्दीके शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० ६१।

५३ लोभदत्तचरित–कवि नेमरस। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–२०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २६२।

५४ लोभदत्तचरित–कवि नेमरस। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३६। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

ग्रन्थ नं० ६८।

५५ वर्धमानचरित–कवि पद्म। पत्र सं०–७०। पंक्ति प्रतिपत्र १८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२७। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४।

५६ वसंततिलकाचरित–कवि नेमिचन्द्र। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३०।

५७ विजयकुमारीचरित–श्रुतकीर्तिदेव। पत्र सं०–६६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका रचनाकाल शालि० शक १४८८ है। इसके प्रतिलिपिकार शान्तिसागरवर्णी है।

ग्रन्थ नं० १५७।

५८ विजयकुमारीचरित–श्रुतकीर्तिदेव। पत्र सं०–७८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १४८८। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४५।

५९ श्रीपालचरित–इन्द्रदेवरस। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १५५ ।

६० **श्रीपालचरित**–इन्द्रदेवरस । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर पतिपंक्ति–७२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । व तु–ताडपत्र । लेखनकाल–शालि० शक १७८६ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इस ग्रन्थके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पडुबसदि पुरोहित पद्मय्य इन्द्रके पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७५ ।

६१ **श्रीपालचरित**–इन्द्रदेवरस । पत्र सं–३२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५ ।

६२ **श्रीपालचरित**–कवि वर्धमान । पत्र सं०–८२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें कई पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० १०४ ।

६३ **श्रेणिकचरित**–जिनदेवण्ण । पत्र सं०–३० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष—यह 'सांगत्य'पद्य में है ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

६४ **श्रेणिकचरित**–जिनदेवण्ण । पत्र सं०–५९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–शिथिल ।

विशेष—इसमें कई पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

६५ **होसदचरित**–······। पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसे आनन्द सं० पुष्य बुधवार, भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य हिरिय माणिक्कस्वामी ने पद्मश्री अर्जिका के लिये कारडिगे जिनमंदिरमें लिखकर संपूर्ण किया था ।

विषय–कथा

ग्रन्थ नं० २०९ ।

अष्टांगकथादिसंग्रह–······। पत्र सं०–५३ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१२ ।

२ **गौरीव्रतकथा**–······। पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा –उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

३ **चन्द्रनषष्ठिकथा**–······। पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० अक्षर प्रतिपंक्ति–११३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

४ **चन्द्रषष्ठिकथा**–आचार्य माधवचन्द्र । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–११३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यह माधवचन्द्र आ० नेमिचन्द्रदेवके शिष्य, मेघचन्द्र सिद्धान्तदेवके प्रशिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० २३५ ।

५ **चन्द्रषष्ठयादिव्रतकथा**–······। पत्र सं०–५०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें ६ व्रतकथाएँ हैं।

ग्रन्थ नं० २४६।

६ **जयकुमारकथा**–······। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह गद्यरूप में है।

ग्रन्थ नं० १९।

७ **त्रैलोक्यविधानकथा**–अभ्रदेव। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

इयं कथाभ्रदेवेन कथिता दुःखहारिणी।
एवं संस्तूयते भव्यैर्लभ्यते मोक्षसंपदम्॥ (?)

ग्रन्थ नं० २२६।

८ **धर्मामृत**–नयसेनदेव। पत्र सं०–१५७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५३।

९ **धर्मामृत**–नयसेन। पत्र सं०–१३८। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७३।

१० **पुण्यास्रवकथा**–मुनि रामचन्द्र। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम :

ग्रन्थ नं० ७३।

११ **पुण्यास्रवकथा**–कवि नागराज। पत्र सं०–११७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५१।

१२ **पञ्चमीव्रतकथा**–······। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४९।

१३ **रत्नत्रयकथा**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४९।

१४ **रुक्मिणीकथा**–पण्डित सोमदेव। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६५।

१५ **वड्डाराधनाकथा**–आचार्य शिवकोटि। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–१८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २८।

१६ **व्रतकथा**–······। पत्र सं०–१६९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'नंदीश्वरव्रतकथा' आदि ७८ कन्नड कथाएँ हैं। साथ-साथ रत्ननन्दिविरचित 'पल्यव्रतविधान' की संस्कृत कथा भी।

ग्रन्थ नं०५५।

१७ **व्रतकथा**–······ । पत्र सं०–४०१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–सन् १९२७। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें ८३ कथाएँ हैं। इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पडुबसदि पाचप्प इंद्र हैं।

ग्रन्थ नं० १२६।

१८ **व्रतकथा**–·······। पत्र सं०–७५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें ७३ कथाएँ हैं। इसे सण्णम्मि सेट्टितिने प्रतिलिपि कराकर ज्ञानचन्द्रदेवको शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ नं० १२९।

१९ **व्रतकथा**–······ । पत्र सं०–१७५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'पुष्पांजलिव्रत' आदि ४३ व्रतकथाएँ हैं।

ग्रन्थ नं० २५०।

२० **व्रतकथा**–······ । पत्र सं०–१२०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि– कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'षोडशभावनाव्रतकथा' आदि ४० कथाएँ हैं।

ग्रन्थ नं० ४३।

२१ **सम्यक्त्वकौमुदी**–मंगरस। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५८।

२२ **सम्यक्त्वकौमुदी**–मंगरस। पत्र सं०–३१२। पंक्ति प्रतिपत्र–१४। अक्षर प्रतिपंक्ति–२३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९२।

२३ **सम्यक्त्वकौमुदी**–मंगरस। पत्र सं०–१२५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १४३१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १८२।

२४ **सम्यक्त्वकौमुदी**–मंगरस। पत्र सं०–५८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह षट्पदिपद्यमें है।

ग्रन्थ नं० २२७।

२५ **सम्यक्त्वकौमुदी**–मंगरस। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इस ग्रन्थका रचनाकाल शालि० शक १४३१ है।

ग्रन्थ नं०। २३१।

२६ **सम्यक्त्वकौमुदोकथा**–मुनि धर्मकीर्ति। पत्र सं–४९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं०४९।

२७ **सिद्धचक्रव्रतकथा**-·······। पत्र सं-२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-११३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४९।

२८ **सुगंधदशमीकथा**-····। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-११३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७६।

२९ **सिंहप्रायोपगमन**-केशियण्ण। पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विषय-इतिहास

ग्रन्थ नं० २२२।

१ **गोम्मटेश्वरचरित**-चन्द्रम। पत्र सं०-१९। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-३३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-इतिहास। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक १७६१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें कार्कलस्थ बाहुबलीस्वामीके मस्तकाभिषेकका वर्णन है।

ग्रन्थ नं० २६१।

२ **गोम्मटेश्वरचरित**-चन्द्रम। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-इतिहास। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक १७६०। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७५।

३ **गोम्मटेश्वरचरित**-गुरुराम। पत्र सं०-१४। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-७१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-इतिहास। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-मूडबिद्रीके शासक चन्द्रशेखर चौटने वेणूरस्थ श्री बाहुबली स्वामीका मस्तकभिषेक करवाया था। इसमें उसीका वर्णन है।

ग्रन्थ नं० १८८।

४ **जीर्णोद्धारचरित्र**-······। पत्र सं०-२४। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-इतिहास। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें मूडबिद्री त्रिभुवनचूडामणि नामक श्री चन्द्रनाथ मंदिरका जीर्णोद्धार विषयक वर्णन है। इसका रचनाकाल शालि० शक १६६८ है। प्रकाशनीय है।

ग्रन्थ नं० २५१।

५ **तीर्थयात्राचरित्र**-चन्दय्योपाध्याय। पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-इतिहास। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें दक्षिण कन्नड जिलाके जैनमन्दिरोंका वर्णन है।

ग्रन्थ नं० २००।

६ **पंपादेवीगद्य**-कविराज चन्द्रशेखर। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-इतिहास। वस्तु ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १७४।

७ **बेल्लिबोड्डचरित्र**–श्री चन्दय्य उपाध्याय। पत्र सं० ३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–इतिहास। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २१९।

८ **लक्ष्मणबंगप्रशस्ति**–········। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–इतिहास। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–आयुर्वेद

ग्रन्थ नं० २७।

१ **कल्याणकारक**–उग्रादित्य। पत्र सं०–१९५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १६४।

२ **खगेन्द्रमणिदर्पण**–मंगरस। पत्र सं०–५९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २११।

३ **खगेन्द्रमणिदर्पण**–मंगरस। पत्र सं०–८२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१।

४ **धन्वन्तरिनिघंटु**–धन्वन्तरि। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–१० अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १२०।

५ **धन्वन्तरिनिघंटु**–धन्वन्तरि। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–५ अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यककोश। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १५६।

६ **रसराजचिन्तामणि**–······। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण। तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें बीच बीच के पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ डं० ४५।

७ **वैद्य**–······। पत्र सं०–१२०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४४।

८ **वैद्यनिघंटु**–······। पत्र सं०–१२०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत और कन्नड। विषय–वैद्यककोश। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका अपर नाम औषधिकोश भी है। इसमें अकरादिक्रमसे शब्दोंका अर्थविवरण दिया गया है।

ग्रन्थ नं० ६३।

९ **वैद्यचिकित्सा**–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड (कंदपद्य)। विषय–वैद्यक। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६९ ।

१० वैद्यसार-…… । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-२१ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२ ।

११ वैद्यसंग्रह-…… । पत्र सं०-१०२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

१२ वैद्यसंग्रह-भोजराज । पत्र सं० १८० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५० ।

१३ वैद्यसंग्रह-…… । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

१४ वैद्यसंग्रह-…… । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संकृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८३ ।

१५ वैद्यसंग्रह-……… । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

ग्रन्थ नं० ९७ ।

१६ वैद्यसंग्रह-…… । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

१७ वैद्यसंग्रह-…… । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२३ ।

१८ वैद्यसंग्रह-…… । पत्र सं०-१४९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार सिद्धप्प हैं ।

ग्रन्थ नं० १४६ ।

१९ वैद्यसंग्रह-…… । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और कन्नड । विषय-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

ग्रन्थ नं० १९६ ।

२० वैद्यसंग्रह-…… । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३६ ।

२१ वैद्यामृतसंग्रह-…… । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३८।

२२ वैद्यामृतसंग्रह–······। पत्र सं०–१३२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११५।

२३ वैद्यमंत्रवादसंग्रह–······। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक तथा मंत्रवाद। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय–ज्योतिष

ग्रन्थ नं० २७०।

१ अक्षरप्रश्नचिन्तामणि–······। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १६६।

२ कर्मपरीक्षा–कविमाल नागार्जुन। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'मरणसूचना', 'नेत्रस्फुरण', भुजस्पंदन' आदि का शुभाशुभ फल दिया गया है।

ग्रन्थ नं० २१५।

३ करणप्रकाशिका–गणक ब्रह्मदेव। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७।

४ कालज्ञान–·····। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११३।

५ केवलज्ञानचूडामणि–आचार्य समन्तभद्र(?) पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४८।

६ केवलज्ञानचूडामणि–आचार्य समन्तभद्र (?) पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४८।

७ गर्भप्रश्न–·····। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह ग्रन्थ कन्द पद्यमें है।

ग्रन्थ नं० ११३।

८ गर्भप्रश्नशास्त्र–·····। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह ग्रन्थ कन्नड 'कन्द' पद्योंमें है।

ग्रन्थ नं० ११३।

* ९ गार्ग्यसंहिता–गर्गर्षि। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४८।

*१० गार्ग्यसंहिता–गर्गर्षि। पत्र सं०–८५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम

ग्रन्थ नं० ५०।

११ ग्रहदशाफल–····। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६५।

१२ ग्रहदशाफलाफल–····। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–१७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६४।

१३ चन्द्रोन्मीलनप्रश्न–······। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–२०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४९।

१४ जातकसार–····। पत्र सं०–१३३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड, भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १७३।

१५ जिनेन्द्रमाला····। पत्र सं–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।
विशेष–इसमें कन्नड गद्य में अर्थ मात्र है।

ग्रन्थ नं० ४७

१६ ज्योतिर्ज्ञानविधि–श्रीधराचार्य। पत्र सं–९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

मंगलाचरण

प्रणिपत्य वर्धमानं स्फुटकेवलदृष्टतत्त्वमीशानम्। ज्योतिर्ज्ञानविधानं वक्ष्ये स्वायम्भुवं सम्यक्।

ग्रन्थ नं० ५७।

१७ ज्ञानप्रदीपिका–······। पत्र सं० २२। पंक्ति प्रतिपत्र–२०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८८।

१८ ज्ञानप्रदीपिका–पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११३।

१९ ज्ञानप्रदीपिका–····। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४८।

२० ज्ञानप्रदीपिका–····। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १७३।

२१ ज्ञानप्रदीपिका–·····। पत्र सं–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६४।

२२ दीक्षापटल–······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–२२। अक्षर प्रतिपंक्ति–२२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा– सामान्य।

ग्रन्थ नं० २१५।

२३ दैवज्ञवल्लभ–श्रीपति। पत्र सं–७४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल– ×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७।

२४ नरपिंगलि–शुभचन्द्र। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह शकुन-शास्त्र है।

ग्रन्थ नं० ९३।

२५ नक्षत्रतिलक–······। पत्र सं–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १६७९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री सूराल चन्दय्य हैं।

ग्रन्थ नं० ९५।

२६ पंचांगफल–······। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

मंगलाचरण

प्रणम्य शिरसा नित्यं देवदेवं जिनेश्वरम्। यस्यार्थं संप्रवक्ष्यामि पंचांगफलमुत्तमम्।

ग्रन्थ नं०। ३९।

२७ भाषाकेवलीप्रश्न–······। पत्र सं०। ९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं०। १४९।

२८ मुहूर्तदर्पण–पण्डित माधवभट्ट। पत्र सं०–१७९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें नं० १ से २० तकके पत्र नहीं हैं। कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० २१।

२९ शंकुस्थापनादिमुहूर्त–·····। पत्र सं० ७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६४।

३० सामुद्रिकशास्त्र–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–२३। अक्षर प्रतिपंक्ति–२६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

मंगलाचरण।

आदिदेवं नमस्कृत्य सर्वज्ञं सर्वदर्शिनम्। सामुद्रिकं प्रवक्ष्यामि शुभांगं पुरुषस्त्रियोः॥

ग्रन्थ नं० १६७।

३१ सुग्रीवमतशकुन–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह कंद पद्यमें है। प्रकाशनीय है।

विषय–मन्त्रशास्त्र

ग्रन्थ नं० ८९।

१ गणितविलास–कवि चन्द्रम। पत्र सं–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गणित। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २१८।

२ गणितविलास–कवि चन्द्रम। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि-कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गणित। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका सहित 'नाममाला' भी है।

विषय–मन्त्रशास्त्र

ग्रन्थ नं० २१।

१ उत्पातदोषशान्तिकर्म–······। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि-कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मंत्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

अथ शान्तिजिनं नत्वा शान्तिकान्तिसुखप्रदम्।
उत्पातदोषशान्त्यर्थं शान्तिकर्म प्रयुज्यते॥

ग्रन्थ नं० ६३।

२ कामचाण्डालिनीकल्प–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–२९। अक्षर प्रतिपंक्ति–२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा– सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७१।

३ कामचाण्डालिनीकल्प–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय– मंत्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६४।

४ गणधरवलयकल्प–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–२४। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि-कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४८।

५ गणधरवलयादिमन्त्रसंग्रह–······। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मंत्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १७११। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पडुबसदि पद्मय्य इन्द्र है।

ग्रन्थ नं० १५।

६ ज्वालिनीकल्प–आचार्य इंद्रनन्दी। पत्र सं०–१६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि-कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मंत्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१।

७ ज्वालिनीकल्प–आचार्य इन्द्रनन्दी। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि-कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–७६१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके रचयिता इन्द्रनन्दी आचार्य बप्पनन्दीके शिष्य हैं। इसे खेटकटकमें अक्षयतृतीयाके दिन रचा है।

ग्रन्थ नं० १५।

८ ज्वालिनीकल्प–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१।

९ ज्वालिनीकल्प–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १०८०। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–व्योमवसुरन्ध्रमितके वर्षे शकभूभुजे विलम्ब्यब्दे।
कल्पो ज्वालिन्याख्यो लिखितः श्रीमल्लिषेणकृतः॥

ग्रन्थ नं० १५।

१० ब्रह्मविद्याविधि–·······। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

मंगलाचरण।

श्रीमद्वीरं महासेनं ब्रह्माणं पुरुषोत्तमम्। जिनेश्वरं च त वन्दे मोक्षलक्ष्म्येकनायकम्॥ १॥
चन्द्रप्रभजिनं नत्वा सर्वज्ञं त्रिजगद्गुरुम्। ब्रह्मविद्याविधिं वक्ष्ये यथाविद्योपदेशतः॥ २॥

ग्रन्थ नं० ८१।

११ बालग्रहचिकित्सायन्त्रमन्त्रसंग्रह–·······। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६४।

१२ बीजाक्षरकोष–·······। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–२२। अक्षर प्रतिपंक्ति–२२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४७।

१३ भैरवपद्मावतीकल्प–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मंत्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१।

१४ भैरवपद्मावतीकल्प–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मंत्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१।

१५ भैरवपद्मावतीकल्प–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मंत्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें बंधुषेण की संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० १५८।

१६ भैरवपद्मावतीकल्प–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०–७७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५।

१७ मुद्रालक्षणसंग्रह-·······। पत्र सं०-३३। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-२१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें 'अक्षरकेवलिप्रश्न' तथा कई कन्नड पद्योंके पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० २६९।

१८ मंत्रशास्त्रसंग्रह-······। पत्र सं०-१५। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० १५।

१९ विद्यानुवादांग-······। पत्र स०-१६। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा उत्तम।

ग्रन्थ नं० २६५।

२० विद्यानुवादांग-··········। पत्र सं०-४४। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-६१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-अतिशिथिल।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० १५।

२१ सरस्वतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इस ग्रन्थके रचयिता मल्लिषेण श्रीषेणके पुत्र या शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० ७१।

२२ सरस्वतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६४।

२३ सरस्वतीकल्प-मुनि विजयकीर्ति। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-२२। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विषय-लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० ४७।

१ जम्बूदिव्वपण्णत्ति [जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति]-आचार्य पद्मनंदी। पत्र सं०-२४। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-९९। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-लोकविज्ञान। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० १५१।

२ तिलोयसार त्रिलोकसार]-आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०-१५५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-लोकविज्ञान। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ९७।

३ लोकस्वरूप-कवि चन्द्रम। पत्र सं०-१९। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-लोकविज्ञान। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-१७८२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री चोलसेट्टि बसदिके पुरोहित पाचप्प इन्द्र हैं।

विषय–लक्षण तथा समीक्षा

ग्रन्थ नं० ९३।

१ **अश्वपरीक्षा**–श्री अभिनवचन्द्रम । पत्र सं०–४६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–अश्वलक्षण । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य।

विशेष–यह ग्रंथ कन्नड कन्दपद्यों में रचा गया है । इसमें प्रथम पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ६४।

२ **रत्नशास्त्र**–······· । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–२२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–रत्नपरीक्षा । वस्तु–कागज । लेखनकाल–× पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

मंगलाचरण ।

रत्नत्रयाय भुवनत्रयवंदिताय । कृत्वा नमः समवलोक्य च रत्नशास्त्रम् ॥
रत्नप्रवेकमधिकृत्य विमुच्य फल्गून् । संक्षेपमात्रमिति वृद्धजनोपदिष्टम् ॥

ग्रन्थ नं० ६४।

३ **नवरत्नपरीक्षा**–········· । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–२२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–रत्नपरीक्षा । वस्तु–कागज । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४७।

४ **संगीतलक्षण**–········· । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–संगीत । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

मंगलाचरण ।

ये चक्रिणः स्युर्निधयो नवेषु । शंखाभिधानो नवमो निधिर्यः ॥
काव्यानि तूर्यांणि च नाटकानि । सर्वाणि तत्रैव समुद्भवन्ति ॥

विषय–क्रियाकाण्ड

ग्रन्थ नं० १०।

१ **क्रियाकलाप**–आचार्य कोण्ड कुंद तथा पूज्यपाद । पत्र सं०–७९ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड । टीका है ।

ग्रन्थ नं० १४।

२ **क्रियाकलाप**–आचार्य कोण्डकुन्द । और पूज्यपाद । पत्र सं०–९७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षरप्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । तथा प्राकृत । विषय–क्रियाकाण्ड । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–शालि० शक । १७६२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका है । शालि० शक १७६२ शुभकृत् सं० पुष्य कृष्ण ३० चन्द्रवारको इसे अलुबन्दगडि पार्श्व सेट्टिके पुत्र, कार्कलके भट्टारक ललितकीर्तिके शिष्य पद्मय्य सेट्टिने श्री शांतिसागरवर्णीके लिये लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ८४।

३ **क्रियाकलाप**–आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्रसं०–१०० । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–क्रियाकाण्ड । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें 'दशभक्ति' 'पंचस्तोत्र' तथा 'तत्वार्थ सूत्र' भी [सटिप्पण] हैं ।

ग्रन्थ नं० १५२।

४ **क्रियाकलाप**–आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद। पत्र सं०–११५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत और प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें [कन्नड टीका सहित,] 'दशभक्ति' पंचस्तोत्र' और 'स्वयंभूस्तोत्र' आदि हैं। इसके अन्तमें तामिल लिपिके दो पत्र और हैं।

ग्रन्थ नं० २२९।

५ **क्रियाकलाप**–आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद। पत्र सं०–७९। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'दशभक्ति' 'स्वयंभस्तोत्र' 'सहस्रनाम' आदि [कन्नड टीका सहित] हैं।

ग्रन्थ नं० १९।

६ **क्रियाकलाप**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें श्री आशाधरकृत 'सुप्रभातस्तोत्र', 'स्वप्नावली', 'दशभक्ति' आदि हैं। इसकी प्रतिलिपि बेलतङ्गडिके बाचण्णने की थी।

ग्रन्थ नं० ११७।

७ **क्रियाकाण्डचूलिका**–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'पद्मनन्दिपंचशति'का एक प्रकरण है।

ग्रन्थ नं० ७६।

८ **दशभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द। और पूज्यपाद। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'स्वयंभूस्त्रोत्र' तथा 'पंचस्त्रोत्र' भी हैं।

ग्रन्थ नं० २४३।

९ **दशभक्ति**–आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद। पत्र सं०–५५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७३। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–अति शिथिल।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकर श्री गुणभद्रदेवके शिष्य माणिक्यदेव हैं।

ग्रन्थ नं० २१६।

१० **दशभक्त्यादिसंग्रह**–आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद। पत्र सं०–७३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। और संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २३३।

११ **दशभक्त्यादिसंग्रह**–आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद। पत्र सं०–२५७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'दशभक्ति' 'स्वयंभूस्तोत्र' आदि [कन्नड टीका सहित] हैं।

ग्रन्थ नं० २३।

१२ **दशभक्तयादिसंग्रह**–मुनि वर्धमान। पत्र सं० ६७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–अति शिथिल।

विशेष–इसमें इतिहास से संबन्ध रखने वाली बहुतसी बातें हैं। ग्रन्थ प्रकाशनीय है।

ग्रन्थ नं० ५६।

१३ **दशभक्तयादिसंग्रह**–मुनि वर्धमान। पत्र सं० ९३। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १३८।

१४ **पडिकमण [प्रतिक्रमण]**–·······। पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७६।

१५ **पडिकमण [प्रतिक्रमण]**–······। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११७।

१६ **श्रुतभक्ति**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०– ३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११७।

१७ **सिद्धभक्ति**–पण्डित आशाधर। पत्र सं० ३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–स्तोत्र

ग्रन्थ नं० २४३।

१ **अकलंकस्तोत्र**–भट्टाकलंकदेव। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११७।

२ **अष्टकसंग्रह**–······। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र ८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष– इसमें चारणाष्टक चन्द्रनाथाष्टक गुम्मटाष्टक चतुर्विंशतितीर्थंकराष्टक शान्तिनाथाष्टक आदि कई अष्टक हैं।

ग्रन्थ नं० २००।

३ **अष्टकसंग्रह**–······। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४३।

४ **अष्टकसंग्रह**–·······। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत और कन्नड। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४८।

५ अष्टकसंग्रह–······। पत्र सं०–५६। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत और कन्नड। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १७११। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पडुयदि पद्मय्य इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० ११७।

६ अर्हद्भक्ति–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २००।

७ श्रीगुरुशतक–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १२१।

८ चतुर्विंशतिस्तव–केशवसेन। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० २००।

९ श्रीचन्द्रचूडामणिशतक–······। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–यह प्रकाशनीय है। इसमें ६६ पद्य हैं।

ग्रन्थ नं० २१।

१० चन्द्रप्रभस्वामिघोष–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष इस लेखक नेमण्ण उपाध्याय हैं।

ग्रन्थ नं० २६६।

११ छत्तीसरत्नमाला–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–शिथिल।

ग्रन्थ नं० ८८।

१२ जिनशतक–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–४९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें नरसिंह भट्ट की संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० १४०।

१३ जिनशतक–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें नरसिंहभट्ट की संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ७६।

१४ जिनसहस्रनामस्तोत्र–आचार्य जिनसेन। पत्र सं०–३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १३८।

१५ दृष्टाष्टकादिसंग्रह–······। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'पंचस्तोत्र', 'पंचपरमेष्ठिव्याख्यान', 'तत्त्वार्थसूत्र' और 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' भी हैं।

ग्रन्थ नं० २४८।

१६ पद्मावतीदेवीस्तोत्रसंग्रह–······ । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत और कन्नड । विषय–स्तोत्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–शालि० शक १७११ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पडुबसदि पद्मय्य इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २०७।

१७ भक्तामरस्तोत्र–आचार्य मानतुंग । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें श्लोक नं० ३२ से 'गंभीरताररवपूरित' इत्यादि चार श्लोकोंके स्थानपर 'नाथापरः परमधैर्य' इत्यादि भिन्न ही चार श्लोक दिये गये है ।

ग्रन्थ नं० २६६।

१८ योगाष्टक–श्री उदयार्क । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–स्तोत्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४३।

१९ श्रुतदेवतास्तवन–आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४२।

२० षडारचक्र–आचार्य देवनन्दी । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसका अपर नाम 'सिद्धिप्रियस्तोत्र' है ।

ग्रन्थ नं० २०८।

२१ समवसरणस्तोत्र–मुनि विष्णुसेन । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–शिथिल ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १६१।

२२ समवसरणाष्टकादिसंग्रह–······ । पत्र सं०–५१ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०८।

२३ सहस्रनाम–······ । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसका अपर नाम 'लघुसहस्रनाम' है ।

विषय–भजन तथा गीत

ग्रन्थ नं० ९० ।

१ अभिमन्युयक्षगान–······ । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–गीत । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७५।

२ आदिनाथयक्षगान–श्री सदानन्द । पत्र सं०–७१ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–गीत । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

३ उदयरागपदसंग्रह-······· । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपत्र-७२ । लिपि-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०७ ।

४ गीतवीतराग-श्री चारुकीति । पत्र सं०-९३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २०३ ।

५ जिनभजनसंग्रह-······ । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७८ ।

६ नागिणीताण्डवादिसंग्रह-······· । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्तिदेवीके समस्यापद्य भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १०८ ।

७ पद्मावतीयक्षगान-श्री बाहुबली । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६० ।

८ पद्मावतीयक्षगान-श्री शङ्कर भट्ट । पत्र सं०-४९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७४५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७६ ।

९ पारिजातयक्षगान-······ । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११९ ।

१० रामायणयक्षगान-······ । पत्र सं०-१५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'भारतयक्षगान' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७२ ।

११ शोभनपद्यसंग्रह-······ । पत्र सं०- २५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३९ ।

१२ शोभनसंग्रह··-···· । पत्र सं०- १५५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कुछ भजन भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २६३ ।

१३ शोभनपदसंग्रह-······· । पत्र सं०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विषय–प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० ८२।

१ लोकोपकारक–चामुण्डराय। पत्र सं०–१८४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–प्रकीर्णक। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–शालि० शक १५५४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है। गोवैद्य अश्ववैद्य आदि सब तरह की चिकित्साएं इसमें प्रतिपादित हैं। इसके प्रतिलिपिकार अप्पय हैं।

मूडबिद्रीके अन्य ग्रन्थभण्डार

विषय–सिद्धान्त

ग्रन्थ नं० ३२।

१ **कम्मपयडि [कर्मप्रकृति]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि मूडबिद्री।

विशेष–यह गोम्मटसार [कर्मकाण्ड] का एक अंश है। इसमें 'त्रिलोकसार' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १।

२ **कर्मप्रकृति**–······। पत्र सं०–३३। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–४३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३२।

३ **कर्मप्रकृति**–······। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १४।

४ **गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें संदृष्टि भी है। प्रति अति प्राचीन है। इसे श्री रेचण्णने लिखवाकर आचार्य माघनन्दीको शास्त्रदान किया था।

ग्रन्थ ड़ं० १४।

५ **गोम्मटसार [जीवकाण्ड]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११९। लिपि–प्राचीन कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें संदृष्टि भी है। प्रति अति प्राचीन है। इसे श्री रेचण्णने लिखवाकर आचार्य माघनन्दीको शास्त्रदान किया था।

ग्रन्थ नं० १७।

६ **गोम्मटसारादिसंग्रह**–आचार्य नेमिचन्द्र आदि। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३२।

७ **गोम्मटसार [जीवकाण्ड]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ७।

८ जयधवला टीका–आचार्य वीरसेन और जिनसेन। पत्र सं०–५१८। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३८। लिपि–प्राचीन कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री।

विशेष–इसके मूल गाथासूत्रोंका नाम कषायप्राभृत है। आचार्य श्री गुणधरने सोलह हजार पदोंके पेज्ज-पाहुड को संक्षिप्त करके १८० गाथाओंमें इसे रचा है। इसपर आचार्य यतिवृषभने छह हजार परिमित चूर्णी-सूत्र एवं उच्चारणाचार्यने बारह हजार प्रमाण उच्चारणासूत्र नामक टीका लिखी। इसी पर आचार्य बीरसेन और उनके शिष्य जिनसेनने जयधवला नामक बृहट्टीका बनाई जिसके श्लोक परिमाण ६०००० हैं। प्रारंभ के २०००० पद्य परिमित टीकाको आचार्य वीरसेनने और अवशिष्ट ४०००० पद्य परिमित टीकाको आचार्य जिनसेनने रचा है। इसे चिक्कमय्यके बल्लिसेट्टिने लिखवाकर सिद्धान्तमुनि पद्मसेनको शास्त्रदान किया है। इस टीकाका रचनाकाल शालि०शक७५८ है। प्रतिलिपिकार भुजबली अण्ण हैं।

ग्रन्थ नं० ८।

९ जयधवला टोका–आचार्य वीरसेन और जिनसेन। पत्र स०–,०६७। पंक्ति प्रतिपत्र–१६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–नागरी। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–कागज। लेखनकाल वीर नि०सं० २४३०। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मिरजके पं० गजपति शास्त्री हैं। उन्होंने वीर नि०सं० २४३० में प्रारम्भ कर वीर० नि० सं० २४३७ माघ सुदी ४ के दिन इसे संपूर्ण किया था।

ग्रन्थ नं० ९।

१० जयधवलाटीका–आचार्य वीरसेन और जिनसेन। पत्र सं०–९७४। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत और संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–कागज। लेखनकाल–वीर नि० सं० २४३१। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री कलुबसदि शान्तप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० १०।

११ जयधवलाटोका–आचार्य वीरसेन और जिनसेन। पत्र सं०–२०९६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्ररिपंक्ति–७४। लिपि–कन्नड। वस्तु–कागज। लेखनकाल–वीर नि० सं० २४३१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसादे, जैन पंच, मूडबिद्री।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री देवराज सेट्टि हैं।

ग्रन्थ नं० १५।

१२ तत्त्वार्थराजवार्तिक–आचार्य भट्टाकलंक। पत्र सं०–४००। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रति-पंक्ति–१०८। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १।

१३ दव्वसंगह–[द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्ति-स्थान–पं० नेमिराजसेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'भव्यानुग्राहि' नामक कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३२।

१४ दव्वसंग्रह [द्रव्यसंग्रह]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६१ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २ ।

१५ धवलाटीका–आचार्य वीरसेन । पत्र सं०–१४१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१३६ । लिपि–प्राचीन कन्नड । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि जैन पंच, मूडबिद्री ।

विशेष–इस प्रतिको राजा गण्डरादित्यके सेनापति मल्लिदेवने लिखवाकर सिद्धान्तमुनि श्री कुलभूषण को शास्त्रदान किया था ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

१६ धवला टीका–आचार्य वीरसेन । सं०–६०५ । यंक्ति प्रतिपत्र–१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–शिथिल । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मडबिद्री ।

विशेष–इसमें बीच २ के सैकड़ों पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० १ ।

१७ धवला टीका–आचार्य वीरसेन पत्र सं०–५९२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति १३८ । लिपि–प्राचीन कन्नड । भाषा–प्राकृत और संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष–इसके मूलसूत्रों का नाम षडखण्डवंगम है । इसके रचयिता पुष्पदन्त एवं भूतबलि हैं । इसका रचनाकाल शालि०शक ७३८ हैं । इसमें २, ७१ और ७२ नं० के पत्र नहीं हैं । इसको मण्डलीनाड भुजबली गंगपेर्माडि की सास देमियक्क ने कोपषतीर्थ के प्रसिद्ध दानी जिन्नप्प के द्वारा प्रतिलिपि कराकर बन्निकेरे उत्तुंग जिनचैत्यालय के सिद्धान्तमुनि श्री शुभचन्द्रदेव को अपने श्रीपंचमीव्रत की उद्यापना के उपलक्ष में शास्त्रदान किया था ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

१८ धवला टीका–आचार्य वीरसेन । पत्र सं०–१३०३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–नागरी । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–कागज । लेखनकाल–वीर नि सं० २४२३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मिरजके पं० गजपति शास्त्री हैं । उन्होंने इसे वीर नि०सं०२४२३ में प्रारंभ कर वीर नि० सं० २४३० में लिखकर संपूर्ण किया है

ग्रन्थ नं० ५ ।

१९ धवला टीका–आचार्य वीरसेन । पत्र सं०–१३९२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–कागज । लेखनकाल–वीर नि० सं० २४२६ पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री कल्लुबसदि शान्नप्प इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

२० धवला टीका–आचार्य वीरसेन पत्र सं०–२७६० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–कागज । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री देवराज सट्टि हैं।

ग्रन्थ नं० १।

२१ परमागमसार–······ । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान– मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें वैद्यक तथा 'षोडशभावना' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ११ ।

२२ महाबन्ध–आचार्य भूतबलि । पत्र सं०–१७६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१७० । लिपि–प्राचीन कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री ।

विशेष–इसके बीच २ के कुछ पत्र नहीं हैं। इसके प्रतिप्रतिलिपिकार श्री उदयादित्य हैं। इसको राजा शान्तिसेन की पत्नी मल्लिकब्बा देवी ने लिखवाकर अपने श्री पंचमीव्रत की उद्यापना के उपलक्ष में श्री सिद्धान्त मुनि माघनन्दी को शास्त्रदान किया था।

ग्रन्थ नं० १२।

२३ महाबन्ध–आचार्य भूतबलि । पत्र सं०–५१८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–नागरी । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–कागज । लेखनकाल–वीर नि० सं० २४४२ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि ।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री वि० लोकनाथ शास्त्री हैं।

ग्रन्थ नं० १३।

२४ महाबन्ध–आचार्य भूतबलि । पत्र सं०–८८५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–कागज । लेखनकाल–वीर नि० सं० २४३९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पं० नेमिराज सेट्टि हैं।

ग्रन्थ नं० १४।

२५ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–४१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८ । लिपि–प्राचीन कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष–यह अति प्राचीन प्रति है। इसे श्री रेचण्ण ने लिखवाकर आचार्य माघनन्दी को शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ नं० ११।

२६ सत्तकम्मपंजिआ–········ । पत्र सं०–२७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१७० । लिपि–प्राचीन कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–ताडपत्र–लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार श्री उदयादित्य हैं। इसे राजा शान्तिनाथ ने लिखवाकर आचार्य श्री माघनन्दी को शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ नं० १२।

२७ सत्तकम्मपंजिआ–······ । पत्र सं०–६७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–नागरी । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । वस्तु–कागज । लेखनकाल–वीर नि० सं० २४४१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री वि० लोकनाथ शास्त्री हैं।

ग्रन्थ नं० १३।

२८ सत्तकम्मपंजिआ–········। पत्र सं०–११५। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–कागज। लेखनकाल–वीर नि० सं० २४३९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसति, जैन पंच मडबिद्री।

विशेष–इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पं० नेमिराज सेट्टि है।

ग्रन्थ नं० १४।

२९ सिद्धन्तालाव [सिद्धान्तालाप]–·······। पत्र सं–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२२। लिपि–प्राचीन कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, मडबिद्री।

विषय–अध्यात्म

ग्रन्थ नं० ३२।

१ समाधिशतक–आचार्य पूज्यपाद। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि मूडबिद्री।

विषय–धर्म

ग्रन्थ नं० ४।

१ आचारसार–वीरनन्दी। पत्र सं०–२५। पंक्ति प्रतिपत्र–१० अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० २३।

२ कल्याणमाला–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२०। लिपि–कन्नड। भापा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें शान्तिनाथ के पंचकल्याणों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त इसमें 'स्वयम्भूस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३५।

३ कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयों का विवरण–......। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–१० अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें २२ परीषहजय संबन्धी कुछ पद्य भी हैं।

ग्रन्थ नं० २५।

४ जिनमुनितनय–चन्द्रसागरवर्णी । पत्र सं०– १२ पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'भक्तामर' 'समवसरण' 'पार्श्वनाथ' तथा पद्मावतिस्तोत्र के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १।

५ तत्त्वार्थसूत्र–आचार्य उमास्वति। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि मडविद्री।

विशेष–इसमें 'भक्तामरस्तोत्र' तथा आशीर्वाद पद्य भी है।

ग्रन्थ नं० १।

६ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण। पत्र सं०–८०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र होसबसादि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ११।

७ द्वादशानुप्रेक्षा–······। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ५।

८ नन्दीश्वरद्वीपवर्णन–······। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–जिन-इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें ज्योतिष संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३९।

९ पंचनमस्कारभावना–······। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३०।

१० पंचपरमेष्ठिस्वरूप–······। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य। प्रातिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३९।

११ पंचपरमेष्ठिस्वरूप–·······। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३९।

१२ यतिधर्म–······। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–उसमें 'शीतलव्रत,' ,सन्यासविधि,' 'सामायिक,' तथा श्रावकों की प्रतिमाओं का स्वरूप आदि भी हैं।

ग्रन्थ नं० २३।

१३ **रत्नकरण्डश्रावकाचार**–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १।

१४ **व्रतस्वरूप**–आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सायान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है, और 'रत्नाकरशतक [कन्नड], तथा 'गायत्रीव्याख्यान [कन्नड] के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १।

१५ **षोडशभावनाविवरण**–·······। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्रतिस्थ न–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'गुम्मटाष्टक' तथा सरस्वती स्तोत्र आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १३।

१६ **सज्जनचित्तवल्लभ**–मल्लिषेण। पत्र सं०–२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३५।

१७ **सज्जनचित्तवल्लभ**–आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ७।

१८ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर। पत्र सं० २७५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका भी है :

ग्रन्थ नं० १३।

१९ **सूक्तिमुक्तावली**–आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उतम। प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

विषय–योगशास्त्र

ग्रन्थ नं० ३२ ।

१ ध्यानस्वरूप–······ । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'एकत्वसप्तति' 'स्वरूपसंबोधन' तथा 'इष्टोपदेश' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

२ ध्यानलक्षण–···· । पत्र सं०–१४ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

३ योगामृत–······ । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–योगशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'सरस्वतीस्तोत्र' 'सृष्टिवाद' 'ब्राह्मणवाद' तथा 'वृत्तरत्नाकर' के भी कुछ पत्र हैं ।

विषय–प्रतिष्ठा

ग्रन्थ नं० २ ।

१ जिनसंहिता–इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–अनन्तराज इन्द्र पडुबसदि मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें पूज्यपाद कृत 'महाभिषेक' [पत्र सं०–१७] भी है ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

२ जिनसंहिता–इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–११४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

३ जिनसंहिता–इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–५० । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १ ।

४ प्रतिष्ठाकल्प–भट्टाकलंक देव । पत्र सं०–१०३ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–शालि० शक १६५५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष–शालि० शक १६५५, जय संवत्सर आश्वयुज कृष्ण ८ के दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० १५।

५ प्रतिष्ठाकल्प-भट्टाकलंकदेव। पत्र सं०-१८२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्ति-स्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १२।

६ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणी-कुमुदेन्दु। पत्र सं०-१६१। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-४४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्ति-स्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ५।

७ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि। पत्र सं०-५४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १३।

८ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि। पत्र सं०-१२२। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-८६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ६।

९ प्रतिष्ठसारोद्धार-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र। पडुबसदि, मूडबिद्री।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी भी है।

ग्रन्थ नं० २४।

१० प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-४३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण तथा खण्डित। प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

विषय-आराधना, पूजापाठ, तथा व्रतविधान

ग्रन्थ नं० ८।

१ अनन्तव्रतविधान-······। पत्र सं०-११। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-व्रतविधान। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

विशेष-इसमें 'अश्वपरीक्षा' तथा श्वान आदि के शकुन के भी कुछ पत्र है।

ग्रन्थ नं० २९।

२ आराधनासंग्रह-·········। पत्र सं०-१६। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-२९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-आराधना। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्ति-स्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष-इसमें वज्रपंजर, गर्भरक्षा, तथा सर्वरक्षा इन आराधनाओं का संग्रह है।

ग्रन्थ नं० ७।

३ कलिकुण्डाराधनादिसंग्रह–विद्यानन्दी आदि। पत्र सं०–१२६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना तथा पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कई प्रकार की आराधनाएं तथा पूजाएं संग्रह की गई हैं।

ग्रन्थ नं० २५।

४ नन्दीश्वरपूजा–·······। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ४।

५ पूजापाठसंग्रह–·······। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'अभिषेकपाठ' 'पंचपरमेष्ठिपूजा' तथा आरती आदि संग्रह किये गये हैं। 'नान्दीमंगल,' तथा आशीर्वादपद्य के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४।

६ पूजापाठसंग्रह–······। पत्र सं०–८७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। शालि० शक १७३३। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'अभिषेकपाठ' तथा 'नान्दीमंगल' है। शालि शक १७३३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर, श्रावण शुक्ला ७ शनिवार के दिन मूडबिद्री निवासी पडुबसदि पदुमय्य इन्द्र के पुत्र पाचप्प ने स्थानीय चोलसेट्टि वसदि [चैत्यालय] में इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ५।

७ पूजापाठसंग्रह–······। पत्र सं०–१४२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें प्रतिष्ठासारसंग्रहोक्त कई पूजाएं संग्रह की गई हैं। इनके अतिरिक्त इसमें 'शान्तिविधान' तथा पण्डित आशाधर कृत 'महाभिषेक' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५।

८ पूजापाठसंग्रह–·······। पत्र सं०–१२०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमे 'संध्यावन्दना' 'अभिषेकपाठ' एवं 'नान्दीमंगल' है।

ग्रन्थ नं० ६।

पूजापाठसंग्रह–······। पत्र सं०–१३२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'महाभिषेक', 'लघुशान्ति', 'षोडश-भावनापूजा' आदि संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० १७ ।

१० **पूजापाठसंग्रह**–······। पत्र सं०–११० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बेंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'महाभिषेक' 'विमानशुद्धि' 'वास्तुपूजा' तथा 'शान्तिविधान' है ।

ग्रन्थ नं० १९ ।

११ **पूजापाठसंग्रह**–······। पत्र सं०–१०९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–समान्य । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बेंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'नान्दीमंगल' 'त्रिकालतीर्थंकरपूजा' तथा 'नन्दीश्वरपूजा' आदि संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० १८ ।

१२ **व्रतविधान**–·········। पत्र सं०–४० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–व्रतविधान । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें १७ व्रतों का विधान है ।

विषय–न्याय तथा दर्शन

ग्रन्थ नं० ३१ ।

१ **युक्त्यनुशासन**–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३७ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–छनि । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३१ ।

२ **नयलक्षण**–······। पत्र सं०–२६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'सप्तभंगी' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३१ ।

* ३ **शारीरिकसूत्र**······। पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

४ **षडदर्शन**······। पत्र सं–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिप्रंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'वज्रपञ्जराराधना' 'चिन्तामणिस्तव' तथा 'आरोग्यचक्र' आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

विषय–व्याकरण

ग्रन्थ नं० १६।

१ **काशिकावृत्तिविवरणपंचिका**–आचार्य जिनेन्द्रबुद्धि। पत्र सं०–२१७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।

मंगलाचरण–

जयन्ति ते सदा सन्तं सत्त्वे या यैरुपार्जितम्। गुणानां सुमहद्वृन्दं दोषाणां च विवर्जितम्॥

अन्यतः सारमाकृष्य कृतैषा काशिका यथा। वृत्तिरस्य यथाशक्ति क्रियते पंचिका मया॥

ग्रन्थ नं० २।

२ **गणपाठ**–······। पत्र सं०–११½। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १९।

३ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**–आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०–७५। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–१४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैनपंच, मूडबिद्री।

विषय–कोश

ग्रन्थ नं० २।

१ **अमरकोश**–अमरसिंह। पत्र सं०–११६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३।

२ **अमरकोश**–अमरसिंह। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३।

३ **अमरकोश**–अमरसिंह। पत्र सं०–१४५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ७।

४ **अमरकोश**–अमरसिंह। पत्र सं०–७६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण। प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–यह द्वितीय-काण्ड तक है।

विषय-काव्य

। ग्रन्थ नं० ३ ।

१ **मुनिसुव्रतकाव्य**-अर्हद्दास । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० १ ।

२ **विदग्धमुखमण्डन**-धर्मदास । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विषय-छन्दःशास्त्र ।

ग्रन्थ नं० १० ।

* १ **वृत्तरत्नाकर**-केदार भट्ट । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें श्रीनाथ कृत संस्कृत टीका भी है ।

विषय-नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ नं० १ ।

१ **सुभाषितसंग्रह**-········ । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

२ **सुभाषितसंग्रह**-········ । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

३ **सुभाषितसंग्रह**-······ । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें न्यायसंबन्धी और भी ५ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १० ।

४ **सुभाषितसंग्रह**-········ । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'वायसशकुन' तथा किसी न्यायग्रंथके भी ११ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३५।

५ सुभाषितसंग्रह–········ । पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्ति-स्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विषय–पुराण

ग्रन्थ नं० १८।

१ उत्तरपुराण–आचार्य गुणभद्र। पत्र सं०–२७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। वस्तु–ताडपत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें सिर्फ श्री अनन्तनाथ पुराण तक है।

ग्रन्थ नं० ११।

२ चन्द्रप्रभपुराण–अग्गलदेव। पत्र सं०–२०३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–पुराण। लेखनकाल–शालि०शक १६४२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्ति-स्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १।

३ तीर्थंकरभवावली–······ । पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें वर्तमान २४ तीर्थंकरों के पूर्वभवों का वर्णन संक्षेपमें दिया गया है।

ग्रन्थ नं० ९।

*४ पुराणश्लोकसंग्रह–········ । पत्र सं०–११। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें हिन्दू पुराणों के कुछ श्लोक संग्रह किये गये हैं।

विषय–चरित्र

ग्रन्थ नं० ५।

१ अनन्तमतीचरित–सातणवर्णी। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित। प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसके रचयिता सातणवर्णी श्रुतमुनिके शिष्य हैं। विरोधि संवत्सर पुष्य कृष्णा १० शुक्रवारके दिन पायसेट्टिके पुत्र ब्रह्मण्ण ने लिखा है। इसमें गीत तथा वैद्यक आदिके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २४ ।

२ **आदितीर्थकरचरित**–······ । पत्र सं०–२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १ ।

३ **अंजनाचरित**–शिशुमायण । पत्र सं०–१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७८ । लिपि-कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य तथा खण्डित । प्राप्ति-स्थान–चौटर धर्म साम्राज्यय्य, मूडबिद्री ।

विशेष–स्वभानु संवत्सर कार्तिक शुक्ला ३ चन्द्रवारके दिन यह प्रति लिखी गई है ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

४ **अंजनाचरित**–शिशुमायण । पत्र सं०–११६ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११५ । लिपि-कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–चौटर धर्मसाम्राज्यय्य, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

५ **आंजनेयचरित**–मायण्ण । पत्र सं०–९० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि-कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पद्म-नाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

६ **जिनदत्तचरित**–कवि पद्मनाभ । पत्र सं०–७८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि-कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

७ **जिनदत्तचरित**–कवि पद्मनाभ । पत्र सं०–१२७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण । प्राप्ति-स्थान–अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें प्रारम्भिक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

८ **नागकुमारचरित**–कवि बाहुबली । पत्र सं०–१६५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्ति-स्थान–मा०देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसका अन्तिम भाग कवि वर्धमान का रचा हुआ है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

९ **नेमिनाथपंचकल्याणसंधि**–······ । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१० **नेमिजिनेशसंगति**–मंगरस । पत्र सं०–१६१ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष–इसम 'परीषहजय' संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २ ।

११ **रायविजय**–देवप्प । पत्र सं०–१०९ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–चौटर धर्मसाम्राज्यय्य, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

१२ **श्रीपालचरित**–मंगरस । पत्र सं०–९२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पद्मनाभशास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें बीचका एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

१३ **सुकुमारचरित**–शान्तिनाथ । पत्र सं०–१७५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें अन्तिम एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

१४ **सुदर्शनचरित**–नेमरस । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–चौटर धर्मसाम्राज्यय्य, मूडबिद्री ।

विशेष–इसका रचनाकाल शालि०शक १४०६ है ।

विषय–कथा

ग्रन्थ नं० ३९ ।

१ **उपसर्गनिवारणव्रतकथा**–······ । पत्र सं०–६० । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २ ।

२ **दीपावलिव्रतकथा**–········ । पत्र सं०–१३½ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

३ **नन्दीश्वरव्रतकथा**–······ । पत्र सं०–२१० । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

४ **व्रतकथासंग्रह**–······ । पत्र सं०–१९२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें ७५ व्रतों की कथाएं हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९।

५ **श्रीपंचमीव्रतकथा**–······ । पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विषय–इतिहास

ग्रन्थ नं० ६।

१ **गुम्मटस्वामिचरित**–कवि चन्द्रम। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–इतिहास। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। विशेष–इसमें कारकलस्थ श्री गोम्मटेश्वरमूर्ति का इतिवृत्त अङ्कित है।

ग्रन्थ नं० ९।

२ **गुम्मटस्वामिचरित**–कवि चन्द्रम। पत्र सं०–७७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–इतिहास। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण। प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विषय–आयुर्वेद

ग्रन्थ नं० ३३।

१ **औषधगुणपाठ**–बाहट। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टिप्पणी है।

ग्रन्थ नं० ८।

२ **खगेन्द्रमणिदर्पण**–मंगरस। पत्र सं०–९९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३४।

३ **द्रव्यगुणपाठ**–······ । पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ६।

४ **धन्वन्तरिनिघण्टु**–······ । पत्र सं०–५२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक [कोश]। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ३४।

५ **नाडीविज्ञान**–······ । पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३।

६ **बालग्रहचिकित्सा**–देवेन्द्रमुनि। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक तथा मंत्रशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० २८।

७ **योगशतक**–वररुचि। पत्र सं०–७१। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विषय–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ३८।

८ **वैद्यशास्त्र**······। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें सुवर्णनिर्माण तथा भस्म आदि बनाने की विधि भी उक्त है।

ग्रन्थ नं० ५।

९ **वैद्यसंग्रह**······। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ८।

१० **वैद्यसंग्रह**–······। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ८।

११ **वैद्यसंग्रह**–······। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण। प्राप्तिस्थान–पं० जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ९।

१२ **वैद्यसंग्रह**–······। पत्र सं०–३७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १०।

१३ **वैद्यसंग्रह**–······। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'त्रैवर्णिकाचार, के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १।

१४ **वैद्यसंग्रह**–······। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंवित–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १४ ।

१५ **वैद्यसंग्रह**–······ । पत्र सं०–१९३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१८ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड । विषय–वैद्यक । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ न० १४ ।

१६ **वैद्यसंग्रह**–······ । पत्र सं०–९५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२८ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड । विषय–वैद्यक । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

१७ **वैद्यसंग्रह**–······ । पत्र सं०–१७६ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड । विषय–वैद्यक । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

१८ **वैद्यसंग्रह**–······ । पत्र सं०–५२ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३१ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–वैद्यक । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'अट्ठमत' एवं यंत्र-मंत्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २२ ।

१९ **वैद्यसंग्रह**–······ । पत्र सं०–४२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१६ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–२९ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–वैद्यक । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें यंत्र-मंत्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

२० **वैद्यसंग्रह**–······ । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड । विषय–वैद्यक । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३७ ।

२१ **वैद्यसंग्रह**–······ । पत्र सं०–३० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–वैद्यक । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

२२ **वैद्यसार**–······ । पत्र सं०–६२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–वैद्यक । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'गौलीपतनफल' 'दीक्षानक्षत्र' तथा यंत्र मंत्र आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

२३ **वैद्यामृत**–श्रीधरदेव । पत्र सं०–९० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–वैद्यक । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें ज्योतिष संबन्धी भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४।

२४ **वैद्यामृत**–श्रीधरदेव। पत्र सं०–११४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें वैद्यक तथा मंत्रशास्त्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १०।

२५ **वैद्यामृत**–श्रीधरदेव। पत्र सं०–८३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'नित्यपूजा' आदिके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १३।

२६ **वैद्यामृत**–श्रीधरदेव। पत्र सं०–१२८। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–वैद्यक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें यंत्र-मंत्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

विषय–ज्योतिष

ग्रन्थ नं० १५।

१ **अट्टमत [मेघलक्षण]**–अट्ट अथवा अर्हद्दास। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें मेघसे संबन्ध रखनेवाली बहुत सी बातें बतलाई गई हैं।

ग्रन्थ नं० १।

२ **केवलज्ञानचूडामणि**–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३५।

* ३ **गार्ग्यसंहिता**–यति गर्ग। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ८।

४ **ज्योतिषसंग्रह**–······। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–जिनराजइन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें केवल प्रश्नभाग है।

ग्रन्थ नं० १८।

५ **ज्योतिषसंग्रह**–······। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

विशेष–कीलक संवत्सर कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा के दिन द्रविड देशीय अप्पण्ण सेट्टिने मूडबिद्री निवासी विक्रमसेट्टि बसदि पदुमण्ण इन्द्र के लिये इसे लिखा है। इसमें 'मुनिसुव्रतकाव्य' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २४।

६ **तीर्थंकेवलिप्रश्न**–······। पत्र सं०–४७। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टिप्पणी है।

ग्रन्थ नं० २६।

७ **तीर्थकेवलिप्रश्न**–······। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–१६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टिप्पणी है।

ग्रन्थ नं० १।

८ **त्रैलोक्यदीपिका [सर्वतोभद्रचक्र]**–······। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–अनन्तराजइन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १।

९ **प्रश्नशास्त्र**–केशवार्य। पत्र सं०–७२½। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री।

विशेष– इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ६।

१० **प्रश्नचिन्तामणि**–······। पत्र सं०–१०८। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–२४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–शालि० शक १५८२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

विशेष–इसे शालि० शक १५८२ शार्वरि संवत्सर वैशाख शुक्ला ११ बुधवार के दिन मसूर पण्डित ने लिखा है।

ग्रन्थ नं० ३५।

११ **बीजारोपणतन्त्र**–······। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ६।

१२ **मुहूर्तदर्पण**–विद्यामाधव। पत्र सं०–४६। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ५।

१३ **सामुद्रिक**–······। पत्र सं०–१९½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–ज्योतिष। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ४।

१४ सुग्रीवप्रश्न–······ । पत्र सं०–२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–ज्योतिष । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पं०नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें संस्कृत 'समवसरणचूलिका' भी है । इसके लेखक मूडबिद्री निवासी पडुबसदि पदुमय्य हैं ।

ग्रन्थ नं० २० ।

१५ स्वप्नफल–······ । पत्र सं०–३१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं०नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है । तथा गोलीपतन, गार्दभ एवं वायस आदि के शकुन भी दिये गये हैं ।

विषय–गणित

ग्रन्थ नं० ७ ।

१ गणितविलास–राजादित्य । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–गणित । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विषय–मंत्रशास्त्र

ग्रन्थ नं० २ ।

१ गणधरवलयमंत्र–······ । पत्र सं०–६½ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष– इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

२ भैरवपद्मावतीकल्प–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–५० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान–अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें बन्धुषेण कृत संस्कृत टीका है । इसकी एक टिप्पणी में 'उभयभाषा' का अर्थ प्राकृत तथा गीर्वाण कहा गया है । इसके अतिरिक्त इसमें कवि शान्तिनाथ कृत संस्कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र का भी एक पत्र है ।

ग्रन्थ नं० १९ ।

३ मंत्रसंग्रह–······ । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२८ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'दृष्टिदोषनिवारण' मूषिकबाधानिवारण' आदि कई विषयों के मंत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २।

४ **यंत्रमंत्रसंग्रह**–······ । पत्र सं०–८५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२५ । लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें ग्रहोच्चाटन आदिके कुछ यंत्र तथा मंत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० १९।

५ **श्रीदेवताकल्प**–अरिष्टनेमि । पत्र सं०–२७½ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, वैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

अन्तिम पद्य–"श्रीयुवतिसदनपद्मं राजेन्द्रशिरस्सु शेखरीकृतपद्मम । भव्यानां हितपद्मं श्रीवीरसेनपदयुगपद्मम् ॥ शिष्यः श्रीवीरसेनस्य विद्वद्विनयनायकः । गुणसेनो महीख्यातो वदवादीभकेसरी ॥ तस्य शिष्यो भुवि ख्यातो विद्वदम्भोजभास्करः । विशिष्टारिष्टनेमीशो दुष्टवादिमदापहः ॥ रचितं नेमिनाथेन त्रैविद्येन यतीशिना । स्थेयाच्छ्रीदेवताकल्पं यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥"

विशेष–इसमें पूजापाठ संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं। प्रकृत कल्प में प्रारंभिक भाग नहीं है।

विषय–लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० १४।

१ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–५१ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०९ । लिपि–प्राचीन कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री ।

विशेष–यह अति प्राचीन ग्रंथ है। इसे श्री रेचण्ण ने लिखवाकर आचार्य माघनन्दी को शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ नं० १८।

२ **तिलोयसार [त्रिलोकसार]**–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१४० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । वस्तु–ताडपत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–सिद्धान्तबसदि, जैन पंच, मूडबिद्री ।

विषय–शिल्प

ग्रन्थ नं० ३७।

१ **वास्तुलक्षण**–······ । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२९ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–शिल्प । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विषय–लक्षण, समीक्षा तथा पाकशास्त्र

ग्रन्थ नं० १५।

१ **अश्वशास्त्र**–अभिनवचन्द्र । पत्र सं०–१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–प्राणिशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २।

२ धर्मपरीक्षा–वृत्तविलास। पत्र सं०–५२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भा ा–कन्नड। विषय–समीक्षा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण। प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० २।

३ सूपशास्त्र–मंगरस। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय– सूपशास्त्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है। ग्रन्थ प्रकाशनीय है।

विषय–क्रियाकाण्ड

ग्रन्थ नं० १३।

१ क्रियाकाण्ड–······। पत्र सं०–२६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५२। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम। प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें कन्नड व्याख्यान भी है।

ग्रन्थ नं० १।

२ दशभक्ति–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद। पत्र सं०–३८। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५४। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'कर्मप्रकृति' [कन्नड] के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३।

३ संध्यावन्दना–······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–सामान्य।

प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसद्दि, मूडबिद्री।

विषय–स्तोत्र

ग्रन्थ नं० ९।

१ अकलंकाष्टक–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १।

२ ऋषिमण्डलस्तोत्र–गौतमस्वामी। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य। प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें 'दीक्षाविधि' तथा 'दीक्षानक्षत्र' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० २० ।

३ **गुम्मटाष्टक**–······ । पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें सरस्वतीपूजा, स्तोत्र, नान्दीमंगल, वैद्यक, ज्योतिष आदि कई विषयोंके पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

४ **चतुर्विशतिस्तोत्र**–माघनन्दी । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १८ ।

५ **जिनसहस्रनाम**–आचार्य जिनसेन । पत्र सं०–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

६ **जिनसहस्रनाम**–आचार्य जिनसेन । पत्र सं०–२३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २५ ।

७ **जिनसहस्रनाम**–आचार्य जिनसेन । पत्र सं०–२१ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २० ।

८ **पार्श्वनाथस्तव**–पद्मप्रभदेव । पत्र सं०–४ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४९ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

९ **महर्षिपर्युपासन**–······ । पत्र सं०–११ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें विस्तृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

१० **शान्तीशनुति**–कवि चन्द्रम । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण । प्राप्तिस्थान–मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसके रचयिता कवि चन्द्रम आचार्य श्रुतसागरके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

११ **समवसरणस्तोत्र**–आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०–८ $\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका और [संस्कृत] क्षेत्रपालपूजा एवं स्तोत्र भी है ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

१२ सुप्रभातस्तोत्र–······ । पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

१३ स्वप्नावली–······ । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

१४ स्तोत्रसंग्रह–······ । पत्र सं०–४० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें 'पंचपरमेष्ठिस्वरूप' तथा 'तीर्थंकरलघुपुराण' [कन्नड] आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

१५ स्तोत्रसंग्रह–पण्डित आशाधर । पत्र सं०–२८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें पण्डित आशाधरकृत 'अर्हत्स्तोत्र' 'रत्नत्रयस्तोत्र' एवं 'सरस्वतीस्तोत्र' [कन्नड टीका सहित] संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

१६ स्तोत्रसंग्रह–आचार्य मानतुंग आदि । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें कन्नड टीकाके साथ 'भक्तामरस्तोत्र' 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र' एवं 'विषापहारस्तोत्र' संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

१७ स्वयम्भूस्तोत्र–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २० ।

१८ स्वयम्भूस्तोत्र–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–१० । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४८ । लिपि–कन्नड । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २७ ।

१९ स्वयम्भूस्तोत्र–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–३९ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य । प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष–इसमें कन्नड व्याख्यान भी है ।

विषय-भजन तथा गीत

ग्रन्थ नं० २२।

१ भजनसंग्रह-...... । पत्र सं०-२७। पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें वर्तमान २४ तीर्थंकरोंकी 'सुमनांजलि' (कन्नड) भी है ।

ग्रन्थ नं० ११।

२ भजनसंग्रह-...... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-भजनके अतिरिक्त इसमें पूजापाठ संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १६ ।

३ भजनसंग्रह-...... । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड तथा तुलु । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें मूडबिद्रीके जिनमन्दिरोंसे संबन्ध रखनेवाले कुछ भजन संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

४ रामायणयक्षगान-...... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ८।

५ शान्तीश्वरपंचकल्याणगीत-...... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'भरतेशवैभव' तथा भजन संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २१।

६ शोभनगीतसंग्रह-...... । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें गर्भाधान आदि १६ संस्कारों में गाये जाने वाले गीत संग्रह किये गये हैं ।

विषय-प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० ४०।

१ बारूद आदि बनानेकी विधि-...... । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कौतुक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें आतशबाज आदि बनानेका क्रम दिया है ।

ग्रन्थ नं० ३।

२ भाषाकुसुममंजरी–विश्वनाथ। पत्र सं –८। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–२९। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रकीर्णक। लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य । प्राप्ति-स्थान–शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री।

विशेष–यह 'संस्कृतपाठावली' के समान है। इसके रचयिता कोल्हापुर मठाधीश लक्ष्मीसेन भट्टारक के शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० २१।

*** ३ शिवतत्त्वरत्नाकर**–······। पत्र सं०–५४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–२७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–विविध। लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित। प्राप्तिस्थान–पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष–इसमें वैद्यक, सामुद्रिक तथा तंत्रशास्त्र आदि कई विषय हैं। इन सब पर कन्नड टीका भी है।

श्री जैनमठ कारकलके ताडपत्र और कागज पर लिखे गये हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सविवरण–सूची

विषय–सिद्धान्त

ग्रन्थ नं० १।

१ **गोम्मटसार** [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१६१। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रति-पंक्ति–१३६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें आचार्य अभयचन्द्र के शिष्य केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है।

ग्रन्थ नं० २३।

२ **गोम्मटसार** [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रति-पंक्ति–१६८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २५।

३ **गोम्मटसार** [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२५७। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रति-पंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–शालि० शक १४७०। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें केशण रचित 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है। शालि० शक १४७० कोलक संवत्सर कार्तिक शुक्ला ५ के दिन होय्सल देशान्तर्गत होलेयमुल्लूरु के निवासी देवरसोपाध्याय के पुत्र सांतप्प ने मंजुपाध्याय के पुत्र पद्मरसोपाध्याय के लिये इसे लिखकर दिया।

ग्रन्थ नं० ४८।

४ **गोम्मटसार** [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–११४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

विशेष–इसमें गोम्मटसार [कर्मकाण्ड], क्षपणसार आदि कई विषयों के अधूरे पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ५८।

५ **गोम्मटसार** [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रति-पंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें केशण कृत कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १२३।

६ **गोम्मटसार** [जीवकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१३७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रति-पंक्ति–१६०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १ ।

७ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–७५ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१३९ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें आचार्य अभयचन्द्र के शिष्य केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० २ ।

८ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१५४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–शालि० शक १५२१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें आचार्य अभयचन्द्र के शिष्य केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है । शालि० शक १५२१ विलम्बि संवत्सर आषाढ शुक्ला ५ के दिन सरस्वती गच्छ–बलात्कारगण आचार्य कोण्डकुन्दान्वयी महेन्द्रकीर्ति के शिष्य बंगवाडी निवासी चन्द्रकीर्ति के लिये उलमय सेट्टिके पुत्र जोगिसेट्टि के बन्धु, मयिन्द सेट्टि ने इसे लिखवाकर दान किया है ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

९ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–३१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१३६ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६ ।

१० गोम्मटसार[कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१७४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१३ । अक्षर प्रतिपं-क्ति–७४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें केशण कृत कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० ३४ ।

११ गोम्मटसार[कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–८० । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१४५ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ५८ ।

१२ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–८५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१४० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें केशण कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५९ ।

१३ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–६५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रति-पंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १२७ ।

१४ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१३ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२४ । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११६।

१५ गोम्मटसार [जीवकाण्ड तथा कर्मकाण्ड]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–७८। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संदृष्टियां भी सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ५८।

१६ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५८।

१७ लद्धिसार [लब्धिसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल– शालि० शक १५४०। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि०शक १५४० पिंगल संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ७ गुरुवार को बालम्म सेट्टि ने सरस्वती-गच्छ–बलात्कारगण–कोण्डकुन्दान्वयी–मुनि हेमकीर्ति के शिष्य चन्द्रकीर्ति को मल्यण्ण से इसे लिखवाकर निर्दुःखसप्तमीव्रतोद्यापन के निमित्त दान किया है।

ग्रन्थ नं० १२६।

१८ समयपाहुड [समयप्राभृत]–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–१४। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० १२६।

१९ समयसार–आचार्य कोण्डकुन्द। पत्र सं०–६९। पंक्ति प्रतिपत्र–१४। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

विषय–अध्यात्म

ग्रन्थ नं० ९१।

१ रत्नाकरशतक–रत्नाकर वर्णी। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–अध्यात्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–धर्म

ग्रन्थ नं० ८४।

१ उद्योगसागर–बालचन्द्र। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८७।

२ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'पद्मनन्दिपंचविंशति' का एक प्रकरण है।

ग्रन्थ नं० १३२।

३ उपासकसंस्कार–आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ८७।

* ४ गायत्री–......। पत्र सं०–४$\frac{1}{2}$। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत व्याख्या है।

ग्रन्थ नं० ३३।

५ जिनभक्तिसार.........। पत्र सं०–१७। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १३।

६ तत्त्वार्थसूत्र–आचार्य उमास्वाति। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–९५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें दिवाकरनन्दि-कृत कन्नड लघुवृत्ति है; बीचके दो पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० ९।

७ त्रैवर्णिकाचार–जिनसेन। पत्र सं०–१८९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें प्रारंभिक एक तथा बीच के दो पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० ९७।

८ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण। पत्र सं०–८५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९८।

९ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण। पत्र सं०–८१। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–शालि० शक १४४२। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–शालि० शक १४४२ प्रमाथि संवत्सर आश्वयुज शुक्ल सोमवार को इसे बेलगोल निवासी चिक्कमकुट ने लिखा है। इसकी दो प्रतियां हैं। दूसरी प्रति साधारण संवत्सर कार्तिक कृष्णा ७ रविवार के दिन लुसिसल निवासी नागप्प के पुत्र ब्रह्मदेव के द्वारा लिखी गई है।

ग्रन्थ नं १०९।

१० द्वादशानुप्रेक्षा–विजयण्ण। पत्र सं०–७५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८७।

११ नीतिसारसमुच्चय–इन्द्रनन्दी। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टिप्पणी है।

ग्रन्थ नं० ८४।

१२ पंचपरमेष्ठिस्वरूप–पण्डित बालचन्द्र। पत्र स०–७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७१। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

१३ प्रश्नोत्तररत्नमाला–अमोघवर्ष । पत्र सं०–२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० ६९ ।

१४ मुल्लाशास्त्र–चन्द्रसागर वर्णी । पत्र सं०–३६ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९८ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–श्रीमुख संवत्सर आषाढ़ शुक्ला ८ के दिन परिषण्ण के पुत्र पुट्टय्यामय्य ने इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

१५ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–३३ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८४ ।

१६ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०–९ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

१७ व्रतस्वरूप–आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ९९ ।

१८ व्रतस्वरूप–आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४२ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'गायत्री व्याख्यान' [संस्कृत] तथा 'सम्यक्त्वकौमुदी [कन्नड] के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

१९ श्रावकाचार–माघनन्दी । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

२० श्रावकाचारसंग्रह–पण्डित आशाधर आदि । पत्र सं०–१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें 'सागार धर्मामृत' 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' आदि ग्रन्थों से श्रावकाचार संबन्धी कई बातें सप्रमाण संग्रह की गई हैं, साथमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८४ ।

२१ श्रीपदाशीति–······ । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १२९ ।

२२ सज्जनचित्तवल्लभ–मल्लिषेण । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है । और 'अकलंकस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५० ।

२३ **सागारधर्मामृत**–पण्डित आशाधर । पत्र सं –४२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२५ ।

२४ **सागारधर्मामृतटोका**–······ । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

२५ **सूक्तिमुक्तावली**–आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०–६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विषय–प्रतिष्ठा

ग्रन्थ नं० ११३ ।

१ **जिनसंहिता**–एकसन्धी । पत्र सं०–६६ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४३ ।

२ **जिनसंहिता**–एकसंधी । पत्र सं०–७६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

३ **प्रतिष्ठातिलक**–ब्रह्मसूरि । पत्र सं०–१६ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

४ **प्रतिष्ठातिलक**–ब्रह्मसूरि । पत्र सं०–५६½ । पंक्ति प्रतिपत्र–१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकालक–शालि० शक १५७७ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–खण्डित ।

विशेष–शालि० शक १५७७ पार्थिव संवत्सर भाद्रपद कृष्णा ८ गुरुवार को कोल्लेगाल निवासी विजयण्णोपाध्याय के पुत्र शान्तय्य ने इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

५ **प्रतिष्ठातिलक**–नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१४२ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५५ लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–क्रोधि संवत्सर ज्येष्ठ शुक्ला १० शनिवार के दिन मुनिचन्द्रदेव के लिये यह ग्रन्थ लिखा गया ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

६ **प्रतिष्ठातिलक**–नेमिचन्द्र । पत्र सं०–१२८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१८४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रतिष्ठा । लेखनकाल–शालि० शक १५७६ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

विशेष–शालि० शक १५७६ तारण संवत्सर ज्येष्ठ शुक्ला ५ के दिन सागडे निवासी विजयण्णोपाध्याय के पुत्र शान्तय्य ने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ३०।

७ **प्रतिष्ठासारोद्धार**–पण्डित आशाधर। पत्र सं०–६८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–खण्डित।

ग्रन्थ नं० १५।

८ **सिद्धचक्रप्रतिष्ठा**–······। पत्र सं०–६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–४४। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–आराधना, पूजापाठ तथा व्रतविधान

ग्रन्थ नं० ७५।

१ **आराधनात्रय**–······। पत्र सं–५२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। लेखनकाल–शालि० शक१८४०। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका प्रतिलिपिकाल शालि० शक १८४० पिंगल संवत्सर कार्तिक कृष्णा १३ बुधवार है। इसमें कलिकुण्ड, सिद्धचक्र तथा शान्तिचक्र ये तीन आराधनाएं शामिल हैं।

ग्रन्थ नं० १६३।

२ **नान्दीमंगलादिसंग्रह**–······। पत्र सं०–१६७। पंक्ति प्रतिपत्र–२०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कई पूजाएं तथा 'शान्तिविधान' भी सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ११०।

३ **पूजापाठसंग्रह**–······। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'नान्दीमंगल' 'अभिषेकपाठ' तथा विमानशुद्धि भी हैं।

ग्रन्थ नं० ११२।

४ **पूजापाठसंग्रह**······। पत्र सं०– ४२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'नान्दीमंगल' तथा 'लघुशान्तिविधान' है।

ग्रन्थ नं० १५८।

५ **पूजापाठसंग्रह**–······। पत्र सं०–२४७। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–नागरी। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–संवत् १७०९। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह प्रति संवत् १७०९ श्रावण शुक्ला २ शुक्रवार के दिन लिखी गई है।

ग्रन्थ नं० १६०।

६ **पूजापाठसंग्रह**–······। पत्र सं०–२०७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत तथा हिन्दी। विषय–पूजा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १६२।

७ **पूजापाठसंग्रह**–······। पत्र सं०–२६०। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–२८। लिपि–नागरी। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५ ।

८ मृत्युंजयआराधना—······ । पत्र सं०—२२ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६४ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—आराधना । लेखनकाल—शालि० शक १८४१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि शालि० शक १८४१ कालयुक्ति संवत्सर वैशाख शुक्ला प्रतिपदा शनिवार को समाप्त हुई है । प्रतिलिपिकार नागराजोपाध्याय के पुत्र ब्रह्मदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

९ रत्नत्रयविधान—अय्यप्प । पत्र सं०—२ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्रतविधान । लेखनकाल—× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विषय—न्याय तथा दर्शन

ग्रन्थ नं० १८१ ।

१ अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०—९० । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९४ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । लेखनकाल—× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष—इसमें व्याकरण संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

२ आप्तपरीक्षा—आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०—४५ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१५० लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । लेखनकाल—× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

३ पत्रपरीक्षा—आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०—९ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१६० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । लेखनकाल—× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३५ ।

४ प्रमेयकमलमार्तण्ड—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०—१६० । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । लेखनकाल—× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण तथा खण्डित ।

विषय—व्याकरण

ग्रन्थ नं० १२८ ।

१ कातंत्ररूपमाला—भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०—११३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२९ ।

२ कातंत्ररूपमाला—भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०—४८ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४२ ।

३ चिन्तामणिकी टीका—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०—५० । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१५० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ३२।

४ **जैनेन्द्रन्यास**-प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-१३०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० २८।

५ **जैनेन्द्रप्रक्रिया**-गुणनन्दी। पत्र सं०-१२२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-५३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसकी प्रतिलिपि आनन्द संवत्सर कार्तिक कृष्णा ३ शुक्रवार को की गई है।

ग्रन्थ नं० ३६।

६ **जैनेन्द्रप्रक्रिया**-गुणनन्दी। पत्र सं०-१७३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-६५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८२।

७ **रूपसिद्धि**-दयापाल। पत्र सं०-६२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-६७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४।

८ **शब्दानुशासन**-भट्टाकलंक। पत्र सं०-१३०। पंक्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा कन्नड। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-यह ग्रंथ शालि०शक १५२६ शोभकृत् संवत्सर फाल्गुन शुक्ला ५ गुरुवार के दिन रचा गया है।

ग्रन्थ नं० १३०।

९ **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**-आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०-१२४। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० १३९।

१० **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**-आचार्य अभयचन्द्र। पत्र सं०-१३३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विषय-कोश

ग्रन्थ नं० ३५।

१ **अमरकोश**-अमरसिंह। पत्र सं०-७६। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-५३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४४।

२ **अमरकोश [वनौषधिवर्ग]**-अमरसिंह। पत्र सं०-२५½। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-६१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ६३।

३ **अमरकोश**-अमरसिंह। पत्र सं०-९२। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ९१।

४ **नानार्थरत्नाकर**-देवोत्तम। पत्र सं०-१७½। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कोश। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १२२।

५ **नानार्थसंग्रह**–.......... । पत्र सं०–१७ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२७ । लिपि–कन्नड । भाषा–तेलुगु । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९१ ।

६ **नाममाला**–महाकवि धनंजय । पत्र सं०–१२ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९१ ।

७ **नाममाला**–महाकवि धनंजय । पत्र सं०–४७ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४२ ।

८ **विदग्धचूडामणि**–विट्ठल । पत्र सं०–७५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कोश । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–यह 'अमरकोश' की टीका है ।

विषय–काव्य

ग्रन्थ नं० १२५ ।

१ **क्षत्रचूडामणि**–वादीभसिंह । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

२ **धर्मशर्माभ्युदय**–महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०–१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

३ **पुरुदेवचम्पू**–अर्हद्दास । पत्र सं०–९० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४५ ।

४ **पंचसन्धानकाव्य**–कवि शान्तिराज । पत्र सं०–११२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४६ ।

५ **पंचसन्धानकाव्य**–कवि शान्तिराज । पत्र सं०–१११ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६८ ।

६ **भावकजनकल्पवृक्ष**–पद्मराज । पत्र सं०–१४८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह कवि शान्तिराज कृत 'सरसजनचिन्तामणि' की व्याख्या है ।

ग्रन्थ नं० ६७।

७ मुनिसुव्रतकाव्य–अर्हद्दास। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ११८।

८ मुनिसुव्रतकाव्य–अर्हद्दास। पत्र सं०–४२। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ९६।

९ यशोधरकाव्य–वादिराज। पत्र सं०–१५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९६।

१० यशोधरकाव्य–वादिराज। पत्र सं०–१८½। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १२५।

११ यशोधरकाव्य–वादिराज। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १४२।

१२ यशोधरकाव्यटीका–लक्ष्मण। पत्र सं०–१०८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें संस्कृत 'नागकुमारचरित' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४७।

१३ सरसजनचिन्तामणि–कवि शान्तिराज। पत्र सं०–२७७। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें पद्मराजका बनाई हुई संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ६२।

१४ सरसजनचिन्तामणि–कवि शान्तिराज। पत्र सं०–२०२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६८।

१५ सरसजनचिन्तामणि–कवि शान्तिराज। पत्र सं०–१९। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १०२।

१६ सरसजनचिन्तामणि–कवि शान्तिराज। पत्र सं०–३२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० २२।

१७ सुखबोधिनी–अर्हद्दास। पत्र सं०–१२०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। लेखनकाल–शालि०शक १७४४। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह 'मुनिसुव्रतकाव्य' की टीका है। शालि०शक १७४४ चित्रभानु संवत्सर फाल्गुन शुक्ल १० बुधवार के दिन यह ग्रन्थ लिखकर समाप्त हुआ है।

ग्रन्थ नं० १०५ ।

१८ **सन्देहध्वान्तदीपिका**–पण्डित यशःकीर्ति । पत्र सं०–९७ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–११० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–यह 'धर्मशर्माभ्युदय' काव्य की टीका है । टीका के कर्ता यशःकीर्ति ललितकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य हैं ।

विषय–अलङ्कार आदि

ग्रन्थ नं० १३३ ।

१ **अलंकारसंग्रह**–अमृतानन्द योगी । पत्र सं०–५९ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–अलंकार । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

विषय–नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ नं० ७४ ।

१ **नीतिवाक्यामृत**–आचार्य सोमदेव । पत्र सं०–८९ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १५१ ।

२ **नीतिवाक्यामृतटीका**–नेमिनाथ । पत्र सं०–

ग्रन्थ नं० ९१ ।

३ **हरदनीति**–सिहराज । पत्र सं०–९$\frac{1}{2}$ । पंक्ति प्रतिपत्र– ६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–नीति । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विषय–पुराण

ग्रन्थ नं० ५३ ।

१ **आदिपुराण**–महाकवि पंप । पत्र सं०–१९८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–शालि०शक १७३३ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–शालि०शक १७३३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर पुष्य शुक्ला १४ शनिवार के दिन महायंत्रपुरस्थ पार्श्वनाथ चैत्यालय में उपाध्याय चेन्नप्प के पौत्र चन्दु उपाध्याय के द्वारा यह लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० १३६ ।

२ **आदिपुराण [पूर्वपुराण]**–आचार्य जिनसेन । पत्र सं०–१९५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । लेखनकाल–शालि०शक १४५१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–शालि०शक १४५१ सर्वधारी संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० मंगलवार को बेंपवाडि निवासी मल्लरस के पुत्र नेमरस ने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

३ **आदिपुराण [पूर्वपुराण]**–आचार्य जिनसेन । पत्र सं०–२० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७ ।

४ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०–१६१ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १०८ ।

५ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०–२७५ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । लेखनकाल–शालि०शक १४३५ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–शालि०शक १४३५ अंगीरस संवत्सर मार्गशिर कृष्ण १० गुरुवार को कोणसूर बिट्टिदेव के पुत्र पुट्टदेवरस ने इसे लिखा है । इसमें प्रारंभिक पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० १२४ ।

६ **उत्तरपुराण**–आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०–१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । लेखनकाल–शालि०शक ८२४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–शालि०शक ८२४ दुंदुभि संवत्सर कार्तिक कृष्ण ५ बुधवार के दिन अनन्तमति आर्यिका ने तरुपुरस्थ चन्दर के पुत्र चन्दप्प को इसे लिखवाकर दिया है ।

ग्रन्थ नं० ११९ ।

७ **जिनभारत**–ब्रह्मणांक । पत्र सं०–४१ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४६ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४७ ।

८ **जैमिनिभारत**–लक्ष्मीश । पत्र सं०–११८ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें यक्षगान संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५२ ।

९ **त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण**–चामुण्डराय । पत्र सं०–१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र–१८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९९ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०७ ।

१० **वृषभनाथपुराण**–भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र सं०–१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०५ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विषय–चरित्र

ग्रन्थ नं० २९ ।

१ **जिनदत्तचरित**–पद्मनाभ । पत्र सं०–९५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है । प्रतिलिपि का समाप्तिकाल शार्वरि संवत्सर कार्तिक शुक्ला ३ बुधवार है ।

ग्रन्थ नं० ७६।

२ जिनदत्तचरित–पद्मनाभ। पत्र सं०–८४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है।

ग्रन्थ नं० २०।

३ ज्ञानचन्द्राभ्युदय–कल्याणकीर्ति। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४६। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३।

४ नागकुमारचरित–बाहुबली। पत्र सं०–१५६। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसका अन्तिम भाग कवि वर्धमान का रचा हुआ है।

ग्रन्थ नं० ३१।

५ नागकुमारचरित–बाहुबली। पत्र सं०–१८०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–क्रोधि संवत्सर श्रावण कृष्णा १३ के दिन कुदेर निवासी देवचन्द्र ने रामसमुद्र के जिन्नप्प सेट्टि के लिये इसे लिखकर दिया है।

ग्रन्थ नं० ८८।

६ नागकुमारचरित–बाहुबली। पत्र सं०–१८५। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–७९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–शालि० शक १७३८। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–शालि० शक १७३८ हेविलंबि संवत्सर भाद्रपद शुक्ला १० सोमवार को इसे दासनल्लि गंगप्प के वास्ते नंजुंडप्प ने लिखकर दिया है।

ग्रन्थ नं० ९५।

७ नागकुमारचरित–बाहुबली। पत्र सं०–८५। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–शालि० शक १६७२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि० शक १६७२ दुर्मति संवत्सर में इसे बालय्य ने धर्मण के वास्ते लिखकर दिया है। इसमें 'क्रियापाठ' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ९६।

८ नागकुमारचरित–मल्लिषेण। पत्र सं०–१८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ५०।

९ नेमिजिनेशसङ्गति–मङ्गरस। पत्र सं०–२२१। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–शालि० शक १७७४। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–शालि० शक १७७४ क्रोधि संवत्सर मार्गशिर शुक्ला ७ गुरुवार को तोविनकेरे निवासी अलकूरप्पके पुत्र पुट्टण्णने ब्रह्मण्ण को इसे लिखकर दिया है।

ग्रन्थ नं० ५१।

१० नेमिजिनेशसङ्गति–मङ्गरस। पत्र सं०–१६०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–११३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध दशा–अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५६ ।

११ **नेमिजिनेशसंगति**–मंगरस । पत्र सं०–१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित । लेखनकाल–शालि०शक १७३४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–शालि०शक १७३४ आंगीरस संवत्सर ज्येष्ठ कृष्णा १४ सोमवारके दिन शंकिघट्टस्थ चन्द्रनाथ चैत्यालय में रायप्प के पुत्र नलिनाख्यने इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० ७३ ।

१२ **नेमिजिनेशसंगति**–मंगरस । पत्र सं०–२९७ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–यह ग्रन्थ प्रभव संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ५ रविवारके दिन होलवनहल्लि निवासी पापण्णके पुत्र पोम्मण्णके द्वारा लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० १०६ ।

१३ **नेमिजिनेशसंगति**–मंगरस । पत्र सं०–९७ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–१२० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–शालि०शक १५२६ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–शालि०शक १५२६ शोभकृत् संवत्सर कातिक कृष्णा ८ बुधवार के दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

१४ **नेमिजिनेशसंगति**–मंगरस । पत्र सं०–९० । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८१ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९० ।

१५ **भरतेशवैभव**–रत्नाकर वर्णी । पत्र सं०–९० । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८२ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–शालि०शक १६६८ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–शालि०शक १६६८ अक्षय संवत्सर आश्वयुज कृष्णा ५ मंगलवार रोहिणी नक्षत्रमें इसे नागप्प के पुत्र पदुमण्णने उत्तल निवासी पद्मण्ण के वास्ते लिखकर दिया है । इसमें 'अनन्तव्रतविधान' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ९३ ।

१६ **भरतेशवैभव**–रत्नाकर वर्णी । पत्र सं०–१५४½ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–९० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३८ ।

१७ **माणिक्यजिनेशचरित**–······ । पत्र सं०–१५१ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२४ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–शालि०शक १७९३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–शालि०शक १७९३ शुक्ल संवत्सर आषाढ़ शुक्ला ५ बुधवारको नेलहालु निवासी पुट्टण्णने इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

१८ **रामचरित**–कवि चन्द्रशेखर । पत्र सं०–९८ । पंक्ति प्रतिपत्र–८ । अक्षर प्रतिपंक्ति–७५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें १६ अध्याय [सीतापहरण संधि] तक है । इसके रचयिता चन्द्रशेखर आचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

१९ **लक्ष्मीमतिस्वयंवर**······ । पत्र सं०–७ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–६७ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–चरित्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम

विशेष–यह 'नागकुमारचरित' का एक अंश है ।

ग्रन्थ नं० ५८।

२० श्रीपालचरित–केशण। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–चरित्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय-कथा

ग्रन्थ नं० ३३।

१ चन्द्रमुखीकथा–······पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६२। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १०३।

२ धर्मामृत–नयसेन। पत्र सं०–१३३। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १३१।

३ धर्मामृत–नयसेम। पत्र सं–८४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १४६।

४ धर्मामृत–नयसेन। पत्र सं०–१२२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

ग्रन्थ नं० ३९।

*५ पंचतंत्र–दुर्गसिंह। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ९।

*६ पंचतंत्र–दुर्गसिंह। पत्र सं०–४४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–शालि० शक १७७२। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–शालि० शक १७७२ सौम्य संवत्सर श्रावण कृष्ण १ गुरुवारके दिन इसे शीतगल्लु निवासी कालप्पके पुत्र गाल शेट्टिके वास्ते तोविन केरे निवासी वीरभद्रके पुत्र पुट्टण्णने लिखकर दिया है।

ग्रन्थ नं० ८९।

७ बत्तीसपुत्थलीकथा–····। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–धातु संवत्सर कातिक कृष्ण सोमवार को इसे कोलत्तूर निवासी वेंकटरामय्यने लिखा है।

ग्रन्थ नं० ८७।

८ भेतालपंचविंशति–······। पत्र सं०–७२½। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–व्यय संवत्सर श्रावण शुक्ला ५ के दिन इसे चेन्नप्पने अपने वास्ते लिखा है।

ग्रन्थ नं० १४५।

९ लीलावती–नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२८। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १११ ।

१० व्रतकथासंग्रह–······। पत्र सं०–१०७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें ७२ व्रतों की कथाएं हैं।

ग्रन्थ नं० १०४ ।

११ सम्यक्त्वकौमुदी–पत्र सं०–५१। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–८०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय–इतिहास

१ गोम्मटेश्वरचरित–चन्द्रम। पत्र सं०–१०२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–इतिहास लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–यह कार्कलस्थ गोम्मटेश्वरप्रतिमा का चरित्र है। इसके रचयिता चन्द्रम, श्रुतमुनिके शिष्य हैं।

ग्रन्थ नं० १८।

२ भूतालपाण्ड्यके शासननियम······। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–४७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–इतिहास। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें भूतालपाण्ड्यके राज्यशासन सम्बन्धी कई विषय शामिल हैं।

ग्रन्थ नं० ७२।

३ शान्तिराजकविप्रशस्ति–कवि शान्तिराज। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–९०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय–आयुर्वेद

ग्रन्थ नं० ४४।

***१ नाडीपरीक्षा**–······। पत्र सं०–१३८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० २०।

२ वैद्यसंग्रह–······। पत्र सं०–७३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५६। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४४।

३ वैद्यसंग्रह–······। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७८। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० ५४।

४ वैद्यसंग्रह–······। पत्र सं०–२३। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ९४।

५ वैद्यसंग्रह-······। पत्र सं०-१६८। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-८९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है।

विषय-ज्योतिष

ग्रन्थ नं० ६४।

१ केवलज्ञानहोरा-मुनिचन्द्रसेन। पत्र सं०-३१। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-२५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५४।

२ ज्योतिष-······। पत्र सं०-१६२। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें 'शकुन' 'दूतलक्षण' आदि कई विषय शामिल हैं। परिधावि संवत्सर फाल्गुन कृष्णा प्रतिपदा को श्रवणबेलगोल निवासी पायि सेट्टिने इसे लिखकर समाप्त किया है।

ग्रन्थ नं० १३४।

३ नवग्रहचिन्तामणि-······। पत्र सं०-१०७। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-१९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-सौम्य संवत्सर मार्गशिर शुक्ला ३ चन्द्रवारके दिन इसका लेखन समाप्त हुआ है।

ग्रन्थ नं० ६१।

* ४ बृहज्जातक-वराहमिहिर। पत्र सं०-२१२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-५२। लिपि-नागरी। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें बीच-बीचमें कन्नड टिप्पणियां हैं, तथा ज्योतिष संबन्धी और भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ११७।

* ५ बृहज्जातक-वराहमिहिर। पत्र सं०-७४। पंक्ति प्रतिपत्र-१२। अक्षर प्रतिपंक्ति-९४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है।

विषय-गणित

ग्रन्थ नं० ५४।

१ गणितकाष्ठक [पद्दाडा]-······। पत्र सं०-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गणित। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५४।

२ गणितविलास-राजादित्य। पत्र सं०-१९। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-२७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गणित। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५४।

* ३ गणितविलास-राजादित्य। पत्र सं०-१५। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-२१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गणित। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६० ।

* ४ गणितविलास–राजादित्य । पत्र सं०–६० । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–गणित । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–अति जीर्ण ।

विषय–मंत्रशास्त्र ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

१ ज्वालिनीमत–इन्द्रनन्दी । पत्र सं०–२१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसका अपर नाम 'ज्वालिनीकल्प' है ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

२ पद्मावतीकल्प–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–१७९ । पंक्ति प्रतिपत्र–११ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१ ।

३ पार्श्वनाथमंत्राष्टक–······ । पत्र सं०–१ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–७३ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें समन्तभद्र कृत 'मंत्रव्याकरण,' 'सुवर्णनिर्माण', अष्टदिग्बन्धन' इनके भी एक एक पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

४ पंचनमस्कारकल्प–······ । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–६० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें आदि के दो पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ८५ ।

५ यंत्रसंग्रह–······ । पत्र सं०–१९ । पंक्ति प्रतिपत्र–४ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७ ।

६ लघुशान्तिहोम–······ । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–४१ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३८ ।

७ लघुशान्तिहोम–······ । पत्र सं०–१५ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५६ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

८ श्रीदेवताकल्प–अरिष्टनेमि । पत्र सं०–५ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–५४ । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

९ सरस्वतीकल्प–आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०–८ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२० ।

१० होमविधान–······ । पत्र सं०–२१ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२० । लिपि–कन्नड । भाषा–संस्कृत । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है, तथा वैद्यक संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

विषय–लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० १०।

१ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–१०९। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–१०८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ११।

२ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–११२। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–८८। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० १२।

३ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–९४। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१५०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें आचार्य गुणभद्र कृत 'उत्तरपुराण' के भी १६ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १७।

४ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–४८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५१। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें मंत्रशास्त्र सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १२५।

५ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२०। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–१२०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १५२।

६ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०–२२। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–११०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

ग्रन्थ नं० ८०।

७ त्रिलोकसारवृत्ति–माधवचन्द्र। पत्र सं०–६७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ८३।

८ लोकतत्त्वविभाग–सिंहसूरि। पत्र सं०–४४। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–९१। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–अति जीर्ण।

विशेष–यह प्राकृत 'लोकविभाग' का संस्कृत रूपान्तर है।

ग्रन्थ नं० ९१।

९ लोकस्वरूप–चन्द्रम। पत्र सं०–९। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–लोकविज्ञान। लेखनकाल–× पूर्ण तथा शुद्ध। दशा–उत्तम।

विषय-लक्षण, समीक्षा तथा पाकशास्त्र।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

१ धर्मपरीक्षा-पायण्ण । पत्र सं०-११२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११५ ।

२ धर्मपरीक्षा-वृत्तविलास । पत्र सं०-११६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

३ लक्षणसंग्रह-······ । पत्र सं०-९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लक्षण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

४ वज्रपरीक्षा······ । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विषय-क्रियाकाण्ड

ग्रन्थ नं० ७ ।

१ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-शालि० शक १६८४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

२ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-४७½ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६५ ।

३ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७७ ।

४ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८६ ।

५ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३८ ।

६ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष–इसमें कन्नड टीका है।

ग्रन्थ नं० १५४।

७ क्रियापाठ–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–२९७। पंक्ति प्रतिपत्र–१४। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' 'व्रतस्वरूप' आदि भी हैं।

ग्रन्थ नं० १६१।

८ क्रियापाठ–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–३०८। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–१७। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० १२१।

९ शवसंस्कारविधि–·····। पत्र सं०–३०। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–३२। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १०१।

१० श्रावकप्रतिक्रमण–·······। पत्र सं०–१०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–क्रियाकाण्ड। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय–स्तोत्र

ग्रन्थ नं० ४०।

१ अकलंकस्तोत्र–आचार्य अकलंकदेव। पत्र सं०–१। पंक्ति प्रतिपत्र–१२। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें 'त्रैवर्णिकाचार' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७०।

२ आरोग्यस्तोत्र–श्रुतकीर्ति। पत्र सं०–४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–९४। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० १००।

३ दशभक्ति–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद। पत्र सं०–१३७। पंक्ति प्रतिपत्र–११। अक्षर प्रतिपंक्ति–६५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–शालि०शक १७१८। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'पंचस्तोत्र', 'स्वयंभूस्तोत्र' आदि भी हैं। साथ कन्नड टीका भी। शालि०शक १७१८ नल संवत्सर आषाढ शुक्ला १५ के दिन इसे पडुबस्ति पदुमय्य उपाध्यायने चारुकीर्ति के शिष्य सन्मतिसागर के लिये लिखा है।

ग्रन्थ नं० १५५।

४ दशभक्ति–आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद। पत्र सं०–१५०। पंक्ति प्रतिपत्र–१३। अक्षर प्रतिपंक्ति–२७। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–स्तोत्र। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'पंचस्तोत्र' भी सम्मिलित है।

ग्रन्थ नं० ८७।

५ **प्रश्नोत्तरचतुर्विंशतिजिनस्तवन**--धर्मचन्द्र। पत्र सं०-१७। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७।

६ **स्तोत्रसंग्रह**-आचार्य समन्तभद्र आदि। पत्र सं०-४४। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें स्वयंभ, जिनसहस्रनाम, भक्तामर, कल्याणमन्दिर, विषापहार, एकीभाव तथा जिनचतुर्विंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र एवं आचार्य पद्मनन्दिकृत क्रियाकाण्डचूलिका सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ४१।

७ **स्तोत्रसंग्रह**-आचार्य मानतुंग आदि। पत्र सं०-३४। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें निम्नलिखित स्तोत्र हैं-भक्तामर, जिनसहस्रनाम, जिनचतुर्विंशतिका, सुप्रभात, दृष्टाष्टक, अद्याष्टक तथा माघनन्दिकृत चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र। इसके अतिरिक्त इसमें 'स्वयम्भूस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १०१।

८ **स्तोत्रसंग्रह**-आचार्य मानतुंग आदि। पत्र सं०-२४। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण

विशेष-इसमें 'भक्तामर' 'पार्श्वनाथाष्टक' आदि कई स्तोत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १५७।

९ **स्तोत्रसंग्रह**-आचार्य मानतुंग आदि। पत्र सं०-९६। पंक्ति प्रतिपत्र-२६। अक्षर प्रतिपंक्ति-२२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें 'भक्तामर' आदि कई स्तोत्र हैं। दशभक्ति के कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १६४।

१० **स्तोत्रसंग्रह**-आचार्य जिनसेन आदि। पत्र सं०-१७१। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत, प्राकृत तथा कन्नड। विषय-स्तोत्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें 'सहस्रनाम, नवदेवता' आदि कई स्तोत्र हैं। 'दशभक्ति' के भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं।

विषय-भजन तथा गीत

ग्रन्थ नं० ३३।

१ **अभिमन्युयक्षगान [चक्रव्यूहभेदन]**-पत्र सं०-४४। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाल-× पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६६।

२ **अभिमन्युयक्षगान**-······। पत्र सं०-४९। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४।

३ **आदीश्वरयक्षगान**-····। पत्र सं०-९३। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गीत। लेखनकाल-शालि० शक १७७३। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष–शालि० शक १७७३ विरोधिकृत संवत्सर फाल्गुन कृष्ण १२ बुधवार के दिन यलेकेतनहल्लि निवासी यिज्जध ने अपने पुत्रके लिये इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० १८।

४ **देवीमाहात्म्ययक्षगान**–······। पत्र सं०–६८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५३। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गीत। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

ग्रन्थ नं० ८।

५ **भजनसंग्रह**–······। पत्र सं०–३६३। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–५८। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–भजन। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कई धार्मिक भजन संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ३३।

६ **भजनसंग्रह**–······। पत्र सं०–२१। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–८५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–भजन। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'सोमेश्वरशतक' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ११४।

७ **भजनसंग्रह**–······। पत्र सं–१११। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–भजन। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें संस्कृत स्तोत्र सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १४४।

८ **रामायणयक्षगान**–······। पत्र सं०–१४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गीत। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ५५।

९ **श्रीकृष्णयक्षगान**–······। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गीत। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–दुंदुभि संवत्सर पुष्य शुक्ला द्वितीया के दिन बेंगलूर निवासी कालप्प की पुत्री पद्मिनीके लिये भुजंगप्पने इसे लिख कर दिया है।

ग्रन्थ नं० ३९।

१० **सोमशेखरचित्रशेखरयक्षगान**–······। पत्र सं०–७६। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–६९। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गीत। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४३।

११ **सोमशेखरचित्रशेखरयक्षगान**–······। पत्र सं०–४७। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गीत। लेखनकाल–× पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय–प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० १५६।

१ **क्रियापाठादिसंग्रह**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–६०। पंक्ति प्रतिपत्र–१५। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत तथा संस्कृत। विषय–प्रकीर्णक। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कई स्तोत्र तथा अष्टक सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० १६५।

२ **क्रियापाठादिसंग्रह**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–४६०। पंक्ति प्रतिपत्र–१९। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड। विषय–प्रकीर्णक। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कई स्तोत्र तथा कन्नड 'ध्यानस्वरूप' सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० १४८।

३ **योगरत्नाकरादिसंग्रह**–शान्तरस आदि। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड तथा संस्कृत। विषय–प्रकीर्णक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें 'योगरत्नाकर' 'लोकस्वरूप' 'व्रतस्वरूप' आदि के अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० १५९।

४ **रयणसारादिसंग्रह**–आचार्य कोण्डकुन्द आदि। पत्र सं०–२८३। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२३। लिपि–कन्नड। भाषा–प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड। विषय–प्रकीर्णक। वस्तु–कागज। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें 'रयणसार' 'सूक्तिमुक्तावली' 'ध्यानस्वरूप' आदि कई विषय हैं।

ग्रन्थ नं० १९।

५ **संग्रह**–······। पत्र सं०–१६८। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–६३। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत तथा कन्नड। विषय–प्रकीर्णक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें कई विषयों के अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० १५३।

६ **संग्रह**–·········। पत्र सं०–३५। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–२५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रकीर्णक। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें ज्योतिष तथा वैद्यकसंबन्धी कुछ अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं।

अलियूरु आदिनाथ-देवालयस्थ ताडपत्रीय ग्रन्थों की सविवरण-सूची

विषय–धर्म

ग्रन्थ नं० २१।

१ द्वादशानुप्रेक्षा–विजयवर्णी। पत्र सं०–९४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें जिनगुणसंपत्ति, उपसर्गनिवारण आदि कुछ व्रतकथाएं भी हैं।

ग्रन्थ नं० ३१।

२ द्वादशानुप्रेक्षा–······। पत्र सं०–१०७। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें त्रिलोकवर्णन तथा व्रतवर्णनके भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० २२।

३ रत्नकरण्डश्रावकाचार–आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–१००। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष–इसमें कथासहित विस्तृत कन्नड टीका भी है।

विषय–प्रतिष्ठा

ग्रन्थ नं० ११।

४ जिनसंहिता–आचार्य एकसंधी। पत्र सं०–१२२। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–६०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–प्रतिष्ठा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें महावीराचार्य कृत गणितसार तथा कन्नड जीवन्धरषट्पदिके भी कुछ पत्र हैं।

विषय–आराधना तथा पूजापाठ

ग्रन्थ नं० २९।

५ आराधनासंग्रह–······। पत्र सं०–९७। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें मृत्युञ्जय, सर्वरक्षा, गर्भरक्षा, शान्तिचक्र, वज्रपञ्जर, कलिकुंड, सिद्धचक्र, नागार्जुन तथा गणधरवलय ये ९ आराधनाएं हैं, तथा दशधर्मपूजा भी सम्मिलित है।

ग्रन्थ नं० १६।

६ आराधनासंग्रह–····। पत्र सं०–११५। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–आराधना। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें कलिकुंड, वज्रपंजर, नागार्जुन ये तीन आराधनाएं तथा नेमिचन्द्र कृत प्रतिष्ठातिलकांतर्गत शान्तिहोम विधान भी है।

ग्रन्थ नं० ७।

७ नान्दीमंगलादिसंग्रह–·······। पत्र सं०–९७। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें नान्दीमंगल, कलिकुंडाराधना तथा मृत्युंजयाराधना सम्मिलिति हैं।

ग्रन्थ नं० ३०।

८ नान्दीमंगलादिसंग्रह–·······। पत्र सं०–३९। पंक्ति प्रतिपत्र–९। अक्षर प्रतिपंक्ति–५५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें नान्दीमंगल नित्यपूजा आदि हैं, तथा गीतके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४।

९ पूजापाठसंग्रह–·······। पत्र सं०–५। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–शालि० शक १८१३। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें संध्यावन्दना, मंगलाष्टक तथा नित्यपूजा है। यह शालि० शक १८१३ खर संवत्सर आश्वयुज कृष्णा ८ के दिन लिखा गया है।

ग्रन्थ नं० ५।

१० पूजापाठसंग्रह–·······। पत्र सं०–५३। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें अभिषेक, शान्तिपूजाविधान तथा पंचपरमेष्ठिपूजा आदि हैं।

ग्रन्थ नं० १३।

११ पूजापाठसंग्रह–·····। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–४५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें नांदीमंगल, महाभिषेक आदि संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० १४।

१२ पूजापाठसंग्रह–·····। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें अभिषेक, नित्यपूजा आदि सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० २७।

१३ पूजापाठसंग्रह–·······। पत्र सं०–४५। पंक्ति प्रतिपत्र–६। अक्षर प्रतिपंक्ति–२७। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें महापुण्याहवाचना, ग्रहशान्तिपूजा आदि हैं, तथा ज्योतिष संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३३।

१४ पूजापाठसंग्रह–·······। पत्र सं०–१०३। पंक्ति प्रतिपत्र–८। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें नित्यपूजा, नान्दीमंगल, पंचपरमेष्ठिपूजा आदि संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ३४।

१५ पूजापाठसंग्रह–······। पत्र सं०–११४। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें अभिषेक, नित्यपूजा, नान्दीमंगल आदि संग्रह किये गये हैं।

विषय-कोश

ग्रन्थ नं० ३२।

१६ नाममाला-महाकवि धनंजय। पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें पूजापाठ, स्तोत्र आदिके भी कुछ पत्र हैं।

विषय-काव्य

ग्रन्थ नं० १८।

१७ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र। पत्र सं०-५२। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण तथा खण्डित।

विषय-पुराण

ग्रन्थ नं० १।

१८ पार्श्वनाथपुराण-पार्श्व पण्डित। पत्र सं०-१९६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-पुराण। लेखनकाल-शालि०शक १६०६। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें आदिके ५ पत्र नहीं हैं। शालि०शक १६०६ रक्ताक्षि संवत्सर चैत्र कृष्णा ५ भानुवारके दिन देशीगणीय बाहुबली के शिष्य गुम्मटण्णने बेलतंगडिके शान्तिनाथ चैत्यालयमें नेमिचन्द्रदेवसे इसे लिखवाया।

विषय-चरित्र

ग्रन्थ नं० १२।

१९ जिनदत्तचरित-पद्मनाभ। पत्र सं०-७०। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है।

ग्रन्थ नं० ९।

२० जैमिनिभारत-जैमिनि। पत्र सं०-४२। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-५२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८।

२१ भरतेशवैभव-रत्नाकर वर्णी। पत्र सं०-११। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें चतुबंध [कन्नड गद्य] तथा व्रतकथाओंके भी कुछ पत्र हैं।

विषय–कथा

ग्रन्थ नं० ६ ।

२२ व्रतकथासंग्रह–······ । पत्र सं०–९२ । पंक्ति प्रतिपत्र–७ । अक्षर प्रतिपंक्ति–८० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें १८ व्रतोंकी कथाएं हैं ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

२३ व्रतकथासंग्रह–······ । पत्र सं०–२४ । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–३५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–कथा । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें अनन्तव्रत तथा पुष्पांजलिव्रत की कथा है ।

विषय–ज्योतिष

ग्रन्थ नं० २६ ।

२४ ज्योतिषसंग्रह–······ । पत्र सं०–२५ । पंक्ति प्रतिपत्र–५ । अक्षर प्रतिपंक्ति–२५ । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–ज्योतिष । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें ज्योतिष के भिन्न भिन्न विषय संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

२५ नक्षत्रतिलक–······ । पत्र सं०–४० । पंक्ति प्रतिपत्र–१० । अक्षर प्रतिपंक्ति–५० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–ज्योतिष । लेखनकाल–× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–उत्तम ।

विशेष–इसमें ज्योतिष संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

विषय–मंत्रशास्त्र

ग्रन्थ नं० २३ ।

२६ बालग्रहचिकित्सा–······ । पत्र सं०–२२ । पंक्ति प्रतिपत्र–६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–३० । लिपि–कन्नड । भाषा–कन्नड । विषय–मंत्रशास्त्र । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–जीर्ण ।

विशेष–इसमें मंत्रशास्त्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

विषय–लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० २५ ।

२७ तिलोयसार [त्रिलोकसार]–आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०–५४ । पंक्ति प्रतिपत्र–९ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१०० । लिपि–कन्नड । भाषा–प्राकृत । विषय–लोकविज्ञान । लेखनकाल–× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष–इसमें अभयचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी सम्मिलित है ।

विषय–शिल्पशास्त्र

ग्रन्थ नं० २०।

२८ **वास्तुशिल्प**–······। पत्र सं०–३४। पंक्ति प्रतिपत्र–१०। अक्षर प्रतिपंक्ति–२७। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–शिल्पशास्त्र। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें मंत्रशास्त्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

विषय–स्तोत्र

ग्रन्थ नं० १०।

२९ **स्तोत्रसंग्रह**–······। पत्र सं०–८। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–५०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–उत्तम।

विशेष–इसमें सुप्रभातस्तोत्र तथा स्वप्नावली है

ग्रन्थ नं० १५।

३० **स्तोत्रसंग्रह**–······। पत्र सं०–४१। पंक्ति प्रतिपत्र–४। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष–इसमें मंगलाष्टक, पार्श्वनाथमंत्राष्टक तथा पद्मावत्यष्टक आदि स्तोत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० २४।

३१ **स्तोत्रसंग्रह**–कवि भपाल आदि। पत्र सं०–४०। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–७५। लिपि–कन्नड। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–जीर्ण।

विशेष–इसमें पंचस्तोत्र और सिद्धस्तोत्र हैं। आप्तमीमांसा के भी कुछ पत्र हैं।

विषय–गीत तथा भजन

ग्रन्थ नं० १९।

३२ **गीतसंग्रह**–······। पत्र सं०–३६। पंक्ति प्रतिपत्र–७। अक्षर प्रतिपंक्ति–३०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गीत। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० २।

३३ **रामायणयक्षगान**–······। पत्र सं०–७२। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–७०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गीत। लेखनकाल–×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५।

३४ **सभालक्षण [यक्षगान]**–······। पत्र सं०–१३। पंक्ति प्रतिपत्र–५। अक्षर प्रतिपंक्ति–४०। लिपि–कन्नड। भाषा–कन्नड। विषय–गीत। लेखनकाल–×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

विषय-प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० ३।

३५ संग्रह-······। पत्र सं०-१४८। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-प्रकीर्णक। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें ज्योतिष तथा स्थानीय चैत्यालय के दान आदि का विवरण है।

ग्रन्थ नं० २८।

३६ संग्रह-·······। पत्र सं०-१४। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत तथा कन्नड। विषय-प्रकीर्णक। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें सुभाषित, पूजापाठ आदिके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थकार-सूची

मूर्तिदेवी
जैन
ग्रन्थमाला
संस्कृतग्रन्थ
[२]

कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची

१९४८
भारतीय
ज्ञानपीठ
काशी